सत्यमेव जयते

पद्म पुरस्कार 2026
Padma Awards 2026

अलंकरण समारोह-II
Investiture Ceremony-II

जून 23, 2026

June 23, 2026

सम्मान प्राप्तकर्ताओं की सूची
List of Recipients

पद्म विभूषण
Padma Vibhushan

SHRI P. NARAYANAN **1**
श्री पी. नारायणन

JUSTICE (RETD.) K. T. THOMAS **2**
न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) के. टी. तोमस

पद्म भूषण
Padma Bhushan

DR. VIJAY AMRITRAJ **3**
डॉ. विजय अमृतराज

DR. SKM. MAEILANANDHAN **4**
डॉ. एसकेएम. मयिलानन्दन

SHRI MAMMOOTTY **5**
श्री मंमूट्टी

SHRI VELLAPPALLY NATESAN **6**
श्री वेल्लाप्पल्ली नटेशन

DR. DATTATREYUDU NORI **7**
डॉ. दत्तात्रेयुडु नोरी

SHRI SHIBU SOREN (POSTHUMOUS) **8**
श्री शिबू सोरेन (मरणोपरांत)

SMT. ALKA YAGNIK **9**
श्रीमती अलका यागनिक

पद्म श्री
Padma Shri

SHRI NURUDDIN AHMED 10
श्री नुरूद्दीन अहमद

SHRI THIRUVAARUR BAKTHAVATHSALAM 11
श्री तिरुवारूर भक्तवत्सलम्

DR. KRISHNAMURTY BALASUBRAMANIAN 12
डॉ. कृष्णमूर्ति बालासुब्रमण्यन

SHRI BRIJ LAL BHAT 13
श्री बृज लाल भट्ट

SHRI TARUN BHATTACHARYA 14
श्री तरुण भट्टाचार्य

SHRI JYOTISH DEBNATH 15
श्री जोतिश देबनाथ

DR. JOGESH DEURI 16
डॉ. जोगेश देउरी

SHRI BHIKLYA LADAKYA DHINDA 17
श्री भिकल्या लाडक्या धिंडा

DR. ARMIDA FERNANDEZ 18
डॉ. अर्मिडा फर्नांडीज़

DR. CHANDRAMOULI GADDAMANUGU 19
डॉ. चंद्रमौली गड्डमनुगु

DR. PREM LAL GAUTAM **20**
डॉ. प्रेम लाल गौतम

DR. RAJASTAPATHI KALIAPPA GOUNDAR **21**
डॉ. राजस्थापति कालियप्पा गौंडर

DR. PADMA GURMET **22**
डॉ. पदमा गुरमेद

SHRI ASOK KUMAR HALDAR **23**
श्री अशोक कुमार हालदार

DR. SURESH HANAGAVADI **24**
डॉ. सुरेश हनगवाड़ी

SHRI CHARAN HEMBRAM **25**
श्री चरण हेम्ब्रम

DR. SHUBHA VENKATESHA IYENGAR **26**
डॉ. शुभा वेंकटेश अय्यंगार

SHRI T.T. JAGANNATHAN (POSTHUMOUS) **27**
श्री टी.टी. जगन्नाथन (मरणोपरांत)

SANT NIRANJAN DASS JI **28**
संत निरंजन दास जी

PROF. VEEZHINATHAN KAMAKOTI **29**
प्रो. वीझिनाथन् कामकोटी

PROF. MANGALA KAPOOR **30**
प्रो. मंगला कपूर

DR. ASHOK KHADE 31
डॉ. अशोक खाडे

DR. LIUDMILA KHOKHLOVA 32
डॉ. लियुदमीला खोखलोवा

DR. PRABHAKAR BASAPRABHU KORE 33
डॉ. प्रभाकर बसप्रभु कोरे

SMT. POKHILA LEKTHEPI 34
श्रीमती पखीला लेकथेपी

SHRI RAMA REDDY MAMIDI (POSTHUMOUS) 35
श्री रामा रेड्डी मामिदी (मरणोपरांत)

SHRI R.V.S. MANI 36
श्री रा.वे.सु. मणि

SMT. KALAMANDALAM VIMALA MENON 37
श्रीमती कलामंडलम विमला मेनोन

SHRI VLADIMER MESTVIRISHVILI (POSTHUMOUS) 38
श्री व्लादिमीर मेस्त्विरीश्विली (मरणोपरांत)

SHRI MAGANTI MURALI MOHAN 39
श्री मागंटि मुरली मोहन

SHRI MOHAN NAGAR 40
श्री मोहन नागर

DR. PUNNIAMURTHY NATESAN 41
डॉ. पुण्यमूर्ति नटेसन

SHRI SARAT KUMAR PATRA 42
श्री सरत कुमार पात्र

SHRI SIMANCHAL PATRA 43
श्री सीमांचल पात्र

GURU SANGYUSANG PONGENER 44
गुरु सँग्युसँग पोंगनर

SHRI GADDE BABU RAJENDRA PRASAD 45
श्री गद्दे बाबू राजेंद्र प्रसाद

MS. SAVITA PUNIA 46
सुश्री सविता पूनिया

SHRI KABINDRA PURKAYASTHA (POSTHUMOUS) 47
श्री कबीन्द्र पुरकायस्थ (मरणोपरांत)

SHRI BHAGWANDAS RAIKWAR (POSTHUMOUS) 48
श्री भगवानदास रायकवार (मरणोपरांत)

PROF. K. RAMASAMY 49
प्रो. के. रामसामी

SHRI MADHAVAN RANGANATHAN 50
श्री माधवन रंगनाथन

SMT. RANJANI 51
श्रीमती रंजनी

SMT. GAYATRI 52
श्रीमती गायत्री

DR. ANIL KUMAR RASTOGI 53
डॉ. अनिल कुमार रस्तोगी

PROF. (DR.) MAHENDRA NATH ROY 54
प्रो. (डॉ.) महेंद्र नाथ रॉय

SHRI SATISH SHAH (POSTHUMOUS) 55
श्री सतीश शाह (मरणोपरांत)

PROF. PRATEEK SHARMA 56
प्रो. प्रतीक शर्मा

SHRI ROHIT GURUNATH SHARMA 57
श्री रोहित गुरुनाथ शर्मा

SARDAR INDERJIT SINGH SIDHU 58
सरदार इंदरजीत सिंह सिद्धू

SHRI RAGHUPAT SINGH (POSTHUMOUS) 59
श्री रघुपत सिंह (मरणोपरांत)

SHRI KHEM RAJ SUNDRIYAL 60
श्री खेमराज सुंद्रियाल

DR. BUDHRI TATI **61**

डॉ. बुधरी ताती

DR. KUMARASAMY THANGARAJ **62**

डॉ. कुमारासामी थंगराज

SHRI RABILAL TUDU (POSTHUMOUS) **63**

श्री रबीलाल टुडू (मरणोपरांत)

SHRI NARESH CHANDRA DEV VARMA **64**

श्री नरेश चंद्र देव वर्मा

SHRI SHASHI SHEKHAR VEMPATI **65**

श्री शशि शेखर वेम्पटि

SHRI CHIRANJI LAL YADAV **66**

श्री चिरंजी लाल यादव

Note : *Not present in the Investiture ceremony
*सम्मान समारोह मे उपस्थित नही

SHRI P. NARAYANAN

Shri P. Narayanan, popularly known as Narayanji, is a titan of nationalistic journalism and a pivotal socio-political organizer who dedicated his life to articulating an ideology once marginalized in Kerala.

2. Born on 28th May, 1936, in Manakad, Thodupuzha, Kerala, Shri Narayanan was educated at Mahatma Gandhi College and University College, Thiruvananthapuram, where he obtained his Bachelors Degree in Physics. His political journey began in his student days when he joined the RSS, even attempting to join the Goa freedom movement. He eventually dedicated his life as a *Pracharak,* serving predominantly in northern and central Kerala; in this capacity, he had ample opportunities to experience and work within various rural and tribal hamlets. Following this, he was deputed to the Bharatiya Jana Sangh where, as State Secretary (Organisation), he was instrumental in hosting the massive 1967 National Plenary Session in Kozhikode and later led the Swadeshi Jagaran Manch as its state convener (2000-2004).

3. Shri Narayananji's most enduring legacy is his association with Janmabhumi, which he steered from its inception in 1975 through decades of financial and political hardship, serving in every capacity from Manager to Chief Editor. As the longtime soul of the Janmobhumi daily and a veteran RSS leader, he turned the publication into a formidable cultural force and a voice for the nationalist movement. His commitment to his principles was most evident during the Emergency, where he served a four-month jail tenure under the DIR Act after being arrested in Kozhikode, eventually continuing his work underground to organize democratic resistance after his acquittal. He is particularly celebrated for his weekly column, "Sanghapadhathiloode" (Through the Sangh Path), which ran for over 1,300 weeks. This series became a historical record, chronicling the lives of unsung volunteers and providing a linguistic and narrative counter-weight to the state's dominant media discourse, often highlighting stories of those who suffered state excesses during the Emergency. He also authored a comprehensive style book for journalists to elevate the quality of vernacular reporting across all editions of Janmabhumi.

4. Beyond journalism, Shri Narayanan made significant contributions as a scholarly author and a prolific translator. He penned the authentic two-volume history of nationalistic politics in Kerala, Desheeya Rashtreeyam Keralathil, which became a reference book for the research activities even in foreign universities. He also wrote biographies of leaders like, K Bhasker Rao (late National Convenor of Vanavasi Kalyan Ashram), K. Kelappan and P. Madhavan. His work as a translator includes the works of V.D. Savarkar, M.S. Golwalkar, and Deendayal Upadhyaya from English and Hindi into Malayalam. His work of the fall of communism has been translated to both English and Kannada. These efforts ensured that the philosophical foundations of his movement were accessible to the common Malayali reader in simple yet profound language.

5. In recognition of his lifelong dedication, Shri Narayanan received numerous prestigious honours, including the Vidya Nivas Mishra National Award in 2018 for his contribution to vernacular journalism. More recently, he was conferred the Mangalam Swaminathan National Journalist Award in 2024, Rashtra seva puraskar of Kesari Weekly 2008, Media excellence award of Kochi International Bookfair 2018 for his exceptional writing on impactful "Sanghapadhathiloode" column.

श्री पी. नारायणन

नारायणजी के नाम से लोकप्रिय श्री पी. नारायणन राष्ट्रवादी पत्रकारिता के दिग्गज और एक महत्वपूर्ण सामाजिक—राजनीतिक आयोजक हैं, जिन्होंने केरल में कभी हाशिए पर रहने वाली विचारधारा को व्यक्त करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

2. 28 मई, 1936 को केरल के थोडुपुझा के मानकड़ में जन्मे श्री नारायणन की शिक्षा महात्मा गांधी कॉलेज और यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम में हुई, जहां उन्होंने भौतिकी में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उनकी राजनीतिक यात्रा उनके छात्र दिनों में शुरू हुई जब वह आरएसएस में शामिल हो गए, यहां तक कि गोवा स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने का प्रयास भी किया। अंततः उन्होंने मुख्य रूप से उत्तरी और मध्य केरल में प्रचारक के रूप में सेवा करते हुए अपना जीवन समर्पित कर दिया। इस हैसियत से, उन्हें विभिन्न ग्रामीण और आदिवासी बस्तियों के भीतर अनुभव प्राप्त करने और काम करने के पर्याप्त अवसर मिले। इसके बाद, उन्हें भारतीय जनसंघ में प्रतिनियुक्त किया गया, जहां राज्य सचिव (संगठन) के रूप में, उन्होंने कोझिकोड में वर्ष 1967 के राष्ट्रीय पूर्ण सत्र की मेजबानी करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और बाद में इसके राज्य संयोजक (2000—2004) के रूप में स्वदेशी जागरण मंच का नेतृत्व किया।

3. श्री नारायणन की सबसे स्थायी विरासत जन्मभूमि के साथ उनका जुड़ाव है, जिसकी सेवा उन्होंने वर्ष 1975 में इसकी स्थापना से लेकर दशकों की वित्तीय और राजनीतिक कठिनाई के बीच प्रबंधक से लेकर मुख्य संपादक तक हर हैसियत में की। लंबे समय तक जन्मभूमि दैनिक की आत्मा और एक अनुभवी आरएसएस नेता के रूप में, उन्होंने प्रकाशन को एक दुर्जेय सांस्कृतिक शक्ति और राष्ट्रवादी आंदोलन की एक आवाज में बदल दिया। अपने सिद्धांतों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता आपातकाल के दौरान सबसे स्पष्ट थी, जहां उन्होंने कोझिकोड में गिरफ्तार होने के बाद डीआईआर अधिनियम के तहत चार महीने कारावास की अवधि पूरी की, अंततः बरी होने के बाद लोकतांत्रिक प्रतिरोध को संगठित करने के लिए अपना काम जारी रखा। उन्हें विशेष रूप से उनके साप्ताहिक स्तंभ, 'संघपादथिलूड' (संघ पथ के माध्यम से) के लिए जाना जाता है, जो 1,300 सप्ताह से अधिक समय तक चला। यह शृंखला एक ऐतिहासिक रिकॉर्ड बन गई, जिसमें गुमनाम स्वयंसेवकों के जीवन का वर्णन किया गया और राज्य के प्रमुख मीडिया प्रवचन को एक भाषाई और कथात्मक प्रति—भार प्रदान किया गया, जो अक्सर उन लोगों की कहानियों को उजागर करता है जिन्हें आपातकाल के दौरान राज्य की ज्यादतियों का सामना करना पड़ा था। उन्होंने पत्रकारों के लिए एक व्यापक शैली की पुस्तक भी लिखी है ताकि जन्मभूमि के सभी संस्करणों में स्थानीय भाषाओं की रिपोर्टिंग की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सके।

4. पत्रकारिता से परे, श्री नारायणन ने एक विद्वान लेखक और एक दक्ष अनुवादक के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने केरल में राष्ट्रवादी राजनीति का प्रामाणिक दो—खंडीय इतिहास, देशीय राष्ट्रियम केरलथिल, लिखा जो विदेशी विश्वविद्यालयों में भी अनुसंधान गतिविधियों के लिए एक संदर्भ पुस्तक बन गई। उन्होंने के. भास्कर राव (वनवासी कल्याण आश्रम के दिवंगत राष्ट्रीय संयोजक), के. केलप्पन और पी. माधवन जैसे नेताओं की जीवनी भी लिखी। अनुवादक के रूप में उनके कार्यों में वी.डी. सावरकर, एम. एस. गोलवलकर और दीनदयाल उपाध्याय की रचनाओं का अंग्रेजी और हिंदी से मलयालम में अनुवाद शामिल हैं। इनकी रचना साम्यवाद के पतन का अंग्रेजी और कन्नड़ दोनों में अनुवाद किया गया है। इन प्रयासों ने यह सुनिश्चित किया कि उनके आंदोलन की दार्शनिक विचारधारा आम मलयाली पाठक के लिए सरल लेकिन गहन भाषा में सुलभ हो।

5. उनके आजीवन समर्पण को मान्यता देते हुए, श्री नारायणन को स्थानीय पत्रकारिता में उनके योगदान के लिए वर्ष 2018 में विद्या निवास मिश्रा राष्ट्रीय पुरस्कार सहित कई प्रतिष्ठित सम्मान मिले। हाल ही में, उन्हें वर्ष 2024 में मंगलम स्वामीनाथन राष्ट्रीय पत्रकार पुरस्कार, केसरी साप्ताहिक 2008 के राष्ट्र सेवा पुरस्कार, प्रभावशाली 'संघपादथिलूड' कॉलम पर उनके असाधारण लेखन के लिए कोच्चि अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला 2018 के मीडिया उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

JUSTICE (RETD.) K. T. THOMAS

Justice (Retd.) K. T. Thomas is a retired Judge of the Supreme Court of India.

2. Born on 30th January, 1937, Justice (Retd.) Thomas received his college education at C.M.S College, Kottayam and graduated from the St. Alberts College, Ernakulam. He took his Law degree from Madras University and set up practice at Kottayam District and Sessions Courts and High Court of Kerala. After seventeen years of legal practice, he was directly recruited from the Bar as District and Sessions judge through a selection held by the High Court and served as such at four different Districts. He was appointed as Judge of the High Court of Kerala in 1985. He was designated as Chief Justice (Officiating) of Kerala High Court in 1995. In March, 1996, he was appointed as Judge of the Supreme Court. He retired from the Supreme Court in 2002.

3. Justice (Retd.) Thomas is known for his contributions to the field of Criminal law, Police Reforms and fight against corruption in private professional education fields. After his retirement from the Supreme Court in 2002, the Central Bureau of Investigation (CBI) composed a book containing some of the important judgments authored by him in criminal law, describing them as "marking a significant shift in the criminal jurisprudence of the country". During his career as judge and also after his retirement, he was invited to deliver lectures on topics of public importance such as Jawaharlal Nehru memorial lecture at Nehru Centre, Mumbai on "Rule of Law in a Secular Democracy", also Justice Sir Sayid Mohmood memorial lecture at Allahabad on "the emerging trends in criminal law", and Dr. Kohli (Founder Director of CBI) memorial lecture at Vigyan Bhawan on "Anatomy of Corruption". The Government of Kerala appointed him as Chairman of the Fees fixation Committee for the self-financing professional colleges as per the directives contained in a Supreme Court judgment. That committee was the first in India to complete the work fixing fees in respect of 200 colleges. The Government of Kerala appointed him as Chairman of the Commission for making recommendations for reforming the performances of Police force, and the work was completed within the time schedule.

4. Justice (Retd.) Thomas was also appointed as Chairman of a commission to oversee the transparency of admissions of students to the professional colleges of the state. Another assignment was for the Police Reforms at the National level, which was made by the Supreme Court of India. He did not accept any remuneration for the works assigned. All the recommendations made by the Commission in which he chaired had been accepted by the Government concerned.

5. For improving the functioning of the National Law School University in Bangalore, a statutory commission was set up by the Chief Justice of India being the Chancellor of the said University. Justice (Retd.) Thomas was appointed as Chairman of the said Commission, along with two other members who were Vice Chancellors of other Law Universities. He submitted the report containing recommendations which were accepted and implemented in due course of time. Presently, he is holding the Chairmanship of Kerala Law Reforms Commission constituted by the Government of Kerala since 2017. The Commission has already drafted several Bills and forwarded them to the Government and a few among them were accepted by the Kerala legislative assembly.

6. Justice (Retd.) Thomas was conferred Padma Bhushan in the year 2007. He has been conferred other awards as well, among which particular mention can be made of "Niyama Retna" Award by the Chief Justice of Kerala High Court (Justice Jawaharlal Gupta), on behalf of a foundation.

न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) के. टी. तोमस

न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) के. टी. तोमस भारत के सर्वोच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश हैं।

2. 30 जनवरी, 1937 को जन्मे न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) तोमस ने अपनी कॉलेज की शिक्षा सी.एम.एस. कॉलेज, कोट्टायम से प्राप्त की और सेंट अल्बर्ट्स कॉलेज, एर्नाकुलम से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय से कानून की डिग्री प्राप्त की और कोट्टायम जिला एवं केरल के सत्र न्यायालयों और उच्च न्यायालय में वकालत शुरू की। सत्रह साल की कानूनी प्रैक्टिस के बाद, उन्हें उच्च न्यायालय द्वारा आयोजित चयन के माध्यम से बार से सीधे जिला और सत्र न्यायाधीश के रूप में भर्ती किया गया और उन्होंने चार अलग–अलग जिलों में कार्य किया। उन्हें 1985 में केरल उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया। उन्हें 1995 में केरल उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश (कार्यवाहक) के रूप में नामित किया गया। मार्च, 1996, में उन्हें उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया। वह वर्ष 2002 में उच्चतम न्यायालय से सेवानिवृत्त हुए।

3. न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) तोमस को आपराधिक कानून, पुलिस सुधार और निजी व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्रों में भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में उनके योगदान के लिए जाना जाता है। वर्ष 2002 में उच्चतम न्यायालय से अपनी सेवानिवृत्ति के बाद, केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने आपराधिक कानून में उनके द्वारा लिखे गए कुछ महत्वपूर्ण निर्णयों को शामिल करते हुए एक पुस्तक लिखी, जिसमें उन्हें 'देश के आपराधिक न्यायशास्त्र में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक' बताया गया। न्यायाधीश के रूप में अपने करियर के दौरान और अपनी सेवानिवृत्ति के बाद भी, उन्हें सार्वजनिक महत्व के विषयों पर व्याख्यान जैसे कि नेहरू केंद्र, मुंबई में जवाहरलाल नेहरू स्मारक व्याख्यान 'धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र में कानून का शासन', इलाहाबाद में न्यायमूर्ति सर सईद मोहम्मद स्मारक व्याख्यान 'आपराधिक कानून में उभरती प्रवृतियां' पर, और डॉ. कोहली (सीबीआई के संस्थापक निदेशक) विज्ञान भवन में 'एनाटॉमी ऑफ करप्शन' पर स्मारक व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। केरल सरकार ने उच्चतम न्यायालय के फैसले में निहित निर्देशों के अनुसार उन्हें स्व–वित्तपोषित व्यावसायिक कॉलेजों के लिए फीस निर्धारण समिति के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया। वह समिति भारत की पहली समिति थी जिसने 200 कॉलेजों के संबंध में फीस तय करने का काम पूरा किया। केरल सरकार ने उन्हें पुलिस बल के प्रदर्शन में सुधार के लिए सिफारिशें करने के लिए आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया और इस कार्य को तय समय सीमा के भीतर पूरा कर लिया गया।

4. न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) तोमस को राज्य के व्यावसायिक कॉलेजों में छात्रों के दाखिलों की पारदर्शिता की निगरानी के लिए आयोग के अध्यक्ष के रूप में भी नियुक्त किया गया। भारत के उच्चतम न्यायालय द्वारा एक अन्य कार्य–राष्ट्रीय स्तर पर पुलिस सुधार भी उनको सौंपा गया। उन्होंने स्वयं का सौंपे गए कार्यों के लिए कोई पारिश्रमिक स्वीकार नहीं किया। उनकी अध्यक्षता वाले आयोग द्वारा की गई सभी सिफारिशें संबंधित सरकार द्वारा स्वीकार कर ली गई थीं।

5. बैंगलुरु में नेशनल लॉ स्कूल यूनिवर्सिटी के कामकाज में सुधार के लिए, भारत के मुख्य न्यायाधीश द्वारा उक्त विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के रूप में एक वैधानिक आयोग की स्थापना की गई थी। न्यायमूर्ति सेवानिवृत तोमस को दो अन्य सदस्यों, जो अन्य कानून विश्वविद्यालयों के कुलपति थे के साथ, उक्त आयोग के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया। उन्होंने सिफारिशों वाली रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसे बाद में स्वीकार कर लिया गया और लागू किया गया। वर्तमान में, वह 2017 से केरल सरकार द्वारा गठित केरल कानून सुधार आयोग की अध्यक्षता कर रहे हैं। आयोग ने पहले ही कई विधेयकों का मसौदा तैयार किया है और उन्हें सरकार को भेज दिया है और उनमें से कुछ को केरल विधानसभा द्वारा स्वीकार कर लिया गया है।

6. न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) तोमस को वर्ष 2007 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। उन्हें अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है, जिनमें से एक फाउंडेशन की ओर से केरल उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश (न्यायाधीश जवाहरलाल गुप्ता) द्वारा 'नियम रत्न' पुरस्कार का विशेष उल्लेख किया जा सकता है।

DR. VIJAY AMRITRAJ

Dr. Vijay Amritraj is one of the greatest tennis players of India.

2. Born on 14th December, 1953 in Chennai, Dr. Vijay received his bachelor's degree in Commerce from the University of Madras. Playing for Loyola College and the University of Madras in his young days, he started representing India overseas in junior events from the age of 14 and then went on to open events. He has had the honor of representing India in the Davis Cup for 20 consecutive years from 1969-1989 leading the team to two finals—a feat unmatched in India's Open Era history. His journey on the ATP Tour brought him a career-high ranking of 16 that remains the highest ever achieved by an Indian. He has won 16 ATP Tour singles titles— the most by any Asian player—and 13 doubles titles during his career. For 14 years, he held the distinction of being Asia's No. 1 player, and recognized as India's greatest tennis player in the Open Era. He is the only Asian tennis player to receive the UNESCO Pierre de Coubertin Award for Fair Play in 1988 and to have served as the International Tennis Federation's Millennium Ambassador in 2000. In 2001, he was appointed a United Nations Messenger of Peace by Secretary-General Kofi Annan—the only Indian athlete ever to receive that distinction.

3. Beyond sport, Dr. Vijay has always believed in the power of purpose. He has had the privilege of being the only Indian inducted as an honorary member of the All England Club at Wimbledon in 2001 and he is the only Indian athlete to address the United Nations Special Committee against Apartheid in South Africa in 1988. He was honored in 1976 with the key to the city of Los Angeles by Mayor Tom Bradley. His career has spanned multiple platforms—serving four terms as President of the ATP Tour Player Council, as well as on the ATP Tour Board of Directors, the global body governing professional tennis.

4. Media and storytelling have always been close to his heart. Dr. vijay has had the unique opportunity to appear on the center courts of Wimbledon and the US Open, and on the big screen in a James Bond film and a Star Trek film. He was among the first Indians to appear on mainstream American television, helping open doors for future generations of Indian actors. He has arguably been the most watched presenter and commentator for major tennis events worldwide, including the Grand Slams, and hosted the Augusta Masters Golf broadcast. In 2012, he co-anchored the London Olympics for Star Sports Asia. Through his television talk shows—In Pursuit of Excellence and Dimensions—he had the privilege of engaging with thought leaders and icons across sports, business, entertainment, and politics. After concluding his formal service with the United Nations, he founded the Vijay Amritraj Foundation in the U.S., to help some of the neediest charitable causes across India.

5. Dr. Vijay was awarded the Padma Shri by the Government of India in 1983 in recognition of his works and contributions. He was awarded the International Tennis Hall of Fame and the International Tennis Federation's prestigious Golden Achievement Award in 2022, the only Indian to receive it. In 2024, he was deeply honoured to be inducted into the International Tennis Hall of Fame—the ultimate honor in tennis. Today, he continues to speak globally on a variety of platforms, promoting the values he always held close: excellence, integrity, and the spirit of India.

डॉ. विजय अमृतराज

डॉ. विजय अमृतराज भारत के महान टेनिस खिलाड़ियों में से एक हैं।

2. 14 दिसम्बर, 1953 को चेन्नई में जन्मे, डॉ. विजय ने मद्रास विश्वविद्यालय से वाणिज्य में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। अपने युवा दिनों में लोयोला कॉलेज और मद्रास विश्वविद्यालय के लिए खेलते हुए, उन्होंने 14 साल की उम्र से जूनियर स्पर्धाओं में विदेशों में भारत का प्रतिनिधित्व करना शुरू कर दिया और फिर ओपन इवेंट्स में गए। उन्हें वर्ष 1969–1989 तक लगातार 20 वर्षों तक डेविस कप में भारत का प्रतिनिधित्व करने का सम्मान मिला है, जिसने टीम को दो बार फाइनल में पहुंचाया है–यह एक ऐसी उपलब्धि है जो भारत के ओपन युग के इतिहास में बेजोड़ है। एटीपी टूर पर उनके सफर ने उन्हें करियर की सर्वश्रेष्ठ 16 रैंकिंग दिलाई, जो किसी भारतीय द्वारा हासिल की गई सर्वोच्च रैंकिंग है। उन्होंने अपने करियर के दौरान 16 एटीपी टूर एकल खिताब जीते हैं –जो किसी भी एशियाई खिलाड़ी द्वारा सबसे अधिक हैं और अपने करियर के दौरान 13 युगल खिताब जीते हैं। 14 वर्षों तक, उन्होंने एशिया के नंबर 1 खिलाड़ी होने का गौरव प्राप्त किया और ओपन युग में भारत के सबसे महान टेनिस खिलाड़ी के रूप अपनी पहचान बनाई। वह वर्ष 1988 में फेयर प्ले के लिए यूनेस्को पियरे डी कोबेर्टिन पुरस्कार प्राप्त करने वाले और वर्ष 2000 में अंतर्राष्ट्रीय टेनिस महासंघ के मिलेनियम एंबेसडर के रूप में कार्य करने वाले एकमात्र एशियाई टेनिस खिलाड़ी हैं। वर्ष 2001 में, उन्हें महासचिव कोफी अन्नान द्वारा संयुक्त राष्ट्र शांति दूत नियुक्त किया गया था –यह सम्मान प्राप्त करने वाले वह एकमात्र भारतीय एथलीट हैं।

3. खेल से परे, डॉ. विजय ने हमेशा उद्देश्य की शक्ति में विश्वास किया है। उन्हें वर्ष 2001 में विंबलडन में ऑल इंग्लैंड क्लब के मानद सदस्य के रूप में शामिल किया गया और वह एकमात्र भारतीय हैं, जिन्हें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह वर्ष 1988 में दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र की विशेष समिति को संबोधित करने वाले एकमात्र भारतीय एथलीट हैं। उन्हें वर्ष 1976 में मेयर टॉम ब्रैडली द्वारा 'की टू दी सिटी ऑफ लॉस एंजिल्स' से सम्मानित किया गया। उनका करियर कई प्लेटफार्मों पर विस्तारित हुआ है – एटीपी टूर प्लेयर काउंसिल के अध्यक्ष के रूप में चार कार्यकाल के साथ–साथ एटीपी टूर बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स में भी सेवा की, जो पेशेवर टेनिस को नियंत्रित करने वाली वैश्विक संस्था है।

4. मीडिया और स्टोरी टैलिंग हमेशा उनके दिल के करीब रहा है। डॉ. विजय को विंबलडन और यूएस ओपन के सेंटर कोर्ट और जेम्स बॉन्ड फिल्म और स्टार ट्रेक फिल्म में बड़े पर्दे पर दिखाई देने का अनूठा अवसर मिला है। वह मुख्यधारा के अमेरिकी टेलीविजन पर दिखाई देने वाले पहले भारतीयों में से थे, जिन्होंने भारतीय अभिनेताओं की भावी पीढ़ियों के लिए इस क्षेत्र में रास्ते खोलने में मदद की। वह यकीनन ग्रैंड स्लैम सहित दुनिया भर के प्रमुख टेनिस आयोजनों के लिए सबसे अधिक देखे जाने वाले प्रस्तुतकर्ता और कमेंटेटर रहे हैं, और उन्होंने ऑगस्टा मास्टर्स गोल्फ प्रसारण की मेजबानी भी की है। वर्ष 2012 में, उन्होंने स्टार स्पोर्ट्स एशिया के लिए लंदन ओलंपिक की सह–एंकरिंग की। अपने टेलीविजन टॉक शोदृइन परसुयुट ऑफ एक्सीलेंस एंड डाइमैनशनस के माध्यम से उन्हें खेल, व्यवसाय, मनोरंजन और राजनीति में विचारशील नेताओं और आइकन के साथ जुड़ने का सौभाग्य मिला। संयुक्त राष्ट्र के साथ अपनी औपचारिक सेवा समाप्त करने के बाद, उन्होंने पूरे भारत में कुछ जरूरतमंद धर्मार्थ कार्यों में मदद करने के लिए अमेरिका में विजय अमृतराज फाउंडेशन की स्थापना की।

5. डॉ. विजय को उनके कार्यों और योगदान के लिए वर्ष 1983 में भारत सरकार द्वारा पद्म श्री से सम्मानित किया गया। उन्हें वर्ष 2022 में इंटरनेशनल टेनिस हॉल ऑफ फेम और इंटरनेशनल टेनिस फेडरेशन के प्रतिष्ठित गोल्डन अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया, इसे प्राप्त करने वाले वह एकमात्र भारतीय हैं। वर्ष 2024 में, उन्हें इंटरनेशनल टेनिस हॉल ऑफ फेम में शामिल किए जाने पर बहुत बडे सम्मान से सम्मानित किया गया, जो टेनिस के क्षेत्र में सबसे बडा सम्मान है। आज भी वह, विभिन्न मंचों पर अपने विचार व्यक्त करते रहते हैं, उन मूल्यों को बढ़ावा देते हैं जो हमेशा उनके करीब रहे हैं जैसे भारत की उत्कृष्टता, अखंडता और मूल भावना।

DR. SKM. MAEILANANDHAN

Dr. SKM. Maeilanandhan, Executive Chairman of SKM Group of Companies, is a renowned entrepreneur and the founder of various Social welfare Trusts and a consumer activist. He is broadly familiar for his devotional service to spread Yoga and Meditation across the world.

2. Born on 18th June, 1945 in a poor agricultural family in Erode District in Tamil Nadu, Dr. Maeilanandhan pursued his education only till school final. He started the Poultry Farmers Welfare Association in 1983 and became its founder President. He pioneered a modern Rural Marketing Barter System which is being followed by the present traders. He pioneered for self employment of the educated and uneducated people in the rural areas and provided job opportunities throughout the year. He organized many seminars and farmers' meets to study and analyze their problems in the market & pricing and prevent emerging diseases of the poultry and educate the poultry farmers. He became the Editor and Publisher of a poultry monthly magazine "Kozhi Nanban"(Poultry Friend). Gradually, he developed his business to the international level status. He was instrumental in the inclusion of eggs in the Tamil Nadu Government Noon Meal Scheme to eradicate malnutrition among children.

3. Dr. Maeilanandhan adopted two dalit villages namely Rajiv Nagar and Gandhi Nagar in 1999 at Saminathapuram and has been providing the basic needs such as food, clothes and shelter along with medical facilities free to the aged people and children and Free Vocational training courses for Women empowerment. He has also been providing necessary assistance to the people of the two Dalit colonies for their marriage, delivery and even funeral. He founded Sangamam Trust, which constructed a Gasifier crematorium for Rural public utilization.

4. Dr. Maeilanandhan is the President of Erode District "Consumer Protection Centre" (CPC) for the past 33 years, which has its Sub-centers in all the 299 Village Panchayats and Consumer Clubs in schools and colleges in Erode District. This centre has released books on “Citizen Charters”. In recognition of the services rendered by the Erode Consumer Protection Centre, the Govt, of India awarded "The National Best Consumer Protection Council Award" in 1993. He has been the Editor for Tamil monthly magazine "Nugharvore Khaavalan" (Consumer Protector) for 33 years.

5. Dr. Maeilanandhan is the President of the World Community Service Centre (WCSC) for the past 37 years, which has been spreading the value based cultural education among the general public and student community in the name of Yoga for Human Excellence (YHE) as Certificate, Diploma, UG, PG Courses, M.Phil and Ph.D. courses. For this, Vision for Wisdom, an Educational Wing of WCSC has been established by him. It is affiliated with 34 Universities. So far, around 2,51,410 students have undergone these courses. He established around 2235 sub-centres and 404 affiliated trusts in India and abroad for providing Yoga and spiritual education. He introduced new scheme in which WCSC adopted 389 villages in Tamilnadu through “Village Service Project” (WCSC- VSP) with the aim to declare them as peaceful villages by giving free education on Yoga, Meditation and Morality. So far 1.50 Lakh people have been benefitted through this scheme. Also, he became the Chairman of the Indian Yoga Association - Tamilnadu State Chapter, Chennai. He has been the Editor and publisher of “Manavalakkalaignan” and “Anboli” monthly spiritual magazines for the past 37 years.

6. Dr. Maeilanandhan founded “The Periyar Nagar Park Maintenance Trust” in 1992 and constructed the Periyar Nagar Park, He pioneered the Clean & Green Project. For this, he was awarded “Environment Protector Award” by Tamilnadu Environment and Forest Department. He founded “The National Welfare Awareness Movement” (NWAM) in 1999 with the aim to develop national spirit, awareness, patriotism and to promote the concept of unity in diversity among the general public and the students. As the President of the NWAM, he has been rendering his services with full dedication since its inception. He organized seminars, awareness programmes, peace rallies and voters awareness movement. He contributed ₹ 2Crores to the Tamil Nadu Government during the COVID-19 pandemic through WCSC. As the President of Tamil Ilakkiya Peravai Trust, he honoured Tamil scholars with SKM Literary Award with a cash prize of ₹50000/-.

7. Dr. Maeilanandhan has received several awards and honours Padma Shri Award for Social work in 2013. National Productivity Awards (8 times); National Safety Awards (2 times); Agriculture & Processed Food Products Export Promotion Award (5 times): Outstanding Young Person Award by Indian Jaycees in the National top ten category 1978, Lifetime Achiever Award in 2004 by the Rotary International and Best Income Tax Payer Award (2 times) under the Business Individual Category-Tamil Nadu. He was honored with “Honoris Causa Doctorate” Degree for his exceptional contributions to the Social Service, by SRM University, Sonipat, Delhi NCR.

डॉ. एसकेएम. मयिलानन्दन

एस के एम कंपनी समूह के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. एसकेएम. मयिलानन्दन, एक प्रसिद्ध उद्यमी होने के साथ विभिन्न सामाजिक कल्याण ट्रस्टों के संस्थापक और एक उपभोक्ता कार्यकर्ता हैं। वह पूरे विश्व में योग और ध्यान के प्रसार के लिए अपनी निरूस्वार्थ सेवा के लिए जाने जाते हैं।

2. 18 जून, 1945 को तमिलनाडु के इरोड जिले में एक गरीब कृषक परिवार में जन्मे, डॉ. मयिलानन्दन ने स्कूल के फाइनल तक ही शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने वर्ष 1983 में पोल्ट्री किसान कल्याण संघ की शुरुआत की और इसके संस्थापक अध्यक्ष बने। उन्होंने एक आधुनिक ग्रामीण विपणन वस्तु विनिमय प्रणाली की शुरुआत की, जिसका वर्तमान व्यापारियों द्वारा पालन किया जा रहा है। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षित और अशिक्षित लोगों के स्वरोजगार के लिए बीड़ा उठाया और पूरे वर्ष नौकरी के अवसर प्रदान किए। उन्होंने बाजार और मूल्य निर्धारण में किसानों की समस्याओं का अध्ययन और विश्लेषण करने और पोल्ट्री की उभरती बीमारियों को रोकने तथा पोल्ट्री किसानों को शिक्षित करने के लिए कई संगोष्ठियों और किसान बैठकों का आयोजन किया। वे एक पोल्ट्री मासिक पत्रिका 'कोझी नानबन' (पोल्ट्रीमित्र) के संपादक और प्रकाशक बने। समय के साथ उन्होंने अपने व्यवसाय को अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाया। उन्होंने बच्चों में कुपोषण को खत्म करने के लिए तमिलनाडु सरकार की दोपहर भोजन योजना में वृद्धों को शामिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

3. डॉ. मयिलानन्दन ने वर्ष 1999 में समीनांथपुरम में दो दलित गांवों राजीव नगर और गांधी नगर को गोद लिया और दोनों गावों के वृद्धों और बच्चों को निःशुल्क चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के साथ–साथ उनकी भोजन, कपड़े और आश्रय जैसी बुनियादी जरूरतों को पूरा कर रहे हैं। साथ ही वे महिला सशक्तिकरण के लिए निःशुल्क व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम प्रदान कर रहे हैं। वे दोनों दलित कॉलोनियों के लोगों को शादी, प्रसव और यहां तक कि अंतिम संस्कार के लिए भी आवश्यक सहायता प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने संगमम ट्रस्ट की स्थापना की, जिसने ग्रामीण सार्वजनिक उपयोग के लिए एक गैसीफायर श्मशान का निर्माण किया।

4. डॉ. मयिलानन्दन पिछले 33 वर्षों से इरोड जिला 'उपभोक्ता संरक्षण केंद्र' (सीपीसी) के अध्यक्ष हैं, जिसके सभी 299 ग्राम पंचायतों में उप–केंद्र और इरोड जिले के स्कूलों और कॉलेजों में उपभोक्ता क्लब हैं। इस केंद्र ने 'सिटीजन चार्टर्स' पर पुस्तकों का विमोचन किया है। इरोड उपभोक्ता संरक्षण केंद्र द्वारा प्रदान की गई सेवाओं को मान्यता देते हुए, भारत सरकार ने इसे वर्ष 1993 में 'राष्ट्रीय सर्वश्रेष्ठ उपभोक्ता संरक्षण परिषद पुरस्कार' से सम्मानित किया। वे 33 वर्षों से तमिल मासिक पत्रिका 'नुघरवोर खावलन' (उपभोक्ता संरक्षक) के संपादक हैं।

5. डॉ. मयिलानन्दन पिछले 37 वर्षों से विश्व सामुदायिक सेवा केंद्र (डब्ल्यूसीएससी) के अध्यक्ष हैं, जो प्रमाणपत्र, डिप्लोमा, यूजी, पीजी पाठ्यक्रम, एम. फिल और पीएचडी पाठ्यक्रमों के रूप में योग फॉर ह्यूमन एक्सीलेंस (वाईएचई) के नाम पर आम जनता और छात्रों के बीच मूल्य आधारित सांस्कृतिक शिक्षा का प्रसार कर रहा है। इसके लिए, उन्होनें डब्ल्यूसीएससी की एक शैक्षणिक शाखा 'विजन फॉर विजडम' की स्थापना की जो 34 विश्वविद्यालयों से संबद्ध है। अब तक लगभग 2,51,410 छात्र इन पाठ्यक्रमों में भाग ले चुके हैं। उन्होंने योग और आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करने के लिए भारत और विदेशों में लगभग 2235 उप–केंद्रों और 404 संबद्ध ट्रस्टों की स्थापना की। उन्होंने एक नई योजना की शुरुआत की जिसमें डब्ल्यूसीएससी ने ''विलेज सर्विस प्रोजेक्ट'' (डब्ल्यूसीएससी–वीएसपी) के माध्यम से तमिलनाडु में 389 गांवों को योग, ध्यान और नैतिकता पर निःशुल्क शिक्षा देकर शांतिपूर्ण गांव घोषित करने के उद्देश्य से गोद लिया। इस योजना से अबतक 1.50 लाख लोग लाभान्वित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त, वे भारतीय योगसंघ – तमिलनाडु राज्य अध्याय, चेन्नई के अध्यक्ष बने। वे पिछले 37 वर्षों से 'मानवलक्कलझ्ानन' और 'अंबोली' मासिक आध्यात्मिक पत्रिकाओं के संपादक और प्रकाशक हैं।

6. डॉ. मयिलानन्दन ने वर्ष 1992 में 'पेरियार नगर पार्क मेंटेनेंस ट्रस्ट' की स्थापना की और पेरियार नगर पार्क का निर्माण किया। उन्होंने स्वच्छ और हरित परियोजना का बीड़ा उठाया। इसके लिए उन्हें तमिलनाडु पर्यावरण और वन विभाग द्वारा 'पर्यावरण संरक्षक पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। उन्होंने वर्ष 1999 में आम जनता और छात्रों में राष्ट्रीय भावना, जागरूकता, देशभक्ति पैदा करने और विविधता में एकता की अवधारणा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 'नैशनल वेल्फेयर अवेयरनेस मूवमेंट'' (एनडब्ल्यूएएम) की शुरुआत की। एनडब्ल्यूएएम की स्थापना से ही अध्यक्ष के रूप में वह पूर्ण समर्पण के साथ अपनी सेवाएं दे रहे हैं। उन्होंने संगोष्ठियों, जागरूकता कार्यक्रमों, शांति रैलियों और मतदाता जागरूकता आंदोलन का आयोजन किया। उन्होंने कोविड–19 महामारी के दौरान डब्ल्यूसीएससी के माध्यम से तमिलनाडु सरकार को 2 करोड़ रुपये का अंशदान दिया। तमिलइलक्किया पेरवई ट्रस्ट के अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने तमिल विद्वानों को 50000/– रुपए के नकद पुरस्कार के साथ एसकेएम साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया।

7. डॉ. मयिलानन्दन को वर्ष 2013 में सामाजिक कार्य के लिए पद्मश्री पुरस्कार, राष्ट्रीय उत्पादकता पुरस्कार (8 बार); राष्ट्रीय सुरक्षा पुरस्कार (2 बार); कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात संवर्धन पुरस्कार (5 बार); वर्ष 1978 में राष्ट्रीय शीर्ष दस श्रेणी में भारतीय जेसीज द्वारा उत्कृष्ट युवा व्यक्ति पुरस्कार, वर्ष 2004 में रोटरी इंटरनेशनल द्वारा लाइफटाइम अचीवर पुरस्कार और व्यवसाय व्यक्तिगत श्रेणी–तमिलनाडु के अंतर्गत सर्वश्रेष्ठ आयकरदाता पुरस्कार (2 बार) के साथ–साथ कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें एसआरएम विश्वविद्यालय, सोनीपत, दिल्ली एनसीआर द्वारा समाजसेवा में उनके असाधारण योगदान के लिए 'मानद डॉक्टरेट उपाधि' से सम्मानित किया गया।

SHRI MAMMOOTTY

Shri Mohammed Kutty Panaparambil Ismail alias Mammootty is an Indian Film Actor and Producer who works in South Indian language cinema but predominantly in Malayalam film industry.

2. Born on 07th September, 1951, Shri Mammootty's father was an agriculturist, deeply rooted in farming and rural life. His dedication to agriculture and simple living played an important role in shaping the values of discipline, humility and hard work in the family. This background greatly influenced his grounded personality and outlook on life. He was raised in Vaikkom in Kottayam District of Kerala, the family later shifted to Ernakulam District where he went to complete his studies. A Law Graduate from the Government Law College, Ernakulam, Kerala, he was practicing Law in the Courts of Kerala before taking up acting as a profession.

3. In a career spanning five decades, Shri Mammootty has acted in over 400 films, mainly in Malayalam, with several in Tamil, Telugu, Kannada, Hindi and English. He is regarded as one of the greatest actors in Indian cinema. On the occasion of celebrating 100 years of Indian Cinema in 2013, his character portrayal in the Malayalam Film 'Mathilukal' was listed among the 25 greatest acting performances of Indian Cinema by Forbes India. At the 55th (year 2025) Kerala State Film Awards, '*Bramayugam*' received multiple honours and for Mammootty it fetched him his 10th Kerala State Film Award. '*Bramayugam*' has crossed regional boundaries to earn international recognition and was selected for screening at the Academy Museum of Motion Pictures in Los Angeles. The screening is part of the museum's curated program titled: "Where the Forest Meets the Sea: Folklore from Around the World"—a special series celebrating films that draw deeply from mythology, folklore, oral traditions and cultural storytelling across global cinema. It is the *only Indian film* featured in the "Where the Forest Meets the Sea" category at the Academy Museum in 2026.

4. Shri Mammootty is widely respected as a goodwill ambassador for numerous social causes and a patron of several charitable initiatives. Beyond his contributions to cinema, he has consistently used his influence to support humanitarian efforts and community development. He is actively involved in initiatives aimed at reducing social inequalities and has shown a strong commitment toward the eradication of child labor. His dedication to social responsibility reflects his deep concern for creating a more just and inclusive society.

5. Shri Mammootty has won three National Awards Film Awards for Best Actor from the Government of India and ten State Film Awards for from the Government of Kerala. Besides, he has also won fifteen Film fare Awards South in Best Actor category. He has also won the prestigious Kerala Film Critics Award, eleven times. For his contributions to Films and Art, he was honoured with Padma Shri in 1998. The University of Calicut, Kerala bestowed him an Honorary Doctorate Degree in 2010 for his contribution to films and art. The University of Kerala conferred him Doctor of Letters degree in 2010.

श्री मंमूट्टी

श्री मोहम्मद कुट्टी पनापराम्बिल इस्माइल उर्फ मंमूट्टी एक भारतीय फिल्म अभिनेता और निर्माता हैं, जो दक्षिण भारतीय भाषा के सिनेमा में हैं, लेकिन मुख्य रूप से मलयालम फिल्म उद्योग में काम करते हैं।

2. 07 सितम्बर, 1951 को जन्मे, श्री मंमूट्टी के पिता एक कृषक थे, जिनकी जड़ें कृषि और ग्रामीण जीवन में रची बसी थी। कृषि और सरल जीवन के प्रति उनके समर्पण ने परिवार में अनुशासन, विनम्रता और कड़ी मेहनत जैसे मूल्यों को जीवन में आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस पृष्ठभूमि ने उनके सरल व्यक्तित्व और जीवन के प्रति दृष्टिकोण को बहुत प्रभावित किया। उनका पालन–पोषण केरल के कोट्टायम जिले के वैकोम में हुआ था, परिवार बाद में एर्नाकुलम जिले में स्थानांतरित हो गया जहां उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी की। गवर्नमेंट लॉ कॉलेज, एर्नाकुलम, केरल से कानून में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात, एक पेशे के रूप में अभिनय को अपनाने से पहले उन्होंने केरल के न्यायालयों में वकालत की।

3. पांच दशकों के करियर में श्री मंमूट्टी ने 400 से अधिक फिल्मों में अभिनय किया है, जिनमें मुख्य रूप से मलयालम के साथ–साथ कई तमिल, तेलुगु, कन्नड़, हिंदी और अंग्रेजी में कई फिल्मों में काम किया। उन्हें भारतीय सिनेमा के महानतम अभिनेताओं में से एक माना जाता है। वर्ष 2013 में भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर, मलयालम फिल्म 'मथिलुकल' में उनके चरित्र चित्रण को फोर्ब्स इंडिया द्वारा भारतीय सिनेमा के 25 महानतम अभिनय प्रदर्शनों में सूचीबद्ध किया गया। 55वें (वर्ष 2025) केरल राज्य फिल्म पुरस्कारों में, 'ब्रह्मयुगम' को कई सम्मान मिले और श्री मंमूट्टी को इसके लिए 10वां केरल राज्य फिल्म पुरस्कार मिला। 'ब्रह्मयुगम' ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान हासिल कर देश से बाहर इसे लॉस एंजिल्स में एकेडमी म्यूजियम ऑफ मोशन पिक्चर्स में स्क्रीनिंग के लिए चुना गया । स्क्रीनिंग, संग्रहालय के क्यूरेटेड कार्यक्रम का हिस्सा है, जिसका शीर्षक हैः "व्हेयर द फॉरेस्ट मीट्स द सीः फोकलोर फ्रॉम द वर्ल्ड" – एक विशेष श्रृंखला जो वैश्विक सिनेमा में पौराणिक कथाओं, लोककथाओं, मौखिक परंपराओं और सांस्कृतिक स्टोरी टेलिंग से गहन रूप से जुडी है। यह एकमात्र भारतीय फिल्म है जिसे वर्ष 2026 में अकादमी संग्रहालय में "व्हेयर द फॉरेस्ट मीट्स द सी" श्रेणी में दिखाया गया है।

4. श्री मंमूट्टी को कई सामाजिक कल्याणकारी प्रयासों के लिए एक गुडविल अमबैसेडर और कई धर्मार्थ पहलों के संरक्षक के रूप में व्यापक रूप से सम्मानित किया गया। सिनेमा में अपने योगदान के अलावा, उन्होंने मानवीय प्रयासों और सामुदायिक विकास में सहयोग करने के लिए लगातार अपने प्रभावकारी व्यक्तित्व का उपयोग किया है। वह सामाजिक असमानताओं को कम करने के उद्देश्य से की गई पहलों में सक्रिय रूप से शामिल रहे हैं और उन्होंने बाल श्रम के उन्मूलन के प्रति एक प्रतिबद्धता दिखाई है। सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति उनका समर्पण एक अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी समाज बनाने के प्रति उनकी गहरी चिंता को दर्शाता है।

5. श्री मंमूट्टी ने भारत सरकार से सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के लिए तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और केरल सरकार से दस राज्य फिल्म पुरस्कार जीते हैं। इसके अलावा, उन्होंने सर्वश्रेष्ठ अभिनेता श्रेणी में पंद्रह फिल्म फेयर पुरस्कार दक्षिण के भी जीते हैं। उन्होंने ग्यारह बार प्रतिष्ठित केरल फिल्म क्रिटिक्स अवार्ड भी जीता है। फिल्मों और कला में उनके योगदान के लिए, उन्हें वर्ष 1998 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया। कालीकट विश्वविद्यालय, केरल ने उन्हें फिल्मों और कला में उनके योगदान के लिए वर्ष 2010 में डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया। केरल विश्वविद्यालय ने उन्हें वर्ष 2010 में डॉक्टर ऑफ लेटर्स की उपाधि से सम्मानित किया।

SHRI VELLAPPALLY NATESAN

Shri Vellappally Natessan is a prominent social leader and distinguished public figure from Kerala. He is the General Secretary of Sree Narayana Dharma Paripalana (SNDP) Yogam and also the Secretary of Sree Narayana Trusts.

2. Born on 10th September 1937, at Kanichikulangara in Alappuzha district, Shri Natesan emerged as a prominent leader committed to the social and educational advancement of backward classes. Founded in 1903 by Sree Narayana Guru, the SNDP Yogam was envisioned as a movement to promote social equality through education, self-respect, and collective organisation. Under Shri Natesan, from 1996 onwards, the organisation expanded from a symbolic reform body into a modern socio-economic movement with extensive grassroots reach. Under his leadership, the number of shakhas doubled from around 3,000 to 6,000, forming the organisational backbone of the Yogam, These units function as decentralised hubs for social reform, cultural activities, educational awareness, youth engagement, and welfare initiatives.

3. Shri Natesan also introduced family units at the shakha level, extending the organisation's reach into households and providing platforms for women's leadership, educational support, savings promotion, social awareness, and community cohesion. Beyond Kerala, SNDP Unions were established in Tamil Nadu, Karnataka, Maharashtra, Delhi, and the Gulf—supporting the Malayali diaspora with organisational guidance, cultural continuity, and educational initiatives. Alongside shakhas, microfinance programmes, and educational institutions, these efforts transformed the SNDP Yogam into one of South India's most structured community-led socio- educational movements, translating Sree Narayana Guru's ideals of equality, dignity, and empowerment into lasting institutions and everyday practice.

4. Education remained the Yogam's most enduring contribution under Natesan's guidance. Through the Sree Narayana Trust, the network grew from 40 to over 130 institutions, including schools, colleges, and technical centres, many established in rural and semi-urban areas to benefit socially and economically disadvantaged groups. Complementing education, he expanded charitable clinics, disaster relief, and social welfare programmes, reinforcing the Yogam as a holistic community institution. From a policy perspective, his initiatives have strengthened Kerala's human development outcomes, supported first-generation learners, and acted as a bridge between marginalised communities and the state SNDP Yogam under his exemplifies a community-driven model of social capital formation, demonstrating sustained relevance in public health, education, and grassroots policy engagement.

श्री वेल्लाप्पल्ली नटेशन

श्री वेल्लाप्पल्ली नटेशन केरल के एक प्रमुख सामाजिक नेता और प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। वह श्री नारायण धर्म परिपालन (एसएनडीपी) योगम के महासचिव और श्री नारायण ट्रस्ट के सचिव भी हैं।

2. 10 सितम्बर, 1937 को अलप्पुझा जिले के कनिचिकुलंगरा में जन्मे, श्री नटेशन, पिछड़े वर्गों की सामाजिक और शैक्षिक उन्नति के लिए प्रतिबद्ध, एक प्रमुख नेता के रूप में उभरे। श्री नारायण गुरु द्वारा वर्ष 1903 में स्थापित, एसएनडीपी योगम की कल्पना शिक्षा, आत्म–सम्मान और सामूहिक संगठन के माध्यम से सामाजिक समानता को बढ़ावा देने के लिए एक आंदोलन के रूप में की गई थी। उनके नेतृत्व में, वर्ष 1996 के बाद से, संगठन का विस्तार व्यापक जमीनी स्तर पर पहुंच के साथ एक प्रतीकात्मक सुधार निकाय से एक आधुनिक सामाजिक–आर्थिक आंदोलनके रूप में हुआ। उनके नेतृत्व में, शाखाओं की संख्या लगभग 3,000 से दोगुनी होकर 6,000 हुई और यह योगम की संगठनात्मक रीढ़ के रूप में उभरकर सामने आई। ये इकाइयाँ सामाजिक सुधार, सांस्कृतिक गतिविधियों, शैक्षिक जागरूकता, युवा जुड़ाव और कल्याणकारी पहलों के लिए विकेन्द्रीकृत केंद्रों के रूप में कार्य करती हैं।

3. श्री नटेशन ने शाखा स्तर पर परिवार इकाइयों की भी शुरुआत की और संगठन को प्रत्येक घर तक पहुंचाया और महिलाओं के नेतृत्व, शैक्षिक सहायता, बचत संवर्धन, सामाजिक जागरूकता और सामुदायिक एकजुटता के लिए अवसर प्रदान किए। केरल से बाहर, तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र, दिल्ली और खाड़ी देशों में संगठनात्मक मार्गदर्शन, सांस्कृतिक निरंतरता और शैक्षिक पहल के साथ मलयाली प्रवासियों की सहायता करने के लिए एसएनडीपी संघों की स्थापना की गई। इन प्रयासों के कारण शाखाओं, माइक्रोफाइनेंस कार्यक्रमों और शैक्षणिक संस्थानों के साथ–साथ एसएनडीपी योगम दक्षिण भारत के सबसे अधिक संरचित समुदाय–नेतृत्व वाले सामाजिक–शैक्षिक आंदोलनों में से एक बना। इससे श्री नारायण गुरु के समानता, गरिमा और सशक्तिकरण के आदर्श स्थायी संस्थानों और रोजमर्रा के अभ्यास का एक भाग बन गए।

4. श्री नटेशन के मार्गदर्शन में शिक्षा योगम का सबसे स्थायी योगदान रहा। श्री नारायण ट्रस्ट के माध्यम से, इस नेटवर्क में स्कूल, कॉलेज और तकनीकी केंद्रों सहित संस्थानों की संख्या 40 से बढ़कर 130 से अधिक हो गई, जिनमें से कई सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों को लाभ पहुंचाने के लिए ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में स्थापित किए गए हैं। शिक्षा को पूरक बनाते हुए, उन्होंने धर्मार्थ क्लीनिक, आपदा राहत और सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों का विस्तार किया, जिससे योगम एक समग्र सामुदायिक संस्थान के रूप में सुदृढ़ बना। नीतिगत दृष्टिकोण से, उनकी पहलों ने केरल के मानव–संबंधी विकास परिणामों को सुदृढ़ किया, पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों की सहायता की और वंचित समुदायों और राज्य के बीच एक सेतु के रूप में कार्य किया। उनके नेतृत्व में, एसएनडीपी योगम सामाजिक पूंजी निर्माण के एक समुदायद्वारा संचालित मॉडल का उदाहरण है, जो लोगों के स्वास्थ्य, शिक्षा और जमीनी स्तर पर नीति जुड़ाव में निरंतर प्रासंगिक बना हुआ है।

DR. DATTATREYUDU NORI

Dr. Dattatreyudu Nori is an internationally acclaimed oncologist, pioneering physician, and an important thought leader. During his career spanning over four decades, he has held the positions of Professor and Chairman of Oncology and Director of the Cancer Center at the world-renowned Cornell Medical Center in New York. He is widely recognized for pioneering numerous cancer treatment techniques that have contributed to significant improvement in cure rates and saving lives globally.

2. Born on 18th October, 1947, Dr. Nori received his Bachelor of Medicine degree from Kurnool Medical College in 1973 and his Postgraduate medical degree from Osmania University in 1976. After receiving his postgraduate degree in India, he joined the world-renowned Memorial Sloan-Kettering Cancer Center in the U.S. in 1976. During his academic career, he made groundbreaking and sentinel contributions to the field of cancer in the U.S., while always maintaining a keen interest in applying these advances to help cancer patients in India.

3. Dr. Nori has extended his expertise and experience to various governments and private organizations to establish comprehensive Cancer Centers. In early 2000, he helped the Government of Andhra Pradesh and was one of the founding members and Chief Scientific Advisor of the Basavatarakam Indo-American Cancer and Research Institute in Hyderabad.

4. Dr. Nori serves as a consultant to the United Nations International Atomic Energy Agency (IAEA), advising on the formulation of guidelines for cancer treatment in developing countries. He has written over 300 scientific articles and four books in oncology, and trained over 300 residents and fellows who are now occupying leadership positions around the globe. In 2023, he was appointed as Senior Advisor to the world-renowned Memorial Sloan Kettering Cancer Center- Chennai, India, and is currently appointed as advisor to the Government of Andhra Pradesh and the Government of Telangana for Cancer Care.

5. Dr. Nori's distinguished achievements in the field of oncology have been recognized with many fellowships, awards, and honours. In 2014, he was honored with the highest civilian award in the U.S., "The Ellis Island Medal of Honor". The Government of India recognized his contributions to medicine with the "Padma Shri" Award in 2015. He received the "Tribute to Life" Award presented by the American Cancer Society and the "Most Distinguished Physician Award" presented by Memorial Sloan-Kettering Cancer Center. In 2017, the Indian Cancer Congress honoured him with their highest recognition, the "Living Legend in Cancer" award, for his contributions to cancer care in India, the U.S., and around the globe.

डॉ. दत्तात्रेयुडु नोरी

डॉ. दत्तात्रेयुडु नोरी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक प्रशंसित ऑन्कोलॉजिस्ट, अग्रणी चिकित्सक और एक महत्वपूर्ण बुद्धिजीवी नेता हैं। चार दशकों से अधिक के अपने करियर के दौरान, उन्होंने न्यूयॉर्क में विश्व प्रसिद्ध कॉर्नेल मेडिकल सेंटर में ऑन्कोलॉजी के प्रोफेसर और अध्यक्ष और साथ ही कैंसर केंद्र के निदेशक के पद पर कार्य किया है। उन्हें कैंसर की कई उपचार तकनीकों का का पता लगाने में अग्रणी भूमिका के लिए व्यापक रूप से पहचाना जाता है, जिसके द्वारा इलाज की दरों में महत्वपूर्ण सुधार हुआ और वैश्विक स्तर पर जीवन बचाने में योगदान मिला है।

2. 18 अक्टूबर, 1947 को जन्मे डॉ. नोरी ने वर्ष 1973 में कुरनूल मेडिकल कॉलेज से बैचलर ऑफ मेडिसिन की डिग्री और वर्ष 1976 में उस्मानिया विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर चिकित्सा की डिग्री प्राप्त की। भारत में अपनी स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त करने के बाद, वह वर्ष 1976 में अमेरिका में विश्व प्रसिद्ध मेमोरियल स्लोन–केटरिंग कैंसर सेंटर से जुड़ गए। अपने शैक्षणिक करियर के दौरान, उन्होंने भारत में उन्नत तकनीकों द्वारा कैंसर रोगियों की मदद करने में गहरी रूचि बनाए रखते हुए, अमेरिका में कैंसर के क्षेत्र में अभूतपूर्व और अग्रणी योगदान दिया ।

3. डॉ. नोरी ने व्यापक कैंसर केंद्रों की स्थापना के लिए विभिन्न सरकारों और निजी संगठनों के साथ मिलकर अपनी विशेषज्ञता और अनुभव के स्तर का विस्तार किया है। वर्ष 2000 के प्रारंभ में, उन्होंने आंध्र प्रदेश सरकार की मदद की और हैदराबाद में बसवतारकम इंडो–अमेरिकन कैंसर एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट के संस्थापक सदस्यों और मुख्य वैज्ञानिक सलाहकारों में से एक रहे।

4. विकासशील देशों में कैंसर उपचार के लिए दिशानिर्देश तैयार करने संबंधी सलाह देने को उत्तरदायित्व के साथ डॉ. नोरी ने संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) के सलाहकार के रूप में कार्य किया। उन्होंने ऑन्कोलॉजी के क्षेत्र में 300 से अधिक वैज्ञानिक लेख और चार पुस्तकें लिखी हैं, और 300 से अधिक रेजिडेंट चिकित्सकों और फेलो को प्रशिक्षित किया है जो अब दुनिया भर में अग्रणी पदों पर कार्य कर रहे हैं। वर्ष 2023 में, उन्हें विश्व प्रसिद्ध मेमोरियल स्लोन केटरिंग कैंसर सेंटर–चेन्नई, भारत के वरिष्ठ सलाहकार के रूप में नियुक्त किया गया, और वर्तमान में उन्हें आंध्र प्रदेश सरकार और तेलंगाना सरकार के लिए कैंसर देखभाल के सलाहकार के रूप में नियुक्त किया गया है।

5. ऑन्कोलॉजी के क्षेत्र में डॉ. नोरी की विशिष्ट उपलब्धियों को कई फेलोशिप, पुरस्कार और सम्मानों से नवाजा गया है। वर्ष 2014 में उन्हें अमेरिका के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'एलिस आइलैंड मेडल ऑफ ऑनर' से सम्मानित किया गया । भारत सरकार ने चिकित्सा के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए वर्ष 2015 में उन्हें 'पद्म श्री' पुरस्कार से सम्मानित किया। उन्हें अमेरिकन कैंसर सोसाइटी द्वारा 'ट्रिब्यूट टू लाइफ' पुरस्कार और मेमोरियल स्लोन–केटरिंग कैंसर सेंटर द्वारा 'मोस्ट डिस्टिंग्विश्ड फिजिशियन अवार्ड' से सम्मानित किया गया। वर्ष 2017 में, भारतीय कैंसर कांग्रेस ने भारत, अमेरिका और दुनिया भर में कैंसर देखभाल में उनके योगदान के लिए उन्हें अपने सर्वोच्च सम्मान, 'लिविंग लीजेंड इन कैंसर' पुरस्कार से सम्मानित किया।

SHRI SHIBU SOREN (POSTHUMOUS)

Shri Shibu Soren, reverentially known as *Dishom Guru,* was one of India's foremost Adivasi mass leaders, social reformers and a principal architect of the Jharkhand movement. He was the enduring moral and political voice of tribal communities whose aspirations for dignity, identity, justice and self-rule had long remained unaddressed. His life gave lasting articulation to the ethical defence of *Jal, Jangal and Zameen* and fundamentally altered the terms of political participation for Adivasi communities in India.

2. Born on 11th January, 1944 in Nemra village, Ramgarh, Shri Soren belonged to a modest Santhal Adivasi family. His public life was decisively shaped by the killing of his father, Shri Sobaran Soren, on 27 November 1957 by moneylenders, an event that instilled in him a lifelong resolve to fight exploitation, land alienation, usury and social oppression. Though his formal schooling was limited, he acquired from an early age a deep understanding of tribal oral traditions, customary law and village economy, which he carried into every sphere of his later public life.

3. From a young age, Shri Soren dedicated himself to organising Adivasi communities and the rural poor. He founded the Sonot Santhal Samaj in 1969 and the Santhal Navyuvak Sangh, and established an ashram at Tundi in Dhanbad district to take up the cause of the poor. He pioneered the Ratri Pathshala movement, starting night schools at Tundi which soon spread to Giridih, Jamtara and Dumka, where labourers, children and elders who worked through the day could learn to read, write and understand village economy - a service of learning for which Santhal elders honoured him with the title Dishorn Guru. Through the 1970s and 1980s he led a sustained *Sharab-bandi* campaign, viewing liquor as an instrument of exploitation that eroded Adivasi dignity, family life and community savings, and took direct action to close illegal liquor dens in Santhal villages. Between 1965 and 1970, he led the historic *Dhan Katni Andolan* against the *Mahajani* system, mobilising tribal women to harvest paddy from lands forcibly taken by moneylenders while men stood guard, thereby reclaiming alienated tribal lands and restoring dignity to dispossessed families. He also gave a powerful voice to Adivasi communities threatened by displacement from dams, mines and industrial projects; when four tribal villages were uprooted by the Tenughat Thermal Power Station; he camped at the site for three months to secure jobs and compensation for the affected families, and campaigned consistently against involuntary displacement and distress migration from the region.

4. Shri Soren carried this people's mandate from grassroots resistance to the highest institutions of public life. In 1972, together with Shri A. K. Roy and Shri Binod Bihari Mahato, he helped found the Jharkhand Mukti Morcha, which he built into the principal political expression of the Jharkhand movement. Under his leadership, the struggle for a separate State became inseparably linked to the defence of Jal, Jangal, Zameen and to the protection of tribal identity, customary rights and ecological balance - culminating in the formation of the State of Jharkhand on 15 November 2000. He was first elected to the Lok Sabha from Dumka in 1980 and was subsequently returned in 1989, 1991, 1996, 2002, 2004, 2009 and 2014. He also served in the Rajya Sabha from 8 July 1998 to 18 July 2001, from 10 April 2002 to 2 June 2002, and from 22 June 2020 until 4 August 2025. He served three terms as Chief Minister of Jharkhand - 2 March to 12 March 2005, 27 August 2008 to 18 January 2009, and 30 December 2009 to 31 May 2010 - and also held office as Union Minister for Coal.

5. For millions, Shri Soren was more than a political leader; he was a custodian, of memory, resistance and hope. Revered across generations as *Dishorn Guru,* and honoured as *Dharti Aaba* in several parts of the Santhal Pargana for his work among the dispossessed, he gave lasting voice to tribal rights, social justice, democratic mobilisation and the protection of land, forest and livelihood.

6. Shri Soren passed away on 4th August, 2025.

श्री शिबू सोरेन (मरणोपरांत)

श्री शिबू सोरेन, जिन्हें श्रद्धापूर्वक "दिशोम गुरु" के नाम से जाना जाता है, भारत के प्रमुख आदिवासी जननेता, सामाजिक सुधारक तथा झारखंड आंदोलन के मुख्य शिल्पकारों में से एक थे। वे आदिवासी समुदायों की गरिमा, पहचान, न्याय तथा स्वशासन से संबंधित दीर्घकालीन आकांक्षाओं के सुदृढ़ नैतिक एवं राजनीतिक प्रवक्ता थे। उनका जीवन जल, जंगल एवं जमीन के नैतिक संरक्षण के सिद्धांत की स्थायी अभिव्यक्ति का द्योतक रहा है तथा इसने भारत में आदिवासी समुदायों की राजनीतिक सहभागिता के स्वरूप एवं मानकों को मौलिक रूप से परिवर्तित किया है।

2. 11 जनवरी, 1944 को रामगढ़ जिले के नेमरा ग्राम में जन्मे, श्री सोरेन एक साधारण संथाल आदिवासी परिवार से संबंधित थे। उनके सार्वजनिक जीवन की दिशा दिनांक 27 नवम्बर 1957 को उनके पिता, श्री सोबरन सोरेन, की महाजनों द्वारा की गई हत्या की घटना से निर्णायक रूप से प्रभावित हुई। इस घटना ने उनमें शोषण, भूमि–वंचना, साहूकारी प्रथा तथा सामाजिक उत्पीड़न के विरुद्ध आजीवन संघर्ष का दृढ़ संकल्प विकसित किया। यद्यपि उनकी औपचारिक शिक्षा सीमित रही, तथापि उन्होंने प्रारंभिक अवस्था से ही आदिवासी मौखिक परंपराओं, प्रथागत विधि एवं ग्राम्य अर्थव्यवस्था का गहन ज्ञान अर्जित किया, जिसे उन्होंने अपने समस्त आगामी सार्वजनिक जीवन एवं गतिविधियों में प्रभावी रूप से आत्मसात एवं अनुप्रयुक्त किया।

3. युवा अवस्था से ही श्री सोरेन ने स्वयं को आदिवासी समुदायों तथा ग्रामीण निर्धन वर्ग के संगठन हेतु समर्पित कर दिया। उन्होंने वर्ष 1969 में सोनोत संथाल समाज तथा संथाल नवयुवक संघ की स्थापना की तथा धनबाद जिले के टुंडी में एक आश्रम की स्थापना कर वंचित वर्गों के हितों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु कार्य प्रारंभ किया। उन्होंने रात्रि पाठशाला आंदोलन का सूत्रपात किया, जिसके अंतर्गत टुंडी में रात्रिकालीन विद्यालय स्थापित किए गए, जो शीघ्र ही गिरिडीह, जामताड़ा एवं दुमका तक विस्तारित हुए। इन पाठशालाओं के माध्यम से दिनभर श्रम में संलग्न रहने वाले श्रमिकों, बच्चों एवं वृद्धजनों को साक्षरता, लेखन कौशल तथा ग्राम्य अर्थव्यवस्था की समझ प्रदान की गई। इस लोकहितकारी शैक्षिक सेवा के लिए संथाल समुदाय के वरिष्ठजनों द्वारा उन्हें "दिशोम गुरु" की उपाधि से सम्मानित किया गया। वर्ष 1970 एवं 1980 के दशक में उन्होंने सतत रूप से "शराबबंदी" अभियान का नेतृत्व किया, जिसमें मदिरा को शोषण के एक साधन के रूप में निरूपित किया गया, जो आदिवासी गरिमा, पारिवारिक जीवन एवं सामुदायिक संसाधनों को क्षीण करता है। इस क्रम में उन्होंने संथाल ग्रामों में अवैध मदिरा विक्रय केंद्रों के विरुद्ध प्रत्यक्ष कार्रवाई कर उन्हें बंद कराने हेतु सक्रिय भूमिका निभाई। वर्ष 1965 से 1970 के मध्य उन्होंने "धान कटनी आंदोलन" का नेतृत्व किया, जो महाजनी प्रथा के विरुद्ध एक ऐतिहासिक जनांदोलन के रूप में स्थापित हुआ। इस आंदोलन के अंतर्गत आदिवासी महिलाओं को संगठित कर उन भूमियों से धान की कटाई कराई गई, जिन्हें महाजनों द्वारा बलपूर्वक अधिग्रहित किया गया था, जबकि पुरुषों द्वारा सुरक्षा सुनिश्चित की गई। इस प्रकार आदिवासी समुदाय की भूमियों की पुनः प्राप्ति सुनिश्चित करते हुए विस्थापित परिवारों की गरिमा की पुनर्स्थापना की गई। उन्होंने बांधों, खनन एवं औद्योगिक परियोजनाओं के कारण विस्थापन के संकट का सामना कर रहे आदिवासी समुदायों को सशक्त स्वर प्रदान किया। टेनुघाट ताप विद्युत परियोजना के कारण चार आदिवासी ग्रामों के विस्थापन की स्थिति में उन्होंने तीन माह तक स्थल पर प्रवास कर प्रभावित परिवारों के लिए रोजगार एवं मुआवजे की व्यवस्था सुनिश्चित कराई। साथ ही, उन्होंने क्षेत्र में अनैच्छिक विस्थापन एवं बाध्यकारी पलायन के विरुद्ध सतत अभियान चलाया।

4. श्री सोरेन ने जन–आधारित संघर्ष से प्राप्त जनादेश को सार्वजनिक जीवन की उच्चतम संस्थाओं तक पहुँचाया। वर्ष 1972 में उन्होंने श्री ए. के. रॉय और श्री बिनोद बिहारी महतो के साथ मिलकर झारखंड मुक्ति मोर्चा की स्थापना की, जिसे उन्होंने झारखंड आंदोलन की प्रमुख राजनीतिक अभिव्यक्ति के रूप में विकसित किया। उनके नेतृत्व में पृथक राज्य की माँग जल, जंगल, जमीन की रक्षा तथा आदिवासी अस्मिता, परम्परागत अधिकारों और पारिस्थितिक संतुलन के संरक्षण से अविभाज्य रूप से जुड़ गई, जिसकी परिणति 15 नवंबर 2000 को झारखंड राज्य के गठन में हुई। वे पहली बार 1980 में दुमका से लोक सभा के लिए निर्वाचित हुए और उसके बाद वर्ष 1989, 1991, 1996, 2002, 2004, 2009 तथा 2014 में पुनः निर्वाचित हुए। राज्य सभा में उनका कार्यकाल दिनांक 8 जुलाई 1998 से 18 जुलाई 2001 तक, दिनांक 10 अप्रैल 2002 से 2 जून 2002 तक, तथा दिनांक 22 जून 2020 से 4 अगस्त 2025 तक रहा। उन्होंने झारखंड के मुख्यमंत्री के रूप में तीन कार्यकाल – दिनांक 2 मार्च 2005 से 12 मार्च 2005, दिनांक 27 अगस्त 2008 से 18 जनवरी 2009, और दिनांक 30 दिसंबर 2009 से 31 मई 2010 तक – पूरे किए। इसके अतिरिक्त उन्होंने केंद्रीय कोयला मंत्री के रूप में भी कार्य किया।

5. लाखों लोगों के लिए श्री सोरेन केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि स्मृति, प्रतिरोध और आशा के संरक्षक थे। पीढ़ी–दर–पीढ़ी उन्हें श्दिशोम गुरुश के रूप में सम्मान मिला, और संथाल परगना के कई क्षेत्रों में वंचितों के बीच कार्य के कारण उन्हें श्धरती आबाश कहा गया। उन्होंने आदिवासी अधिकारों, सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक संगठनों और भूमि, वन तथा आजीविका की रक्षा को चिरस्थायी आवाज प्रदान की।

6. श्री सोरेन का 4 अगस्त, 2025 को निधन हो गया।

SMT. ALKA YAGNIK

Smt. Alka Yagnik is among India's most eminent playback singers and a distinguished exponent in the field of Art (Music - Playback Singing). Over a remarkable career spanning more than four decades, her mellifluous voice, artistic excellence, and sustained dedication have significantly enriched the cultural heritage of Indian cinema. Trained in Indian classical music under the guidance of her mother, Smt. Shubha Yagnik, a respected classical vocalist, she has rendered thousands of compositions across several Indian languages, many of which have become an integral and enduring part of the nation's musical legacy. Her contribution reflects not only artistic mastery but also a deep commitment to preserving and advancing the traditions of Indian film music.

2. Born on 20th March, 1960 in Kolkata, West Bengal, Smt. Yagnik embarked upon her musical journey with a strong classical foundation that shaped her distinctive artistic sensibility and vocal identity. She attained national prominence with the iconic song “Ek Do Teen” from the film Tezaab, which marked a defining moment in her career and established her as one of the leading voices of Indian cinema. Thereafter, she collaborated extensively with renowned composers and filmmakers, lending her voice to numerous compositions that have achieved enduring popularity and continue to resonate with audiences across regions, languages, and generations.

3. Smt. Yagnik's widely acclaimed and cherished songs are “Ek Do Teen” (Tezaab), “Meri Mehbooba” (Pardes), “Taal Se Taal Mila” (Taal), “Dil Ne Yeh Kaha Hai Dil Se” (Dhadkan), “O Re Chhori” (Lagaan), “Hum Tum” (Hum Tum), “Kuch Kuch Hota Hai” (Kuch Kuch Hota Hai), “Pardesi Pardesi” (Raja Hindustani), “Bole Chudiyan” (Kabhi Khushi Kabhi Gham), “Dilbar Dilbar” (Sirf Tum), “Chura Ke Dil Mera” (Main Khiladi Tu Anari), “Gali Mein Aaj Chand Nikla” (Zakhm), and “Agar Tum Saath Ho” (Tamasha). Her extensive repertoire reflects remarkable versatility, emotional depth, and artistic range, contributing significantly to the evolution and popular appeal of Indian film music while strengthening its cultural resonance.

4. Smt. Yagnik is the most popular music artist of all time on YouTube, with mention in the Guinness Book of World Records for achieving 17 billion streams in 2021 and 16.6 billion streams in 2020. As of 2026, she is the most streamed weekly music artist on YouTube, reflecting her enduring global reach and continued resonance with audiences across generations and digital platforms.

5. Smt. Yagnik's distinguished contribution to Indian music has been recognised with numerous prestigious honours and accolades. She is the recipient of two National Film Awards for Best Female Playback Singer, Seven Filmfare Awards for Best Female Playback Singer, and the Lata Mangeshkar Award, among other recognitions that acknowledge her excellence, dedication, and lasting influence within the music industry. Her sustained artistic achievements and continued relevance over decades stand as a testament to her exceptional talent and unwavering commitment to the art form.

श्रीमती अलका यागनिक

श्रीमती अलका यागनिक भारत की एक प्रख्यात पार्श्व गायिका हैं और कला (संगीत–पार्श्व गायन) के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित कलाकार हैं। चार दशक से अधिक की उल्लेखनीय गायन यात्रा में, उनका मधुर स्वर, कलात्मक उत्कृष्टता और निरंतर समर्पण ने भारतीय सिनेमा की सांस्कृतिक विरासत को अत्यधिक समृद्ध किया है। उन्होंने अपनी माँ श्रीमती शुभा याज्ञनिक के मार्गदर्शन में भारतीय शास्त्रीय संगीत सीखा जो एक सम्मानीय शास्त्रीय गायिका हैं, जिन्होंने कई भारतीय भाषाओं में हजारों रचनाएँ प्रस्तुत की हैं, जिनमें से कई राष्ट्र की संगीत विरासत का अभिन्न और स्थायी हिस्सा बन गई हैं। उनका योगदान न केवल कलात्मक महारत को दर्शाता है, बल्कि भारतीय फिल्म संगीत की परंपराओं को संरक्षित करने और आगे बढ़ाने की गहरी प्रतिबद्धता को भी प्रदर्शित करता है।

2. 20 मार्च, 1960 को कोलकाता, पश्चिम बंगाल में जन्मी, श्रीमती यागनिक ने एक ऐसी सशक्त शास्त्रीय संगीत नींव के साथ अपनी संगीत यात्रा शुरू की, जिसने उनकी विशिष्ट कलात्मक संवेदनशीलता और मुखर पहचान को आकार दिया। उन्होंने फिल्म तेजाब के प्रसिद्ध गीत ''एक दो तीन'' से राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की, जो उनके करियर में एक निर्णायक क्षण था जिससे वह भारतीय सिनेमा की एक अग्रणी आवाज बन गई। इसके बाद, उन्होंने प्रसिद्ध संगीतकारों और फिल्म निर्माताओं के साथ बड़े स्तर पर कार्य किया, ऐसे बहुत सारे गीतों को अपनी आवाज दी जो स्थायी लोकप्रियता हासिल कर चुके हैं और विभिन्न क्षेत्रों, भाषाओं और अलग–अलग पीढ़ियों के दर्शकों के बीच सुने जाते रहते हैं।

3. श्रीमती यागनिक को भरपूर प्रशंसा मिली है और उनके अत्यंत लोकप्रिय गीत हैं ''एक दो तीन'' (तेजाब), ''मेरी महबूबा'' (परदेस), ''ताल से ताल मिला'' (ताल), ''दिल ने ये कहा है दिल से'' (धड़कन), ''ओ रे छोरी'' (लगान), ''हम तुम'' (हम तुम), ''कुछ कुछ होता है'' (कुछ कुछ होता है), ''परदेसी परदेसी'' (राजा हिंदुस्तानी), ''बोले चूड़ियाँ'' (कभी खुशी कभी गम), ''दिलबर दिलबर'' (सिर्फ तुम), ''चुरा के दिल मेरा'' (मैं खिलाड़ी तू अनाड़ी), ''गली में आज चाँद निकला'' (जख्म), और ''अगर तुम साथ हो'' (तमाशा) आदि। उनके गाए गीतों की लम्बी सूची उल्लेखनीय बहुमुखी प्रतिभा, भावनात्मक गहराई और कलात्मक विस्तार को दर्शाती है, तथा भारतीय फिल्म संगीत के विकास और लोकप्रियता में महत्वपूर्ण योगदान देती है, और इसके सांस्कृतिक स्वरूप को मजबूत करती है।

4. श्रीमती यागनिक यूट्यूब पर अब तक की सबसे लोकप्रिय संगीत कलाकार हैं और 2021 में 17 बिलियन और 2020 में 16.6 बिलियन स्ट्रीम हासिल करने के लिए उनका उल्लेख गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में किया गया है। 2026 तक, वह यूट्यूब पर सबसे अधिक स्ट्रीम की जाने वाली साप्ताहिक संगीत कलाकार है, जिससे पीढ़ियों के बीच और डिजिटल प्लेटफार्मों के दर्शकों के साथ उनकी स्थायी वैश्विक पहुंच और निरंतर लोकप्रियता का पता चलता है।

5. श्रीमती यागनिक के भारतीय संगीत में विशिष्ट योगदान के लिए कई प्रतिष्ठित सम्मान और पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उन्हें सर्वश्रेष्ठ महिला पार्श्व गायिका के लिए दो बार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ महिला पार्श्व गायिका के लिए सात बार फिल्मफेयर पुरस्कार और लता मंगेशकर पुरस्कार और अन्य पुरस्कार प्रदान किए गए हैं, जो संगीत उद्योग में उनकी उत्कृष्टता, समर्पण और गहरे प्रभाव का सम्मान है। दशकों से उनकी निरंतर कलात्मक उपलब्धियां और निरंतर लोकप्रियता उनकी असाधारण प्रतिभा और कला के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

SHRI NURUDDIN AHMED

Shri Nuruddin Ahmed is a visionary Art Director, Sculptor and Set Designer who has redefined the visual landscape of Assamese Art and Culture through his pioneering work in Mobile Theatre, Films and Television and monumental public illustrations. He is widely recognised for introducing modern techniques in Sculpture and Stagecraft to the region bringing traditional aesthetics with contemporary designs.

2. Born on 1st December, 1959 in Sathikuchi of Nalbari district Assam, Shri Ahmed persuaded his artistic education at the JJ College of Arts, Mumbai and studied the application of new innovative techniques in Sculpture at the Garhi Studio under Lalit Kala Academi, New Delhi. He began his career as a teacher at Lakhimpur Art School in 1978. He has dedicated over 49 years of his life in the field of Arts, designing Stagecraft for more than 450 Mobile Theatre plays for the premier groups and Art Direction in 5600 plays in different languages of Assam in particular and other languages of the country in general. In Cinema, he associated himself as Art Director in 75 Films across Assamese, Hindi, Bengali and Khasi languages. His filmography includes critically acclaimed works such as Agnisnan, Sarathi and National Award winner "Halodhia Chorayе Baodhan Khai".

3. Beyond performing arts, Shri Ahmed has executed monumental artistic projects of national significance. He holds the Limca Book of Records title for constructing the "Largest Goddess Durga Idol in the world" in 2017 with bamboo. In National Games 2007, South Asian Games 2016 he aligned himself as expert Stage craftor for the major events including Republic Day Tableaux in New Delhi. His artistic contributions also include designing the Textile Gallery at Srimanta Sankaradeva Kalakshetra and creating numerous statues of Cultural Icons across the state. He has constructed many Sculpture, Relief and other art works in Srimanta Sankaradeva Avirvab Kshetra at Bardowa.

4. Shri Ahmed is the recipient of numerous prestigious awards. The President of India conferred upon him the Sangeet Natak Akademi Award in 2017 for his outstanding contribution to Allied Theatre. He received 2nd Prize in RD Tableaux by the Ministry of Defence in 2003 and won multiple Gold Medals in the IITrade Fair. His lifetime contributions have been recognised with Assam Sports and Cultural Lifetime Achievement Award 2018, State Award for Stagecraft 1998, Best Costume Designer Award, 1998, "Times Icon of NE 2026" Award by Times of India.

श्री नुरूद्दीन अहमद

श्री नूरूद्दीन अहमद एक दूरदर्शी कला निर्देशक, मूर्तिकार और सेट डिजाइनर हैं, जिन्होंने मोबाइल थिएटर, फिल्मों और टेलीविजन तथा स्मारकीय सार्वजनिक चित्रों में अपने अग्रणी कार्य के माध्यम से असमिया कला और संस्कृति के परिदृश्य को पुनः परिभाषित किया। वे उस क्षेत्र में पारंपरिक सौंदर्यशास्त्र को समकालीन अभिकल्पों में ढालकर मूर्तिकला और स्टेजक्राफ्ट में आधुनिकी तकनीकों के प्रयोग के लिए जाने जाते हैं।

2. 1 दिसंबर, 1959 को असम के नलबाड़ी जिले के सतीकुची में जन्मे, श्री अहमद ने जेजे कॉलेज ऑफ आर्ट्स, मुंबई से कलात्मक शिक्षा प्राप्त की और नई दिल्ली स्थित ललित कला अकादमी के गढ़ी स्टूडियो में मूर्तिकला में नवाचारी तकनीकों के अनुप्रयोग का अध्ययन किया। उन्होंने वर्ष 1978 में लखीमपुर आर्ट स्कूल में एक शिक्षक के रूप में अपने करियर की शुरुआत की। उन्होंने अपने जीवन के लगभग 49 वर्ष कला क्षेत्र को समर्पित किए जिसमें उन्होनें प्रमुख समूहों के लिए आयोजित 450 से अधिक मोबाइल थिएटर नाटकों के लिए स्टेजक्राफ्ट डिजाइन किए और विशेष रूप से असम की विभिन्न भाषाओं तथा देश की अन्य भाषाओं में भी 5600 नाटकों में कला निर्देशन किया। सिनेमा क्षेत्र में, उन्होंने असमिया, हिंदी, बंगाली और खासी भाषाओं में 75 फिल्मों में कला निर्देशक के रूप में कार्य किया। उनकी फिल्मोग्राफी में अग्निस्नान, सारथी और राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता ''हलोधिया छोराए बावधन खाई'' जैसी आलोचकों द्वारा प्रशंसित कृतियाँ शामिल हैं।

3. प्रदर्शन कला के अतिरिक्त, श्री अहमद ने राष्ट्रीय महत्व की स्मारकीय कलात्मक परियोजनाओं में भी योगदान दिया। उन्हें वर्ष 2017 में बांस से ''दुनिया की सबसे बड़ी देवी दुर्गा की मूर्ति'' बनाने के लिए लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स की उपाधि से सम्मानित किया गया। नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस की झांकी सहित राष्ट्रीय खेल 2007, दक्षिण एशियाई खेल 2016 जैसे प्रमुख कार्यक्रमों में उन्होने एक विशेषज्ञ स्टेज क्राफ्टर के रूप में कार्य किया। उनके कलात्मक योगदान में श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र में टेक्सटाइल गैलरी को डिजाइन करना और राज्य में सांस्कृतिक प्रतीकों की विभिन्न मूर्तियां बनाना भी शामिल है। उन्होंने बारडोवा में श्रीमंत शंकरदेव अविर्वव क्षेत्र में कई मूर्तियों, उभरी हुई और अन्य कलाकृतियों का निर्माण किया।

4. श्री अहमद को कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। भारत के राष्ट्रपति ने उन्हें एलाइड थिएटर में उत्कृष्ट योगदान के लिए वर्ष 2017 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया। उन्हें वर्ष 2003 में रक्षा मंत्रालय द्वारा गणतंत्र दिवस झांकी में द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया और आईआईटीरेड फेयर में कई स्वर्ण पदकों से नवाजा गया। उनका जीवनकाल असम स्पोर्ट्स एंड कल्चरल लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड 2018, स्टेट अवार्ड फॉर स्टेजक्राफ्ट 1998, बेस्ट कॉस्ट्यूम डिजाइनर अवार्ड, 1998, टाइम्स ऑफ इंडिया द्वारा ''टाइम्स आइकन ऑफ एनई 2026'' अवार्ड से सुसज्जित है।

SHRI THIRUVAARUR BAKTHAVATHSALAM

Shri Thiruvaarur Bakthavathsalam is an eminent Mridangam maestro and one of the most distinguished exponents of Carnatic percussion.

2. Born on 19th April, 1957 into a family of traditional musicians in Thiruvaarur, Tanjore District of Tamil Nadu, Shri Bakthavathsalam initially began vocal training under his mother, Sangeetha Vidushi Smt. T. R. Anandavalli, and eventually took to the Mridangam under the guidance and tutelage of his maternal uncle, Mridangam Maestro Thiruvaarur Sri Krishnamurthy, in the gurukulavasam tradition, emerging as a performer of exceptional calibre at a very young age.

3. Shri Bakthavathsalam began accompanying his mother in concerts from the age of nine and moved to Chennai at sixteen, where he soon established himself as a leading mridangist performing in all major sabhas. His exceptional musicianship earned him a rare and highly selective recognition from All India Radio, which accorded him an unprecedented double promotion from 'B' to 'A' grade, bypassing the 'B High' grade-a distinction that was extremely uncommon during that period. Soon thereafter, he attained the coveted 'A Top' grade. He also had the honour of performing at the opening ceremony of the Olympic Games held in Barcelona in 1992.

4. Rooted in the Tanjore style, Shri Bakthavathsalam developed a distinct approach that enhances the overall aesthetic of a concert. Over his illustrious career, he has accompanied four generations of musicians and collaborated with a galaxy of eminent artistes from India and abroad. He has also performed in several jugalbandi concerts alongside stalwarts of Hindustani classical music, earning wide appreciation for his versatility and rhythmic command. In 1984, after hearing him perform at the Music Academy, Chennai, Sitar Maestro Pt. Ravi Shankar invited him to join his ensemble for an international tour. Through his Laya Madhuraa School of Music, he has trained innumerable disciples worldwide, many of whom are today leading performers and teachers.

5. Shri Bakthavathsalam has played a pioneering role in conceptualizing large-scale percussion ensembles such as the 108 Laya Madhuraa Mridanga Yagna, which was included in the Limca Book of Records, besides several other innovative mridangam ensembles in India and abroad. He also led the 76-Mridangam Ensemble in Kanchipuram, organized in commemoration of the 76th birthday of Pujya Sri Jayendra Saraswathi Swami of the Kanchi Kamakoti Mutt. He has represented India in numerous international festivals and has actively promoted classical music through performances, lecture-demonstrations under SPIC MACAY, and ICCR initiatives.

6. Shri Bakthavathsalam has received numerous honours in recognition of his outstanding contribution to Carnatic music, of which the following are only a few. He was conferred the Sangeet Natak Akademi Puraskar by Sangeet Natak Akademi, India's National Academy of Music, Dance and Drama in 2006 and the Kalaimamani award by the Government of Tamil Nadu in 1991. He received the Sangita Kalanidhi from The Madras Music Academy in 2021 and an Honorary Doctorate from the International Tamil University, Hawaii, USA, in 2019 for his service in the field of Mridangam. His first major honour, the title "Mridanga Vadhya Mani," was conferred upon him at a very young age by His Holiness Paramacharya Sri Chandrasekara Saraswathi Swamigal of Kanchi Kamakoti Mutt. He was later honoured with the Arsha Kala Bhushanam by His Holiness Pujyasri Swami Dayananda Saraswati in 2014 and the Naadha Nidhi by His Holiness Sri Ganapathi Sacchidananda Swamiji of Mysore. He also received the Lifetime Achievement Award from Bharatiya Vidya Bhavan, Chennai, in 2013.

श्री तिरुवारूर भक्तवत्सलम्

श्री तिरुवारूर भक्तवत्सलम् एक प्रतिष्ठित मृदंगम कलाकार हैं और कर्नाटक संगीत की ताल–वाद्य परंपरा के एक सबसे विशिष्ट कलाकार हैं।

2. 19 अप्रैल, 1957 को तमिलनाडु के तंजावूर जिले के तिरुवारूर में पारंपरिक संगीतकारों के एक परिवार में जन्मे, श्री भक्तवत्सलम् ने प्रारंभ में अपनी माता, संगीत विदूषी श्रीमती टी. आर. आनंदवल्ली से गायन का प्रशिक्षण प्राप्त किया। बाद में उन्होंने अपने मामा, प्रसिद्ध मृदंगम वादक तिरुवारूर श्री कृष्णमूर्ति के मार्गदर्शन और शिक्षण में गुरुदृकुलवास परंपरा के अंतर्गत मृदंगम का अभ्यास प्रारंभ किया और बहुत कम आयु में ही असाधारण प्रतिभा वाले कलाकार के रूप में उभरकर सामने आए।

3. श्री भक्तवत्सलम् ने नौ वर्ष की आयु से ही अपनी माता के साथ संगीत समारोहों में जाना प्रारंभ कर दिया था तथा सोलह वर्ष की आयु में वह चेन्नै आ गए, जहाँ शीघ्र ही उन्होंने सभी प्रमुख सभाओं में प्रस्तुति देकर एक अग्रणी मृदंगम वादक के रूप में प्रतिष्ठा स्थापित कर ली। उनकी असाधारण संगीत प्रतिभा के कारण आकाशवाणी ने उन्हें एक अत्यंत दुर्लभ और विशिष्ट सम्मान प्रदान किया, उन्हें बीच की 'बी हाई' श्रेणी को पार करते हुए 'बी' ग्रेड से सीधे 'ए' ग्रेड में पदोन्नत कर दिया गया जो उस समय अत्यंत असामान्य उपलब्धि मानी जाती थी। इसके कुछ ही समय बाद उन्हें प्रतिष्ठित 'ए टॉप' ग्रेड भी प्राप्त हुआ। उन्हें वर्ष 1992 में बार्सिलोना में आयोजित ओलंपिक खेलों के उद्घाटन समारोह में प्रस्तुति देने का गौरव भी प्राप्त हुआ।

4. तंजावूर शैली में रचे–बसे श्री भक्तवत्सलम् ने मृदंगम वादन की ऐसी विशिष्ट शैली विकसित की है, जिससे किसी भी संगीत समारोह की समग्र सौंदर्य–रचना और भी निखर जाती है। अपने दीर्घ और गौरवपूर्ण संगीत जीवन में उन्होंने चार पीढ़ियों के संगीतकारों के साथ कार्य किया है और भारत तथा विदेशों के अनेक दिग्गज कलाकारों के साथ मंच साझा किया है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के महान पंडितो के साथ कई जुगलबंदी प्रस्तुतियों में भी उन्होंने भाग लिया है, जहाँ उनकी बहुमुखी प्रतिभा और लय पर अद्भुत अधिकार की व्यापक सराहना हुई। वर्ष 1984 में चेन्नै की म्यूजिक अकादमी में उनका वादन सुनकर महान सितार वादक पंडित रवि शंकर इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उन्हें अपने अंतरराष्ट्रीय संगीत दौरे के लिए अपने दल में शामिल होने का निमंत्रण दिया। "लय मधुर स्कूल ऑफ म्यूजिक" के माध्यम से उन्होंने विश्वभर में असंख्य शिष्यों को प्रशिक्षित किया है, जिनमें से अनेक आज प्रमुख कलाकार और गुरु के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

5. श्री भक्तवत्सलम् ने 108 "लय मधुरा मृदंग यज्ञ" जैसे विशाल तालवाद्य वृंद की परिकल्पना और आयोजन में अग्रणी भूमिका निभाई है, जिसे लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में भी स्थान प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त भारत और विदेशों में उन्होंने कई अभिनव मृदंगम वृंद–प्रस्तुतियों का नेतृत्व किया है। उन्होंने कांची कामकोटि पीठ के पूज्य श्री जयेन्द्र सरस्वती स्वामी के 76वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में कांचीपुरम में आयोजित 76 मृदंगम वादकों के विशाल वृंद–वादन का नेतृत्व भी किया। उन्होंने अनेक अंतरराष्ट्रीय संगीत समारोहों में भारत का प्रतिनिधित्व किया है और एसपीआईसी एमएसीएवाई के व्याख्यान–प्रदर्शन तथा आईसीसीआर की सांस्कृतिक पहलों के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रसार में सक्रिय योगदान दिया है।

6. कर्नाटक संगीत के क्षेत्र में अपने उत्कृष्ट योगदान के लिए श्री भक्तवत्सलम् को अनेक सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें से यहाँ केवल कुछ का ही उल्लेख किया जा रहा है। उन्हें वर्ष 2006 में भारत की राष्ट्रीय संगीत, नृत्य और नाटक अकादमी की संगीत नाटक अकादमी द्वारा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और वर्ष 1991 में तमिलनाडु सरकार द्वारा कलायामामणि पुरस्कार से सम्मानित किया। वर्ष 2021 में उन्हें मद्रास म्यूजिक अकादमी द्वारा प्रतिष्ठित संगीत कलानिधि सम्मान प्रदान किया गया तथा मृदंगम के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए वर्ष 2019 में अन्तरराष्ट्रीय तमिल विश्वविद्यालय, हवाई (अमेरिका) ने उन्हें मानद डॉक्टरेट की उपाधि से अलंकृत किया। उनका पहला प्रमुख सम्मान "मृदंग वाद्य मणि" की उपाधि थी, जो उन्हें बहुत कम आयु में कांची कामकोटि मठ के पूज्य चन्द्रशेखर सरस्वती द्वारा प्रदान की गई। इसके बाद वर्ष 2014 में पूज्य स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा उन्हें आर्ष कला भूषणम् से सम्मानित किया गया तथा मैसूर के पूज्य गणपति सच्चिदानन्द द्वारा नाद निधि सम्मान प्रदान किया गया। वर्ष 2013 में भारतीय विद्या भवन, चेन्नै ने उन्हें लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया।,

DR. KRISHNAMURTY BALASUBRAMANIAN

Dr. Krishnamurty Balasubramanian is a distinguished scientist, who is widely known for his contribution to Science & Technology and is an institution builder.

2. Born on 2nd June, 1960, Dr. Balasubramanian, graduated from the Indian Institute of Technology (IIT). Kanpur in 1982 and proceeded to the School of Materials Science and Engineering at McMaster University, Canada to pursue a direct PhD on being awarded the prestigious ALCAN fellowship. He specialized in thermodynamics of Materials and thermo-kinetics of processes, process development and optimization during his doctoral research. While doing his PhD, he also served as teaching faculty at the Dept. of Materials Science and Engineering. He returned to India in 1990 to take up the opportunity and challenge of setting up a unique Materials Tech Centre in India called the NFTDC, the Nonferrous Materials Technology Development Centre. During the last 35 years, he has spearheaded and implemented it as an innovative R&D model institution that has imbibed characteristics of both laboratory and industry enabling continuous R&D from concept to commercialization thereby bridging the gap between research and eventual user.

3. Dr. Balasubramanian has provided the technical and managerial leadership for this unique R&D institution which is *a* self-financing centre and only one of its kind in India as a non-grant in aid autonomous R&D institution under Government of India. He rendered NFTDC as a Technology Centre which is multi-disciplinary knowledge domain institution to undertake complex technology development endeavors as interdisciplinary projects involving both knowledge creation (scientific know-why) and knowledge integration (technical knowhow) over TRL 3 to 8 Spectrum. He brought in knowledge expertise not only for development of advanced materials, innovative processes on the one hand and also mechanical design, analysis, electronics, instrumentation and control leading to component and systems development & integration on the other which made NFTDC a one of its kind institutions in Technology Space. He has been serving as its first director from inception days and is still continuing in that position. Presently, he is serving as expert member of Technology Advisory Group of O/o PSA. He is also assisting in implementation of Rare Earth Mission Corridors announced by the Union Government and the State Governments.

4. Dr. Balasubramanian has set up many Centres of Excellence as in (i) CoE for advanced materials & processes and Critical Materials (NCMM); (ii) CoE for Engineering Design and Manufacturing (aerospace, aeronautical & biomedical); (iii) CoE for Electric Vehicle Technologies; (iv) CoE for Biomedical Devices and (v) CoE for Materials and Energy Devices. He and his team at NFTDC were responsible for conceiving and rendering many advanced materials for cryo engine development for the Chandrayan, Mangalyan and Gaganyan missions. Other noteworthy accomplishments are in advanced total knee prosthesis - Reconstructive Surgery completing clinical trials, fusion reactor components and modules for ITER and setting up the India's first Rare Earth magnet plant which has come on stream in 2025-26 with industry partner, thus bringing two decades of R&D to fruition in this crucial juncture of supply chain disruptions. Presently, he is leading projects in national programs on Critical Materials (NCMM), Hydrogen systems, Electric Vehicles and particularly the separation technologies leading to upcoming pilot plant / demo commercial plants for recovery and extraction of REEs, Li |Nb, W. Mo | Ni, Co | Zr, Hf and V. He pioneered what is known today as Advanced Materials + Process + Product + Plant in systems approach and mission mode of implementation going up to plant in multitude of sectors.

5. Dr. Balasubramanian has been given the Distinguished Scientist grade in 2012, being the youngest then with that honour & designation in the country. He has won awards and laurels for his contribution to Science and Technology as in Young Metallurgist Award, Vasvik Industrial Research Award, Citation of Merit for outstanding contribution in Biomedical Devices, Best Scientist Award in Nonferrous Materials Technologies to name a few.

डॉ. कृष्णमूर्ति बालासुब्रमण्यन

डॉ. कृष्णमूर्ति बालासुब्रमण्यन एक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक हैं, जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अपने योगदान के लिए व्यापक रूप से जाने जाते हैं, और एक संस्था निर्माता हैं।

2. 2 जून, 1960 को जन्मे, डॉ. बालासुब्रमण्यन ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) कानपुर से 1982 में स्नातक की उपाधि प्राप्त की और प्रतिष्ठित एएलसीएएन फेलोशिप से सम्मानित होने पर सीधे पीएचडी करने के लिए मैक मास्टर यूनिवर्सिटी, कनाडा में स्कूल ऑफ मैटेरियल्स साइंस एंड इंजीनियरिंग में प्रवेश लिया। उन्होंने अपने डॉक्टरेट शोध के दौरान सामग्रियों के थर्मोडायनामिक्स और प्रक्रियाओं के थर्मो–काइनेटिक्स, प्रक्रिया विकास और अनुकूलन में विशेषज्ञता हासिल की। अपनी पीएचडी के दौरान, उन्होंने सामग्री विज्ञान और इंजीनियरिंग विभाग में शिक्षण संकाय के रूप में भी काम किया। भारत में एनएफटीडीसी अर्थात, अलौह सामग्री प्रौद्योगिकी विकास केंद्र नामक एक अद्वितीय मटेरियल्स टेक सेंटर स्थापित करने के अवसर और चुनौती का लाभ उठाने के लिए वह 1990 में भारत लौट आए। पिछले 35 वर्षों के दौरान, उन्होंने इसे एक अभिनव अनुसंधान एवं विकास मॉडल संस्थान के रूप में आगे बढ़ाया और कार्यान्वित किया है, जिसने प्रयोगशाला और उद्योग दोनों की विशेषताओं को आत्मसात करते हुए अवधारणा से व्यावसायीकरण तक निरंतर शोध एवं विकास को सक्षम बनाया है, जिससे अनुसंधान और अंतिम उपयोगकर्ता के बीच की खाई को पाटना संभव हुआ है।

3. डॉ. बालासुब्रमण्यन ने इस अद्वितीय अनुसंधान एवं विकास संस्थान के लिए तकनीकी और प्रबंधकीय नेतृत्व प्रदान किया है, जो एक स्व–वित्तपोषण केंद्र है और भारत सरकार के अंतर्गत गैर–अनुदान सहायता प्राप्त स्वायत्त अनुसंधान एवं विकास संस्थान के रूप में भारत में अपनी तरह का एकमात्र केंद्र है। उन्होंने एनएफटीडीसी को एक प्रौद्योगिकी केंद्र के रूप में प्रस्तुत किया, जो टीआरएल 3 से 8 स्पेक्ट्रम पर ज्ञान निर्माण (वैज्ञानिक जानकारी) और ज्ञान एकीकरण (तकनीकी जानकारी) दोनों को शामिल करने वाली अंतः विषय परियोजनाओं के रूप में जटिल प्रौद्योगिकी विकास प्रयासों को शुरू करने के लिए बहु–विषयक ज्ञान डोमेन संस्थान है। उन्होंने एक तरफ केवल उन्नत सामग्रियों, नवीन प्रक्रियाओं के विकास के लिए ज्ञान विशेषज्ञता का उपयोग किया बल्कि दूसरी तरफ यांत्रिक डिजाइन, विश्लेषण, इलेक्ट्रॉनिक्स, इंस्ट्रूमेंटेशन और नियंत्रण भी लाए तथा घटक और प्रणाली विकास और एकीकरण को बढ़ावा दिया, जिसने एनएफटीडीसी को प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अपनी तरह का एक संस्थान बना दिया। वह शुरुआत के दिनों से ही इसके पहले निदेशक के रूप में कार्य कर रहे हैं और अभी भी उस पद पर बने हुए हैं। वर्तमान में, वह पीएसए कार्यालय के प्रौद्योगिकी सलाहकार समूह के विशेषज्ञ सदस्य के रूप में कार्यरत हैं। वह केंद्र सरकार और राज्य सरकारों द्वारा घोषित दुर्लभ पृथ्वी मिशन गलियारों के कार्यान्वयन में भी सहायता कर रहे हैं।

4. डॉ. बालासुब्रमण्यन ने कई उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किए हैं जैसे (i) उन्नत सामग्रियों और प्रक्रियाओं और महत्वपूर्ण सामग्रियों के लिए उत्कृष्टता केंद्र (एनसीएमएम); (ii) इंजीनियरिंग डिजाइन और विनिर्माण के लिए (एयरोस्पेस, वैमानिकी और बायोमेडिकल) उत्कृष्टता केंद्र; (iii) इलेक्ट्रिक वाहन प्रौद्योगिकियों के लिए उत्कृष्टता केंद्र; (iv) जैव चिकित्सा उपकरणों के लिए उत्कृष्टता केंद्र और (v) सामग्री और ऊर्जा उपकरणों के लिए उत्कृष्टता केंद्र। एनएफटीडीसी में वह और उनकी टीम चंद्रयान, मंगलयान और गगनयान मिशनों के लिए क्रायोइंजन के विकास के लिए कई उन्नत सामग्रियों की कल्पना करने और प्रस्तुत करने के लिए जिम्मेदार थी। अन्य उल्लेखनीय हैं–एडवांस्ड टोटल नी प्रॉस्थेसिस – नैदानिक परीक्षणों को पूरा कर चुकी पुनर्निर्माण सर्जरी, आईटीईआर के लिए फ्यूजन रिएक्टर घटक और मॉड्यूल तथा भारत का पहला रेयर अर्थ चुंबक संयंत्र स्थापित करना, जो उद्योग भागीदार के साथ 2025–26 में चालू हो गया है, इस प्रकार आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों के इस महत्वपूर्ण मोड़ पर दो दशकों के अनुसंधान एवं विकास को फलीभूत किया गया। वर्तमान में,वह महत्वपूर्ण सामग्री संबंधी राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनसीएमएम), हाइड्रोजन सिस्टम से संबंधित राष्ट्रीय कार्यक्रमों में परियोजनाओं का नेतृत्व कर रहे हैं। उन्होंने सिस्टम एप्रोच में उन्नत सामग्री, प्रक्रिया, उत्पाद, संयंत्र और कई क्षेत्रों में संयंत्र तक कार्यान्वयन के मिशन मोड में अग्रणी भूमिका निभाई।

5. डॉ. बालासुब्रमण्यन को वर्ष 2012 में विशिष्ट वैज्ञानिक ग्रेड दिया गया था, वह उस समय देश में उस सम्मान और पदनाम को पाने वाले सबसे कम उम्र के व्यक्ति थे। उन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अपने योगदान के लिए यंग मेटलर्जिस्ट अवार्ड, वासविक औद्योगिक अनुसंधान पुरस्कार, बायोमेडिकल उपकरणों में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रशस्ति पत्र, अलौह सामग्री प्रौद्योगिकियों में सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक पुरस्कार आदि कुछ पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किए हैं।

SHRI BRIJ LAL BHAT

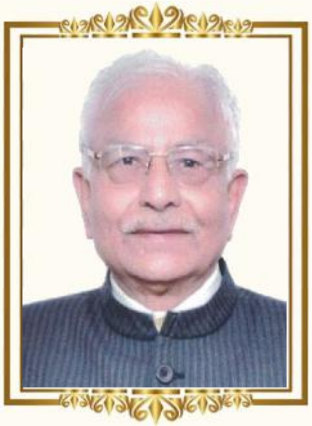

Shri Brij Lal Bhat is known for his distinguished social service promoting peace and harmony after his exemplary contribution during active service in Jammu & Kashmir.

2. Born on 16th March, 1945 in Anantnag, Kashmir, Shri Bhat is first class first post graduate in Horticulture having done specialised course in "Marketing & Refrigeration " from Washington State University, USA. He served J& K State Agri - Horti sectors as Project Director in Agri Export Zones, Chief Executive Officer in J & K World Bank aided "Indo Australian / Italian Projects" and Director in Horticulture Planning - Marketing J&K, State. He enjoys the distinction of promoting JK Fruit industry under all the three sectors: Research, Production, Post Production. Value addition sectors having also led JK delegation to SAARC countries under export promotion of fruits. He has the distinction in introducing cardboard packaging, establishing cold chain systems, establishing of main and satellite F&V markets in J & K, declaring J& K as Agri Export Zone for Apples & Walnuts, Horticulture Survey of Ladakh region, introduction of multiplication of colonial malling & standardization of propagation techniques for walnuts, almonds & other nut fruits.

3. Under his "Pay Back Stage " of life now, Shri Bhat is now working as Chairman, Administrative Committee, Shri Ramakrishna Mahasammelan Ashram - Vivekananda Kendra (SRMA-VK), Nagdandi, Anantnag, Kashmir. To carry forward the Vivekananda thought mission of "Man Making & Nation Building", Nagdandi under his leadership has emerged as a "Hub of Sanatan Dharma" in Kashmir undertaking all traditional & national activities to promote connection of Displaced Hindus back to their "Roots" in Kashmir, peace & normalcy through direct "Civil Society " meets of all faiths & intra –inter state integration from Kashmir to Kanyakumari.

4. Shri Bhat has established "Karysthans "in clusters of Vessu, Martand, Sheikhpora, Virvan integrating youth from all districts of Kashmir through Nagdandi Ashram under its Kendra, Yog, Swadhyay & Sanaskar Varg activities with patronage of VRM & VK, Kanyakumari. Under spiritually oriented service mission activity, he developed "High Density Apple & Walnut Orchards " as "Demonstrative Blocks" for the rural populace to use barren waste, less productive lands under scientific orcharding, the jugular vein of J&K's rural economy. These Orchards are also taking Ashram to "Self Generation - Self Reliance". Under "Infrastructure Development", he has increased housing accommodation in Nagdandi from just 12 persons to around 150 persons & secured logistic support of Rs 8.85 cr under heritage development to increase living capacity in Ashram for around 400 persons major step to boost religious & adventure tourism in J&K. The aesthetically & spiritually vibrant Ashram enjoys the locational advantage to attract more & more devotees/ tourists throughout the year.

5. Shri Bhat was conferred with State Marketing Award from Ministry of Agriculture, NCR, Delhi. He was also honoured with National Udhyog Rattan Award as the best Director by "IES" New Delhi. In recognition of supreme service to society, he was honoured by "Vyeth" by Social & Cultural Organisation of "Hindu Education Society (HESK)" as an exemplary "Technocrat & Social Activist exhibiting superb leadership qualities in uplifting & development of Vivekananda Kendra, Nagdandi, Kashmir. Frontal Community organisation "Sanjivini Sharda Kendra", Jammu honoured him and his team for selfless services in Kashmir. Socio Religious community organization “Vomedh” honoured him with “Nand Bab Samman” for his supreme selfless service to J&K & Nation under his present “Pay back Stage” of his life.

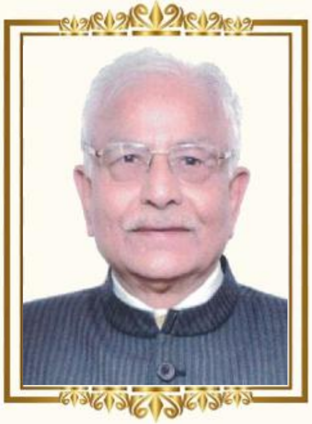

श्री बृज लाल भट्ट

श्री बृज लाल भट्ट अपने विशिष्ट सामाजिक सेवा कार्यों के लिए प्रसिद्ध हैं, जिन्होंने जम्मू–कश्मीर में अपनी सक्रिय सेवा के दौरान किये गए अनुकरणीय योगदान के बाद, शांति और सद्भाव को बढ़ावा दिया।

2. 16 मार्च, 1945 को कश्मीर के अनंतनाग में जन्मे श्री भट्ट, बागवानी विषय में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्नातकोत्तर हैं, जिन्होंने अमेरिका के वाशिंगटन स्टेट विश्वविद्यालय से 'मार्केटिंग एवं रेफ्रिजरेशन' में विशेष पाठ्यक्रम किया है। उन्होंने जम्मू–कश्मीर राज्य के कृषि एवं बागवानी क्षेत्रों में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया, जिनमें कृषि निर्यात क्षेत्रों में परियोजना निदेशक, विश्व बैंक सहायता प्राप्त 'इंडो–ऑस्ट्रेलियनध्इटालियन परियोजनाओं' में मुख्य कार्यकारी अधिकारी तथा बागवानी योजना एवं विपणन, जम्मू–कश्मीर में निदेशक का पद शामिल है। उन्हें अनुसंधान, उत्पादन तथा पश्च–उत्पादन (वैल्यू एडिशन) के तीनों क्षेत्रों में जम्मू–कश्मीर के फल उद्योग को प्रोत्साहित करने का विशिष्ट गौरव प्राप्त है। उन्होंने फल निर्यात प्रोत्साहन के अंतर्गत सार्क देशों में जम्मू–कश्मीर के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व भी किया। उन्हें कार्डबोर्ड पैकेजिंग की शुरुआत करने, कोल्ड–चेन प्रणाली की स्थापना करने, जम्मू–कश्मीर में मुख्य एवं सैटेलाइट फल एवं सब्जी मंडियों की स्थापना करने, सेब एवं अखरोट के लिए जम्मू–कश्मीर को कृषि निर्यात क्षेत्र घोषित कराने, लद्दाख क्षेत्र का बागवानी सर्वेक्षण कराने, क्लोनल मालिंग के गुणन तथा अखरोट, बादाम एवं अन्य मेवा फसलों के प्रवर्धन की तकनीकों के मानकीकरण में विशिष्ट उपलब्धियाँ प्राप्त हैं।

3. अपने जीवन के 'पे–बैक चरण' में श्री भट्ट वर्तमान में श्री रामकृष्ण महासम्मेलन आश्रमदृविवेकानंद केंद्र (एसआरएमए–वीके), नागदंडी, अनंतनाग, कश्मीर' की प्रशासनिक समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं। स्वामी विवेकानन्द के 'मनुष्य निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण' के विचार को आगे बढ़ाते हुए, उनके नेतृत्व में नागदंडी कश्मीर में 'सनातन धर्म के केंद्र' के रूप में उभरकर सामने आया है। यह केंद्र पारंपरिक एवं राष्ट्रीय गतिविधियों के माध्यम से विस्थापित हिंदुओं को कश्मीर में अपनी जड़ों से पुनः जोड़ने, विभिन्न धर्मों के बीच प्रत्यक्ष 'सिविल सोसाइटी' संवाद के जरिए शांति एवं सामान्य स्थिति स्थापित करने तथा कश्मीर से कन्याकुमारी तक अंतर एवं अंतर–राज्यीय एकीकरण को सुदृढ़ करने के कार्य में संलग्न है।

4. श्री भट्ट ने वेस्सु, मार्तंड, शेखपोरा एवं वीरवन के समूहों में 'कार्यस्थानों' की स्थापना की है, जिनके माध्यम से नागदंडी आश्रम अपने केंद्र के अंतर्गत, योग, स्वाध्याय एवं संस्कार वर्ग गतिविधियों द्वारा कश्मीर के सभी जिलों के युवाओं को एकीकृत किया जा रहा है। यह कार्य विवेकानन्द रॉक मेमोरियल एवं विवेकानन्द केन्द्र, कन्याकुमारी के संरक्षण में संचालित है। आध्यात्मिक सेवा मिशन के अंतर्गत उन्होंने 'हाई डेंसिटी सेब एवं अखरोट बागानों' को 'प्रदर्शनी ब्लॉकों' के रूप में विकसित किया, जिससे ग्रामीण जनता वैज्ञानिक बागवानी के माध्यम से बंजर एवं कम उत्पादक भूमि का उपयोग कर सके, जो जम्मू–कश्मीर की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की जीवनरेखा है। ये बागान आश्रम को 'स्व–अर्जन एवं आत्मनिर्भरता' की दिशा में भी अग्रसर कर रहे हैं। अवसंरचना विकास के अंतर्गत उन्होंने नागदंडी में आवासीय क्षमता को मात्र 12 व्यक्तियों से बढ़ाकर लगभग 150 व्यक्तियों तक पहुँचाया तथा विरासत विकास के तहत 8.85 करोड़ रुपये की लॉजिस्टिक सहायता प्राप्त कर इसे लगभग 400 व्यक्तियों तक विस्तारित किया, जो जम्मू–कश्मीर में धार्मिक एवं साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। सौंदर्य एवं आध्यात्मिकता से परिपूर्ण यह आश्रम अपनी भौगोलिक विशेषता के कारण वर्ष भर अधिकाधिक श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों को आकर्षित करता है।

5. श्री भट्ट को कृषि मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा 'स्टेट मार्केटिंग अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया। उन्हें इंडियन इकोनॉमिक सोसायटी, नई दिल्ली द्वारा 'नेशनल उद्योग रत्न अवॉर्ड' से सर्वश्रेष्ठ निदेशक के रूप में भी सम्मानित किया गया। समाज के प्रति उनके उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देते हुए, उन्हें हिन्दू एजुकेशन सोसायटी के सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन "व्येथ" द्वारा 'विवेकानंद केंद्र, नागदंडी, कश्मीर' के उत्थान एवं विकास में उत्कृष्ट नेतृत्व क्षमता प्रदर्शित करने वाले अनुकरणीय "तकनीकी विशेषज्ञ एवं समाजसेवी" के रूप में सम्मानित किया गया। जम्मू स्थित सामुदायिक संगठन "संजीवनी शारदा केन्द्र" ने भी कश्मीर में उनके एवं उनकी टीम के निःस्वार्थ सेवा कार्यों के लिए उन्हें सम्मानित किया। सामाजिक–धार्मिक एवं सामुदायिक संगठन "वोमेध" ने उन्हें जीवन के उनके वर्तमान "पे–बैक चरण" में जम्मू–कश्मीर एवं राष्ट्र के प्रति उनके उत्कृष्ट निःस्वार्थ योगदान के लिए "नंद बाब सम्मान" से अलंकृत किया।

SHRI TARUN BHATTACHARYA

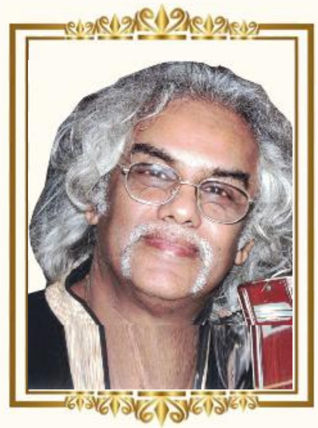

Shri Tarun Bhattacharya is a pioneering Santoor Legend who has redefined Indian classical music and revolutionized the playing style of the Shatatantri Veena. His innovative techniques and methodology have made the Shatatantri Veena a more widely learnt and used instrument.

2. Born on the 23rd December 1957, Shri Bhattacharya started learning music from a very young age under his father Pt. Rabi Bhattacharya who played the Sitar. He further learnt from Pt. Dulal Roy and later from the illustrious Bharat Ratna awardee Pt. Ravishankar Ji. A visionary, he introduced fine tuners ("mankas") for accurate and long-lasting tuning, and his innovations have made it possible to render meends, krintans, ekharatans, and boltans on the Santoor—broadening its expressive range.

3. Shri Bhattacharya is credited for having created new Hindustani Classical Ragas, Raag Ganga based on the Swach Ganga Abhiyan and also having created Raag Tribeni.

4. Shri Bhattacharya's philanthropic initiative, Santoor Ashram, is not just a music school—it is a sanctuary for hope transformation. Dedicated to nurturing talent, especially from underprivileged backgrounds, it provides free education training. Through this institution, he is grooming the next generation of musicians, ensuring the survival and growth of Indias cultural heritage. He's also in the advisory board of Visva Bharati University. He is also in the Jury Board for the Sangeet Natak Akademi Awards. He has also been inducted in the Expert Committee of the CFPGS Scheme by the Ministry of Culture.

5. Shri Bhattacharya is the recipient of numerous awards and accolades. The notable amongst them are the Sangeet Natak Akademi Award for 2018. He has also received the prestigious Tansen Samman by the Government of Madhya Pradesh for the year 2025. He has also had the distinction of getting the Sangeet Mahasamman Award from the Government of West Bengal in 2017.

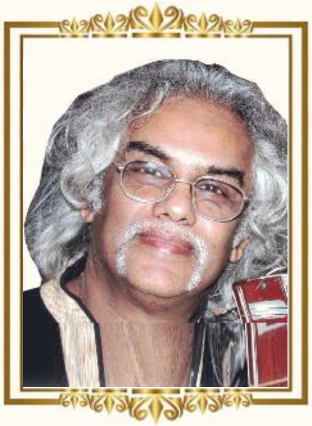

श्री तरुण भट्टाचार्य

श्री तरुण भट्टाचार्य प्रख्यात संतूरवादक हैं जिन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत को नई पहचान दी है और शततंत्री वीणा वादन शैली में नए परिवर्तन की आधारशिक्षा रखी है। उनकी नई तकनीकों और तरीकों ने शततंत्री वीणा को एक व्यापक रूप से सीखा और प्रयोग किया जाने वाला वाद्ययंत्र बना दिया है।

2. 23 दिसंबर, 1957 को जन्मे, श्री भट्टाचार्य ने बहुत कम आयु से ही अपने सितारवादक पिता पंडित रवि भट्टाचार्य से संगीत सीखना शुरू कर दिया था। उन्होंने आगे पंडित दुलाल रॉय और बाद में भारत रत्न से सम्मानित पंडित रविशंकर जी से सीखा। एक दूरदर्शी व्यक्ति होने के नाते, उन्होंने सटीक और टिकाऊ ट्यूनिंग के लिए फाइन ट्यूनर (मनका) की शुरुआत की और उनके नवाचार ने संतूर की वादन क्षमता का विस्तार करके उस पर मींड, कृंतान, एखरतान और बोलतान बनाना संभव बनाया है।

3. श्री भट्टाचार्य को स्वच्छ गंगा अभियान पर आधारित नए हिंदुस्तानी शास्त्रीय राग, राग गंगा और राग त्रिवेणी तैयार करने का श्रेय दिया जाता है।

4. श्री भट्टाचार्य की समाजसेवी पहल, संतूर आश्रम, मात्र संगीत संबंधी पहल नहीं है—यह परिवर्तन के लिए आशा की एक किरण है। यह विशेषकर पिछड़ी पृष्ठभूमि से आने वाली प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने के प्रति समर्पित है और यह मुफ्त शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करता है। इस संस्था के जरिए, वह संगीतज्ञों की अगली पीढ़ी को तैयार कर रहे हैं, जिससे भारत की सांस्कृतिक विरासत बनी रहे और वह अग्रसर हो। वह विश्व भारती विश्वविद्यालय के एडवाइजरी बोर्ड में भी हैं। वह विश्व भारती विश्वविद्यालय के परामर्शी बोर्ड में शामिल हैं। वह संगीत नाटक अकादमी अवॉर्ड्स के जूरी बोर्ड में भी हैं। उन्हें संस्कृति मंत्रालय द्वारा सीएफपीजीएस स्कीम की विशेषज्ञ समिति में भी शामिल किया गया है।

5. श्री भट्टाचार्य को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उनमें से 2018 का संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार उल्लेखनीय है। उन्हें मध्य प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2025 का प्रतिष्ठित तानसेन सम्मान भी प्रदान किया गया है। उन्हें 2017 में पश्चिम बंगाल सरकार से संगीत महासम्मान पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव भी प्राप्त हुआ है।

SHRI JYOTISH DEBNATH

Shri Jyotish Debnath is a distinguished exponent of traditional handloom weaving, specializing in Muslin and Jamdani sarees. A master craftsman rooted in Bengal's rich textile traditions, he has devoted his life to preserving, revitalizing, and reimagining one of India's most delicate and historically significant weaving legacies.

2. Born on 15th July, 1958 Shri Debnath, hailing from Kalna in Purba Burdwan district of West Bengal, is renowned for his exceptional skill and artistic precision. His creations are celebrated for their intricate motifs, refined detailing, and gossamer-fine texture. His sarees exemplify the highest standards of Muslin and Jamdani craftsmanship, reflecting both technical mastery and deep cultural knowledge passed down through generations of weavers.

3. Recognizing the challenges faced by traditional handloom arts in a rapidly changing marketplace, Shri Debnath has played a pivotal role in reviving endangered weaving techniques and adapting them to contemporary tastes. By thoughtfully blending classical designs with modem sensibilities, he has ensured the continued relevance of Muslin and Jamdani in present-day fashion, expanding their reach to new audiences in India and abroad. His work has significantly elevated the visibility of Muslin Jamdani on the international stage. Through exhibitions in Milan, Barcelona, and Edinburgh, he has demonstrated that Indian handlooms are not merely traditional relics, but vibrant and globally relevant textiles. These platforms have not only celebrated his creations but have also opened international markets for other artisans working in this field.

4. Beyond his personal artistry, Shri Debnath has made significant contributions as a mentor and community leader. He has trained and empowered numerous women artisans in Muslin and Jamdani weaving, enabling them to achieve sustainable livelihoods and renewed pride in their craft. His efforts have elevated Kalna's identity as a center of weaving excellence and inspired younger generations to pursue handloom weaving as a viable and respected profession.

5. In recognition of his outstanding contributions to the handloom sector and his lifelong dedication to Indian textile heritage, Shri Debnath has earlier been honoured with the National Award (2010) for excellence in Jamdani Khadi stole, Sant Kabir Award (2018), the highest national honor in handloom weaving Crafts Council of India Award (2009) for excellence in craft in the field of Jamdani Weaving, Shanta Prasad Award (2013) for excellence in Jamdani, Kalanjali Award (2021) by the Crafts Council of Telangana accolades that underscore his enduring impact on the preservation, dignity, and global visibility of India's traditional crafts.

श्री जोतिश देबनाथ

श्री जोतिश देबनाथ पारंपरिक हथकरघा बुनाई और मलमल और जामदानी साड़ियों में विशेषज्ञता प्राप्त एक प्रतिष्ठित प्रतिपादक हैं। वे बंगाल की समृद्ध वस्त्र परंपराओं के प्रमुख शिल्पकार है जिन्होंने अपना जीवन भारत की सबसे बारीक और ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण बुनाई विरासतों में से एक को संरक्षित करने, पुनर्जीवित करने और पुनःकल्पित करने के लिए समर्पित किया।

2. 15 जुलाई, 1958 को पश्चिम बंगाल के पुरबा बर्दवान जिले के कालना शहर में जन्मे, श्री देबनाथ अपने असाधारण कौशल और कलात्मक सटीकता के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी बुनाई जटिल रूपांकनों, परिष्कृत विवरण और महीन बनावट के लिए जानी जाती हैं। उनकी साड़ियाँ मलमल और जामदानी शिल्प कौशल के उच्चतम मानकों का उदाहरण हैं, जो बुनकरों की पीढ़ियों से चले आ रही तकनीकी महारत और गहन सांस्कृतिक ज्ञान दोनों को दर्शाती है।

3. तेजी से बदलते बाजार में पारंपरिक हथकरघा कलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों को देखते हुए, श्री देबनाथ ने लुप्तप्राय बुनाई तकनीकों को पुनर्जीवित करने और उन्हें समकालीन प्रवृत्ति के अनुरूप ढालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शास्त्रीय अभिकल्पों को आधुनिक संवेदनाओं के साथ सोच–समझकर मिलाकर, उन्होंने वर्तमान रीति में मलमल और जामदानी की निरंतर प्रासंगिकता सुनिश्चित की और उसे जिससे भारत और विदेश में नए दर्शकों तक पहुँचाया। उन्होंने मलमल जामदानी को अंतर्राष्ट्रीय मंच तक पहुँचाने का अद्भुत कार्य किया। मिलान, बार्सिलोना और एडिनबर्ग में प्रदर्शनियों के माध्यम से, उन्होंने यह सिद्ध किया कि भारतीय हथकरघा केवल पारंपरिक निशानी नहीं हैं, बल्कि जीवंत और विश्व स्तर पर प्रासंगिक वस्त्र हैं। इन अवसरों पर न केवल उनकी कला को सराहना मिली बल्कि इस क्षेत्र में कार्य करने वाले अन्य कारीगरों के लिए अंतर्राष्ट्रीय बाजार के द्वार खुल गए।

4. अपनी व्यक्तिगत कलात्मकता के अतिरिक्त, श्री देबनाथ ने एक मार्गदर्शक और सामुदायिक नेतृत्वकर्ता के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने मलमल और जामदानी बुनाई में कई महिला कारीगरों को प्रशिक्षित कर सशक्त बनाया, जिससे उन्हें न केवल आजीविका का एक स्थायी साधन मिला बल्कि उनमें अपने शिल्प के प्रति गर्व की नई भावना जागृत हुई। उनके प्रयासों से कलना शहर का पहचान बुनाई उत्कृष्टता के केंद्र के रूप में हुई और युवा पीढ़ियों को हथकरघा बुनाई को एक व्यवहार्य और सम्मानित पेशे के रूप में आगे बढ़ाने के लिए प्रेरणा मिली।

5. हथकरघा क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान और भारतीय वस्त्र विरासत के प्रति उनके आजीवन समर्पण के लिए, श्री देबनाथ को पहले जामदानी खादी स्टोल में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार (वर्ष 2010), संत कबीर पुरस्कार (वर्ष 2018), जामदानी के क्षेत्र में शिल्प की उत्कृष्टता के लिए हथकरघा बुनाई में सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान क्राफ्ट्स काउंसिल ऑफ इंडिया अवार्ड (वर्ष 2009), जामदानी में उत्कृष्टता के लिए शांता प्रसाद पुरस्कार (वर्ष 2013), शिल्प परिषद तेलंगाना द्वारा कलांजलि पुरस्कार (वर्ष 2021) से सम्मानित किया गया जो भारत के पारंपरिक शिल्पों के संरक्षण, गरिमा और वैश्विक दृश्यता पर उनके स्थायी प्रभाव को रेखांकित करता है।

DR. JOGESH DEURI

Dr. Jogesh Deuri is a renowned sericulture expert from Assam, widely celebrated for his pioneering contributions to the silk industry, particularly Eri silk. As a visionary scientist and the Retired Director of Sericulture in the Bodoland Territorial Council (BTC), Assam, he has redefined the landscape of India's silk industry. He served for over three decades in the Sericulture Department and is the former Director of Sericulture for the Bodoland Territorial Council (BTC).

2. Born on 1st May, 1961, in a serene district of Assam, Dr. Deuri grew up amidst the rich natural heritage of the region, which would later inspire his lifelong commitment to sericulture. He pursued his M.Sc. from Gauhati University, Assam, where his academic brilliance began to take shape. His passion for silk science led him to earn a Post Graduate Diploma in Sericulture (P.G.D.S.) from CSR&TI, Berhampore under the Central Silk Board, West Bengal. To further refine his expertise, he underwent advanced training in cocoon technology at the Sericultural Research Institute of Liaoning Province, P.R. China, gaining international exposure in cutting-edge sericultural techniques. His highest degree is Ph.D. from USTM, Meghalaya and Doctor of Literature(D.Litt)- Honoris Causa specialising in Sericulture from British National University of Queen Mary (United Kingdom- United States of America).

3. Dr. Deuri is Eri silk pioneer - credited with modernizing traditional Eri silk rearing methods. He is a strong advocate for Eri silk “Ahimsa” or non-violent silk, viewing it as a sustainable future for Assam's economy and rural youth. He spearheaded the establishment of the Bodoland Silk Park at Kokrajhar. This facility serves as a comprehensive hub featuring a cocoon bank, spun mill, printing unit, knitting plant and pupae processing unit. In 2013, he played a leading role in establishing the world's first wild Muga sanctuary.

4. Dr. Deuri launched the observance of “Eri Day” (celebrated on May 1) in 2019 to honour the silk's heritage and its connection to the tribal communities of the Northeast. One of his most revolutionary contributions to Indian sericulture lies in his innovative transformation of Eri silkworm rearing practices, by adoption of Tapioca (cassava) plants. His work has extended far beyond Assam, inspiring change nationally and internationally. He has represented India in more than 25 countries including China, Japan, South Korea, Thailand, Italy, Switzerland, UK, France, USA, Austria, UAE, Cambodia, Bhutan, Vietnam, and Sri Lanka. His cross-border knowledge transfer has positioned Assam's Eri and Muga silk on the global stage.

5. Dr. Deuri has been recognized for his impact on rural livelihoods and agricultural research for distinguished service in Agriculture (Sericulture). He has been conferred with Assam Gaurav (2023) by the Government of Assam for his outstanding contribution to the Sericulture sector; Mahatma Gandhi Samman Award at British Parliament House of Commons, London; International Icon Award; Icons of Indian Business Excellence Awards, etc.

डॉ. जोगेश देउरी

डॉ. जोगेश देउरी असम के एक प्रसिद्ध रेशम उत्पादन विशेषज्ञ हैं, जिन्हें रेशम उद्योग, विशेष रूप से एरी रेशम में अपने अग्रणी योगदान के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है। एक दूरदर्शी वैज्ञानिक और बोडोलैंड प्रादेशिक परिषद (बीटीसी), असम में रेशम उत्पादन के सेवानिवृत्त निदेशक के रूप में, उन्होंने भारत के रेशम उद्योग के परिदृश्य को पुनःपरिभाषित किया। उन्होंने रेशम उत्पादन विभाग में तीन दशकों से अधिक समय तक कार्य किया और वे बोडोलैंड प्रादेशिक परिषद (बीटीसी) के लिए रेशम उत्पादन के पूर्व निदेशक हैं।

2. 1 मई, 1961 को असम के एक शांत जिले में जन्मे डॉ. देउरी इस क्षेत्र की समृद्ध प्राकृतिक विरासत के बीच बड़े हुए, जिसके परिणामस्वरूप वे रेशम उत्पादन के प्रति आजीवन प्रतिबद्ध रहे। उन्होंने गुवाहाटी विश्वविद्यालय, असम से एमएससी किया, जहां उनकी शैक्षणिक प्रतिभा को तराशा गया। रेशम विज्ञान के प्रति गहरी रुचि के कारण उन्होंने केंद्रीय रेशम बोर्ड, पश्चिम बंगाल के अंतर्गत सीएसआर एंड टीआई, बेरहामपुर से रेशम उत्पादन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पीजीडीएस) हासिल किया। अपनी विशेषज्ञता को और निखारने के लिए, उन्होंने सेरीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ लिओनिंग प्रोविंस, पी.आर. चीन, से कोकून प्रौद्योगिकी में उन्नत प्रशिक्षण प्राप्त किया, जिससे उन्हें अत्याधुनिक रेशम उत्पादन तकनीकों में अंतर्राष्ट्रीय अनुभव प्राप्त हुआ। उनकी सर्वोच्च शैक्षणिक उपाधि यूएसटीएम, मेघालय से पीएचडी और ब्रिटिश नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ क्वीन मैरी (यूनाइटेड किंगडम– संयुक्त राज्य अमेरिका) से रेशम उत्पादन में विशेषज्ञता के साथ डॉक्टर ऑफ लिटरेचर (डी. लिट) दृ मानद उपाधि है।

3. डॉ. देउरी एरी रेशम के अग्रणी हैं जिन्हें पारंपरिक एरी रेशम पालन विधियों को आधुनिक बनाने का श्रेय जाता है। वे एरी रेशम ष्अहिंसाष या अहिंसक रेशम के प्रबल समर्थक हैं और इसे वे असम की अर्थव्यवस्था और ग्रामीण युवाओं के लिए एक सतत भविष्य का साधन मानते हैं। उन्होंने कोकराझार में बोडोलैंड सिल्क पार्क की स्थापना में अग्रणी भूमिक निभाई। यह कोकून बैंक, स्पन मिल, प्रिंटिंग यूनिट, निटिंग प्लांट और प्यूपा प्रोसेसिंग यूनिट की सुविधाओं सहित एक व्यापक हब है। उन्होनें वर्ष 2013 में दुनिया का पहला जंगली मुगा अभयारण्य स्थापित करने में अग्रणी भूमिका निभाई।

4. डॉ. देउरी ने रेशम की विरासत और पूर्वोत्तर के आदिवासी समुदायों के साथ इसके संबंध का सम्मान करने के लिए वर्ष 2019 में ''एरी दिवस'' (1 मई को मनाया जाता है) का शुभारंभ किया। भारतीय रेशम उत्पादन में उनके सबसे क्रांतिकारी योगदानों में से एक टैपिओका (कसावा) पौधों को अपनाकर एरी रेशमकीट पालन प्रक्रिया में नवाचारी परिवर्तन करना है। उनका योगदान असम तक सीमित न होकर देश–विदेश तक फैला हुआ है। उन्होंने चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, थाईलैंड, इटली, स्विट्जरलैंड, यूके, फ्रांस, यूएसए, ऑस्ट्रिया, यूएई, कंबोडिया, भूटान, वियतनाम और श्रीलंका सहित 25 से अधिक देशों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। विदेश में ज्ञान का प्रसार कर उन्होंने असम के एरी और मुगा रेशम को वैश्विक मंच पर स्थापित किया।

5. डॉ. देउरी को कृषि (रेशम उत्पादन) में विशिष्ट सेवा द्वारा ग्रामीण आजीविका और कृषि अनुसंधान को प्रभावित करने के लिए जाना जाता है। उन्हें रेशम उत्पादन क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए असम सरकार द्वारा असम गौरव (2023); ब्रिटिश पार्लियामेंट हाउस ऑफ कॉमन्स, लंदन में महात्मा गांधी सम्मान अवार्डय इंटरनेशनल आइकन अवार्डय आइकन्स ऑफ इंडियन बिजनेस एक्सेलेंस अवार्ड आदि से सम्मानित किया गया।

SHRI BHIKLYA LADAKYA DHINDA

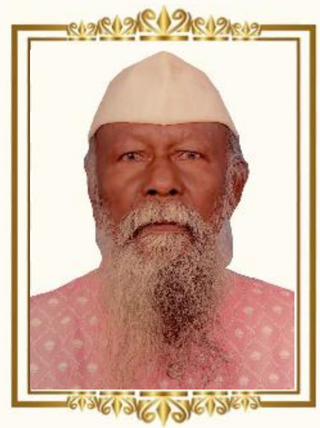

Shri Bhiklya Ladakya Dhinda is a distinguished tribal folk musician and an eminent Tarpa exponent from Walvanda village, Taluka Jawhar, District Palghar, Maharashtra. He belongs to the Varli tribe from Maharashtra. For over seven decades, he has dedicated his life to the preservation and propagation of Tarpa music, an integral and sacred component of tribal cultural heritage, thereby earning recognition as one of the most respected custodians of this traditional art form.

2. Born on 1st January, 1942, Shri Dhinda began learning Tarpa playing and instrument making at the age of ten, inheriting the tradition from his forefathers. His contribution extends beyond performance to the craftsmanship of Tarpa, which he prepares using traditional natural materials following ancestral methods. He possesses deep knowledge of the cultural, spiritual, and ecological significance of the Tarpa, which is revered as a symbol of the Green God in tribal life. Through continuous practice, he has sustained authentic playing styles and traditional compositions, ensuring the survival of rare Tarpa forms and tunes.

3. In addition to being a master performer, Shri Dhinda has served the tribal community as a Bhagat (traditional priest), playing a vital role in rituals, festivals, and social ceremonies. He has performed Tarpa on numerous ceremonial and cultural occasions, particularly during the traditional season from Panchami to Diwali, and has inspired younger generations to value and preserve this indigenous musical tradition. His lifelong dedication has significantly contributed to strengthening tribal cultural identity.

4. In recognition of his outstanding contribution to Indian tribal music, Shri Dhinda was conferred the Amrut Puraskar by Government of Maharashtra in 2022 and Sangeet Natak Akademi Amrit Award in 2023. He was selected among 84 senior artists from across the country under the Azadi Ka Amrit Mahotsav initiative. He was also conferred with the Gansamradni Lata Mangeshkar Award by Government of Maharashtra in 2024.

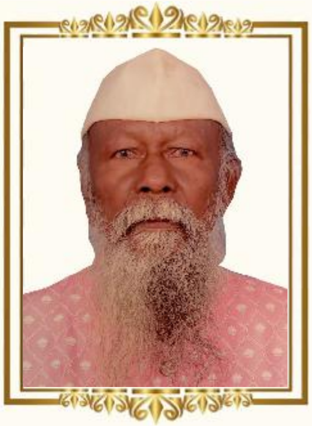

श्री भिकल्या लाडक्या धिंडा

श्री भिकल्या लाडक्या धिंडा एक प्रतिष्ठित आदिवासी लोक संगीतकार हैं और वे वालवंडा गांव, तालुका जव्हार, जिला पालघर, महाराष्ट्र के एक प्रतिष्ठित तरपा कलाकार हैं। वह महाराष्ट्र की वरली जनजाति से हैं। उन्होनें सात दशकों से अधिक समय से, अपना जीवन आदिवासी सांस्कृतिक विरासत के अभिन्न और पवित्र अंग, तरपा संगीत के संरक्षण और प्रचार–प्रसार के लिए समर्पित किया है, जिससे उन्हें इस पारंपरिक कला रूप के एक सबसे सम्मानित संरक्षक के रूप में पहचान मिली है।

2. 01 जनवरी, 1942 को जन्मे, श्री धिंडा ने अपने पूर्वजों से विरासत में प्राप्त तारपा वादन और वाद्य यंत्र बनाने का ज्ञान दस वर्ष की आयु में आंरभ किया । उनका योगदान वादन प्रदर्शन से इतर तारपा के शिल्पकारी तक है, जिसे वह विरासती पद्धतियों का पालन करते हुए पारंपरिक प्राकृतिक सामग्रियों द्वारा तैयार करते हैं। उनके पास तरपा के सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और पारिस्थितिक महत्व का गहरा ज्ञान है, जिसे आदिवासी जीवन में हरित ईश्वर के प्रतीक के रूप में पूजा जाता है। निरंतर अभ्यास के माध्यम से, उन्होंने प्रामाणिक वादन शैलियों और पारंपरिक रचनाओं को संजोए रखा है, जिससे दुर्लभ तरपा रूपों और धुनों का संरक्षण हुआ है।

3. एक कुशल कलाकार होने के अलावा, श्री धिंडा ने भगत (पारंपरिक पुजारी) के रूप में आदिवासी समुदाय की सेवा की है, जो अनुष्ठानों, त्योहारों और सामाजिक समारोहों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कई औपचारिक और सांस्कृतिक अवसरों पर, विशेष रूप से पंचमी से दिवाली तक पारंपरिक समयावधि के दौरान, तरपा कला का प्रदर्शन किया है,और उन्होंने युवा पीढ़ियों को इस स्वदेशी संगीत परंपरा को महत्व देने और संरक्षित करने के लिए प्रेरित किया है। उनके आजीवन समर्पण ने आदिवासी सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

4. भारतीय जनजातीय संगीत में उनके उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देते हुए, श्री धिंडा को वर्ष 2022 में महाराष्ट्र सरकार द्वारा अमृत पुरस्कार और वर्ष 2023 में संगीत नाटक अकादमी अमृत पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्हें आजादी का अमृत महोत्सव पहल के तहत देश भर के 84 वरिष्ठ कलाकारों में से चुना गया था। उन्हें वर्ष 2024 में महाराष्ट्र सरकार द्वारा गन्समरादनी लता मंगेशकर पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था।

DR. ARMIDA FERNANDEZ

Dr. Armida Fernandez, is one of the eminent neonatologist, who is known for her pioneering contributions to neonatology, maternal and child health, nutrition, and community-based public health in India.

2. Born on 6th July 1943, in a small town called Dharwad in Karnataka, Dr. Fernandez completed her MBBS from Karnataka Medical College, Hubli in 1965 and her MD Pediatrics in 1971 from King Edward Memorial and GS Medical College, Mumbai. Her good track record in academics led her to get 5 Gold Medals at MBBS and being awarded the President's Silver medal. She then joined Lokmanya Tilak Municipal Medical College & Hospital, Mumbai, in 1972 in the department of Pediatrics. She was Head of Department of Neonatology at Lokmanya Tilak Municipal Medical College & General Hospital (LTMMC&GH) from 1977 to 1999 and Dean at LTMMC&GH from 1999-2001. She is the Founder and Chairperson of SNEHA (Society for Nutrition Education and Health Action), a non-profit that works on health, nutrition and safety in vulnerable informal settlements. She is recognised for her pioneering work in starting the first human milk bank in India in 1993 and her work through SNEHA in Maternal Newborn Health and Nutrition, violence prevention and palliative care in urban informal settlements.

3. Dr. Fernandez was instrumental in markedly reducing the high mortality rate among preterm and sick neonates at LTMG Hospital through low-cost, sustainable innovations. She started the first Human Milk bank in Asia, successfully replacing formula and animal milk with human milk. The milk bank ensured that every baby born or brought to the hospital received only human milk, including the preterm and sick babies. She started the NGO SNEHA (Society for Nutrition, Education and Health Action) in 1998, with the twin goals of improving health-seeking behaviour among underserved communities and strengthening public health services to vulnerable populations. SNEHA's continuum of care approach works through the critical periods of adolescence, pregnancy and young childhood to improve health and nutrition while also working on domestic violence and mental health. She started Romila Palliative Care (RPC) within SNEHA in 2017.

4. Dr. Fernandez is the recipient of numerous awards, fellowships and honours. She has been conferred Lifetime Achievement Awards by the National Neonatology Forum at both the Maharashtra and national levels (2022), and by the Indian Academy of Pediatrics - Neonatology Chapter (2025), in recognition of her enduring contribution to newborn health in India. In 2026, she was conferred a Papal Knighthood, acknowledging her exceptional service to healthcare, human dignity, and social welfare. In recognition of her innovative and community-driven public health work, she was selected as an Ashoka Social Entrepreneur Fellow by Ashoka: Innovators for the Public - India (2004). She has been recognised by the Femina's 50 Most Powerful Women in India (2007) and received the Qimpro Platinum Award for Healthcare Excellence (2013). Earlier in her career, she was honoured with the Outstanding Woman of the City Award (1999), the "Seva Ratnam" Award (2000) for meritorious service in medicine, the Women of the Year - Mayor's Award (2001), and the Diwaliben Mohanlal Mehta Award for Excellence (2002) for integrated service beyond medical care. In 2004, she received the Lifetime Achievement Award from the Mumbai Breastfeeding Promotion Committee for her lifelong contribution to breastfeeding and infant nutrition, and the Karmayogi Puraskar from the Bombay Medical Aid Foundation. She is a Fellow of the National Neonatal Forum and a Fellow of the Indian Academy of Pediatrics.

डॉ. अर्मिडा फर्नांडीज़

प्रसिद्ध नियोनेटोलॉजिस्ट में से एक डॉ. अर्मिडा फर्नांडीज़ को भारत में नियोनेटोलॉजी, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, पोषण और समुदाय–आधारित सार्वजनिक स्वास्थ्य में उनके अग्रणी योगदान के लिए जाना जाता है।

2. 6 जुलाई, 1943 को कर्नाटक के धारवाड़ नामक एक छोटे से शहर में जन्मी, डॉ. फर्नांडीज़ ने वर्ष 1965 में कर्नाटक मेडिकल कॉलेज, हुबली से एमबीबीएस और वर्ष 1971 में किंग एडवर्ड मेमोरियल और जीएस मेडिकल कॉलेज, मुंबई से बाल रोग विषय में एमडी प्राप्त की। मेधावी छात्र होने के कारण उन्हें एमबीबीएस में 5 स्वर्ण पदक और राष्ट्रपति द्वारा रजत पदक से सम्मानित किया गया। इसके बाद उन्होनें वर्ष 1972 में लोकमान्य तिलक म्युनिसिपल मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, मुंबई के बाल रोग विभाग में कार्यभार ग्रहण किया। वे वर्ष 1977 से 1999 तक लोकमान्य तिलक म्युनिसिपल मेडिकल कॉलेज एंड जनरल हॉस्पिटल (एलटीएमएमसी एंड जीएच) के नियोनेटोलॉजी विभाग की प्रमुख रहीं और वर्ष 1999–2001 तक एलटीएमएमसी एंड जीएच में डीन के पद पर कार्यरत रहीं। वे एक गैर–लाभकारी संगठन 'स्नेह' (सोसाइटी फॉर नूट्रिशन एजुकेशन एण्ड हेल्थ एक्शन) की संस्थापक और अध्यक्ष हैं जो असुरक्षित बस्तियों में स्वास्थ्य, पोषण और सुरक्षा–संबंधी सेवाएँ प्रदान करने का कार्य करता है। वे वर्ष 1993 में भारत में ह्यूमन मिल्क बैंक की शुरुआत करने तथा 'स्नेह' के माध्यम से शहरी बस्तियों में मातृ और नवजात शिशु के स्वास्थ्य और पोषण संबंधी कार्य, हिंसा के निवारण और गंभीर रोग से जूझने वाले लोगों की देखभाल करने के लिए जानी जाती हैं।

3. डॉ. फर्नांडीज़ ने कम लागत, सतत नवाचारों के माध्यम से एलटीएमजी अस्पताल में समय से पहले जन्म लेने वाले और बीमार नवजात शिशुओं की उच्च मृत्यु दर को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने एशिया में पहले ह्यूमन मिल्क बैंक की शुरुआत की जिसने फार्मूला और पशु के दूध को माँ के दूध से सफलतापूर्वक बदला। मिल्क बैंक ने यह सुनिश्चित किया कि अस्पताल में जन्मे या लाए गए समय से पहले जन्म लेने वाले और बीमार बच्चों सहित प्रत्येक बच्चे को केवल माँ का दूध ही मिले। उन्होंने वर्ष 1998 में गैर सरकारी संगठन 'स्नेह' (सोसायटी फॉर न्यूट्रिशन, एजुकेशन एंड हेल्थ एक्शन) की शुरुआत की, जिसके दो लक्ष्य थे– वंचित समुदायों के बीच स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार में सुधार लाना और असुरक्षित लोगों के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ बनाना। 'स्नेह' का लक्ष्य किशोरावस्था, गर्भावस्था और बचपन के शुरुआती दिनों की महत्वपूर्ण अवधि के दौरान स्वास्थ्य और पोषण में सुधार लाने के साथ–साथ घरेलू हिंसा और मानसिक स्वास्थ्य पर भी कार्य करना है। उन्होंने वर्ष 2017 में 'स्नेह' में रोमिला पैलिएटिव केयर (आरपीसी) की शुरुआत की।

4. डॉ. फर्नांडीज़ को कई पुरस्कार, फेलोशिप और सम्मान से नवाजा गया। भारत में नवजात शिशुओं के स्वास्थ्य में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए उन्हें महाराष्ट्र और राष्ट्रीय स्तर पर (वर्ष 2022) नेशनल नियोनेटोलॉजी फोरम द्वारा और इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स – नियोनेटोलॉजी चौप्टर (वर्ष 2025) द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड्स से सम्मानित किया गया। वर्ष 2026 में, स्वास्थ्य देखभाल, मानवीय गरिमा और सामाजिक कल्याण के लिए उनकी असाधारण सेवा के लिए, उन्हें पोप नाइटहुड से सम्मानित किया गया। उनके नवाचार–संबंधी और समुदाय–संचालित सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यों के लिए उन्हें अशोक इनोवेटर्स फॉर द पब्लिक – इंडिया (वर्ष 2004) द्वारा अशोक सोशल एंटरप्रेन्योर फेलो के रूप में चुना गया। उन्हें फेमिना की भारत में 50 सबसे शक्तिशाली महिलाओं (वर्ष 2007) में से एक के रूप में स्थान दिया गया और हेल्थकेयर एक्सीलेन्स के लिए किम्प्रो प्लैटिनम अवॉर्ड (वर्ष 2013) प्राप्त हुआ। करियर की शुरुआत में, उन्हें आउटस्टैन्डिंग वुमन ऑफ द सिटी अवॉर्ड (वर्ष 1999), चिकित्सा क्षेत्र में सराहनीय सेवा के लिए ''सेवा रत्नम'' पुरस्कार (वर्ष 2000), वुमन ऑफ दि ईयर–मेयर अवॉर्ड (वर्ष 2001), और चिकित्सा देखभाल से परे एकीकृत सेवा के लिए दिवालीबेन मोहनलाल मेहता अवॉर्ड फॉर एक्सीलेन्स (वर्ष 2002) से सम्मानित किया गया। वर्ष 2004 में, उन्हें स्तनपान और शिशु पोषण में उनके आजीवन योगदान के लिए मुंबई ब्रेस्टफीडिंग प्रमोशन कमिटी द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड और बॉम्बे मेडिकल एड फाउंडेशन द्वारा कर्मयोगी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वह नेशनल नियोनेटल फोरम की और इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स की फेलो हैं।

DR. CHANDRAMOULI GADDAMANUGU

Dr. Chandramouli Gaddamanugu is a former Outstanding Scientist, Project Director Akash and Programme Director of Defence Research and Development Laboratory (DRDL), Hyderabad, DRDO. He played a key role in development and production of the first indigenous supersonic surface to air missile (SAM) system Akash from its design inception till deployment of the systems into Indian Army and Indian Air Force.

2. Born on 5th April 1958, at Madhira town of Khammam district, Telangana, Dr. Chandramouli received B.Tech. degree in Mechanical Engineering from National Institute of Technology, Warangal in 1981. Later, he obtained M. Tech, degree from l.l.T. Delhi in 1992 and Ph. D degree from Osmania University in 2021. He joined Project Akash in 1983 as young scientist at a time when the team consisted of only two scientists. Since then, as a core technical member of Project Akash, he contributed in the areas of design, technology development, system integration, flight testing, and validation. As Project Manager for configuration control, integration, and flight testing, he directed multidisciplinary teams across multiple organizations, realized number of development missiles and organized flight testing over 15 years and evolved production version configurations for missile and ground systems. He interacted with multi discipline teams across number of work centers, finalized the configuration of radars, launchers, and command centers on five distinct platforms: three tracked vehicles and two wheeled vehicles. He planned and supervised hundred plus Akash missile flight tests for design verification and performance validation.

3. Despite numerous hurdles over a demanding journey spanning more than three decades, Dr. Chandramouli remained steadfast in his focus, inspiring teams across diverse organizations, resolving complex technical challenges, and ensuring the successful design, development, flight testing, production, delivery, and induction of significant quantities of indigenous SAM systems with thousands of Akash missiles, for the first time in the country. As a result of his dedicated contributions to Project Akash spanning over 34 years, India became the world's first nation to design, produce, and deploy a command-guidance based supersonic multi-target, surface-to-air missile system. This indigenous SAM system demonstrated a stellar performance in the recent 'Operation Sindoor' along with other systems.

4. Dr. Chandramouli played a key role in demonstrating consistent interception of flying aerial UAV targets in different mission profiles, earned the confidence of users and production orders for the indigenous missile system Akash. As Project Director, he carried all the stake holders together, guided them in production, inspection, acceptance testing and delivery of systems for ten years. Under his leadership, Akash SAM systems were inducted in Indian Army and Indian Air Force in 2015. As Programme Director, he conceptualized Akash 1S, QRSAM, Akash Prime missile systems and guided the Project Directors in realization of hardware and flight testing. He also contributed in creating number of design and technology transfer documents, which are also used by other projects. His dedicated efforts to project Akash generated huge revenue, saved foreign exchange, created employment and echo-system for the first time in the country. As a result of his contributions, Indian industries could uplift the capability of production, testing and delivery of sophisticated missiles, radars, launchers and control centers, which are also being exported earning foreign exchange to the country. Since last seven years, he is offering technical advisory services for tactical missile projects.

5. Dr. Chandramouli is recipient of Agni Award for excellence in self-reliance from DRDO in 2004; Sir Mokshagundam Visvesvaraya Award from IEI in 2007; Path breaking Research Award from DRDO in 2008; Scientist of the year Award from DRDO in 2013; Global R and D Award from FICCI in 2014; Distinguished Alumni Professional Achievement Award from NIT Warangal in 2014; Project Leader Award from PMA India in 2015; Manager of the year Award from HMA in 2016 and Leader of excellence in Science & Engineering from FTAPCCI in 2017.

डॉ. चंद्रमौली गड्डमनुगु

डॉ. चंद्रमौली गड्डमनुगु एक भूतपूर्व उत्कृष्ट वैज्ञानिक, परियोजना निदेशक आकाश और रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डीआरडीएल), हैदराबाद डीआरडीओ के कार्यक्रम निदेशक हैं। इन्होंने आकाश नामक पहली स्वदेशी सुपरसोनिक सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल (एसएएम) प्रणाली के डिजाइन की शुरुआत से लेकर भारतीय सेना और भारतीय वायु सेना में इस प्रणाली की तैनाती तक इसके विकास और उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2. 5 अप्रैल, 1958 को तेलंगाना के खम्मम जिले के मधिरा शहर में जन्में, डॉ. चंद्रमौली ने वर्ष 1981 में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, वारंगल से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बीटेक की डिग्री प्राप्त की। बाद में, इन्होंने वर्ष 1992 में आई.आई.टी., दिल्ली से एम.टेक. की डिग्री और वर्ष 2021 में उस्मानिया विश्वविद्यालय से पीएचडी की डिग्री प्राप्त की। इन्होंने वर्ष 1983 में परियोजना आकाश में युवा वैज्ञानिक के रूप में उस समय कार्यभार संभाला, जब टीम में केवल दो वैज्ञानिक थे। तब से, परियोजना आकाश के मुख्य तकनीकी सदस्य के रूप में, इन्होंने डिजाइन, प्रौद्योगिकी विकास, सिस्टम एकीकरण, उड़ान परीक्षण और सत्यापन के क्षेत्रों में योगदान दिया। कॉन्फिगरेशन नियंत्रण, एकीकरण और उड़ान परीक्षण के लिए परियोजना प्रबंधक के रूप में, इन्होंने कई संगठनों में बहु–विद्यात्मक टीमों का निर्देशन किया, कई विकास चरण के मिसाइलों को तैयार किया और 15 वर्षों से अधिक समय तक उड़ान परीक्षण किए तथा मिसाइल और जमीनी प्रणालियों के लिए उत्पादन संस्करण कॉन्फिगरेशन विकसित किए। इन्होंने कई कार्य स्थलों में अलग–अलग विषय क्षेत्र से संबंधित टीमों के साथ परस्पर संवाद स्थापित किया, पांच अलग–अलग प्लेटफार्मोंरू तीन ट्रैक्ड वाहन और दो पहिए वाले वाहन पर रडार, प्रक्षेपक और कमान केंद्र के कॉन्फिगरेशन को अंतिम रूप दिया। इन्होंने डिजाइन सत्यापन और प्रदर्शन अधिप्रमाणन के लिए सौ से अधिक आकाश मिसाइल उड़ान परीक्षणों की योजना तैयार की और पर्यवेक्षण का कार्य किया।

3. तीन दशकों से अधिक समय की इस कठिन यात्रा में सामने आई कई बाधाओं के बावजूद, डॉ. चंद्रमौली अपने लक्ष्य को लेकर अडिग रहे, अलग–अलग संगठनों में टीमों को प्रेरित किया, जटिल तकनीकी चुनौतियों का समाधान किया और देश में पहली बार हजारों आकाश मिसाइलों के साथ काफी संख्या में स्वदेशी एसएएम प्रणालियों के सफल डिजाइन, विकास, उड़ान परीक्षण, उत्पादन, सुपुर्दगी और समावेशन का कार्य सुनिश्चित किया। 34 वर्षों से अधिक समय तक परियोजना आकाश में इनके समर्पित योगदान का ही प्रतिफल है कि भारत कमांड–गाइडेंस आधारित सुपरसोनिक मल्टी–टारगेट, सतह से हवा में मिसाइल प्रणाली का डिजाइन, उत्पादन और इसकी तैनाती करने वाला दुनिया का पहला देश बन गया। इस स्वदेशी एसएएम प्रणाली ने अन्य प्रणालियों के साथ मिलकर हाल में ''ऑपरेशन सिंदूर'' में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

4. डॉ. चंद्रमौली ने अलग–अलग मिशन प्रोफाइल में उड़ान भर रहे हवाई यूएवी लक्ष्यों का पता लगाने के कार्य को प्रदर्शित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, उपयोगकर्ताओं का विश्वास अर्जित किया और स्वदेशी मिसाइल प्रणाली आकाश के लिए उत्पादन आदेश प्राप्त किए। परियोजना निदेशक के रूप में, उन्होंने सभी हितधारकों को एक साथ रखा, दस वर्षों तक उत्पादन, जांच, स्वीकृति परीक्षण और प्रणालियों की डिलीवरी में उनका मार्गदर्शन किया। इनके नेतृत्व में आकाश एसएएम प्रणालियों को वर्ष 2015 में भारतीय सेना और भारतीय वायु सेना में शामिल किया गया। कार्यक्रम निदेशक के रूप में, उन्होंने आकाश 1एस, क्यूआरएसएएम, आकाश प्राइम मिसाइल प्रणालियों की संकल्पना तैयार की तथा हार्डवेयर और उड़ान परीक्षण के कार्य को मूर्त रूप देने में परियोजना निदेशकों का मार्गदर्शन किया। इन्होंने कई डिजाइन और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण दस्तावेज तैयार करने में भी योगदान दिया, जिनका उपयोग अन्य परियोजनाओं में भी किया जाता है। आकाश परियोजना के प्रति इनके समर्पित प्रयासों का प्रतिफल है कि इससे भारी राजस्व का सृजन हुआ, विदेशी मुद्रा की बचत हुई, रोजगार सृजित हुए और देश में पहली बार इको–सिस्टम का निर्माण हुआ। इनके योगदान के फलस्वरूप, भारतीय उद्योग परिष्कृत मिसाइलों, रडारों, प्रक्षेपकों और नियंत्रण केंद्रों के उत्पादन, परीक्षण और सुपुर्दगी की क्षमता को बढ़ा सका, परिणामस्वरूप जिनका अब निर्यात भी किया जा रहा है जिससे देश को विदेशी मुद्रा अर्जित हो रही है। पिछले सात वर्षों से वह सामरिक मिसाइल परियोजनाओं के लिए तकनीकी सलाहकार की सेवाएं दे रहे हैं।

5. डॉ. चंद्रमौली को वर्ष 2004 में डीआरडीओ से आत्मनिर्भरता में उत्कृष्ट कार्य के लिए अग्नि पुरस्कार; वर्ष 2007 में आईईआई से सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया पुरस्कार; वर्ष 2008 में डीआरडीओ से पथ–प्रदर्शक अनुसंधान पुरस्कार; वर्ष 2013 में डीआरडीओ से साइंटिस्ट ऑफ द ईयर पुरस्कार; वर्ष 2014 में फिक्की से वैश्विक अनुसंधान एवं विकास पुरस्कार; वर्ष 2014 में एनआईटी वारंगल से विशिष्ट पूर्व छात्र व्यावसायिक उपलब्धि पुरस्कार; वर्ष 2015 में पीएमए इंडिया से प्रोजेक्ट लीडर पुरस्कार; वर्ष 2016 में एचएमए से मैनेजर ऑफ द ईयर पुरस्कार और वर्ष 2017 में एफटीएपीसीसीआई से लीडर ऑफ एक्सीलेंस इन साइंस एंड इंजीनियरिंग प्राप्त हुआ है।

DR. PREM LAL GAUTAM

Dr. Prem Lal Gautam is Chancellor of Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa, Samastipur, Bihar. As an eminent plant breeder, teacher, guide, research manager and institution builder, he has made outstanding contributions to agriculture, biodiversity conservation, and farmers' rights.

2. Born on 12th December, 1947 in village Kandayana (Berthin), District Bilaspur, Himachal Pradesh, Dr. Gautam received B.Sc. (Agriculture) from Himachal Agricultural College, Solan (1968) followed by M.Sc. (1970) and Ph.D. (1974) in Genetics from Indian Agricultural Research Institute (IARI), New Delhi. Beginning academic career in 1974 as Assistant Professor at G.B. Pant University of Agriculture & Technology, Pantnagar, he held key positions such as Chairperson, Protection of Plant Varieties and Farmers' Rights Authority; Chairman, National Biodiversity Authority; Deputy Director General (Crop Science), ICAR; Director, ICAR-National Bureau of Plant Genetic Resources; National Director, ICAR-National Agricultural Technology Project; Vice-Chancellor, G.B. Pant University of Agriculture & Technology, Pantnagar; Managing Director, Uttarakhand Seeds and Terai Development Corporation; Dean, College of Forestry, Dr. Y.S. Parmar University of Horticulture & Forestry, Solan; among others.

3. Dr. Gautam was associated with development of a dozen improved crop varieties, pioneered national system of plant germplasm registration, accelerated documentation of Peoples' Biodiversity Registers and registration of plant varieties, operationalized National Gene Bank and augmented its holdings, and initiated new educational programs. He was involved in establishment of new institutions and initiatives across the country, including research and extension centres, mission mode projects, Teams of Excellence, State Biodiversity Boards, and Biodiversity Management Committees. He made important contributions to drafting and implementation of Biological Diversity Act and Protection of Plant Varieties and Farmers' Rights Act—landmark legislations that transformed biodiversity governance and strengthened farmers' rights.

4. Dr. Gautam was member of Indian delegation for negotiations of FAO-International Treaty on Plant Genetic Resources for Food & Agriculture (ITPGRFA) and United Nations Convention on Biological Diversity (CBD). He was among the global advocates for inclusion of Farmers' Rights in ITPGRFA. He was also a member of Executive Board of Global Crop Diversity Trust. He has served on high-level national committees spanning scientific, regulatory, policy and educational domains. He led committees on restructuring ICAR- All Indian Co-ordinated Research Projects, Indian Council of Forestry Research and Education, State Seed Corporations, and scientific review and redefinition of basmati rice, thereby contributing significantly to institutional efficiency, regulatory clarity and national economic interest. He chaired research advisory committees of ICAR institutes and the review committee of IARI educational hubs and has made recommendations that enhanced institutional effectiveness.

5. Dr. Gautam is a Fellow of the National Academy of Agricultural Sciences (NAAS) and an Honorary Fellow of the National Academy of Horticultural Sciences and the Indian Society of Plant Genetic Resources (ISPGR). He has served as Vice-President of NAAS and as President of ISPGR as well as the Indian Society of Genetics and Plant Breeding. His distinguished contributions have been recognised through numerous honours, including the Lai Bahadur Shastri Memorial Gold Medal, Harbhajan Singh Memorial Award, Uttaranchal Rattan, Lifetime Achievement Award, Agriculture Leadership Award, Indira Gandhi Sadbhavana Award, Dr. S. Radhakrishnan Education Excellence Award, Dr. A. B. Joshi Memorial Lecture Award, and the conferment of D.Sc. *(honoris causa)* degrees.

डॉ. प्रेम लाल गौतम

डॉ. प्रेम लाल गौतम डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, बिहार के कुलाधिपति हैं। एक प्रख्यात पादप प्रजनक, शिक्षक, मार्गदर्शक, अनुसंधान प्रबंधक और संस्था निर्माता के रूप में, उन्होंने कृषि, जैव विविधता संरक्षण और किसानों के अधिकारों में उत्कृष्ट योगदान दिया है।

2. 12 दिसंबर, 1947 को कंडायना (बर्थिन), जिला बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश में जन्मे, डॉ. गौतम ने हिमाचल कृषि कॉलेज, सोलन (1968) से बी.एस.सी (कृषि) की डिग्री प्राप्त की, इसके बाद भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई), नई दिल्ली से आनुवंशिकी में एम.एस.सी (1970) और पीएचडी (1974) की डिग्री प्राप्त की। वर्ष 1974 में जी.बी. पंत कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर में सहायक प्रोफेसर के रूप में अकादमिक करियर की शुरुआत करते हुए, उन्होंने अध्यक्ष, पौधों की किस्मों और किसान अधिकार प्राधिकरण के संरक्षणय अध्यक्ष, राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरणय उप महानिदेशक (फसल विज्ञान), भाकृअनुपय निदेशक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरोय राष्ट्रीय निदेशक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय कृषि प्रौद्योगिकी परियोजनाय कुलपति, जी.बी. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगरय प्रबंध निदेशक, उत्तराखंड बीज एवं तराई विकास निगमय डीन, वानिकी महाविद्यालय, डॉ. वाई.एस. परमार बागवानी और वानिकी विश्वविद्यालय, सोलनय जैसे प्रमुख पदों पर कार्य किया।

3. डॉ. गौतम एक दर्जन उन्नत फसल किस्मों के विकास से जुड़े थे, उन्होंने पादप जर्मप्लाज्म पंजीकरण की राष्ट्रीय प्रणाली का बीड़ा उठाया, पीपुल्स बायोडायवर्सिटी रजिस्टरों के दस्तावेजीकरण और पौधों की किस्मों के पंजीकरण में तेजी लाई, नेशनल जीन बैंक का संचालन किया और इनकी होल्डिंग्स में वृद्धि की, और नए शैक्षिक कार्यक्रम शुरू किए। वह अनुसंधान और विस्तार केंद्रों, मिशन मोड परियोजनाओं, उत्कृष्टता टीमों, राज्य जैव विविधता बोर्डों और जैव विविधता प्रबंधन समितियों सहित देश भर में नए संस्थानों और पहलों की स्थापना में शामिल रहे। उन्होंने जैव विविधता अधिनियम और पौधों की किस्मों एवं किसानों के अधिकारों का संरक्षण अधिनियम का मसौदा तैयार करने और कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान दिया, ये ऐसे ऐतिहासिक कानून हैं जिन्होंने जैव विविधता गवर्नेंस को बदल दिया और किसानों के अधिकारों को मजबूत किया।

4. डॉ. गौतम खाद्य और कृषि के लिए पादप आनुवंशिक संसाधनों पर एफएओ–अंतर्राष्ट्रीय संधि (आईटीपीजीआरएफए) और जैव विविधता पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (सीबीडी) की वार्ता के लिए भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य थे। वह आईटीपीजीआरएफए में किसानों के अधिकारों को शामिल करने के वैश्विक समर्थकों में से एक थे। वह ग्लोबल क्रॉप डायवर्सिटी ट्रस्ट के कार्यकारी बोर्ड के सदस्य भी थे। उन्होंने वैज्ञानिक, नियामक, नीति और शैक्षिक क्षेत्रों में कार्यरत उच्च स्तरीय राष्ट्रीय समितियों में कार्य किया है। उन्होंने आईसीएआर– अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाओं, भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद, राज्य बीज निगमों के पुनर्गठन और बासमती चावल की वैज्ञानिक समीक्षा और पुनर्परिभाषा पर समितियों का नेतृत्व किया, जिससे संस्थागत दक्षता, नियामक स्पष्टता और राष्ट्रीय आर्थिक हित में महत्वपूर्ण योगदान मिला। उन्होंने आईसीएआर संस्थानों की अनुसंधान सलाहकार समितियों और आईएआरआई शैक्षिक केंद्रों की समीक्षा समिति की अध्यक्षता की और संस्थागत प्रभावशीलता को बढ़ाने वाली अनुशंसाएं कीं।

5. डॉ. गौतम नेशनल एकेडमी ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज (एनएएएस) के फेलो और नेशनल एकेडमी ऑफ हॉर्टिकल्चरल साइंसेज और इंडियन सोसाइटी ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज (आईएसपीजीआर) के मानद फेलो हैं। उन्होंने एनएएएस के उपाध्यक्ष और आईएसपीजीआर के साथ–साथ इंडियन सोसाइटी ऑफ जेनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया है। उनके विशिष्ट योगदान को कई सम्मानों के माध्यम से मान्यता दी गई है, जिनमें लाल बहादुर शास्त्री मेमोरियल गोल्ड मेडल, हरभजन सिंह मेमोरियल अवार्ड, उत्तरांचल रतन, लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, एग्रीकल्चर लीडरशिप अवार्ड, इंदिरा गांधी सद्भावना अवार्ड, डॉ. एस. राधाकृष्णन एजुकेशन एक्सीलेंस अवार्ड, डॉ. ए. बी. जोशी मेमोरियल लेक्चर अवार्ड और डी. एससी. (मानद उपाधि) डिग्री प्रदान करना शामिल है।

DR. RAJASTAPATHI KALIAPPA GOUNDAR

Dr. Rajastapathi Kaliappa Goundar is a famous craftsman of Bronze art.

2. Born on 13^{th} March 1961 at Kannankurichi village in Salem District of Tamilnadu, Dr. Goundar had avid interest towards pictures and arts. He joined at “Poompuhar”, an Art Metal training Centre at Salem and undergone intensive training for three years from 1975 - 1977 under the guidance of National Award Winner Master Craftsman Shri Vaidyanatha Stapathi. After completion of training, at the age of 16, he joined at Chennai Poompuhar Design Centre and started his own profession as Artist. In the year 1981, with 4 years of experience in the field of Bronze Art Metal crafting, he started his own crafts unit, “Balamurugan Bronze Arts work'at Salem. From his crafts unit, they started designing and making of Bronze arts. He participated in National and state level exhibitions and won prizes and honours from Art lovers. His works were appreciated by both Central and State Government institutions and he expanded his art crafts from Bronze to Stone works and Cement works.

3. Dr. Goundar in order to share his skills with next generation, initiated training classes for younger generations from his institute. From his institute, he trained and developed more than 50 youngsters with the help of Handicrafts Development Commissioner, Government of India, New Delhi and through DRTA, Government of Tamilnadu - TRYSEM scheme. As he was trained in the ancient-style Shilpa Agama Shastra, he has evolved newer designs and created the statues as per agama guidelines. His creation of 3.5 Ton “Ananda Narthana Ganapathi” is a blend of ancient and modem style, which is made for London Museum is now at display in Chennai Poompuhar.

4. Due to Dr. Goundar's avid interest in arts, he also started focusing on preserving the old temples which were struggling due to financial stress and left without maintenance. He renovated more than 100 temples which were left to perish and rebuilt them and finally conducted Kumbabishekam. One of the notable work in his career was Nagabaranam to Tanjore Brahadeeshwara Temple. Until his work to main deity, Tanjore Big Temple was considered as tourist place and no agama poojas were conducted. As per request by Raja Bonsale of Tanjore palace, Shri Rajastapathi presented 14 inch high Brass metal Nagabaranam to the temple. After installation of art work, poojas as per agama sastra was restarted and temple regained its value as spiritual place for worship. As an artist of sculptures, he is serving to spread our cultural heritage across the world. He is constructing and renovating temples and provide sculptures to countries like Malaysia Singapore, England and Canada.

5. Dr. Goundar started a craftsmen trust, with which they help old artisans and their families in way of funding for artisans, children education and provide employment in their projects and help for their livelihood. During his tenure as a member of Board of Directors in Tamilnadu state Handicrafts Association, they identified and implemented special schemes for welfare of old artisans and their families. Providing training alone will not be sufficient for youngsters, so they involve them in their own projects and provide them with hands-on training and develop them into an independent artist-entrepreneur.

6. As the President of Silpaguru Awardees and National Awardees Handicrafts Artisan Welfare association at Salem, Dr. Goundar's mission is to preserve the ancient Indian heritage through its symbols- Statues & Temples. He has also been actively engaged in philanthropic works. During covid -19 Pandemic, his Balamurugan Bronze arts work was involved in various social services along with various government offices. One of the services was to distribute mid-day meals to ail government servants in and around Kannankurichi village, Salem. Artists of the institution served hygienically cooked meals to nearby 30,000 government servants for about 50 days. The service was recognised by many government officers of Salem corporation.

डॉ. राजस्थापति कालियप्पा गौंडर

डॉ. राजस्थापति कालियप्पा गौंडर कांस्य कला के प्रसिद्ध शिल्पकार हैं।

2. 13 मार्च, 1961 को तमिलनाडु के सलेम जिले के कन्ननकुरिची गांव में जन्मे, डॉ. गौंडर में चित्रों और कलाओं के प्रति गहरी रुचि थी। वे सलेम के एक कला धातु प्रशिक्षण केंद्र ''पूमपुहार'' में शामिल हुए और उन्होनें राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता मास्टर शिल्पकार श्री वैद्यनाथ स्तापथी के मार्गदर्शन में वर्ष 1975 से 1977 तक की तीन वर्षों तक गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, 16 वर्ष की आयु में वे चेन्नई पूमपुहार डिजाइन सेंटर में शामिल हुए और कलाकार के रूप में अपने पेशे की शुरुआत की। कांस्य कला मेटल शिल्प के क्षेत्र में 4 वर्षों के अनुभव के साथ उन्होनें वर्ष 1981 में सलेम में 'बालमुरुगन ब्रान्ज आर्ट्स वर्क' के नाम से अपनी शिल्प इकाई का शुभारंभ किया। इस इकाई के माध्यम से उन्होनें कांस्य कलाकृतियों को अभिकल्पित करने और बनाने की यात्रा शुरू की। उन्होंने राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय प्रदर्शनियों में भाग लिया और कला प्रेमियों से पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किए। उनकी कलाकृतियों की सराहना केंद्र और राज्य सरकार दोनों के संस्थानों द्वारा की गई और उन्होंने अपने कला शिल्प को कांस्य से लेकर पत्थर और सीमेंट की कलाकृतियों तक विस्तारित किया।

3. अपने कौशल को अगली पीढ़ी के साथ साझा करने के लिए डॉ. गौंडर ने अपने संस्थान में युवा पीढ़ी के लिए प्रशिक्षण कक्षाएं शुरू कीं। हस्तशिल्प विकास आयुक्त, भारत सरकार, नई दिल्ली की सहायता से और डीआरटीए, तमिलनाडु सरकार – ट्राइसेम योजना के माध्यम से उन्होंने अपने संस्थान से 50 से अधिक युवाओं को प्रशिक्षित कर कुशल बनाया। चूंकि वे प्राचीन शैली के शिल्प आगम शास्त्र में प्रशिक्षित थे इसलिए उन्होंने नए डिजाइन विकसित किए और आगम दिशानिर्देशों के अनुसार मूर्तियों का निर्माण किया। उनकी 3.5 टन की कलाकृति ''आनंद नार्थन गणपति'' प्राचीन और आधुनिक शैली का मिश्रण है, जो लंदन संग्रहालय के लिए बनाई गई है और अब चेन्नई पूमपुहार में प्रदर्शित है।

4. कला में गहरी रुचि के कारण, डॉ. गौंडर ने पुराने मंदिरों के संरक्षण पर भी ध्यान देना शुरू कर दिया, जो वित्तीय अभाव और बिना रखरखाव के कारण नष्ट होने की कगार पर थे। उन्होंने ऐसे 100 से अधिक मंदिरों का संरक्षण किया और उनका पुनर्निर्माण करके अंत में कुंभिषेकम का आयोजन किया। उनके करियर में उल्लेखनीय कार्यों में से एक तंजौर ब्रहदेश्वर मंदिर के लिए बनाया गया नागभरणम था। उनके इस महत्वपूर्ण योगदान से पहले, तंजौर बड़ा मंदिर को पर्यटक स्थल माना जाता था और वहाँ कोई अगम पूजा आयोजित नहीं की जाती थी। तंजौर महल के राजा बोन्साले के अनुरोध पर, श्री राजस्तपति ने मंदिर को 14 इंच ऊंची पीतल धातु से बने नागभरणम से सुसज्जित किया। कलाकृति की स्थापना के बाद, आगम शास्त्र के अनुसार पूजा फिर से शुरू की गई और मंदिर पुनः एक आध्यात्मिक स्थल बन गया। मूर्तिकला कलाकार के रूप में वे हमारी सांस्कृतिक विरासत को दुनिया भर तक पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं। वे मंदिरों का निर्माण और संरक्षण कर रहे हैं और मलेशिया सिंगापुर, इंग्लैंड और कनाडा जैसे देशों को मूर्तियां प्रदान कर रहे हैं।

5. डॉ. गौंडर ने एक शिल्पकार ट्रस्ट की शुरुआत की जिसके माध्यम से वे कारीगरों और बच्चों की शिक्षा को वित्तपोषित कर तथा अपनी परियोजनाओं में रोजगार प्रदान कर पुराने कारीगरों और उनके परिवारों की सहायता करते हैं और उन्हें आजीविका का साधन प्रदान करते हैं। तमिलनाडु राज्य हस्तशिल्प संघ में निदेशक मंडल के सदस्य के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने पुराने कारीगरों और उनके परिवारों के कल्याण के लिए विशेष योजनाओं को लागू किया। केवल प्रशिक्षण प्रदान करना युवाओं के लिए पर्याप्त नहीं होगा, इसलिए वे उन्हें अपनी परियोजनाओं में शामिल कर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करते हैं और उन्हें एक स्वतंत्र कलाकार–उद्यमी के रूप में कुशल बनाते हैं।

6. सलेम में सिल्पागुरु पुरस्कार विजेता और राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता हस्तशिल्प कारीगर कल्याण संघ के अध्यक्ष के रूप में, डॉ. गौंडर का मिशन प्राचीन भारतीय विरासत को उसके प्रतीकों अर्थात मूर्तियों और मंदिरों के माध्यम से संरक्षित करना है। वे परोपकारी कार्यों में भी सक्रिय रहे हैं। कोविड–19 महामारी के दौरान, उनकी संस्था बालमुरुगन ब्रान्ज आर्ट्स वर्क विभिन्न सरकारी कार्यालयों के साथ–साथ विभिन्न सामाजिक सेवाओं में शामिल थी। सलेम के कन्ननकुरिची गांव और उसके आसपास के सरकारी कर्मचारियों को संस्था द्वारा मध्याह्न भोजन वितरित किया गया। संस्था के कलाकारों ने लगभग 50 दिनों तक आसपास के 30,000 सरकारी कर्मचारियों को स्वच्छता से पकाया हुआ भोजन परोसा गया। इस सेवा को सलेम निगम के कई सरकारी अधिकारियों द्वारा सराहना मिली।

DR. PADMA GURMET

Dr. Padma Gurmet, founding Director of the National Institute of Sowa-Rigpa, Leh and President, Ladakh Amchi Sabha, Leh-Ladakh, is among the pioneer of formal recognition of Sowa-Rigpa system of medicine under the Ayush system of medicine and its systematic development in Ladakh and other Himalayan regions. He is also the main person behind Sowa-Rigpa policy formulation, regulations, research and project management. Sowa-Rigpa is the Indian Buddhist tradition of medicine and it has been the backbone of public health in remote Himalayan regions.

2. Born on 15th April, 1971 in a traditional Sowa-Rigpa family, Dr. Gurmet learned Sowa- Rigpa medicine since childhood from his father late Shri Amchi Tashi Rabstan Onchung and later formally completed Sowa-Rigpa degree from Central Institute of Buddhist Studies, Leh- Ladakh. He joined Central Council for Research in Ayurveda and Siddha in 1997 and posted as Research Officer in Amchi Medicine Research Unit, Leh, where he has initiated various projects and due to his dedicated work and research inputs this small Unit was upgraded as National Research Institute for Sowa-Rigpa in 2009. He has initiated more than fifteen National and regional seminars, published 12 books and contributed many research articles in magazine, Journals and scientific conferences. The major research work he has initiated are cataloguing of more than 1500 Sowa-Rigpa medical literature, documentation of 525 medicinal plants of Trans-Himalayan regions, digitalized important manuscripts of Sowa-Rigpa, documentation of around 1200 Sowa-Rigpa formulations and project for conservation of Trans-Himalayan Medicinal Plants.

3. On international platform, Dr. Gurmet has initiated to file the application for nomination of Sowa-Rigpa as Intangible Cultural Heritage of India in UNESCO, the complete dossier preparation and its submission to UNESCO was technically contributed by him. He has organized periodical seminars, workshop and capacity building programs to Sowa-Rigpa healers for preservation and promotion of Sowa-Rigpa to improve public health in Ladakh and gradually started to work on National level.

4. Dr. Gurmet had requested Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi to establish a dedicated National Institute of Sowa-Rigpa in Leh, which was announced to be established at Leh in August 2019. He was appointed as the first Director of the Institute and within short span of time, he has made the Institute fully functional with land allotment, construction of infrastructure, Post creation and four batches of students etc. He has also created the first ever Trans Himalayan herbal garden for conservation of Himalayan medicinal plants on ten hectares of land in Ladakh and successfully established more than 100 plants species with different cultivation techniques with financial support from various agencies.

5. Before the initiatives of Dr. Gurmet, Sowa-Rigpa medical tradition was on decline. The younger generation was not coming into Sowa-Rigpa profession. He has greatly contributed for its revival and formal recognition as an Ayush system of medicine. Due to persistent effort of Ladakh Amchi Sabha, under his leadership the Sowa- Rigpa medical officers are appointed in Government sector and simultaneously the number of students in Sowa-Rigpa formal education has tremendously increased in Himalayan regions.

6. To streamline Sowa-Rigpa practice, Dr. Gurmet has designed and implemented many projects for revitalization of Sowa-Rigpa in remote Himalayan regions by training more than 200 practitioners, providing to strengthen Sowa-Rigpa practitioners in remote areas of Ladakh. He pursued opening of Sowa-Rigpa clinics in all Government PHCs and CHCs in Ladakh. These Clinics are now providing public health to thousands of patients every year. He has also motivated Sowa-Rigpa practitioners in Arunachal Pardesh, Himanchal Pardesh, Sikkim and Jammu and Kashmir to setup Sowa-Rigpa organizations for preservation and promotion of Sowa-Rigpa. He has also contributed to establishment of Ayush and State Medicinal plants Board in the Union Territory of Ladakh and acted as member of State Wildlife Board, Biodiversity Council, Ayush Society, State Medicinal Plants Board and Science and Technology Development Committee of U.T. Ladakh. He is the key person behind selection of State Flower and State tree for Union Territory of Ladakh as Chairman of the Technical Committee. His work has great impact on development of Sowa-Rigpa and improvement of public health in remote Himalayan regions. The documentation process of Sowa-Rigpa knowledge and its Research and Development activity has been developing systematically with publication of books and research publications in reputed journals. Hence, his work is commendable to revive Sowa-Rigpa medical heritage of India.

डॉ. पदमा गुरमेद

डॉ. पदमा गुरमेद राष्ट्रीय सोवा–रिग्पा संस्थान, लेह के संस्थापक निदेशक और लद्दाख अमची सभा, लेह–लद्दाख के अध्यक्ष हैं। वह आयुष चिकित्सा पद्धति के अंतर्गत सोवा–रिग्पा चिकित्सा पद्धति को औपचारिक मान्यता दिलाने तथा लद्दाख एवं अन्य हिमालयी क्षेत्रों में इसके व्यवस्थित विकास के अग्रदूतों में से एक हैं। वह सोवा–रिग्पा नीति निर्माण, विनियमों, अनुसंधान और परियोजना प्रबंधन के पीछे के मुख्य सूत्रधार भी हैं। सोवा–रिग्पा चिकित्सा की भारतीय बौद्ध परंपरा है और यह दुर्गम हिमालयी क्षेत्रों में सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली की रीढ़ रही है।

2. 15 अप्रैल, 1971 को एक पारंपरिक सोवा–रिग्पा परिवार में जन्मे, डॉ. गुरमेद ने बाल्यकाल से ही अपने स्वर्गीय पिता श्री अमची ताशी रबस्तान ओंचुंग से सोवा–रिग्पा चिकित्सा पद्धति सीखी और बाद में केंद्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह–लद्दाख से सोवा–रिग्पा की औपचारिक डिग्री पूरी की। वह वर्ष 1997 में केंद्रीय आयुर्वेद और सिद्ध अनुसंधान परिषद से जुड़े और आमची चिकित्सा अनुसंधान इकाई, लेह में अनुसंधान अधिकारी के रूप में तैनाती मिली, जहां इन्होंने अलग–अलग परियोजनाओं की शुरुआत की और इनके समर्पित कार्य और शोध कार्यों के कारण इस छोटी इकाई को वर्ष 2009 में राष्ट्रीय सोवा–रिग्पा अनुसंधान संस्थान के रूप में उन्नत किया गया। इन्होंने पंद्रह से अधिक राष्ट्रीय और क्षेत्रीय संगोष्ठियां अयोजित कीं, 12 पुस्तकें प्रकाशित कीं और पत्रिका, जर्नल्स और वैज्ञानिक सम्मेलनों में कई शोध लेखों में अपना योगदान दिया है। इनके शुरू किए गए प्रमुख शोध कार्यों में 1500 से अधिक सोवा–रिग्पा चिकित्सा साहित्य की सूची बनाना, ट्रांस–हिमालयी क्षेत्रों के 525 औषधीय पौधों का प्रलेखन, सोवा–रिग्पा की महत्वपूर्ण पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण, लगभग 1200 सोवा–रिग्पा फॉर्मूलेशन का प्रलेखन और ट्रांस–हिमालयी औषधीय पौधों के संरक्षण की परियोजना शामिल है।

3. अंतर्राष्ट्रीय मंच पर, डॉ. गुरमेद ने सोवा–रिग्पा को यूनेस्को में भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में नामांकित करने के लिए आवेदन जमा करने की पहल की, इसका पूरा डोजियर तैयार करने और यूनेस्को में इसे जमा कराने में इनका तकनीकी योगदान रहा। इन्होंने लद्दाख में सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए सोवा–रिग्पा के संरक्षण और प्रचार के लिए सोवा–रिग्पा चिकित्सकों के लिए समय–समय पर सेमिनार, कार्यशाला और क्षमता विकास कार्यक्रम आयोजित किए हैं और धीरे–धीरे इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर काम करना शुरू कर दिया है।

4. डॉ. गुरमेद ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से लेह में एक समर्पित राष्ट्रीय सोवा–रिग्पा संस्थान स्थापित करने का अनुरोध किया था, जिसकी स्थापना की घोषणा अगस्त 2019 में लेह में की गई थी। इन्हें संस्थान के पहले निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया और थोड़े ही समय में इन्होंने भूमि आवंटन, अवसंरचना के निर्माण, पद सृजन और विद्यार्थियों के चार बैचों आदि के साथ संस्थान को पूरी तरह से क्रियाशील बना दिया है। इन्होंने लद्दाख में दस हेक्टेयर भूमि पर हिमालयी औषधीय पौधों के संरक्षण के लिए अपनी तरह का पहला ट्रांस हिमालयन हर्बल गार्डन भी बनाया है और विभिन्न एजेंसियों से प्राप्त वित्तीय सहायता से खेती की अलग–अलग तकनीकों के साथ 100 से अधिक पौधों की प्रजातियों को सफलतापूर्वक लगाया है।

5. डॉ. गुरमेद की पहल से पूर्व, सोवा–रिग्पा चिकित्सा परंपरा गायब हो रही थी। युवा पीढ़ी सोवा–रिग्पा पेशे में नहीं आ रही थी। इन्होंने इसके पुनरुद्धार और आयुष चिकित्सा प्रणाली के रूप में औपचारिक मान्यता के लिए बहुत योगदान दिया है। लद्दाख आमची सभा के लगातार प्रयासों से और उनके नेतृत्व के कारण, सरकारी क्षेत्र में सोवा–रिग्पा चिकित्सा अधिकारियों की नियुक्ति की जा रही है और साथ ही हिमालयी क्षेत्रों में सोवा–रिग्पा औपचारिक शिक्षा में छात्रों की संख्या में जबरदस्त वृद्धि हुई है।

6. सोवा–रिग्पा पद्धति को मुख्यधारा में लाने के लिए, डॉ. गुरमेद ने 200 से अधिक चिकित्सकों को प्रशिक्षित करके, सुदूर हिमालयी क्षेत्रों में सोवा–रिग्पा के पुनरुद्धार के लिए कई परियोजनाएं तैयार और कार्यान्वित की, जिससे लद्दाख के दूरदराज के क्षेत्रों में सोवा–रिग्पा चिकित्सकों को मजबूती मिली। इन्होंने लद्दाख में सभी सरकारी पीएचसी और सीएचसी में सोवा–रिग्पा क्लीनिक खोलने का प्रयास किया। ये क्लिनिक अब हर वर्ष हजारों रोगियों को सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। इन्होंने अरुणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम और जम्मू–कश्मीर में सोवा–रिग्पा चिकित्सकों को सोवा–रिग्पा के संरक्षण और प्रचार के लिए सोवा–रिग्पा संगठन स्थापित करने के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने लद्दाख संघ राज्य क्षेत्र में आयुष और राज्य औषधीय पादप बोर्ड की स्थापना में भी योगदान दिया है और वह राज्य वन्यजीव बोर्ड, जैव विविधता परिषद, आयुष सोसाइटी, राज्य औषधीय पादप बोर्ड और लद्दाख संघ राज्य क्षेत्र की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विकास समिति के सदस्य के रूप में कार्य कर चुके हैं। वह तकनीकी समिति के अध्यक्ष के रूप में लद्दाख संघ राज्य क्षेत्र के लिए राज्य पुष्प और राज्य वृक्ष के चयन के पीछे के मुख्य सूत्रधार भी हैं। इनके काम का सोवा–रिग्पा के विकास और सुदूर हिमालयी क्षेत्रों में सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार पर गहरा प्रभाव पड़ा है। सोवा–रिग्पा ज्ञान की प्रलेखन प्रक्रिया और इसकी अनुसंधान एवं विकास गतिविधि पुस्तकों के प्रकाशन तथा प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में शोध प्रकाशनों के साथ व्यवस्थित रूप से विकसित हो रही है। अतः, उनका काम भारत की सोवा–रिग्पा चिकित्सा विरासत को पुनर्जीवित करने के लिए सराहनीय है।

SHRI ASOK KUMAR HALDAR

Shri Asok Kumar Haldar is a noted Indian writer, and social thinker from Malda district of West Bengal.

2. Born on 1st October, 1959, Shri Haldar completed his postgraduate diploma in Human Rights and was formerly a Railway Mail Express guard. He has dedicated his life to literature and social consciousness and the promoting of human values. Through sustained writing and public engagement, he has worked tirelessly to advance ethical awareness, knowledge equality and social justice through writing and public engagement.

3. Shri Haldar is the author of thirteen books, several of which are government registered publications bearing ISBN numbers. His significant works - including Search out truth in the light of knowledge, Remove the dark to awake up the light of knowledge, The Radical change of human society and with its scientific observation, and the Diversify life journey of human beings etc., - address themes of truth, social transformation, scientific reasoning, environmental responsibility and human dignity. These publications have received recognition from eminent national personalities and institutions including the Hon'ble President of India, Hon'ble Governor of West Bengal, National Library, Kolkata, Sahitya Akademi, Bengal Library Association, Chairman of Railway Board and the Ministry of Social Justice & Empowerment, Government of India. His works are preserved in prestigious libraries such as the Connemara Public Library, Chennai and the National Library, Kolkata reflecting their enduring academic and social relevance.

4. In addition to books, Shri Haldar has authored approximately 3,000 articles published in leading newspapers of West Bengal and Tripura, including Ananda Bazaar patrika, Malda Samachar Uttarer Saradin etc. His journalistic and literary contribution over several decades has played a vital role in shaping public opinion, raising awareness on human rights, social justice, environmental concerns and moral education at the grassroots level. He has also actively served in the human rights sectors as lifetime member and District Secretary (Malda) of the All India Council of Human Rights, Liberties of Social Justice and as Organizing Secretary of the West Bengal State Committee of Bharatiya Dalit Sahitya Akademi, thereby combining literary excellence with social action.

5. Shri Haldar's contributions have been widely recognized through numerous prestigious honours, including the Dr. Ambedkar Fellowship National Award, Bahujan Sahityakar National Award, International Shiromani Award, Assam Ratna Award, Sahitya Ratna National Award, and the Great Panther National award. He has also received multiple certificates of merit from Indian Railways and has been felicitated repeatedly by the Malda District library and other cultural institutions.

श्री अशोक कुमार हालदार

श्री अशोक कुमार हालदार पश्चिम बंगाल के मालदा जिले के एक प्रसिद्ध भारतीय लेखक और सामाजिक विचारक हैं।

2. 1 अक्टूबर 1959 को जन्मे, श्री हालदार ने मानव अधिकार विषय में स्नातकोत्तर डिप्लोमा किया और पहले वे रेलवे मेल एक्सप्रेस गार्ड थे। उन्होंने अपना जीवन साहित्य और सामाजिक चेतना तथा मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित किया। निरंतर लेखन और सार्वजनिक भागीदारी के माध्यम से उन्होंने नैतिक जागरूकता, ज्ञान संबंधी समानता और सामाजिक न्याय को आगे बढ़ाने के लिए अथक प्रयास किया।

3. श्री हालदार तेरह पुस्तकों के लेखक हैं, जिनमें से कई आईएसबीएन नंबर वाले सरकारी पंजीकृत प्रकाशन हैं। उनकी महत्वपूर्ण कृतियों में सर्च आउट ट्रुथ इन द लाइट ऑफ नालिज, रिमूव द डार्क टू अवेक अप द लाइट ऑफ नालिज, द रैडिकल चेंज ऑफ ह्यूमन सोसाइटी एण्ड विद इट्स साइंटिफिक आब्जर्वैशन और द डिवर्सफाइ लाइफ जर्नी ऑफ ह्यूमन बीइंग्स आदि शामिल हैं जो सत्य, सामाजिक परिवर्तन, वैज्ञानिक तर्क, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व और मानवीय गरिमा के विषयों से संबंधित हैं। इन प्रकाशनों को भारत के माननीय राष्ट्रपति, पश्चिम बंगाल के माननीय राज्यपाल, राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाताय साहित्य अकादमी, बंगाल पुस्तकालय संघ, रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष और सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार सहित प्रतिष्ठित राष्ट्रीय हस्तियों और संस्थानों से मान्यता प्राप्त हुई। उनकी रचनाएँ कॉनेमारा पब्लिक लाइब्रेरी, चेन्नई और नेशनल लाइब्रेरी, कोलकाता जैसे प्रतिष्ठित पुस्तकालयों में संरक्षित हैं जो उनकी स्थायी शैक्षणिक और सामाजिक प्रासंगिकता को दर्शाता है।

4. उपर्युक्त पुस्तकों के अतिरिक्त, श्री हालदार ने आनंद बाजार पत्रिका, मालदा समाचार उत्तर सारदीन आदि सहित पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा के प्रमुख समाचार पत्रों में लगभग 3,000 लेख लिखे। कई दशकों से, उनके पत्रकारिता और साहित्यिक योगदान ने आम लोगों के बीच जनमत को आकार देने, मानवाधिकार, सामाजिक न्याय, पर्यावरण संबंधी चिंताओं और नैतिक शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होनें मानवाधिकार क्षेत्रों में सदैव तत्पर होकर कार्य किया तथा वे ऑल इंडिया काउन्सिल ऑफ ह्यूमन राइट्स और लिबर्टीज ऑफ सोशल जस्टिस के जिला सचिव (मालदा) रहे। इसके साथ वे भारतीय दलित साहित्य अकादमी की पश्चिम बंगाल राज्य समिति के आयोजन सचिव भी रहे। इन पदों पर रहकर उन्होनें सामाजिक कार्य को साहित्यिक उत्कृष्टता के सूत्र में पिरोया।

5. श्री हालदार को उनके योगदान के लिए डॉ. अम्बेडकर फेलोशिप नेशनल अवॉर्ड, बहुजन साहित्यकार नेशनल अवॉर्ड, इंटरनेशनल शिरोमणि अवॉर्ड, असम रत्न अवॉर्ड, साहित्य रत्न नेशनल अवॉर्ड और ग्रेट पैंथर नेशनल अवॉर्ड सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें भारतीय रेलवे से कई योग्यता प्रमाण पत्र भी प्राप्त हुए और मालदा जिला पुस्तकालय और अन्य सांस्कृतिक संस्थानों द्वारा बार–बार सम्मानित किया गया।

DR. SURESH HANAGAVADI

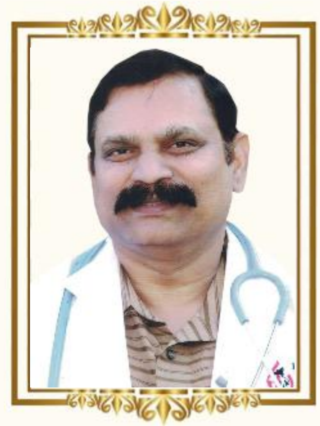

Dr. Suresh Hanagavadi, Founder & President of Karnataka Hemophilia Society Davanagere (KHS), is a distinguished medical professional, visionary institution builder and a tireless advocate for persons with Hemophilia and Rare Bleeding Disorders in India. Himself being suffering from severe Hemophilia-B, he transformed personal adversity into a lifelong mission of service, dedicating over four decades in improving diagnosis, treatment, rehabilitation and dignity for thousands of affected individuals.

2. Born on 01st November, 1963, Dr. Hanagavadi completed his MBBS from JJM Medical College, Davanagere, and obtained his Post- Graduation in MD - Pathology from Karnataka Institute of Medical Sciences, Hubballi. Despite the physical challenges of severe Hemophilia, he emerged as a committed academician, serving as Professor of Pathology at JJM Medical College, Davanagere, contributing significantly to Health, Medical Education, Blood Banking and Blood Transfusion / Blood Safety —laying a strong foundation for a career devoted to health and service.

3. Deeply influenced by the tragic loss of his maternal uncle due to an untreated bleeding episode, Dr. Hanagavadi's resolve to serve the Hemophilia community was forged early in life. In 1990, he founded KHS, which under his visionary leadership evolved into a Nationally recognized model of Comprehensive Hemophilia Care Centre, providing integrated Diagnosis, Outpatient and Inpatient services, Blood Transfusion support, Physiotherapy with Hydrotherapy Rehabilitation, Psychosocial Counselling, Mobile Service Unit - Home based Hemophilia care and Food for admitted patients—all the services are provided at free.

4. Through International Collaborations under World Federation of Hemophilia Twinning Program with Henry Ford Hospital, USA and Alder Hey Children's Hospital, UK, Dr. Hanagavadi introduced global best practices to Indian Hemophilia care and received the Best Treatment Centre Twin Award for excellence in 2014 during World Congress at Melbourne, Australia. Beyond Institution building, he has played a pivotal role in Advocacy with Government of Karnataka led the State to become the First in India to provide free clotting factors (Anti-Hemophilic Factor) treatment through Government District Hospitals—an initiative later replicated across the Nation. He also served as President of Hemophilia Federation India - New Delhi (2004-2010), Advisor to Disability Commissioner, Government of Karnataka (2019-2025), President of Karnataka Chapter of the Indian Association of Pathologists and Microbiologists (KCIAPM) (2022-23) & Technical Committee Member for State Blood Cell - NHM, Government of Karnataka. He is a prolific Researcher and Author. Many National & International Scientific Medical Journals were published and his fundraising and awareness initiative was powerfully supported by legendary playback singer late Dr. S. P. Balasubrahmanyam, who gave free musical concerts to KHS for 21 years making History in the Hemophilia Movement.

5. Dr. Hanagavadi's extraordinary service has been recognized with numerous Honours, including National Award "Shresth Divyangjan" in 2024 by Honorable President of India; Deccan Herald Change Maker Award in 2021 by Deputy Chief Minister of Karnataka; Red & White Bravery Award in 2005 by Honorable Governor of Karnataka; Best Blood Bank Officer State Award in 2003 by Government of Karnataka; Ten Outstanding Young Indian (TOYI) Award in 2001 by President of Junior Chamber India and several State and National Awards for Medical Services, Social Impact and Disability Advocacy—testaments to a life devoted to courage, compassion, and dignity for Persons with Hemophilia.

डॉ. सुरेश हनगवाड़ी

कर्नाटक हीमोफिलिया सोसाइटी दावणगेरे (केएचएस) के संस्थापक और अध्यक्ष डॉ. सुरेश हनगवाड़ी एक प्रतिष्ठित चिकित्सा पेशेवर, दूरदर्शी संस्था निर्माता और भारत में हीमोफिलिया और दुर्लभ रक्तस्राव विकारों से ग्रसित व्यक्तियों के लिए अथक समर्थक है। स्वयं गंभीर हीमोफिलिया–बी से पीड़ित होते हुए भी, उन्होंने व्यक्तिगत प्रतिकूल परिस्थितियों को लोगों की सेवा करने के आजीवन मिशन में बदल दिया, हजारों प्रभावित व्यक्तियों के लिए बीमारी का पता लगाने, उनके उपचार, पुनर्वास और उनके रहन सहन में सुधार करने में चार दशकों से अधिक का समय समर्पित किया।

2. 01 नवंबर, 1963 को जन्मे, डॉ. हनगवाड़ी ने जेजेएम मेडिकल कॉलेज दावणगेरे से एमबीबीएस पूरा किया और कर्नाटक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, हुबली से एमडी – पैथोलॉजी में पोस्ट ग्रेजुएशन की डिग्री प्राप्त की। गंभीर हीमोफिलिया की शारीरिक चुनौतियों के बावजूद, वह एक प्रतिबद्ध शिक्षाविद के रूप में कार्य करते रहे, उन्होंने जेजेएम मेडिकल कॉलेज, देवनगिरी में पैथोलॉजी के प्रोफेसर के रूप में कार्य किया, स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा, ब्लड बैंकिंग और ब्लड ट्रांसफ्यूजन / ब्लड सेफ्टी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया – स्वास्थ्य और सेवा के लिए समर्पित करियर की मजबूत नींव रखी।

3. अनुपचारित रक्तस्राव बीमारी के कारण अपने मामा की दुखद मृत्यु से गहन रूप से प्रभावित होकर जीवन के शुरू में हेमोफिलिया समुदाय की सेवा करना डॉ. हनगवाड़ी के जीवन का लक्ष्य बन गया । वर्ष 1990 में उन्होंने केएचएस की स्थापना की, जो उनके दूरदर्शी नेतृत्व में व्यापक हीमोफिलिया देखभाल केंद्र के राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त मॉडल के रूप में विकसित हुआ, जिसमें एकीकृत रोग नैदानिक, बाह्य रोगी और भर्ती सेवाएं, ब्लड ड्रांसफ्यूशन सहायता, हाइड्रोथेरेपी पुनर्वास के साथ फिजियोथेरेपी, मनोसामाजिक परामर्श, मोबाइल सेवा इकाई–घर आधारित हीमोफिलिया देखभाल और भर्ती रोगियों के लिए भोजन शामिल है – सभी सेवाएं निःशुल्क प्रदान की जाती हैं।

4. हेनरी फोर्ड अस्पताल, यूएसए और एल्डर हे चिल्ड्रन्स हॉस्पिटल, यूके के साथ वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ हीमोफिलिया ट्विनिंग प्रोग्राम के तहत अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से, डॉ. हनगवाड़ी ने भारतीय हीमोफिलिया देखभाल के लिए वैश्विक सर्वोत्तम पद्धतियों की शुरूआत की और वर्ष 2014 में मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया में विश्व कांग्रेस के दौरान उत्कृष्टता के लिए सर्वश्रेष्ठ उपचार केंद्र ट्विन पुरस्कार प्राप्त किया। संस्था निर्माण के अलावा, उन्होंने कर्नाटक सरकार के साथ एडवोकेसी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और कर्नाटक सरकार के माध्यम से राज्य को भारत में पहला स्थान दिलाया है, जो सरकारी जिला अस्पतालों के माध्यम से मुफ्त क्लॉटिंग कारक (एंटी–हीमोफिलिक फैक्टर) उपचार प्रदान करता है – एक पहल जिसे बाद में पूरे देश में अपनाया गया। उन्होंने हीमोफिलिया फेडरेशन इंडिया नई दिल्ली के अध्यक्ष (2004–2010), दिवाव्यंगता आयुक्त, कर्नाटक सरकार के सलाहकार (2019–2025), इंडियन एसोसिएशन ऑफ पैथोलॉजिस्ट्स एंड माइक्रोबायोलॉजिस्ट्स (केसीआईएपीएम) के कर्नाटक चौप्टर के अध्यक्ष (2022–23) और राज्य ब्लड सैल – एनएचएम, कर्नाटक सरकार के लिए तकनीकी समिति के सदस्य के रूप में भी कार्य किया। वे एक विपुल शोधकर्ता और लेखक हैं। उनकी कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक चिकित्सा पत्रिकाएं प्रकाशित हुईं और उनके चंदा संग्रहण और जागरूकता पहलों का महान पार्श्व गायक स्वर्गीय डॉ. एस. पी. बालासुब्रमण्यम द्वारा अत्यधिक समर्थन किया गया, जिन्होंने 21 वर्षों तक केएचएस के लिए मुफ्त संगीत कार्यक्रम देकर हीमोफिलिया आंदोलन के लिए इतिहास बनाया।

5. डॉ. हनगवाड़ी की असाधारण सेवा को कई सम्मानों से मान्यता मिली है, जिसमें भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा वर्ष 2024 में राष्ट्रीय पुरस्कार ''श्रेष्ठ दिव्यांगजन''; कर्नाटक के उप मुख्यमंत्री द्वारा वर्ष 2021 में डेक्कन हेराल्ड चेंज मेकर अवार्ड; कर्नाटक के माननीय राज्यपाल द्वारा वर्ष 2005 में रेड एंड व्हाइट ब्रेवरी अवार्ड; कर्नाटक सरकार द्वारा वर्ष 2003 में सर्वश्रेष्ठ ब्लड बैंक ऑफिसर स्टेट अवार्डय जूनियर चौंबर इंडिया के अध्यक्ष द्वारा 2001 में टेन आउटस्टैंडिंग यंग इंडियन (टीओवाईआई) अवार्ड और चिकित्सा सेवाओं, सामाजिक प्रभाव और डिसएबेलिटि एडवोकेसी के लिए कई राज्य और राष्ट्रीय पुरस्कार शामिल हैं – जो हीमोफिलिया से पीड़ित व्यक्तियों के उपचार में साहस, करुणा और गरिमा के लिए उनके समर्पित जीवन का प्रमाण है।

SHRI CHARAN HEMBRAM

Shri Charan Hembram is a Santali (Ol Chiki) educationist and cultural activist, who has made remarkable contributions to the promotion and institutionalization of Santali language, literature, and culture in Odisha.

2. Born on 09th February, 1952 at Nungan village under Rairangpur in Mayurbhanj district of Odisha, Shri Hembram, belonging to the Santal community and following Samaism, completed his matriculation in 1971 and subsequently dedicated himself to Santali (Ol Chiki) education. He received Teacher's Training under ASECA (O), Rairangpur in 1977, passed Matriculation under BSE (O), ASECA in 1988, and underwent various professional and development trainings.

3. Shri Hembram played a transformative role in Santali education, particularly during his tenure as Secretary of the Board of Santali Education, Odisha under ASECA (O), Rairangpur from 1992 to 2004. During this period, significant institutional developments were achieved, including the posting of 30 Ol Chiki teachers by the Government of Odisha (1992), inauguration of the ASECA (O) building (1994) and development of administrative and physical infrastructure and the reopening of SEMLED press. He actively promoted student mobilization through the formation of the Ol Chiki Students' Union and participated in national literary seminars, tribal language discussions, and cultural programmes organized by reputed institutions such as Sahitya Akademi. Notably, between 1992 and 2004, he facilitated the establishment and affiliation of 1,973 Ol Itun Asras across Odisha, significantly expanding Santali education in the state.

4. As an educational and cultural pioneer, Shri Hembram founded several Ol Itun Asras, including Biduchandan Ol Itun Asra (Kusumi), Sido Kanhu Ol Itun Asra (Neuti), J.J.M. Ol Itun Asra (Mahisaneda, 1991), and Ol Itun Asra (Digiripahi, Balasore, 2001). He also established and directed Santal Akhras and opera groups such as Ural Usara Marshal Madwa (1989), J.J.M. Opera Party (1992), and Marshal Opera (1988). A prolific writer and composer, he authored Santali books including *Sereng Sandhayani, Bhanj Mili (1949)* and *Sirij Renang Sari Partal*, along with numerous articles published in government and literary journals. He composed songs for Santali audio albums and continues to contribute to Santali literary and musical heritage.

5. In recognition of his immense contribution to Santali literature, music, dance, drama, and social service, Shri Hembram has received numerous awards, including Best Adivasi Drama Director (1978), Best Music Director (1997), Guru Gourav Award (2002), Senerenj Guru Award (2004), Guru Shree Award (2004), and the prestigious Guru Gomkey Pandit Raghunath Murmu Fellowship (2004). Over the years, he has been honored with titles such as Santali Sanskritik Guru (2006), Santali Music Guru (2009), Bonosokha (2011), Santal Poet (2012), Chiki Hulgaria (2015), and Prakruti Bandhu (2017). He was also felicitated on the 143rd Birth Anniversary of Bir Birsa Munda (2018) for his role in socio-cultural renaissance and educational development among Adivasis.

श्री चरण हेम्ब्रम

श्री चरण हेम्ब्रम एक संथाली (ओल चिकी) शिक्षाविद और सांस्कृतिक कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने ओडिशा में संथाली भाषा, साहित्य और संस्कृति के प्रचार–प्रसार और संस्थागत विकास में असाधारण योगदान दिया है।

2. 09 फरवरी, 1952 को ओडिशा के मयूरभंज जिले के राइरंगपुर अंतर्गत नुंगन गाँव में जन्मे, श्री हेम्ब्रम संथाल समुदाय से ताल्लुक रखते हैं और समायिज्म को पालन करते हुए उन्होंने वर्ष 1971 में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की और इसके पश्चात उन्होंने स्वयं को संथाली (ओल चिकी) शिक्षा को समर्पित कर दिया। वर्ष 1977 में उन्होंने राइरंगपुर स्थित एएसईसीए (ओ) से शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त किया, वर्ष 1988 में बीएसई (ओ), एएसईसीए के अधीन मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की और इसके बाद विभिन्न पेशेवर और विकासात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया।

3. श्री हेम्ब्रम ने संथाली शिक्षा में, विशेषकर वर्ष 1992 से 2004 तक एएसईसीए (ओ), राइरंगपुर के अधीन ओडिशा संथाली शिक्षा बोर्ड के सचिव के रूप में कार्यकाल के दौरान, परिवर्तनकारी भूमिका निभाई। इस अवधि में कई महत्वपूर्ण संस्थागत विकास हुए, जिनमें ओडिशा सरकार द्वारा 30 ओल चिकी शिक्षकों की नियुक्ति (1992), एएसईसीए (ओ) भवन का उद्घाटन (1994), प्रशासनिक और भौतिक ढांचे का विकास और एसईएमएलईडी प्रेस का पुनः उद्घाटन शामिल हैं। उन्होंने ओल चिकी स्टूडेंट्स यूनियन के गठन के माध्यम से छात्र आंदोलनों को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया और साहित्य अकादमी जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा आयोजित राष्ट्रीय साहित्यिक संगोष्ठियों, आदिवासी भाषा चर्चाओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया। उल्लेखनीय है कि वर्ष 1992–2004 के बीच उन्होंने ओडिशा में 1,973 ओल इटुन आसराओं की स्थापना और मान्यता सुनिश्चित कर संथाली शिक्षा के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

4. शैक्षिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में अग्रणी के रूप में, श्री हेम्ब्रम ने कई ओल इटुन आश्राओं की स्थापना की, जिनमें बिदुचंदन ओल इटुन आसरा (कुसुमी), सिदो कन्हू ओल इटुन आसरा (नेउति), जे.जे.एम. ओल इटुन आसरा (महिसानेदा, 1991) और ओल इटुन आसरा (डिगिरीपाही, बालासोर, 2001) शामिल हैं। उन्होंने उरल उसरा मार्शल मदवा (1989), जे.जे.एम. ओपेरा पार्टी (1992) और मार्शल ओपेरा (1988) जैसे संथाल अखरा और ओपेरा समूहों की स्थापना और निर्देशन भी किया। एक सक्रिय लेखक और संगीतकार के रूप में, उन्होंने संथाली में पुस्तकें लिखीं, जिनमें 'सेरेंग संध्यानी', 'भंज मिली' (1949) और 'सिरिज रेनांग साड़ी परटाल' शामिल हैं। कई सरकारी और साहित्यिक पत्रिकाओं में उनके लेख भी प्रकाशित हुए। उन्होंने संथाली ऑडियो एल्बम के लिए गीत भी रचे और आज भी संथाली साहित्य और संगीत विरासत में योगदान दे रहे हैं।

5. संथाली साहित्य, संगीत, नृत्य, नाटक और सामाजिक सेवा में अपार योगदान के सम्मान में श्री हेम्ब्रम को कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें 'सर्वश्रेष्ठ आदिवासी नाटक निर्देशक' (1978), 'सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक' (1997), 'गुरु गौरव पुरस्कार' (2002), 'सेनेरेंज गुरु पुरस्कार' (2004), 'गुरु श्री पुरस्कार' (2004), और प्रतिष्ठित 'गुरु गोमकी पंडित रघुनाथ मुर्मू फेलोशिप' (2004) शामिल हैं। विगत वर्षों में उन्हें 'संथाली सांस्कृतिक गुरु' (2006), 'संथाली संगीत गुरु' (2009), 'बोनसोखा' (2011), 'संथाल कवि' (2012), 'चिकी हुलगड़िया' (2015), और 'प्रकृति बंधु' (2017) जैसे सम्मान प्रदान किए गए। वर्ष 2018 में उन्हें आदिवासियों में सामाजिक–सांस्कृतिक पुनर्जागरण और शैक्षिक विकास में उनके योगदान के लिए बीर बिरसा मुंडा की 143वीं जयंती पर सम्मानित किया गया।

DR. SHUBHA VENKATESHA IYENGAR

Dr. Shubha Venkatesha Iyengar is an eminent scientist whose work has transformed India's scientific and technological landscape. Her career is a testament to the power of indigenous innovation, driven by a deep commitment to national self-reliance. She has delivered technologies that are deeply impactful across sectors—from Civil Aviation to Defense to Materials. She served as Distinguished Scientist of CSIR till 2020. She did her scientific work at CSIR-National Aerospace Laboratories, Bangalore for 46 years from the time she joined as a Junior Research Fellow in November 1974.

2. Born on 14th May 1954, Dr. Iyengar completed her BSc. (Hons) in Physics in 1972 and Master's Degree in Physics with specialization in Electronics in 1974, from Bangalore University securing 1st Rank in both. She has received many gold medals and Government of India Merit Scholarship throughout her educational career. With direct Fellowship from CSIR, she continued her research career at CSIR-NAL and got her PhD from Mysore University in 1981. Her PhD work is in the field of Materials Science and development of cost effective Thermo-physical instruments. These tools enabled Advanced Materials Research in establishing phase-diagrams under high pressures (50000 bars) and temperatures (1000°C) way back in 1976, when no characterization tools were available in the country, saving significant foreign exchange. Leading scientists, including researchers from Bell Laboratories, USA, have requested her to study the materials they developed. Her techniques have established phase-diagrams for many materials. Her work on infrared detector sensors and piezoelectric sensors stands out. Her contributions were internationally recognized when NASA published her 3 papers as their official reports in 1986 itself, establishing the global significance. Her work has also enriched the learning experiences of scientists, educators, and students by opening new research avenues.

3. Dr. Iyengar most significant innovations are Drishti-Visibility Measuring System and Aviation Weather Observation System which have enhanced the safety of all Indian international airports as they are mandatory equipments. Drishti has benefited the Indian Air Force and enabled Tata Advanced Systems to integrate Drishti into their multi-crore projects for the Ministry of Defense. Recognition for these products has come from international organizations like World Meteorological Organization (WMO) and the International Civil Aviation Organization (ICAO), which have recommended other countries to adopt these Indian innovations.

4. Dr. Iyengar's unique contribution to India's missile and Ramjet-Scramjet engines programs with development of ultra high-temperature components (withstanding 3000K and Mach 5 velocity) have bolstered national defense capabilities. She provided the solution to previously unsolved critical targeting issue of Agni missile. Special component developed for Ramjet and scramjet has aided India's satellite launch programs.

5. Presently Dr. Iyengar has received 43 Awards -7 Academics awards and 36 Awards in professional career. She received CSIR Young Scientist Award in 1989. For Drishti and Thermo-Physical Instrumentation 13 Team Awards including First Make in India National Award in 2015 and 3 Corporate Awards were received. She has received 20 Individual Professional Awards. She has been widely acknowledged by government bodies, defense agencies, and scientific institutions through letters of commendation and extensive media coverage.

डॉ. शुभा वेंकटेश अय्यंगार

डॉ. शुभा वेंकटेश अय्यंगार एक प्रख्यात वैज्ञानिक हैं जिनके काम ने भारत के वैज्ञानिक और तकनीकी परिदृश्य को बदल दिया है। उनका करियर स्वदेशी नवाचार की शक्ति का प्रमाण है, जो राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता के प्रति गहरी प्रतिबद्धता से प्रेरित है। उन्होंने नागरिक उड्डयन, रक्षा और पदार्थ विज्ञान जैसे अनेक क्षेत्रों में अत्यंत प्रभावशाली प्रौद्योगिकियाँ विकसित की हैं। उन्होंने वर्ष 2020 तक सीएसआईआर के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक के रूप में कार्य किया। उन्होंने नवंबर 1974 में जूनियर रिसर्च फेलो के रूप में शामिल होने के बाद से 46 वर्षों तक सीएसआईआर–नेशनल एयरोस्पेस लेबोरेटरीज, बेंगलुरु में अपना वैज्ञानिक कार्य किया।

2. 14 मई, 1954 को जन्मी, डॉ. अय्यंगार ने वर्ष 1972 में बैंगलुरु विश्वविद्यालय से भौतिकी में बी.एससी. (ऑनर्स) तथा वर्ष 1974 में इलेक्ट्रॉनिक्स में विशेषज्ञता के साथ भौतिकी में परास्नातक (एम.एससी.) की डिग्री प्राप्त की, और दोनों परीक्षाओं में प्रथम स्थान हासिल किया। करियर के दौरान उन्हें अनेक स्वर्ण पदक और भारत सरकार की मेरिट छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। सीएसआईआर की प्रत्यक्ष फेलोशिप प्राप्त कर उन्होंने सीएसआईआर–एनएएल में अपना शोध कार्य जारी रखा और वर्ष 1981 में मैसूर विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। उनका शोधकार्य पदार्थ विज्ञान (मैटेरियल्स साइंस) तथा किफायती थर्मो–फिजिकल उपकरणों के विकास से संबंधित था। इन उपकरणों ने वर्ष 1976 में ही उच्च दाब (50,000 bars) और उच्च तापमान (1000^{0} C) की स्थितियों में उन्नत पदार्थ अनुसंधान के लिए फेज–डायग्राम स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, उस समय देश में ऐसे किसी प्रकार के अभिलक्षण उपकरण उपलब्ध नहीं थे, जिससे विदेशी मुद्रा की भी उल्लेखनीय बचत हुई। अमेरिका की बेल लैबोरेटरीज के वैज्ञानिकों सहित कई अग्रणी शोधकर्ताओं ने उनके द्वारा विकसित पदार्थों का अध्ययन करने का अनुरोध किया। उनकी तकनीकों के माध्यम से अनेक पदार्थों के फेज–डायग्राम स्थापित किए गए। इन्फ्रारेड डिटेक्टर सेंसर तथा पायजोइलेक्ट्रिक सेंसर पर उनका कार्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनके योगदान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तब मान्यता मिली जब 1986 में नासा ने उनके तीन शोधपत्रों को अपनी आधिकारिक रिपोर्ट के रूप में प्रकाशित किया, जिससे उनके कार्य की वैश्विक महत्ता स्थापित हुई। उनके शोधकार्य ने वैज्ञानिकों, शिक्षकों और छात्रों के लिए नए अनुसंधान मार्ग खोलते हुए उनके सीखने के अनुभवों को भी समृद्ध किया है।

3. डॉ. अय्यंगार के सबसे महत्वपूर्ण नवाचारों में 'दृष्टिदृविजिबिलिटी मेजरिंग सिस्टम' और 'एविएशन वेदर ऑब्जर्वेशन सिस्टम' शामिल हैं, जिन्होंने भारत के सभी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों की सुरक्षा को सुदृढ़ किया है, क्योंकि ये अनिवार्य उपकरण हैं। 'दृष्टि' प्रणाली से भारतीय वायुसेना को भी लाभ हुआ है और इसने टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स को रक्षा मंत्रालय की बहु–करोड़ परियोजनाओं में इसे एकीकृत करने में सक्षम बनाया है। इन उत्पादों को विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) और अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन (आईसीएओ) जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से भी मान्यता मिली है, जिन्होंने अन्य देशों को भी इन भारतीय नवाचारों को अपनाने की अनुशंसा की है।

4. डॉ. अय्यंगार का भारत के मिसाइल तथा रैमजेटदृस्क्रैमजेट इंजन कार्यक्रमों में अद्वितीय योगदान रहा है। उन्होंने अत्यधिक उच्च तापमान (3000K और मैक–5 वेग को सहन करने वाले) घटकों का विकास किया, जिसने देश की रक्षा क्षमताओं को सुदृढ़ किया है। उन्होंने अग्नि मिसाइल से संबंधित एक महत्वपूर्ण लक्ष्य–निर्धारण समस्या का समाधान भी प्रदान किया, जो पहले अनसुलझी रही थी। रैमजेट और स्क्रैमजेट के लिए उनके द्वारा विकसित विशेष घटक ने भारत के उपग्रह प्रक्षेपण कार्यक्रमों को भी महत्वपूर्ण सहयोग दिया है।

5. अब तक डॉ. अय्यंगार को कुल 43 पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। जिनमें 7 शैक्षणिक पुरस्कार और उनके पेशेवर करियर में 36 पुरस्कार शामिल हैं। उन्हें वर्ष 1989 में सीएसआईआर यंग साइंटिस्ट अवार्ड प्राप्त हुआ। 'दृष्टि' तथा थर्मो–फिजिकल इंस्ट्रूमेंटेशन के लिए उन्हें 13 टीम पुरस्कार प्राप्त हुए, जिनमें वर्ष 2015 का प्रथम 'मेक इन इंडिया' राष्ट्रीय पुरस्कार भी शामिल है, साथ ही 3 कॉरपोरेट पुरस्कार भी मिले। इसके अतिरिक्त उन्हें 20 व्यक्तिगत पेशेवर पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उनके कार्यों को विभिन्न सरकारी संस्थाओं, रक्षा एजेंसियों और वैज्ञानिक संगठनों द्वारा प्रशंसा–पत्रों तथा व्यापक मीडिया कवरेज के माध्यम से काफी सराहना मिली है।

Padma Shri

SHRI T.T. JAGANNATHAN (POSTHUMOUS)

Shri T.T. Jagannathan led TTK Prestige Limited, India's largest kitchen appliances and cookware company, for over five decades. Known as the "Kitchen Mogul of India", he is recognised for transforming the Prestige brand into a trusted household name and for pioneering innovations that improved the safety and usability of pressure cookers.

2. Born on 13th May, 1948 in Madras, Shri Jagannathan completed his Mechanical Engineering degree from the Indian Institute of Technology, Madras. He later pursued advanced studies in Operations Research at Cornell University, USA. Upon his return to India in 1972, he assumed leadership roles within the TTK Group, one of India's oldest diversified business conglomerates. The Group was founded in 1928 as an indenting and distribution agency and was subsequently expanded into several sectors spanning kitchenware, consumer durables, healthcare, pharmaceuticals, protective devices, medical devices, maps and atlases.

3. Shri Jagannathan took charge of TTK Prestige (then known as T.T. Limited) in 1975 at the age of 26, and turned the company around from near bankruptcy to a sustained growth path. Under his stewardship, the organisation evolved from a pressure cooker manufacturer into a diversified kitchen solutions enterprise, introducing new products, strengthening branding and distribution, and expanding internationally with the Manttra brand in the United States and the Stellar and Judge brands in the United Kingdom. The growth of TTK Prestige built significant wealth for its public shareholders and created manufacturing jobs in factories across five states, sustaining thousands of workers and their families.

4. As Chairman of the TTK Group, Shri Jagannathan built a reputation for quality, innovation, and trust across the Group companies, including TTK Prestige and TTK Healthcare. He continued the family's long-standing commitment to social welfare in health and education, supporting a large number of social and philanthropic causes. These included: the T.T. Ranganathan Clinical Research Foundation tackling de-addiction; the Madras Voluntary Blood Bank, the Rotary-TTK Blood Bank, and the Bangalore Medical Services Trust (BMST) for blood and tissue banking services; the TTK Centre for Rehabilitation Research & Device Development at IIT Madras; and the T.T. Narasimhan Swami Dayananda Higher Secondary School in Manjakkudi, Tamil Nadu.]

5. Shri Jagannathan is particularly remembered for developing the Gasket Release System (GRS), an important safety mechanism for pressure cookers that significantly reduced the risk of accidents. As he recounted in his book "Disrupt and Conquer: How TTK Prestige Became a Billion Dollar Company", rather than patent his invention he encouraged the entire industry to adopt it, so millions of families across India would benefit. His emphasis on safety, design, and affordability helped reshape everyday cooking practices in Indian households.

6. Shri Jagannathan received numerous awards and industry recognitions like The inaugural "Distinguished Alumnus Award" from IIT Madras in 1996; The Business Standard "Star SME Award" conferred by Dr. Manmohan Singh, then Prime Minister of India, in 2011; The Ernst & Young "Entrepreneur Of The Year" award in Consumer Products in 2012; The inaugural "Business Leader of the Year" award by Economic Times Awards-Tamil Nadu in 2019; The Nanayam Vikatan "Lifetime Achievement Award" in 2020 and the Hurun India "Legacy Leadership Award" in 2025. At the CNBC TV18 India Business Leader Awards, he was nominated for the "Lifetime Achievement Award" in 2019, and inducted into the IBLA "Hall of Fame" in 2025.

7. Shri Jagannathan passed away on 9th October, 2025.

श्री टी.टी. जगन्नाथन (मरणोपरांत)

श्री टी.टी. जगन्नाथन ने भारत की सबसे बड़ी रसोई उपकरण और कुकवेयर कंपनी, टीटीके प्रेस्टीज लिमिटेड का नेतृत्व पाँच दशकों से अधिक समय तक किया। ''भारत के रसोई जगत के दिग्गज'' के रूप में विख्यात, उन्हें प्रेस्टीज ब्रांड को एक भरोसेमंद घरेलू नाम में बदलने और प्रेशर कुकरों की सुरक्षा और उपयोगिता में सुधार लाने वाले नवाचारों को शुरू करने के लिए जाना जाता है।

2. 13 मई, 1948 को मद्रास में जन्मे, श्री जगन्नाथन ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त की। बाद में उन्होंने अमेरिका के कॉर्नेल विश्वविद्यालय में ऑपरेशन रिसर्च में उन्नत अध्ययन किया। वर्ष 1972 में भारत लौटने पर उन्होंने टीटीके समूह में नेतृत्व की भूमिकाएँ संभालीं, जो भारत के सबसे पुराने विविध व्यापारिक समूहों में से एक है। इस समूह की स्थापना वर्ष 1928 में एक इंडेंटिंग और वितरण एजेंसी के रूप में हुई थी और बाद में इसका विस्तार रसोई के बर्तन, उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएँ, स्वास्थ्य सेवाएँ, फार्मास्यूटिकल्स, सुरक्षा उपकरण, चिकित्सा उपकरण, मानचित्र और एटलस सहित कई क्षेत्रों में हुआ।

3. श्री जगन्नाथन ने वर्ष 1975 में 26 वर्ष की आयु में टीटीके प्रेस्टीज (तब टी.टी. लिमिटेड के नाम से जाना जाता था) का कार्यभार संभाला और कंपनी को दिवालियापन के कगार से निकालकर निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर किया। उनके नेतृत्व में, संगठन एक प्रेशर कुकर विनिर्माता से विकसित होकर रसोई के विविध समाधानों का उद्यम बन गया, जिसने नए उत्पाद पेश किए, ब्रांडिंग और वितरण को सुदृढ करते हुए संयुक्त राज्य अमेरिका में मंत्रा ब्रांड और यूनाइटेड किंगडम में स्टेलर और जज ब्रांड के साथ अंतरराष्ट्रीय पर उनका विस्तार किया। टीटीके प्रेस्टीज के विकास ने इसके सार्वजनिक शेयरधारकों के लिए महत्वपूर्ण परिसम्पत्तियां सृजित की और पांच राज्यों में स्थित कारखानों में विनिर्माण रोजगार सृजित किए, जिससे हजारों श्रमिकों और उनके परिवारों का भरण–पोषण हुआ।

4. टीटीके समूह के अध्यक्ष के रूप में, श्री जगन्नाथन ने टीटीके प्रेस्टीज और टीटीके हेल्थकेयर सहित समूह की सभी कंपनियों में गुणवत्ता, नवाचार और विश्वास की प्रतिष्ठा स्थापित की। उन्होंने स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक कल्याण के प्रति समूह की दीर्घकालिक प्रतिबद्धता को जारी रखा और बड़ी संख्या में सामाजिक और परोपकारी कार्यों में अपना सहयोग दिया। इन कार्यों में नशामुक्ति के लिए काम करने वाला टी.टी. रंगनाथन क्लिनिकल रिसर्च फाउंडेशन; रक्त और टिशू बैंकिंग सेवाओं के लिए मद्रास वॉलंटरी ब्लड बैंक, रोटरी–टीटीके ब्लड बैंक और बैंगलोर मेडिकल सर्विसेज ट्रस्ट (बीएमएसटी); आईआईटी मद्रास में टीटीके सेंटर फॉर रिहैबिलिटेशन रिसर्च एंड डिवाइस डेवलपमेंट; और तमिलनाडु के मंजक्कुडी में स्थित टी.टी. नरसिम्हन स्वामी दयानंद हायर सेकेंडरी स्कूल शामिल हैं।

5. श्री जगन्नाथन को विशेष रूप से प्रेशर कुकरों के लिए एक महत्वपूर्ण सुरक्षा तंत्र, गैस्केट रिलीज सिस्टम (जीआरएस) विकसित करने के लिए याद किया जाता है, जिसने दुर्घटनाओं के जोखिम को काफी हद तक कम कर दिया। जैसा कि उन्होंने अपनी पुस्तक ''डिसरप्ट एंड कॉन्कररू हाउ टीटीके प्रेस्टीज बिकेम अ बिलियन डॉलर कंपनी'' में बताया है, उन्होंने अपने आविष्कार का पेटेंट कराने के बजाय पूरे उद्योग को इसे अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे भारत भर के लाखों परिवारों को इसका लाभ हुआ। सुरक्षा, डिजाइन और किफायतीपन पर उनके जोर ने भारतीय घरों में रोजमर्रा की खाना पकाने की पद्धतियों को बदलने में मदद की।

6. श्री जगन्नाथन को अनेक पुरस्कार और उद्योग जगत में कई सम्मान प्राप्त हुए हैं, जैसे वर्ष 1996 में आईआईटी मद्रास द्वारा दिया गया पहला ''विशिष्ट पूर्व छात्र पुरस्कार'' वर्ष 2011 में तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा प्रदान किया गया बिजनेस स्टैंडर्ड ''स्टार एसएमई पुरस्कार'', वर्ष 2012 में उपभोक्ता उत्पाद श्रेणी में अर्न्स्ट एंड यंग ''एंटरप्रेन्योर ऑफ द ईयर'' पुरस्कारय वर्ष 2019 में इकोनॉमिक टाइम्स अवार्ड्स–तमिलनाडु द्वारा दिया गया पहला ''बिजनेस लीडर ऑफ द ईयर'' पुरस्कार; वर्ष 2020 में ननयम विकटन ''लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड'' और वर्ष 2025 में हुरुन इंडिया ''लेगेसी लीडरशिप अवार्ड''। सीएनबीसी टीवी18 इंडिया बिजनेस लीडर अवार्ड्स में, उन्हें वर्ष 2019 में ''लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड'' के लिए नामांकित किया गया था और वर्ष 2025 में आईबीएलए ''हॉल ऑफ फेम'' में शामिल किया गया था।

7. 9 अक्टूबर, 2025 को श्री जगन्नाथन का निधन हो गया।

SANT NIRANJAN DASS JI

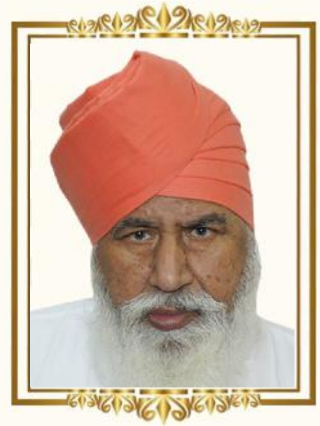

Sant Niranjan Dass Ji is the current spiritual head (Gaddi- Nashin) of the world-renowned Dera Sachkhand Ballan and the Chairman of the Shri Guru Ravidass Janam Asthan Mandir Public Charitable Trust in Seer Govardhanpur, Varanasi, Uttar Pradesh. As the spiritual leader of the Ravidassia religion, he has propagated the teachings of Guru Ravidass Maharaj Ji globally, uniting society and strengthening it spiritually.

2. Born on 6th January, 1942, in Ramdass Pur village near Alawalpur, District Jalandhar, Sant Niranjan Dass Ji was drawn to spirituality from a young age. At the tender age of eight, he dedicated his entire life to social service. Renouncing worldly ties, he sought refuge at Dera Sachkhand Ballan under the guidance of the great Sant Shri 108 Sant Sarwan Dass Maharaj Ji. For 44 consecutive years (from 1950 to 1994), he served the congregation (Sangat) and society with total devotion, following the commands of the successive Heads of the Dera.

3. Since August 09, 1994, Sant Niranjan Dass Ji has been leading Dera Sachkhand Ballan. His tenure has been marked by unparalleled contributions to social welfare. He oversees the Sant Sarwan Dass Charitable Hospital in Kathar (Jalandhar), a 150-bed multi-specialty facility providing affordable care. He personally bears the expenses for the poor and needy. Additionally, a dedicated Charitable Eye Hospital operates near the Dera Sachkhand Ballan. The Sant Sarwan Dass Model School in Phagwara (CBSE affiliated) provides quality education to over 1,600 students from Nursery to Class 12 at minimal costs. Notably, during the COVID- 19 pandemic, he waived student fees while ensuring the school staff continued to receive their salaries. Under his patronage, a music academy, sewing/embroidery centers, and a weekly newspaper continue to contribute to social upliftment. Under his patronage, Sant Samagams (spiritual congregations) are organized almost daily at the ground level (villages and cities). Large numbers of people from surrounding areas gather at these events, and through the Satsang (spiritual discourses), a constructive change is brought about in their lives. On a personal level, he listens to their spiritual and life-related problems and provides solutions for them.

4. Dera Sachkhand Ballan provides Langar (community kitchen) daily, where people from all walks of life, rich and poor alike sit together to eat. During the Corona period, flood situations, and other natural disasters, the extensive assistance provided by the Dera to the public under the patronage of Sant Niranjan Dass Ji has been acclaimed at both national and international levels. He has also facilitated the construction of numerous Dharam-Asthans (Guru-Ghar) across India and abroad, ensuring modern facilities are available for the convenience of the devotees. Under his guidance the global Ravidassia community has strengthened, with outreach including the promotion of Guru Ravidass Ji's legacy through projects like the Shri Guru Ravidass Gate in Varanasi, which was inaugurated in 1998 by the then President of India Shri K.R. Narayanan.

5. Sant Niranjan Dass Ji has been honoured by numerous national and international organizations for his humanitarian work. While he remains a Leader in social service, his primary role as a Spiritual Guide continues to inspire society to free itself from social evils, encouraging citizens to be responsible and contribute to the nation's progress.

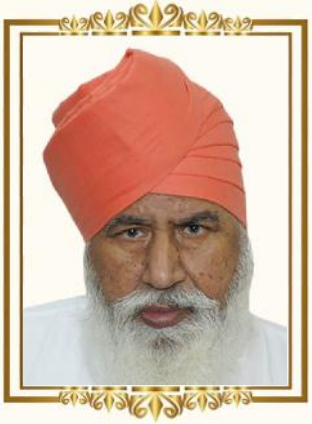

संत निरंजन दास जी

संत निरंजन दास जी विश्व प्रसिद्ध डेरा सचखंड बल्लान के वर्तमान आध्यात्मिक प्रमुख (गद्दी–नशीं) हैं और उत्तर प्रदेश के वाराणसी के सीर गोवर्धनपुर में श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर सार्वजनिक धर्मार्थ ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं। रविदासिया धर्म के आध्यात्मिक नेता के रूप में, उन्होंने गुरु रविदास महाराज जी की शिक्षाओं का विश्व स्तर पर प्रचार–प्रसार किया, समाज को एकजुट किया और आध्यात्मिक रूप से मजबूत किया।

2. 6 जनवरी, 1942 को जालंधर जिले के अलावलपुर के पास रामदासपुर गांव में जन्मे, संत निरंजन दास जी छोटी उम्र से ही अध्यात्म की ओर आकर्षित हो गए थे। मात्र आठ साल की उम्र में उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज सेवा के लिए समर्पित कर दिया। सांसारिक संबंधों को त्यागते हुए, उन्होंने महान संत श्री 108 संत सरवन दास महाराज जी के मार्गदर्शन में डेरा सचखंड बल्लान में शरण ली। लगातार 44 वर्षों (1950 से 1994 तक) तक उन्होंने डेरा के बाद के प्रमुखों के आदेशों का पालन करते हुए पूरी निष्ठा के साथ मण्डली (संगत) और समाज की सेवा की।

3. संत निरंजन दास जी, 09 अगस्त, 1994 से डेरा सचखंड बल्लान का नेतृत्व कर रहे हैं। उनका कार्यकाल समाज सेवा में अद्वितीय योगदान से भरा हुआ है। वह कठार (जालंधर) में संत सरवन दास चैरिटेबल अस्पताल की देखरेख करते हैं, जो किफायती दर पर देखभाल प्रदान करने वाली 150 बिस्तरों वाली मल्टी–स्पेशियलिटी सुविधा प्रदान करता है। वह व्यक्तिगत रूप से गरीबों और जरूरतमंदों का खर्च उठाते हैं। इसके अतिरिक्त, डेरा सचखंड बल्लान के पास एक समर्पित चैरिटेबल आई हॉस्पिटल भी संचालित होता है। फगवाड़ा में संत सरवन दास मॉडल स्कूल (सीबीएसई संबद्ध) नर्सरी से कक्षा 12 तक के 1,600 से अधिक छात्रों को न्यूनतम लागत पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करता है। विशेष रूप से, कोविड–19 महामारी के दौरान, उन्होंने यह सुनिश्चित करते हुए कि स्कूल के कर्मचारियों को उनका वेतन मिलता रहे, छात्रों की फीस माफ कर दी। उनके संरक्षण में, एक संगीत अकादमी, सिलाई/कढ़ाई केंद्र और एक साप्ताहिक समाचार पत्र सामाजिक उत्थान में अपना योगदान दे रहे हैं। उनके संरक्षण में, संत समागम (आध्यात्मिक सभाएं) लगभग दैनिक रूप से जमीनी स्तर (गांवों और शहरों) पर आयोजित की जाती हैं। इन आयोजनों में आस–पास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा होते हैं, और सत्संग (आध्यात्मिक प्रवचन) के माध्यम से उनके जीवन में रचनात्मक परिवर्तन लाया जाता है। व्यक्तिगत स्तर पर, वह उनकी आध्यात्मिक और जीवन संबंधी समस्याओं को सुनते हैं और उनके लिए समाधान प्रदान करते हैं।

4. डेरा सचखंड बल्लान द्वारा प्रतिदिन लंगर (सामुदायिक रसोई) उपलब्ध कराया जाता है, जहां अमीर और गरीब सभी तरह के लोग एक साथ भोजन करने के लिए बैठते हैं। कोरोना काल, बाढ़ और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के दौरान, संत निरंजन दास जी के संरक्षण में डेरा द्वारा जनता को प्रदान की गई व्यापक सहायता की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर प्रशंसा की गई है। उन्होंने देश–विदेश में कई धर्म–स्थानों (गुरु–घर) के निर्माण की सुविधा भी प्रदान की है, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि भक्तों की सुविधा के लिए आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हों। उनके मार्गदर्शन में वाराणसी में श्री गुरु रविदास गेट जैसी परियोजनाओं के माध्यम से गुरु रविदास जी की विरासत को बढ़ावा देने सहित वैश्विक रविदासिया समुदाय मजबूत हुआ है, जिसका उद्घाटन 1998 में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन ने किया था।

5. संत निरंजन दास जी को उनके मानवीय कार्यों के लिए कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा सम्मानित किया गया है। जबकि वह समाज सेवा में अग्रणी बने हुए हैं, एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में उनकी प्राथमिक भूमिका समाज को सामाजिक बुराइयों से मुक्त करने के लिए प्रेरित करती है, नागरिकों को जिम्मेदार होने और राष्ट्र की प्रगति में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

PROF. VEEZHINATHAN KAMAKOTI

Prof. Veezhinathan Kamakoti, Director of the Indian Institute of Technology (IIT) Madras, Chennai, is known for dedicating his career to translating quality research in semiconductor electronics into core products, significantly contributing to the vision of Atmanirbhar Bharat. His visionary leadership has driven multiple initiatives to democratize access to quality education for deserving students in Tier-2 and Tier-3 cities and rural villages, aligning with the objective of "Education to reach the needy."

2. Born on 21st July, 1968, Shri Kamakoti received his Bachelor of Engineering in Computer Science and Engineering from Sri Venkateswara College of Engineering, University of Madras, Chennai in 1989. He earned his Master of Science (by Research) and Ph.D. in Computer Science and Engineering from IIT Madras in 1992 and 1995 respectively. Following postdoctoral fellowships at the Supercomputing Education and Research Centre, Indian Institute of Science, Bengaluru and Institute of Mathematical Sciences, Chennai, he served as a senior design engineer at ATI Research Ltd. He subsequently returned to his alma mater, IIT Madras, as a faculty member in 2001.

3. In the academic realm, Shri Kamakoti has guided around 20 Ph.D. and 30 M.S (by Research) scholars. He has published over 200 extensively cited papers in international and national journals and conferences. Through his pioneering research, he led the team that designed and developed SHAKTI, Bharat's first indigenous microprocessor. This "Make in India" initiative has successfully led to the manufacturing of microprocessor chips and fuelled a robust ecosystem of startups utilizing the SHAKTI design. Championing holistic institutional growth, he spearheaded the expansion of the first ever international IIT campus at Zanzibar, Tanzania and pioneered admission channels for excellence in Sports and Fine Arts. His tenure also witnessed the launch of the Department of Medical Science and Technology and robust interdisciplinary research programs, alongside a dedicated focus on implementing vital mental health and wellness initiatives.

4. As a member of the National Security Advisory Board and the National Security Committee on Telecom, Shri Kamakoti has played a pivotal role in aiding timely, objective and effective national-level decision-making. His contributions have been instrumental in implementing important transformational policies in strategic areas such as cyber security, technology road map, indigenization, trusted information infrastructure among others. He also contributed to developing a National Security Directive of Telecom Sector and supported key digital initiatives like Arogya Setu during the COVID-19 pandemic. Beyond technology, his social initiatives, "IITM for All" and the Vidya Shakti scheme have brought quality education to over 7210 schools at the village and Tehsil levels across seven states.

5. Shri Kamakoti is the recipient of numerous prestigious awards and honours. These include the Young Faculty Recognition Award (2007), the DRDO Academic Excellence Award (2014) presented by the Honourable Prime Minister Shri Narendra Modi, the IBM Faculty Award (2016), the IESA Techno Visionary Award (2018), the Abdul Kalam Technology Innovation National Fellowship (2020), the Fellow of INAE (2024), the ACCS Lifetime Achievement Award, the Vasvik Industrial Research Award and JC Bose Lifetime Achievement Award.

प्रो. वीझिनाथन् कामकोटी

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) मद्रास, चेन्नई के निदेशक प्रो. वीझिनाथन् कामकोटी सेमीकंडक्टर इलेक्ट्रॉनिक्स में गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान को मुख्य उत्पादों में बदलने हेतु अपने करियर को समर्पित करने के लिए जाने जाते हैं, जो आत्मनिर्भर भारत की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। उनके दूरदर्शी नेतृत्व ने टीयर–2 और टीयर–3 शहरों और ग्रामीण गांवों में योग्य छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सुलभ बनाने के लिए कई पहल की, जो ''जरूरतमंदों तक शिक्षा'' के उद्देश्य के अनुरूप है।

2. 21 जुलाई, 1968 को जन्मे, श्री कामकोटी ने वर्ष 1989 में श्री वेंकटेश्वर कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई से कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग विषय में बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने वर्ष 1992 और 1995 में आईआईटी मद्रास से मास्टर ऑफ साइंस (अनुसंधान के द्वारा) और कंप्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरिंग विषय में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। सुपरकंप्यूटिंग एजुकेशन एंड रिसर्च सेंटर, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु और गणितीय विज्ञान संस्थान, चेन्नई में पोस्टडॉक्टरल फेलोशिप के बाद, उन्होंने एटीआई रिसर्च लिमिटेड में एक वरिष्ठ डिजाइन इंजीनियर के रूप में कार्य किया। इसके बाद, उन्होंने वर्ष 2001 में अपने शिक्षण संस्थान जहाँ से उन्होंने शिक्षा प्राप्त की अर्थात, आईआईटी मद्रास में एक संकाय सदस्य के रूप में कार्य किया।

3. शैक्षणिक क्षेत्र में, श्री कामकोटी ने लगभग 20 पीएचडी और 30 एमएस (अनुसंधान द्वारा) विद्वानों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय पत्रिकाओं और सम्मेलनों में 200 से अधिक व्यापक रूप से उद्धृत दस्तावेजों को प्रकाशित किया। अपने अग्रणी अनुसंधान के माध्यम से, उन्होंने उस टीम का नेतृत्व किया जिसने भारत के पहले स्वदेशी माइक्रोप्रोसेसर शक्ति को डिजाइन और विकसित किया था। इस ''मेक इन इंडिया'' पहल ने सफलतापूर्वक माइक्रोप्रोसेसर चिप्स के निर्माण की शुरुआत की और 'शक्ति' डिजाइन का उपयोग करने वाले स्टार्टअप्स के एक सुदृढ़ पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा दिया। समग्र संस्थागत विकास का समर्थन करते हुए, उन्होंने तंजानिया के जांजीबार में पहले अंतर्राष्ट्रीय आईआईटी परिसर के विस्तार का नेतृत्व किया और खेल तथा ललित कला में उत्कृष्टता के लिए प्रवेश माध्यमों का बीड़ा उठाया। उनके कार्यकाल में चिकित्सा विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग की शुरुआत हुई और सुदृढ़ अंतःविषय अनुसंधान कार्यक्रम भी हुए। साथ ही, उन्होंने महत्वपूर्ण मानसिक स्वास्थ्य और कल्याणकारी पहलों को कार्यान्वित करने पर भी ध्यान दिया।

4. राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड और दूरसंचार संबंधी राष्ट्रीय सुरक्षा समिति के सदस्य के रूप में, श्री कामकोटी ने राष्ट्रीय स्तर पर यथासमय, उद्देश्यपूर्ण और प्रभावी निर्णय लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साइबर सुरक्षा, प्रौद्योगिकी रोड मैप, स्वदेशीकरण, विश्वसनीय सूचना अवसंरचना जैसे सामरिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी नीतियों को लागू करने में उनका योगदान सहायक रहा। उन्होंने दूरसंचार क्षेत्र में राष्ट्रीय सुरक्षा निर्देश विकसित करने में भी योगदान दिया और कोविड–19 महामारी के दौरान आरोग्य सेतु जैसी प्रमुख डिजिटल पहलों में सहायता प्रदान की। प्रौद्योगिकी के अतिरिक्त, उनकी सामाजिक पहल, ''आईआईटीएम फॉर ऑल'' और विद्या शक्ति योजना ने सात राज्यों में गांव और तहसील स्तर पर 7210 से अधिक स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सुलभ बनाया।

5. श्री कामकोटी को कई प्रतिष्ठित पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। इनमें यंग फेकल्टी रिकॉजनिशन अवॉर्ड (वर्ष 2007), डीआरडीओ अकादमिक एक्सीलेंस अवॉर्ड (वर्ष 2014), आईबीएम फैकल्टी अवार्ड (वर्ष 2016), आईईएसए टेक्नो विजनरी अवार्ड (वर्ष 2018), अब्दुल कलाम टेक्नोलॉजी इनोवेशन नेशनल फेलोशिप (वर्ष 2020), फेलो ऑफ आईएनएई (वर्ष 2024), एसीसीएस लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, वासविक इंडस्ट्रियल रिसर्च अवार्ड और जे सी बोस लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड शामिल हैं।

PROF. MANGALA KAPOOR

Prof. Mangala Kapoor is a noted Indian classical vocalist, musicologist, and academician. She holds a gold medal in M.Mus. and a Ph.D. in Music from Banaras Hindu University, where she completed her doctoral research under the guidance of Pandit Chittranjan Jyotishi. She served Banaras Hindu University for over thirty years and retired in 2019 as Professor and Head of the Department of Music.

2. Born on 15th January 1954 in Varanasi, Prof. Kapoor pursued advanced studies in Indian classical music through the traditional guru-shishya Parampara. She received specialized training in the Gwalior gharana and semi-classical music under Pandit Surendra Mohan Mishra. During her academic career, she contributed to teaching, research, curriculum development, and academic administration at Banaras Hindu University.

3. Prof. Kapoor has made significant contributions to Indian classical music through performance, pedagogy, and research. She is the author of five books on music, including her autobiography *Seerat.* Her work has contributed to the preservation, documentation and dissemination of Indian classical music traditions.

4. Prof. Kapoor has performed at various prominent cultural events and music festivals across India, including Ganga Mahotsav, Subah-e-Banaras, and Budhwa Mangal. She is the founder of the Prof. Mangla Kapoor Foundation, which provides free music education to economically disadvantaged and differently-abled individuals. She has also been associated with several social and cultural organizations engaged in promoting music and cultural awareness.

5. Prof. Kapoor has received several awards and honours in recognition of her contributions to music and society. These include the State Role Model Award conferred by the Hon'ble Chief Minister of Uttar Pradesh, (2021); the National Award by Saksham Society (2022); Sushma Swaraj Samman (2023); Rashtra Gaurav Samman (2023); Acharya Bharat Muni Award conferred by the Uttar Pradesh Sangeet Natak Academy (2024); The Indian Heroes Award by Anmol Sewa Samiti (2024); and the title "Lata of Banaras," among other recognitions.

प्रो. मंगला कपूर

प्रो. मंगला कपूर एक प्रसिद्ध भारतीय शास्त्रीय गायिका, संगीतज्ञ और शिक्षाविद हैं। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से संगीत में एम. म्यूजिक और पीएच.डी. में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है, जहां उन्होंने पंडित चित्ररंजन ज्योतिषी के मार्गदर्शन में अपना डॉक्टरेट शोध पूरा किया। उन्होंने तीस वर्षों से अधिक समय तक बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में सेवा की और वर्ष 2019 में संगीत विभाग के प्रोफेसर और प्रमुख के रूप में सेवानिवृत्त हुईं।

2. 15 जनवरी, 1954 को वाराणसी में जन्मी प्रो. कपूर ने पारंपरिक गुरु–शिष्य परंपरा के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत में उन्नत अध्ययन किया। उन्होंने पंडित सुरेंद्र मोहन मिश्रा से ग्वालियर घराने और अर्ध–शास्त्रीय संगीत में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया। अपने अकादमिक करियर के दौरान, उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में शिक्षण, अनुसंधान, पाठ्यक्रम विकास और अकादमिक प्रशासन में योगदान दिया।

3. प्रो. कपूर ने प्रदर्शन, शिक्षाशास्त्र और अनुसंधान के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने संगीत पर पांच पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें उनकी आत्मकथा सीरत भी शामिल है। उनके कार्य से भारतीय शास्त्रीय संगीत परंपराओं के संरक्षण, प्रलेखन और प्रसार में योगदान मिला है।

4. प्रो. कपूर ने गंगा महोत्सव, सुबह–ए–बनारस और बुढ़वा मंगल सहित पूरे भारत में विभिन्न प्रमुख सांस्कृतिक कार्यक्रमों और संगीत समारोहों में प्रदर्शन किया है। वह प्रोफेसर मंगला कपूर फाउंडेशन की संस्थापक हैं, जहाँ आर्थिक रूप से वंचित और दिव्यांग व्यक्तियों को संगीत शिक्षा मुफ्त प्रदान की जाती है। वह संगीत और सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ावा देने में लगे कई सामाजिक और सांस्कृतिक संगठनों से भी जुड़ी रही हैं।

5. प्रो. कपूर को संगीत और समाज के प्रति उनके योगदान हेतु कई पुरस्कार और सम्मान मिले हैं। इनमें उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री द्वारा प्रदान किया गया राज्य रोल मॉडल पुरस्कार, (2021); सक्षम सोसाइटी द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार (2022); सुषमा स्वराज सम्मान (2023); राष्ट्र गौरव सम्मान (2023); उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा प्रदान किया गया आचार्य भारत मुनि पुरस्कार (2024); अनमोल सेवा समिति द्वारा इंडियन हीरोज अवार्ड (2024); और अन्य पुरस्कारों के साथ ''बनारस की लता'' उपाधि शामिल है।

DR. ASHOK KHADE

Dr. Ashok Khade, Chairman and Managing Director of DAS Offshore Limited (DAS), is widely recognized as a pioneering technocrat-entrepreneur who has made significant contributions toward strengthening India's indigenous offshore engineering capabilities and reducing reliance on foreign contractors.

2. Born on 1st June, 1955, in Ped village of Tasgaon Taluka, Sangli district, Maharashtra, Dr. Khade earned a Diploma in Mechanical Engineering along with advanced academic qualifications including a Bachelor's degree in Psychology, M.Phil., Ph.D., and D.Sc. His multidisciplinary academic foundation represents a rare blend of technical expertise and human-centric leadership insight, particularly in labour management and industrial systems in India.

3. Dr. Khade began his professional career in 1975 with Mazagon Dock Limited (MDL), Mumbai, where he worked in structural design and quality control for shipbuilding and submarine projects. During this tenure, he was deputed to West Germany as a Quality Control Engineer for India's first conventional submarine program, gaining valuable international exposure in advanced marine engineering practices. In 1992, driven by entrepreneurial vision and a desire to build indigenous industrial capability, he resigned from MDL and founded DAS Offshore Engineering, which later evolved into DAS Offshore Limited in 2021. Under his leadership, the company has grown from a small fabrication contractor into a nationally respected Engineering Procurement and Construction (EPC) organization executing complex offshore and infrastructure projects of strategic importance. DAS has successfully completed more than 270 offshore projects for Oil and Natural Gas Corporation (ONGC) and over 70 major infrastructure projects across India. The company operates advanced fabrication facilities, including the Rohini Yard in Maharashtra, serving sectors such as offshore platforms, marine engineering, civil infrastructure, railways, and heavy industrial fabrication.

4. Dr. Khade has played a decisive role in fostering international collaborations with global engineering leaders such as HHI, Clough, and Leighton, while partnering with major Indian corporations including L&T, Essar and Afcons. These collaborations have facilitated technology transfer, enhanced project execution standards, and strengthened India's offshore engineering ecosystem. Beyond business, he remains deeply committed to social empowerment and inclusive growth. He has supported educational institutions, skill development initiatives, and opportunities for underprivileged youth, particularly from marginalized communities. His leadership also extends into academia and public institutions, including serving as Chairman of the Board of Governors at Indian Institute of Information Technology Bhagalpur and contributing to various professional and educational bodies.

5. Dr. Khade have been recognized through numerous prestigious honours, including a national business excellence award conferred by the Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi, the Udyog Ratna Award presented by former Maharashtra Chief Minister Shri Prithviraj Chavan, and the Best Entrepreneurship Award by Union Minister Shri Dharmendra Pradhan, among many others. His inspiring journey from adversity to industrial leadership has received global recognition, with features in The New York Times and The Economic Times, and academic reference in the Swedish publication Scaling Caste Walls with Capitalism's Ladders in India.

डॉ. अशोक खाडे

डॉ. अशोक खाडे, डीएएस ऑफशोर लिमिटेड (डीएएस) के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, को व्यापक रूप से एक अग्रणी टेक्नोक्रेट–उद्यमी के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने भारत की स्वदेशी अपतटीय इंजीनियरिंग क्षमताओं को सुदृढ़ करने और विदेशी संविदाकारों पर निर्भरता को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

2. 1 जून, 1955 को महाराष्ट्र के सांगली जिले के तासगांव तालुका के पेड गांव में जन्मे, डॉ. खाडे ने मनोविज्ञान में स्नातक डिग्री, एम.फिल., पीएच.डी और डी.एससी सहित एडवांस शैक्षणिक योग्यताओं के साथ मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा हासिल किया । उनकी बहुविषयक शैक्षणिक योग्यता विशेष रूप से भारत में श्रम प्रबंधन और औद्योगिक प्रणालियों में तकनीकी विशेषज्ञता तथा मानव–केंद्रित नेतृत्व अंतर्दृष्टि के एक दुर्लभ मिश्रण को दर्शाती है।

3. डॉ. खाडे ने वर्ष 1975 में माझगांव डॉक लिमिटेड (एमडीएल), मुंबई में अपने करियर की शुरुआत की, जहां उन्होंने जहाज निर्माण और पनडुब्बी परियोजनाओं के लिए संरचनात्मक डिजाइन और गुणवत्ता नियंत्रण में कार्य किया। इस कार्यकाल के दौरान, उन्हें भारत के पहले पारंपरिक पनडुब्बी कार्यक्रम के लिए गुणवत्ता नियंत्रण इंजीनियर के रूप में पश्चिम जर्मनी में प्रतिनियुक्त किया गया, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें उन्नत समुद्री इंजीनियरिंग प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय अनुभव प्राप्त हुआ। वर्ष 1992 में, उद्यमशीलता की दृष्टि और स्वदेशी औद्योगिक क्षमता के निर्माण की इच्छा से प्रेरित होकर, उन्होंने एमडीएल से त्यागपत्र दिया और डीएएस ऑफशोर इंजीनियरिंग की स्थापना की, जो बाद में वर्ष 2021 में डीएएस ऑफशोर लिमिटेड बनीं । उनके नेतृत्व में, कंपनी एक छोटे फैब्रिकेशन संविदाकार से सामरिक महत्व की जटिल अपतटीय और अवसंरचना परियोजनाओं को निष्पादित करने वाली राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित इंजीनियरिंग खरीद और निर्माण (ईपीसी) संगठन के रूप में विकसित हुई। डीएएस ने तेल और प्राकृतिक गैस निगम (ओएनजीसी) के लिए 270 से अधिक अपतटीय परियोजनाओं और संपूर्ण भारत में 70 से अधिक प्रमुख अवसंरचना परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया । यह कंपनी महाराष्ट्र में रोहिणी यार्ड सहित उन्नत निर्माण सुविधाओं का संचालन करती है, जो अपतटीय क्षेत्रों, समुद्री इंजीनियरिंग, सिविल अवसंरचना, रेलवे और भारी औद्योगिक निर्माण जैसे क्षेत्रों में सेवा प्रदान करती है।

4. जहां एक ओर डॉ. खाडे ने एचएचआई, क्लॉघ और लीटन जैसे वैश्विक इंजीनियरिंग अग्रणियों के साथ अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने में निर्णायक भूमिका निभाई, वहीं दूसरी ओर एलएंडटी, एस्सार और एफकॉन्स सहित प्रमुख भारतीय निगमों के साथ साझेदारी की । इन सहयोगों ने प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को सुगम बनाया, परियोजना निष्पादन मानकों में सुधार किया और भारत के अपतटीय इंजीनियरिंग पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ किया। व्यापार के अतिरिक्त, वे सामाजिक सशक्तिकरण और समावेशी विकास के लिए पूर्णतरू प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने शैक्षणिक संस्थानों, कौशल विकास पहलों और वंचित युवाओं, विशेष रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए अवसर विकसित करने में सहायता की। वे शिक्षा और सार्वजनिक संस्थानों में भी प्रमुख पद पर कार्यरत रहे, जिसमें भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान भागलपुर के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के अध्यक्ष के रूप में सेवा करना तथा विभिन्न पेशेवर और शैक्षिक निकायों में योगदान देना शामिल है।

5. डॉ. खाडे को कई प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा गया, जिसमें माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रदत्त राष्ट्रीय व्यापार उत्कृष्टता पुरस्कार, महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री श्री पृथ्वीराज चव्हाण द्वारा प्रदत्त उद्योग रत्न पुरस्कार और केंद्रीय मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान द्वारा सर्वश्रेष्ठ उद्यमिता पुरस्कार शामिल हैं। विपरीत परिस्थितियों से औद्योगिक नेतृत्व तक की उनकी प्रेरणादायक यात्रा को वैश्विक मान्यता मिली। उनकी यात्रा का गुणगान न्यूयॉर्क टाइम्स और द इकोनॉमिक टाइम्स जैसे अखबारों द्वारा किया गया तथा स्वीडिश प्रकाशन स्केलिंग कास्ट वॉल्स विथ कैपिटलिज्म इन इंडिया में उनका अकादमिक संदर्भ दिया गया।

DR. LIUDMILA KHOKHLOVA

Dr. Liudmila Khokhlova is an Associate professor at the Department of Indian Philology, Institute of Asian and African Studies, Moscow State University, Russia. She is very well known across the world for her contribution into indological studies.

2. Born on 31^{st} October, 1945, Dr. Khokhlova received her M.A. degree in Hindi language and literature from Moscow State University in 1970, and Ph.D. degree in Indian Linguistics from the Institute of Linguistics, Academy of Sciences, Moscow in 1974. Her Ph.D. thesis was dedicated to the comparative studies of Hindi and Rajasthani languages.

3. At present Dr. Khokhlova is teaching different linguistic courses at Moscow State University which are very popular among students: Hindi at B.A. and M.A. levels; Punjabi at B.A. and M.A. levels, Historical Development of Western New Indo-Aryan languages in the 14^{th} - 20^{th} centuries; Syntactic Typology of New Indo-Aryan languages, Grammatical Structure of Hindi/Urdu, Semantic Structure of Hindi/Urdu, General Linguistics. She is also guiding the students who are doing research in different fields of Indian linguistics.

4. Dr. Khokhlova is the author of 6 books and 92 papers in Russian, English and Hindi dedicated to the problems of phonetics, phonology, morphology and lexical typology of Western Indo-Aryan languages. A significant place in her research is devoted to historical linguistics. She is the author of Hindi and Punjabi manuals for Russian students. Many of her studies are dedicated to the origin and development of the Sikh religion. She translated "Jap ji" by Guru Nanak from Punjabi into Russian, that opens “Adi Granth” - the sacred canon of the Sikhs and “Jap Sahib” of the 10th Sikh Guru Gobind Singh –the text very important for Sikh studies both from philosophical and historical points of view.

5. Dr. Khokhlova is the recipient of different awards and honours. In 2005 she got an award of Punjabi Sath, London, for contribution into Punjabi studies in Russia and an award of Indian Government for contribution into Hindi studies in Russia in 2007.

डॉ. लियुदमीला खोखलोवा

डॉ. लियुदमीला खोखलोवा भारतीय भाषाशास्त्र विभाग, एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन संस्थान, मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी, रूस में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। वे इंडोलॉजिकल अध्ययन में उनके योगदान के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं।

2. 31 अक्टूबर 1945 को जन्मी, डॉ. खोखलोवा ने वर्ष 1970 में मास्को स्टेट यूनिवर्सिटी से हिंदी भाषा और साहित्य में एमए की उपाधि हासिल की और वर्ष 1974 में एकेडमी ऑफ साइंसेज, मास्को के इंस्टीट्यूट ऑफ लिंग्विस्टिक्स से भारतीय भाषाविज्ञान में पीएचडी की उपाधि हासिल की। उनका पीएचडी शोध प्रबंध हिंदी और राजस्थानी भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित था।

3. वर्तमान में, डॉ. खोखलोवा मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी में बीए और एमए स्तर पर हिंदी; बीए और एमए स्तर पर पंजाबी, 14वीं–20वीं शताब्दी में पश्चिमी नई इंडो–आर्यन भाषाओं का ऐतिहासिक विकास; नई इंडो–आर्यन भाषाओं का सिंटैक्टिक टाइपोलॉजी, व्याकरणिक संरचना हिंदी/उर्दू, हिंदी /उर्दू की सिमेंटिक संरचना, सामान्य भाषा विज्ञान जैसे विभिन्न भाषाई पाठ्यक्रम पढ़ा रही हैं जो छात्रों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं। वह भारतीय भाषाविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में शोध कर रहे छात्रों का मार्गदर्शन भी कर रही हैं।

4. डॉ. खोखलोवा पश्चिमी इंडो–आर्यन भाषाओं के ध्वन्यात्मकता, भाषाविज्ञान, रूपात्मकता और शाब्दिक प्रकारिकी की समस्याओं पर आधारित रूसी, अंग्रेजी और हिंदी में 6 पुस्तकों और 92 पत्रों की लेखिका हैं। उनके शोध में ऐतिहासिक भाषा विज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। वे रूसी छात्रों के लिए हिंदी और पंजाबी मैनुअल की लेखिका हैं। उनके कई अध्ययन सिख धर्म की उत्पत्ति और विकास को समर्पित हैं। उन्होंने गुरु नानक द्वारा ''जप जी'' का पंजाबी से रूसी में अनुवाद किया, जिन पर सिखों के पवित्र ग्रंथ ''आदि ग्रंथ'' और 10वें सिख गुरु गोबिंद सिंह के ''जप साहिब'' आधारित हैं। ये ग्रंथ दार्शनिक और ऐतिहासिक दोनों दृष्टिकोणों से सिख अध्ययन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

5. डॉ. खोखलोवा को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। वर्ष 2005 में उन्हें रूस में पंजाबी अध्ययन में योगदान के लिए पंजाबी साठ, लंदन का पुरस्कार मिला और वर्ष 2007 में रूस में हिंदी अध्ययन में योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत किया गया।

DR. PRABHAKAR BASAPRABHU KORE

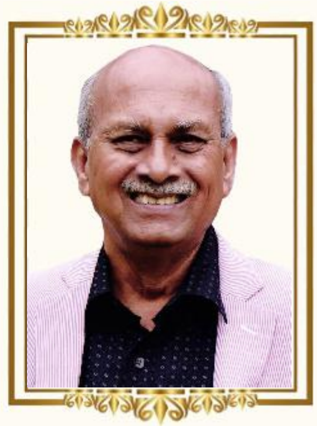

Dr. Prabhakar Basaprabhu Kore is a visionary leader, an eminent educationist, and a tireless crusader for rural upliftment. As the Chairman of the Karnatak Lingayat Education (KLE) Society since 1984, he has transformed a regional educational initiative into a global powerhouse of learning and healthcare.

2. Born on 1st August, 1947 Dr. Kore's life has mirrored the nation's journey toward self-reliance and academic excellence. Under his transformative stewardship, the KLE Society has undergone an unprecedented metamorphosis—expanding from 38 institutions to a massive network of 317 institutions., spanning from kindergarten to post-doctoral studies. Today, this network empowers 1.45 lakh students, with a remarkable 50 percent of these institutions situated in rural areas. A defining hallmark of Dr. Kore s vision is the uniform standard of infrastructure, teaching, and learning facilities across vernacular and English mediums, as well as rural and urban geographies.

3. Among his most significant achievements is the establishment and development of two universities—KLE Academy of Higher Education and Research (KAHER) and KLE Technological University. Equally noteworthy is his contribution to healthcare through the creation of a cumulative 5,500-bed hospital network, including the KLE Dr. Prabhakar Kore Hospital and Medical Research Centre, an exclusive cancer hospital, and dedicated Ayurveda and Homeopathic hospitals. These institutions provide state-of-the-art, affordable healthcare including multi organ transplant to rural populations across North Karnataka and adjoining regions of Maharashtra and Goa. Collectively, they have placed KLE on the international map for advanced surgical services and medical tourism. These hospitals played a decisive, life-saving role during the Covid-19 pandemic.

4. Beyond academia and healthcare, Dr. Kore has rendered distinguished service in public life. He served three terms as a Member of Parliament in the Rajya Sabha and earlier as a Member of the Karnataka Legislative Council. In these roles, he actively advocated for rural development, agricultural reforms and the strengthening of national healthcare infrastructure. His influence extends into the cooperative sector, where he has spearheaded initiatives in agriculture sugar and banking. His contributions include the establishment of two community radio stations, a dedicated Krishi Vigyan Kendra and a College of Agricultural Sciences, reinforcing his commitment to grassroots empowerment.

5. A strong advocate of Kannada language and culture, Dr. Kore served as Chairman of the Vishwa Kannada Sammelana and played a key role in facilitating the historic first two sessions of the Karnataka Legislative Assembly in the KLE campus before the establishment of the Suvarna Soudha at Belagavi. Despite his vast achievements, he remains deeply connected to his roots, demonstrated through his quiet yet impactful flood relief work along the Krishna River.

6. Dr. Kore's contributions have earned global and national recognition, including honorary doctorates from Thomas Jefferson University (USA) and Universiti Sains Malaysia (Malaysia), along with honors from Karnatak University, Dharwad, and Rani Channamma University, Belagavi. He is also a recipient of the Karnataka Rajyotsava Award from the Government of Karnataka.

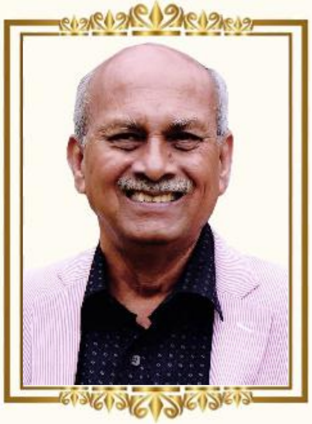

डॉ. प्रभाकर बसप्रभु कोरे

डॉ. प्रभाकर बसप्रभु कोरे एक दूरदर्शी नेता, एक प्रख्यात शिक्षाविद् और ग्रामीण उत्थान के लिए एक अथक योद्धा हैं। वर्ष 1984 से कर्नाटक लिंगायत एजुकेशन (केएलई) सोसाइटी के अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने एक क्षेत्रीय शैक्षिक पहल को सीखने और स्वास्थ्य सेवा के वैश्विक पावरहाउस में बदल दिया है।

2. 1 अगस्त, 1947 को जन्मे डॉ. कोरे का जीवन देश की स्वावलंबन और शैक्षणिक उत्कृष्टता की यात्रा का दर्पण है। उनके परिवर्तनकारी नेतृत्व में, केएलई सोसाइटी का अभूतपूर्व रूपांतरण हुआ—38 संस्थानों से बढ़कर अब यह 317 संस्थानों का विशाल नेटवर्क बन चुका है, जो किंडरगार्टन से लेकर पोस्ट—डॉक्टोरल अध्ययन तक फैला हुआ है। आज यह नेटवर्क 1.45 लाख छात्रों को सशक्त बनाता है, जिसमें लगभग 50 प्रतिशत संस्थान ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं। उनकी दूरदर्शिता का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि सभी संस्थानों में, चाहे वे स्थानीय या अंग्रेजी माध्यम के हों, या ग्रामीण या शहरी क्षेत्रों में स्थित हों, बुनियादी ढांचे, शिक्षण और अधिगम सुविधाओं का समान स्तर सुनिश्चित किया गया है।

3. डॉ. कोरे की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में दो विश्वविद्यालयों—केएलई अकादमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च (केएएचईआर) और केएलई टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी—की स्थापना और उनका विकास है। इसी प्रकार, स्वास्थ्य क्षेत्र में उनका योगदान भी अत्यंत उल्लेखनीय है, जिसमें उन्होंने कुल 5,500 बेड वाले अस्पताल नेटवर्क की स्थापना की, जिसमें केएलई डॉ. प्रभाकर कोरे अस्पताल और मेडिकल रिसर्च सेंटर, एक विशेष कैंसर अस्पताल और समर्पित आयुर्वेद एवं होम्योपैथिक अस्पताल शामिल हैं। इन संस्थानों में अत्याधुनिक और सस्ती स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान की जाती है, जिसमें उत्तर कर्नाटक तथा महाराष्ट्र और गोवा के आस—पास के ग्रामीण क्षेत्रों की आबादी के लिए मल्टी ऑर्गन ट्रांसप्लांट जैसी सेवाएँ भी शामिल हैं। सामूहिक रूप से, इनसे केएलई को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उन्नत शल्य चिकित्सा सेवाओं और मेडिकल टूरिज़्म के लिए मान्यता मिली है। कोविड—19 महामारी के दौरान इन अस्पतालों ने निर्णायक और जीवन रक्षक भूमिका निभाई।

4. शैक्षणिक और स्वास्थ्य क्षेत्र से परे, डॉ. कोरे ने सार्वजनिक जीवन में भी विशिष्ट सेवा प्रदान की है। उन्होंने राज्यसभा में तीन कार्यकाल सांसद के रूप में पूरे किए और इससे पहले कर्नाटक विधान परिषद के सदस्य के रूप में कार्य किया। इन पदों पर रहते हुए उन्होंने ग्रामीण विकास, कृषि सुधार और राष्ट्रीय स्वास्थ्य अवसंरचना के सशक्तिकरण के लिए सक्रिय रूप से प्रयास किए। उनका प्रभाव सहकारी क्षेत्र में भी व्यापक रहा, जहाँ उन्होंने कृषि, चीनी और बैंकिंग क्षेत्रों में कई पहलों का नेतृत्व किया। उनके योगदानों में दो सामुदायिक रेडियो स्टेशन, एक समर्पित कृषि विज्ञान केंद्र और एक कृषि विज्ञान महाविद्यालय की स्थापना शामिल है, जो जमीनी स्तर पर सशक्तिकरण के लिए उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

5. कन्नड़ भाषा और संस्कृति के प्रबल समर्थक डॉ. कोरे ने विश्व कन्नड़ सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया और बेलगावी में सुवर्ण सदन की स्थापना से पहले केएलई परिसर में कर्नाटक विधानसभा के ऐतिहासिक पहले दो सत्रों के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपनी विपुल उपलब्धियों के बावजूद, वह अपनी जड़ों से गहरे जुड़े हुए हैं, जिसका प्रमाण कृष्णा नदी के किनारे उनके शांत लेकिन प्रभावशाली बाढ़ राहत कार्यों से मिलता है।

6. डॉ. कोरे के योगदानों ने उन्हें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाई है। उन्हें थॉमस जेफरसन यूनिवर्सिटी (यूएसए) और यूनिवर्सिटी साइनस मलेशिया (मलेशिया) से मानद डॉक्टरेट प्रदान किए गए, और कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ तथा रानी चन्नम्मा विश्वविद्यालय, बेलगावी द्वारा भी उन्हें सम्मानित किया गया। उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए कर्नाटक सरकार ने उन्हें कर्नाटक राज्योत्सव पुरस्कार से भी सम्मानित किया।

SMT. POKHILA LEKTHEPI

Smt. Pokhila Lekthepi a famous singer of Karbi song from Assam.

2. Born on 21st August, 1962 in Dopor Timung Village, Dokmoka of Karbi Anglong district, Assam, Smt. Lekthepi started education at Dokmoka Basic L.P. School and High school at Dokmoka Higher Secondary School, Dokmoka. She started singing from her childhood. Her parents supported her hobby. She started singing from schooling time. She started her journey for performing in public platform by participating in the first Karbi Youth Festival in 1974 at Diphu Rongnihang Karbi Club. She got first prize for Lun Kimi (Modern song), Tu-a-eh (Folk Song), Oso kepakan (Folk Song) etc. She also got best actress prize on Drama.

3. Smt. Lekthepi started composing own song and lyrics on Karbi Modern Song in the year 1975 for Karbi Youth Festival. She got first prize for her own composed lyric song in Karbi Youth Festival in 1976. She was awarded Karbi Kungirpi in Diphu in 1976 and the same award was awarded at Dongkamukam Karbi Youth Festival at West Karbi Anglong in 1977. She got an opportunity to sing at All India Radio Guwahati in 1978 where she sang Karbi Modern and Folk songs. She also sang at Doordarshan, Guwahati in 1984 where she sang Karbi Modern song.

4. Smt. Lekthepi has been honoured with various other awards for her singing such as Best Singer Award by Anglong Autonomous Council in 1988, Bishnu Rabha Dibok Award bu Hodou Asom Satro hontha at Bokajan in 2007, Shovaa Shilpi Amulya Kakoti Sarok Botah Award by All Guwahati Student Union at Guwahati in 2009, 2nd time Best Singer Award by Karbi Anglong Autonomous Council at Diphu in 2009, Queen of Melody Award by Hills Idol at Diphu in 2010, Best Karbipi Award by Karbi Anglong K.R.A, K.S.A, K.A.R.S.A at Diphu in 2012, Luit Gaurav Award by Indian Oil Refinery at Guwahati in 2018, Shilpi Botah Award by Asom Sarkar Hangskriti Parikrom bibhak at Jorhat in 2023, Culture of Resistance Award by America (U.S.A) Culture of Resistance Network on the 50th Karbi Youth Festival in 2024, Assam Gaurav Award by Govt. of Assam at Guwahati in 2024, Prag Prerona award by Prag News Channel at Guwahat in 2025, D.P.R.C award by Dignata Physiotherapy and Rehabilitation Centre at Guwahati in 2025 and Jayanta Hazarika Byatikram Inspirational award on 82nd Birth Anniversary Celebration of Jayanta Hazarika at 2025 in Guwahati.

श्रीमती पखीला लेकथेपी

श्रीमती पोखिला लेकथेपी असम की करबी गीतों की एक प्रसिद्ध गायिका हैं।

2. 21 अगस्त, 1962 को असम के करबी आंगलोंग जिले के डोकमोका स्थित डोपोर तिमुंग गाँव में जन्मी, श्रीमती लेकथेपी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा डोकमोका बेसिक एल.पी. स्कूल तथा उच्च शिक्षा डोकमोका हायर सेकेंडरी स्कूल, डोकमोका से प्राप्त की। उन्होंने बचपन से ही गाना शुरू कर दिया था। उनके माता–पिता ने उनकी इस रूचि में सहयोग किया। उन्होंने स्कूल के समय से ही गायन शुरू किया। उन्होंने सार्वजनिक मंच पर प्रस्तुति देने की अपनी गायन यात्रा वर्ष 1974 में दीफू स्थित रोंगनिहांग करबी क्लब में आयोजित प्रथम करबी यूथ फेस्टिवल में भाग लेकर शुरू की। उन्हें "लुन किमी" (आधुनिक गीत), "तु–आ–एह" (लोक गीत), "ओसो केपाकन" (लोक गीत) आदि के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्होंने नाटक में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार भी प्राप्त किया।

3. श्रीमती लेकथेपी ने वर्ष 1975 में करबी यूथ फेस्टिवल के लिए करबी आधुनिक गीतों पर स्वरचित गीत–संगीत आरंभ किया। वर्ष 1976 में करबी यूथ फेस्टिवल में स्वरचित गीत–रचना के लिए उन्हें प्रथम पुरस्कार मिला। उन्हें वर्ष 1976 में दीफू में "करबी कुंगिरपी" से सम्मानित किया गया तथा यही पुरस्कार वर्ष 1977 में पश्चिम करबी आंगलोंग के डोंगकामुकाम करबी यूथ फेस्टिवल में भी प्रदान किया गया। वर्ष 1978 में उन्हें आकाशवाणी, गुवाहाटी में गाने का अवसर मिला, जहाँ उन्होंने करबी आधुनिक और लोक गीत प्रस्तुत किए। उन्होंने वर्ष 1984 में दूरदर्शन, गुवाहाटी में भी करबी आधुनिक गीत प्रस्तुत किए।

4. श्रीमती लेकथेपी को उनके गायन के लिए विभिन्न पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है, जैसे वर्ष 1988 में आंगलोंग स्वायत्त परिषद द्वारा सर्वश्रेष्ठ गायिका पुरस्कार, वर्ष 2007 में बोकाजन में होडोउ असम सत्रो होन्था द्वारा "बिष्णु राभा दिबोक" पुरस्कार, वर्ष 2009 में गुवाहाटी में ऑल गुवाहाटी स्टूडेंट यूनियन द्वारा "शोभा शिल्पी अमूल्य काकोटी सरोक बोताह" पुरस्कार, वर्ष 2009 में दीफू में करबी आंगलोंग स्वायत्त परिषद द्वारा दूसरी बार सर्वश्रेष्ठ गायिका पुरस्कार, वर्ष 2010 में दीफू में "हिल्स आइडल" द्वारा "क्वीन ऑफ मेलोडी" पुरस्कार, वर्ष 2012 में दीफू में करबी आंगलोंग के.आर.ए., के.एस.ए., के.ए.आर.एस.ए. द्वारा "सर्वोत्तम करबिपी" पुरस्कार, वर्ष 2018 में गुवाहाटी में इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन रिफाइनरी द्वारा "लुइत गौरव" पुरस्कार, वर्ष 2023 में जोरहाट में असम सरकार के सांस्कृतिक विभाग द्वारा "शिल्पी बोताह" पुरस्कार, वर्ष 2024 में 50वें करबी यूथ फेस्टिवल के अवसर पर कल्चर ऑफ रेसिस्टेंस नेटवर्क (अमेरिका) द्वारा "कल्चर ऑफ रेसिस्टेंस" पुरस्कार, वर्ष 2024 में गुवाहाटी में असम सरकार द्वारा "असम गौरव" पुरस्कार, वर्ष 2025 में गुवाहाटी में प्राग न्यूज चौनल द्वारा "प्राग प्रेरणा" पुरस्कार, वर्ष 2025 में गुवाहाटी में डिग्नाटा फिजियोथेरेपी एंड रिहैबिलिटेशन सेंटर द्वारा "डी.पी.आर.सी." पुरस्कार तथा वर्ष 2025 में गुवाहाटी में जयंता हजारिका की 82वीं जयंती के अवसर पर "जयंता हजारिका ब्यातिक्रम इंस्पिरेशनल" पुरस्कार।

SHRI RAMA REDDY MAMIDI (POSTHUMOUS)

Shri Rama Reddy Mamidi was widely recognized as a primary architect of modem cooperative law in India. His most significant contributions include the role in drafting the Andhra Pradesh Mutually Aided Cooperative Societies (MACS) Act of 1995, a landmark "Parallel Law" that granted cooperatives true autonomy.

2. Born on 8th July, 1943 in an agricultural family at Shamshabad Village, Ranga Reddy District, Telangana, Shri Mamidi took Bachelor of Arts Degree from Nizam College, Hyderabad, Bachelor of Journalism Degree from Osmania University, Hyderabad, Post Graduate Studies in Political Science at Delhi University and Post Graduate Studies in Local Government and Economic Development at Princeton University, USA. His lifelong dedication to cooperative societies, civil organizations and local governance has been the cornerstone of his journey from a grassroots leader to a national policy influencer. He extended his expertise to eight other states (i.e., Jammu & Kashmir, Uttaranchal, Bihar, Jharkand, Madhya Pradesh, Chattisgarh, Orissa and Karnataka), assisting in the enactment of liberal laws for self-reliant cooperatives, and contributed significantly to the Multi-State Cooperative Societies Act of 2002. As a founder member and leader of Sahavikasa, he fostered an environment where decentralization and democratic self-help could flourish, conducting over 100 national workshops to evolve cooperative frameworks.

3. Shri Mamidi's achievements have transformed rural livelihoods - Established 585 thrift and credit cooperatives benefiting over 2.69 lakh members in Telangana, with an annual turnover of ₹ 570 Crore, promoted India's first all-women-owned dairy at Mulukanoor, managing 1 lakh liters of milk daily with a turnover of 220 Crore. Between 1998 and 2000, he led a national initiative to reform non-profit legislation, conducting 18 workshops that culminated in the Andhra Pradesh Societies Registration Act of 2001. A champion of good governance, he also spearheaded the Lok Satta movement, advocating for systemic reforms in electoral processes, political transparency, and federal polity.

4. Shri Mamidi had been deeply associated with Sangam Laxmibai Vidyapeet since 1991. Under his stewardship, numerous educational institutions were established, providing thousands of young women with the tools for academic excellence and financial independence.

5. Throughout his illustrious career, Shri Mamidi had held several prestigious positions of service. He served as the President of the Gram Panchayat, Shamshabad and the President of the Panchayat Samithi, Rajendranagar. He had been a valued member of the Brahma Prakash Committee, the Ram Niwas Mirdha Committee and the National Task Force on Revival of Rural Cooperative Credit System.

6. Shri Mamidi passed away on 26th October, 2025.

श्री रामा रेड्डी मामिदी (मरणोपरांत)

श्री रामा रेड्डी मामिदी भारत में व्यापक रूप से आधुनिक सहकारी कानून के मुख्य निर्माता के रूप में जाने जाते थे। उन्होनें वर्ष 1995 के आंध्र प्रदेश पारस्परिक सहायता प्राप्त सहकारी सोसायटी (एमएसीएस) अधिनियम का मसौदा तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो सहकारी समितियों को सच्ची स्वायत्तता प्रदान करने वाला एक ऐतिहासिक ''समानांतर कानून'' था।

2. 8 जुलाई, 1943 को तेलंगाना के रंगा रेड्डी जिले के शमशाबाद गांव में एक कृषक परिवार में जन्मे, श्री मामिदी ने निजाम कॉलेज, हैदराबाद से कला स्नातक, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद से पत्रकारिता में स्नातक, दिल्ली विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर और प्रिंसटन विश्वविद्यालय, यूएसए से स्थानीय सरकार और आर्थिक विकास में स्नातकोत्तर अध्ययन किया। सहकारी समितियों, नागरिक संगठनों और स्थानीय शासन के प्रति उनका आजीवन समर्पण एक साधारण नेता से एक राष्ट्रीय नीति निर्माता तक की उनकी यात्रा का महत्वपूर्ण पक्ष रहा। उन्होंने आठ अन्य राज्यों (जैसे, जम्मू और कश्मीर, उत्तरांचल, बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा और कर्नाटक) में आत्मनिर्भर सहकारी समितियों के लिए उदार कानूनों को लागू करने में सहायता की और वर्ष 2002 के बहु–राज्य सहकारी सोसायटी अधिनियम में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सहकारी ढाँचे का विकास करने के लिए 100 से अधिक राष्ट्रीय कार्यशालाओं का आयोजन कर सहविकास के संस्थापक सदस्य और अग्रणी नेतृत्वकर्ता के रूप में, उन्होंने विकेंद्रीकरण और लोकतांत्रिक स्व–सहायता को बढ़ावा दिया।

3. श्री मामिदी की उपलब्धियों ने ग्रामीण आजीविका को परिवर्तित किया। उन्होनें तेलंगाना में 2.69 लाख से अधिक सदस्यों को लाभान्वित करने वाली 585 थ्रिफ्ट और क्रेडिट सहकारी समितियों की स्थापना की, जिनका वार्षिक कारोबार ₹ 570 करोड़ है। साथ ही उन्होनें मुलुकानूर में भारत की पहली पूर्ण–महिला स्वामित्व वाली डेयरी को बढ़ावा दिया, जिसमें 220 करोड़ के कारोबार के साथ प्रतिदिन 1 लाख लीटर दूध का उत्पाद किया गया। उन्होंने वर्ष 1998 और 2000 के बीच गैर–लाभकारी कानून में सुधार के लिए एक राष्ट्रीय पहल का नेतृत्व कर 18 कार्यशालाएँ आयोजित की, जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 2001 का आंध्र प्रदेश सोसायटी पंजीकरण अधिनियम लागू हुआ। सुशासन के समर्थक होने के नाते, उन्होंने चुनावी प्रक्रियाओं, राजनीतिक पारदर्शिता और संघीय राजनीति में प्रणालीगत सुधारों की वकालत करते हुए लोक सत्ता आंदोलन का भी नेतृत्व किया।

4. श्री मामिदी वर्ष 1991 से संगम लक्ष्मीबाई विद्यापीठ से गहराई से जुड़े हुए थे। उनके नेतृत्व में, कई शैक्षणिक संस्थान स्थापित किए गए, जिससे हजारों युवा महिलाओं को शैक्षणिक उत्कृष्टता और वित्तीय स्वतंत्रता में सहायता मिली।

5. अपने शानदार करियर के दौरान, श्री मामिदी कई प्रतिष्ठित पदों पर सेवारत रहे। वे, ग्राम पंचायत, शमशाबाद के अध्यक्ष और पंचायत समिति, राजेंद्रनगर के अध्यक्ष पद पर आसीन रहे। वे ब्रह्म प्रकाश समिति, राम निवास मिर्धा समिति और ग्रामीण सहकारी क्रेडिट प्रणाली के संरक्षण संबंधी राष्ट्रीय कार्य बल के एक महत्वपूर्ण सदस्य रहे।

6. 26 अक्टूबर, 2025 को श्री मामिदी का निधन हो गया।

SHRI R.V.S. MANI

Shri R.V.S. Mani is a known Civil servant.

2. Born on 29th October, 1959, Shri Mani served as Under Secretary in Ministry of Home Affairs, Government of India. Shri Mani was faced with challenging roles early in his assignment when the Varanasi Cantonment and Sankat Mochan Bomb blast occurred in the year 2006. He handled post blast responsibilities in both the instances competently. During the Mumbai terrorist attack on 26.11.2008, he had manned the MHA Control Room commendably along with personnel from Central Armed Police Forces and coordinated with stakeholders to mitigate the damage.

3. Shri Mani identified and worked diligently in specific areas requiring special focus to meet the challenges of handling, controlling and preventing the scourge of terrorism, militancy, separatism in the Country, including disaffection in North East. Besides this, he was able to highlight requirements which helped in roll out of specific schemes like modernization of Police Forces, Desert Area Policing, Coastal Policing, Mega City Policing, etc. The information flow on organized crime syndicates across State was also highlighted and addressed under the newly developed CCTNS, which subsequently was merged into ICJS (Inter Operable Command Justice System) after 2014. During his tenure, focus of Government was brought on special and emerging challenges like Radiological, Nuclear, Biological and Chemical terrorism along with measures to counter these. These interventions enabled setting of a robust mechanism to identify terror perpetrators of the terror attacks like the Samjautha Express Blast, Mecca Blasts, Local Court (2007) and Rampur (2008), Serial Local Train Blast (2006), Malegaon (2006 & 2008) and Mumbai Attack 26.11.2008 and German Bakery Blast (2010).

4. Shri Mani worked as a sincere Government servant in an apolitical manner. Credits were given to him for handling several sensitive cases without falling prey to any vested interest. These were validated by the concerned Courts subsequently. Shri Mani was instrumental in bringing out a document on the Status of Internal Security of the Nation which became a Manual for all the Divisions in Ministry of Home Affairs dealing with this subject. He also played important role in handling various issues relating to the India's response to visit of United Nations Counter Terrorism Executive Directorate in 2007 and Financial Action Task Force.

5. Shri Mani has written five books of National importance.

श्री रा.वे.सु. मणि

श्री रा.वे.सु. मणि एक सुपरिचित सिविल सेवक हैं।

2. 29 अक्टूबर 1959 को जन्मे, श्री मणि ने भारत सरकार के गृह मंत्रालय में अवर सचिव के रूप में अपनी सेवाएँ दीं। अपने कार्यकाल के शुरुआती दौर में ही उन्हें तब चुनौतीपूर्ण भूमिकाओं का सामना करना पड़ा, जब वर्ष 2006 में वाराणसी छावनी और संकट मोचन मंदिर में बम विस्फोट हुए। उन्होंने दोनों ही घटनाओं के बाद की जिम्मेदारियों को अत्यंत कुशलता के साथ संभाला। दिनांक 26.11.2008 को मुंबई में हुए आतंकवादी हमले के दौरान, उन्होंने केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के कर्मियों के साथ मिलकर गृह मंत्रालय के नियंत्रण कक्ष का सराहनीय ढंग से संचालन किया और नुकसान को कम करने के लिए सभी हितधारकों के साथ समन्वय स्थापित किया।

3. श्री मणि ने देश में आतंकवाद, उग्रवाद और अलगाववाद की विभीषिका, जिसमें उत्तर–पूर्व में व्याप्त असंतोष भी शामिल है, से निपटने, उसे नियंत्रित करने और रोकने की चुनौतियों का सामना करने के लिए विशेष ध्यान देने योग्य क्षेत्रों की पहचान की और उन पर निष्ठापूर्वक कार्य किया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने उन आवश्यकताओं को प्रमुखता से रेखांकित किया जिनसे पुलिस बलों के आधुनिकीकरण, रेगिस्तानी क्षेत्र की पुलिसिंग, तटीय पुलिसिंग और मेगा सिटी पुलिसिंग जैसी विशिष्ट योजनाओं को लागू करने में सहायता मिली। राज्यों में सक्रिय संगठित अपराध सिंडिकेट्स पर सूचनाओं के प्रवाह को भी नवनिर्मित क्राइम एंड क्रिमिनल ट्रैकिंग नेटवर्क एंड सिस्टम्स के माध्यम से रेखांकित और संबोधित किया गया, जिसे बाद में 2014 के पश्चात इंटर ऑपरेबल कमांड जस्टिस सिस्टम में मिला दिया गया। उनके कार्यकाल के दौरान, सरकार का ध्यान रेडियोलॉजिकल, परमाणु, जैविक और रासायनिक आतंकवाद जैसी विशेष और उभरती चुनौतियों के साथ–साथ इनसे निपटने के उपायों पर केंद्रित हुआ। इन प्रयासों ने समझौता एक्सप्रेस विस्फोट, मक्का मस्जिद विस्फोट, स्थानीय न्यायालय (2007), रामपुर (2008), सीरियल लोकल ट्रेन ब्लास्ट (2006), मालेगांव (2006 और 2008) के साथ–साथ दिनांक 26.11.2008 के मुंबई हमले और जर्मन बेकरी ब्लास्ट (2010) जैसे आतंकी हमलों के अपराधियों की पहचान करने के लिए एक मजबूत तंत्र स्थापित करने में मदद की।

4. श्री मणि ने एक निष्ठावान सरकारी सेवक के रूप में पूरी तरह से राजनीति–निरपेक्ष रहकर कार्य किया। किसी भी निहित स्वार्थ के प्रभाव में आए बिना कई संवेदनशील मामलों को सुलझाने का श्रेय उन्हें दिया गया, जिसकी बाद में संबंधित न्यायालयों द्वारा भी पुष्टि की गई। श्री मणि ने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज तैयार करने में भी अहम भूमिका निभाई, जो इस विषय पर काम करने वाली सभी एजेंसियों के लिए एक मैनुअल बन गया। उन्होंने एफ.ए.टी.एफ और 2007 में संयुक्त राष्ट्र आंतकवाद रोधी कार्यकारी निदेशालय के आगमन के समय विभिन्न मुद्दों पर भारत के पक्ष को संचालित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

5. श्री मणि ने राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर पाँच पुस्तकें भी लिखी हैं।

SMT. KALAMANDALAM VIMALA MENON

Smt. Kalamandalam Vimala Menon is the vision and stimulus behind the present-day Mohiniyattam style in its aesthetic, costume, hairdo, instrumentalization and even presentation pattern which is the face of Mohiniyattam style today. Her 65 years of dedication molded her into an extraordinary teacher, performer, artepreneur, choreographer, innovator, author, writer, makeup artist, costume designer, tailor and an organizer.

2. Born on 7th January, 1942 , Smt. Menon founded the Kerala Natya Academy in 1972 to nurture and propagate India's traditional dance forms, later expanding its reach to Malaysia and Singapore. Guided by her mantra 'Art is for everyone', she offered lifelong, free training to underprivileged students, personally funding all educational and performance-related expenses. Having trained over five generations and more than 10,000 students, she pioneered the introduction of Kuchipudi in Kerala.

3. Smt. Menon, from the young age, recognised the power of art as a nation's vital soft power and devoted her journey to using classical dance as a medium for peace, unity, inclusion and human development. She transformed dance into a social bridge that transcends boundaries, empowered underprivileged communities through free training, upheld the true spirit and aspects of the Guru-Shishya tradition, with a holistic vision of women's leadership, community engagement and cultural policy and standing out as a luminous example of how artist can shape social and cultural consciousness of a nation.

4. Mastery over trio claasical dance forms - Bharatanatyam, Mohiniyattam, and Kuchipudi, Smt. Menon evolved a distinctive training system that guides students in a structured progression, shaping versatile dancers grounded in classical aesthetics, expressive depth, and diverse cultural narratives. Her artistic vision expanded based on original compositions, transitioning solo to group choreography, the inclusion of Kerala vadyas such as Edekka, Timila, and Maddalam, redefining the repetoire with varient krits and compositions marked her identity in the fertemity. An author of seminal works including 'Laasya Mohini' and 'Bharatanatyavum Sastravum Charithravum', she broadened the visual language. By taking Mohiniyattam to global stages across Asia, Europe, the Middle East, Australia, USA, and many other countries her courageous leadership in key cultural institutions shaping policy, curriculum, festivals, and adjudication, strengthened India's classical arts landscape with clarity tradition and vision.

5. Over the years, Smt. Menon illustrious career has earned wide recognition at the international, national, and state levels, marking her as one of the most distinguished figures in Indian classical dance. At the global level, she achieved a Guinness World Records (2006) for presenting 1200 Mohiniyattam dancers on a single stage, a historic feat that brought international attention to the art form. Both at nationally and state levels, she has been honoured with Kerala Sri Award (2025), Nrityaratna Samman (2025), Nritha Natya Puraskar (2020), Kalaratna Fellowship (2012), Sangeet Natak Akademi Award (2006), Kerala Kalamandalam Award (2004), and Kerala Sangeetha Nataka Academy Award (1991). Women of the Year Award (2020), along with the honorific titles Natyaratna and Keerthy patra, revealing a career of sustained excellence and cultural leadership.

श्रीमती कलामंडलम विमला मेनोन

श्रीमती कलामंडलम विमला मेनोन वर्तमान मोहनीअट्टम शैली के पीछे की दृष्टि और प्रेरणा हैं चाहे वह इसकी सुदंरता, वेशभूषा, केशभूषा, वाद्ययंत्र और यहां तक कि प्रस्तुति पैटर्न का तरीका हो–जो आज मोहनीअट्टम की पहचान बन चुका है। 65 वर्षों के समर्पण के परिणामस्वरूप वह एक असाधारण शिक्षक, कलाकार, कला उद्यमी, कोरियोग्राफर, नवप्रवर्तक, रचनाकार, लेखक, मेकअप कलाकार, वेशभूषा डिजाइनर, टेलर और एक आयोजक हैं।

2. 7 जनवरी, 1942 को जन्मी श्रीमती मेनोन ने भारत के पारंपरिक नृत्य रूपों को विकसित करने और प्रचारित करने के लिए वर्ष 1972 में केरल नाट्य अकादमी की स्थापना की और बाद में इसे मलेशिया और सिंगापुर तक पहुँचाया। उनके मंत्र ''कला सभी के लिए है'' के अनुरूप, उन्होंने व्यक्तिगत रूप से सभी शैक्षिक और प्रदर्शन संबंधी खर्चों को वित्त पोषित कर वंचित छात्रों को आजीवन निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान किया। पांच पीढ़ियों से अधिक और 10,000 से अधिक छात्रों को प्रशिक्षित करने के बाद, उन्होंने केरल में कुचीपुड़ी की शुरुआत की।

3. श्रीमती मेनोन ने कम उम्र से ही कला की शक्ति को राष्ट्र की महत्वपूर्ण सॉफ्ट पावर के रूप में पहचाना और शास्त्रीय नृत्य को शांति, एकता, समावेश और मानव विकास के माध्यम के रूप में उपयोग करने के लिये अपना जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने नृत्य को एक सामाजिक सेतु माना जो महिलाओं के नेतृत्व, सामुदायिक जुड़ाव और सांस्कृतिक नीति की समग्र दृष्टि के साथ सीमाओं को पार कर, निःशुल्क प्रशिक्षण के माध्यम से वंचित समुदायों को सशक्त बनाता है, गुरु–शिष्य परंपरा की सच्ची भावना और पहलुओं को कायम रखता है, और कैसे कलाकार राष्ट्र की सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना को आकार दे सकता है इसका सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करता है।

4. तीन शास्त्रीय नृत्य रूपों – भरतनाट्यम, मोहिनीअट्टम और कुचीपुड़ी में महारत हासिल करने के बाद, श्रीमती मेनोन ने एक विशिष्ट प्रशिक्षण प्रणाली विकसित की जो छात्रों को संरचित प्रगति में मार्गदर्शन करती है और शास्त्रीय सौंदर्यशास्त्र, अभिव्यंजक गहराई और विविध सांस्कृतिक आख्यानों पर आधारित बहुमुखी नर्तकियों को कुशल बनाती है। एकल से समूह कोरियोग्राफी में परिवर्तन कर, एडेक्का, तिमिला और मद्दलम जैसे केरल वाद्यों को शामिल कर, विभिन्न कृतियों के साथ प्रदर्शनों की पुनर्व्याख्या और रचनाओं ने फर्टेमिटि में उनकी पहचान को चिह्नित कर उनकी कलात्मक दृष्टि मूल रचनाओं के आधार पर विस्तारित हुई। श्लास्य मोहिनीश और श्भरतनाट्यवम शास्त्रवम चरित्रावमश जैसे मौलिक कार्यों की लेखिका के रूप में उन्होंने दृश्य भाषा का विस्तार किया। एशिया, यूरोप, मध्य पूर्व, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका और कई अन्य देशों में वैश्विक मंचों तक मोहिनीअट्टम को ले जाकर प्रमुख सांस्कृतिक संस्थानों में नीति, पाठ्यक्रम, त्योहारों और न्यायनिर्णयन को आकार देने में उनके साहसी नेतृत्व ने स्पष्टता, परंपरा और दृष्टि के साथ भारत के शास्त्रीय कला परिदृश्य को सुदृढ़ किया।

5. वर्षों से, श्रीमती मेनोन ने अपने शानदार करियर के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर व्यापक पहचान अर्जित की, जिससे उन्हें भारतीय शास्त्रीय नृत्य में सबसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक के रूप में जाना जाता है। वैश्विक स्तर पर, उन्होंने एक ही मंच पर 1200 मोहिनीअट्टम नर्तकियों को प्रस्तुत करने के लिए गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स (2006) हासिल किया, जो एक ऐतिहासिक उपलब्धि थी जिसने कला के रूप में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान आकर्षित किया। राष्ट्रीय और राज्य दोनों स्तरों पर, उन्हें केरल श्री पुरस्कार (वर्ष 2025), नृत्यारत्न सम्मान (वर्ष 2025), नृथा नाट्य पुरस्कार (वर्ष 2020), कलारत्न फेलोशिप (वर्ष 2012), संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (वर्ष 2006), केरल कलामंडलम पुरस्कार (वर्ष 2004), और केरल संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (वर्ष 1991) से सम्मानित किया गया। सम्मानजनक खिताब नाट्य रत्न और कीर्ति पत्र सहित वूमन ऑफ इयर अवार्ड (वर्ष 2020), उनके निरंतर उत्कृष्ट और सांस्कृतिक नेतृत्व वाले करियर को प्रदर्शित करता है।

SHRI VLADIMER MESTVIRISHVILI (POSTHUMOUS)

Shri Vladimir Mestvirishvili was a distinguished Georgian freestyle wrestling coach recognized for his substantial contributions to the development of wrestling both in Georgia and internationally, particularly in India. He is remembered as one of the greatest coaches in the world of freestyle wrestling, having trained numerous Olympic medalists and leaving a lasting legacy on the global wrestling community.

2. Born on 13th September, 1943, in Tbilisi, Shri Mestvirishvili began his career in freestyle wrestling as a competitive athlete. He later transitioned into coaching, where he established himself as one of the most accomplished and highly respected specialists in freestyle wrestling. His coaching career spanned multiple countries and national teams: 1979-1980 - Head Coach of the Georgian Cadet National Team; 1980-1981 - Head Coach of the Georgian Junior National Team; 1982-1991 - Head Coach of the Georgian Senior National Team; 1979-1991 - Coach of the USSR National Team, and in 1981 - Head Coach of the USSR Cadet National Team and 1995-2000 - Head Coach of the Macedonian National Team and a wrestling club.

3. In 2003, Shri Mestvirishvili was invited to India to serve as a coach of the national wrestling team. This marked the beginning of his broader international recognition. Over nearly two decades of work in India, he made a substantial contribution to the development and modernization of the country's freestyle wrestling program. Among the athletes trained under his guidance were Olympic and world-class competitors, including: Sushil Kumar - Olympic medalist; Yogeshwar Dutt — Olympic medalist; Bajrang Punia — Olympic medalist; Ravi Dahiya — Silver medalist at the Tokyo Olympic Games; Deepak Punia — World Championship medalist and Divya Kakran — Asian Champion. Athletes frequently referred to him as a "father figure". They have emphasized that he introduced Indian wrestlers to modern techniques, advanced training methodologies and professional approach.

4. In 2011, Shri Mestvirishvili was awarded the title of World Distinguished Coach by FILA (International Federation of Associated Wrestling Styles). He spent the final years of his life in India, dedicating himself to nurturing and mentoring young athletes.

5. Shri Mestvirishvili passed away on 23rd June, 2025

श्री व्लादिमीर मेस्त्विरीश्विली (मरणोपरांत)

श्री व्लादिमीर मेस्त्विरीश्विली एक प्रतिष्ठित जॉर्जियाई फ्रीस्टाइल कुश्ती कोच थे, जिन्हें जॉर्जिया और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, विशेष रूप से भारत में कुश्ती के विकास में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए जाना जाता था। उन्हें फ्रीस्टाइल कुश्ती की दुनिया के सबसे महान कोचों में से एक के रूप में याद किया जाता है, जिन्होंने अनेक ओलंपिक पदक विजेताओं को प्रशिक्षित किया और वैश्विक कुश्ती समुदाय पर एक स्थायी विरासत छोड़ी।

2. 13 सितंबर, 1943 को त्बिलिसी में जन्मे, श्री मेस्त्विरीश्विली ने अपने करियर की शुरुआत फ्रीस्टाइल कुश्ती में एक प्रतिस्पर्धी खिलाड़ी के रूप में की। बाद में वह कोचिंग के क्षेत्र में आए, जहाँ उन्होंने स्वयं को फ्रीस्टाइल कुश्ती के सबसे सफल और अत्यंत सम्मानित विशेषज्ञ के रूप में स्थापित किया। उनका कोचिंग करियर कई देशों और राष्ट्रीय टीमों के साथ जुड़ा रहा 1979–1980 – जॉर्जियाई कैडेट राष्ट्रीय टीम के मुख्य कोच; 1980–1981 – जॉर्जियाई जूनियर राष्ट्रीय टीम के मुख्य कोच; 1982–1991 – जॉर्जियाई सीनियर राष्ट्रीय टीम के मुख्य कोच; 1979–1991 – यूएसएसआर राष्ट्रीय टीम के कोच; 1981 – यूएसएसआर कैडेट राष्ट्रीय टीम के मुख्य कोच; 1995–2000 – मैसेडोनिया की राष्ट्रीय टीम तथा एक कुश्ती क्लब के मुख्य कोच।

3. वर्ष 2003 में श्री मेस्त्विरीश्विली को भारत की राष्ट्रीय कुश्ती टीम के कोच के रूप में आमंत्रित किया गया। यह उनकी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक पहचान की शुरुआत थी। भारत में लगभग दो दशकों तक कार्य करते हुए उन्होंने देश के फ्रीस्टाइल कुश्ती कार्यक्रम के विकास और आधुनिकीकरण में उल्लेखनीय योगदान दिया। उनके प्रशिक्षण में कई अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी उभरे, जिनमें ओलंपिक और विश्व स्तर के पदक विजेता शामिल हैं: सुशील कुमार– ओलंपिक पदक विजेता; योगेश्वर दत्त – ओलंपिक पदक विजेता; बजरंग पुनिया – ओलंपिक पदक विजेता; रवि दहिया – टोक्यो ओलंपिक रजत पदक विजेता; दीपक पुनिया – विश्व चौम्पियनशिप पदक विजेता तथा दिव्या काकरान – एशियाई चौम्पियन। खिलाड़ी उन्हें अक्सर 'पिता समान मार्गदर्शक' के रूप में संबोधित करते थे। उनके अनुसार श्री मेस्त्विरीश्विली ने भारतीय पहलवानों को आधुनिक तकनीकों, उन्नत प्रशिक्षण पद्धतियों तथा पेशेवर दृष्टिकोण से परिचित कराया।

4. वर्ष 2011 में श्री मेस्त्विरीश्विली को एफआईएलए (इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ एसोसिएटेड रेस्लिंग स्टाइल्स) द्वारा 'वर्ल्ड डिस्टिंग्विश्ड कोच' की उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्ष भारत में बिताए और युवा खिलाड़ियों के प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन के लिए पूर्ण रूप से समर्पित रहे।

5. 23 जून, 2025 को श्री मेस्त्विरीश्विली का निधन हो गया।

SHRI MAGANTI MURALI MOHAN

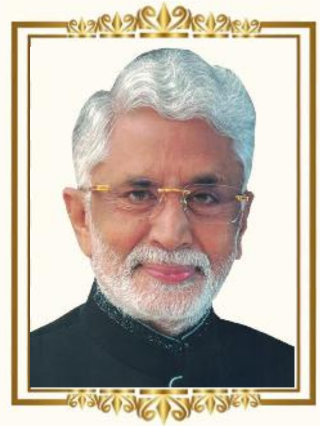

Shri Maganti Murali Mohan is a multifaceted personality who has made a significant impact in several fields and remains very active even at the age of 85.

2. Born on 24th June, 1940, in Guntupalli, Andhra Pradesh, Shri Murali Mohan comes from a family of patriots who actively participated in India's Freedom struggle and sacrificed their family property for the cause. A former student of the renowned Sir CRR College, Elum, he discontinued his studies to pursue his passion for business. Theatre was another passion of his.

3. In 1973, Shri Murali Mohan entered the film industry and recently completed Golden Jubilee of his film career. He received numerous honors and played lead roles in over 350 films. He established 'Jayabheri Art Productions' and produced 25 films in Telugu and Kannada. His accolades include the prestigious Nandi State Award from the Government of Andhra Pradesh for Best Actor. Six films produced by him also won awards, including the Nandi Award for Best Film. Films under the Jayabheri banner truly reflect his taste and commitment to clean movie concepts.

4. Shri Murali Mohan also served as a Member of the National Film Development Corporation (NFDC) and as the Chairman of the AP State Film Development Corporation (APSFDC). He held key positions for over 10 years in Movie Artistes' Association (MAA). His efforts in organizing the International Children's Film Festival at Hyderabad received great appreciation. He played a pivotal role in Instituting AP Government's Nandi Awards to Theatre Arts (Stage Drama). He served as Chairman of "Telangana Gaddar Film Awards committee (2025)". During natural disasters such as cyclones, he was at the forefront, conducting relief and fundraising activities with the support of his colleagues from the Film Industry. Deeply religious and devoted, he served as the Secretary and President of 'Daiva Sannidhanam' Hyderabad, a complex housing several temples.

5. After his success in the film industry, Shri Murali Mohan ventured into the real estate business establishing Jayabheri Properties Pvt Ltd which quickly gained the trust of people. He heads the 'Jayabheri Group,' which includes Automobiles. These Organizations provide employment to thousands of people. He always believed in giving back to society. He established the 'Murali Mohan Charitable Trust' to support meritorious but poor students. He organized several medical camps in rural areas. The focus was on women's health and fight against Tobacco consumption and cancer prevention. The trust is also supporting School for the Blind and accident victims. Due to his popularity and service activities, he was elected as Member of Parliament from Rajahmundry Constituency A.P. in 2014. His role in conducting sacred Godavari Pushkaram in 2015 is much acclaimed. He has been much admired as a politician and people's representative who worked with great commitment.

6. Shri Murali Mohan won several honorary awards for his films from state, national and international organizations. In recognition of his services in fields of arts and service-oriented activities, he was awarded Honorary Doctorate by KL University, Vijayawada.

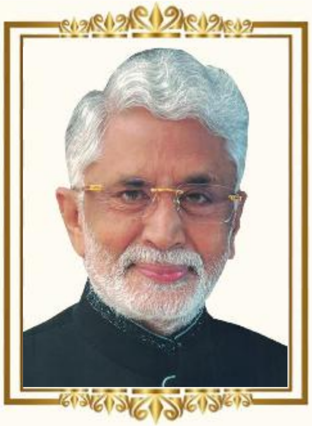

श्री मागंटि मुरली मोहन

श्री मागंटि मुरली मोहन एक बहुआयामी व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है और 85 वर्ष की आयु में भी बहुत सक्रिय रहते हैं।

2. 24 जून, 1940 को आंध्र प्रदेश के गुंटुपल्ली में जन्मे श्री मुरली मोहन देशभक्तों के परिवार से आते हैं, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया और इस उद्देश्य के लिए अपनी पारिवारिक संपत्ति का बलिदान दिया। वह प्रसिद्ध सर सीआरआर कॉलेज, एलम के एक पूर्व छात्र रहे तथा व्यवसाय के लिए अपने जुनून को आगे बढ़ाने के लिए अपनी पढ़ाई छोड़ दी। रंगमंच उनका एक अन्य जुनून था।

3. वर्ष 1973 में, श्री मुरली मोहन ने फिल्म उद्योग में प्रवेश किया और हाल ही में अपने फिल्मी करियर की स्वर्ण जयंती पूरी की। उन्हें कई सम्मान मिले तथा उन्होंने 350 से अधिक फिल्मों में मुख्य भूमिकाएँ निभाईं। उन्होंने 'जयाभेरी आर्ट प्रोडक्शंस' की स्थापना की तथा तेलुगु और कन्नड़ में 25 फिल्मों का निर्माण किया। उनकी प्रशंसा में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के लिए आंध्र प्रदेश सरकार का प्रतिष्ठित नंदी राज्य पुरस्कार शामिल है। उनके द्वारा निर्मित छह फिल्मों ने भी पुरस्कार जीते, जिसमें सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए नंदी पुरस्कार भी शामिल है। जयाभेरी बैनर के तहत फिल्में वास्तव में स्वच्छ फिल्म अवधारणाओं के प्रति उनकी रुचि और प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

4. श्री मुरली मोहन ने राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (एनएफडीसी) के सदस्य और आंध्र प्रदेश राज्य फिल्म विकास निगम (एपीएसएफडीसी) के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। उन्होंने मूवी आर्टिस्ट्स एसोसिएशन (एमएए) में 10 से अधिक वर्षों तक प्रमुख पदों पर कार्य किया। हैदराबाद में अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म महोत्सव के आयोजन में उनके प्रयासों को बहुत सराहना मिली। उन्होंने आंध्र प्रदेश सरकार के नंदी पुरस्कारों को थिएटर आर्ट्स (स्टेज ड्रामा) की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने "तेलंगाना गद्दर फिल्म पुरस्कार समिति (2025)" के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। चक्रवात जैसी प्राकृतिक आपदाओं के दौरान, वह फिल्म उद्योग के अपने साथियों के सहयोग से राहत और धन एकत्रण संबंधी गतिविधियों का संचालन करने में सबसे आगे थे। बेहद धार्मिक और समर्पित प्रवृत्ति के श्री मुरली मोहन ने, "दैव सन्निधानम" हैदराबाद, जो कई मंदिरों का एक परिसर है, के सचिव और अध्यक्ष के रूप में कार्य किया।

5. फिल्म उद्योग में अपनी सफलता के बाद, श्री मुरली मोहन ने जयाभेरी प्रॉपर्टीज प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना के लिए रियल एस्टेट व्यवसाय में कदम रखा, जिसने जल्द ही लोगों का विश्वास हासिल किया। वह "जयाभेरी समूह" के प्रमुख हैं, जिसमें ऑटोमोबाइल शामिल हैं। ये संगठन हजारों लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं। उन्होंने हमेशा समाज के प्रति अपना दायित्व निभाने में विश्वास किया। उन्होंने मेधावी लेकिन गरीब छात्रों की सहायता के लिए "मुरली मोहन चौरिटेबल ट्रस्ट" की स्थापना की। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में कई चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया। इन शिविरों में महिलाओं के स्वास्थ्य और तंबाकू के सेवन के खिलाफ लड़ाई और कैंसर की रोकथाम पर ध्यान केंद्रित किया गया था। ट्रस्ट नेत्रहीनों और दुर्घटना पीड़ितों के लिए स्कूल की भी सहायता कर रहा है। उनकी लोकप्रियता और सेवा गतिविधियों के कारण, उन्हें वर्ष 2014 में राजमुंदरी निर्वाचन क्षेत्र आंध्र प्रदेश से संसद सदस्य के रूप में चुना गया। वर्ष 2015 में पवित्र गोदावरी पुष्करम के संचालन में उनकी भूमिका बहुत सराहनीय है। एक राजनेता और जन प्रतिनिधि के रूप में उनकी बहुत प्रशंसा की गई है, जिन्होंने बड़ी प्रतिबद्धता के साथ काम किया।

6. श्री मुरली मोहन ने राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से अपनी फिल्मों के लिए कई मानद पुरस्कार जीते। कला और सेवा–उन्मुख गतिविधियों के क्षेत्र में उनकी सेवाओं के सम्मान में, उन्हें केएल विश्वविद्यालय, विजयवाड़ा द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया।

SHRI MOHAN NAGAR

Shri Mohan Nagar, Vice Chairman of the Madhya Pradesh Jan Abhiyan Parishad and the Secretary of Bharat Bharati Shiksha Samiti, Betul in Madhya Pradesh, is widely recognized for pioneering grassroots environmental conservation and promoting educational awareness in the tribal regions of Madhya Pradesh, transforming water harvesting, river rejuvenation, sustainable energy and educational motivation into people's movements. His initiatives such as Gangavataran Abhiyan, Bori Bandhan, and Machna River Rejuvenation have become models of community-driven ecological restoration, making him a leading figure in social work and environmental protection in India.

2. Born on 23rd February, 1968, in Raipuria village of Rajgarh District in Madhya Pradesh, Shri Nagar earned his M.A. in Political Science from Vikram University, Ujjain. From his student days, he was associated with social and cultural organizations, and in 1991 he moved to Betul to dedicate himself to tribal welfare. He began with the Shivdhaj Yatra (Shiksha - education, Van - forest, Dharti — land, Jal - water) across seven tribal blocks, spreading awareness about education and environment conservation. Over time, he mobilized thousands of villagers to adopt sustainable practices such as Annapurna Mandapam (growing vegetables through rainwater harvesting to address nutritional deficiencies), constructing water bodies (contour trenches) for water conservation, undertaking plantation drives, and celebrating river festivals.

3. Shri Nagar has led several landmark campaigns. In 2006, he undertook a Padyatra to advance education and environmental protection, mobilizing local communities to institutionalize Jal Mahotsav-a river festival in the Machna river catchment area dedicated to sustaining river flow, promoting water conservation, and enhancing rainwater harvesting. Under Gangavataran Abhiyan (2016-17), 8,000 trenches were dug across 60 acres of Sonaghati hills, conserving biodiversity with 32,000 native trees planted, creating Tapti Upvans, and restoring groundwater and greenery in tribal hilly areas. In 2021, he spearheaded the Machna River Rejuvenation campaign across 45-gram panchayats, ensuring year-round increased river flow, and inspiring the annual Machna river mahotsav. During Azadi Ka Amrit Mahotsav, he constructed 75,000 water structures and planted thousands of trees across 75 hills in the Satpuda eco-region, symbolizing sustainable development through mass community participation. He also facilitated solar energy adoption in tribal villages, with Bacha village earning global recognition as a "Solar Village."

4. Shri Nagar has articulated and implemented innovative grassroots models of environmental protection through biodiversity conservation, integrating voluntary labor (shramdaan) with traditional practices. His work has been adopted across Madhya Pradesh, creating a culture of collective responsibility for rivers, forests, and hills. He has trained communities, collaborated with government agencies, and inspired festivals that celebrate water and nature.

5. Shri Nagar is the recipient of numerous awards and honours. He was conferred the National Jal Prahari Award (2019) and the Water Hero Award (2020), both supported by the Ministry of Jal Shakti, Government of India. He also received the Bhaorav Devras Seva Samman (2024-25), a national award that underscores his pioneering role in groundwater conservation (Bhugarbh Jal Sanrakshan). He has also received the prestigious Dushyant Kumar Kriti Sahitya Academy Award (2014), sponsored by the Government of Madhya Pradesh, for his special contribution through the poetry Chaturmas, which highlights themes of environment and rural India as expressions of grassroots environmentalism.

श्री मोहन नागर

मध्य प्रदेश के जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष और भारत भारती शिक्षा समिति, बैतूल के सचिव श्री मोहन नागर को मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में जमीनी स्तर पर पर्यावरण संरक्षण और शैक्षिक जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए व्यापक रूप से पहचाना जाता है, जिसने जल संचयन, नदी पुनरूद्धार, स्थाई ऊर्जा और शैक्षणिक प्रेरणा को लोगों के आंदोलन में बदल दिया है। गंगावतरण अभियान, बोरी बंधन और मचना नदी पुनरूद्धार जैसी उनकी पहलें सामुदाय–संचालित पारिस्थितिक बहाली के मॉडल बन गए हैं, जिससे वह सामाजिक कार्यो और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भारत में एक अग्रणी व्यक्ति बन गए हैं।

2. 23 फरवरी, 1968 को मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले के रायपुरिया गांव में को जन्मे, श्री नागर ने विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से राजनीतिक विज्ञान में एमए की डिग्री प्राप्त की। अपने छात्र जीवन से ही वह सामाजिक और सांस्कृतिक संगठनों से जुड़े रहे और वर्ष 1991 में वह आदिवासी कल्याण के लिए समर्पित रूप से कार्य करने के लिए बैतूल चले गए। उन्होंने शिक्षा और पर्यावरण संरक्षण के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए सात आदिवासी ब्लॉकों में शिवध्वज यात्रा (शिक्षा – एजुकेशन, वन – फोरेस्ट, धरती –लेंड, जल – वाटर) शुरू की। समय के साथ, उन्होंने हजारों ग्रामीणों को अन्नपूर्णा मंडपम (पोषक तत्वों की कमी को दूर करने के लिए वर्षा जल संचयन के माध्यम से सब्जियां उगाने), जल संरक्षण के लिए जल निकायों (कंटूर ट्रेंच) के निर्माण, वृक्षारोपण अभियान चलाने और नदी उत्सव मनाने जैसी स्थाई प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

3. श्री नागर ने कई ऐतिहासिक अभियानों का नेतृत्व किया है। वर्ष 2006 में, उन्होंने शिक्षा और पर्यावरण संरक्षण संबधी क्षेत्रों में विकास को आगे बढ़ाने के लिए एक पदयात्रा आंरभ की जिसमें उन्होंने स्थानीय समुदायों को मचना नदी जलग्रहण क्षेत्र में जल महोत्सव–एक नदी उत्सव को संस्थागत बनाने के लिए प्रेरित किया – जो नदी प्रवाह को बनाए रखने, जल संरक्षण को बढ़ावा देने और वर्षा जल संचयन को बढ़ाने के लिए समर्पित है। गंगावतारण अभियान (2016–17) के तहत, सोनाघाटी पहाड़ियों में 60 एकड़ में 8,000 खाइयां खोदी गईं, जिससे जैव विविधता का संरक्षण हुआ और 32,000 देशी पेड़ लगाए गए, ताप्ती उपवन बनाए गए, और आदिवासी पहाड़ी क्षेत्रों में भूजल और हरियाली को बहाल किया गया। वर्ष 2021 में, उन्होंने 45 ग्राम पंचायतों में मचना नदी पुनरूद्धार अभियान का नेतृत्व किया, जिससे साल भर नदी में वृद्धित प्रवाह सुनिश्चित हुआ और वार्षिक मचना नदी महोत्सव को मनाने के लिए प्रेरित किया। आजादी का अमृत महोत्सव के दौरान उन्होंने सतपुड़ा इको–क्षेत्र में सामूहिक सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से 75 पहाड़ियों पर 75,000 जल संरचनाओं का निर्माण किया और सतत विकास का प्रतीक हजारों पेड़ लगाए। उन्होंने आदिवासी गांवों में सौर ऊर्जा अपनाने की सुविधा भी प्रदान की, जिसमें बाचा गांव ने एक ''सौर गांव'' के रूप में वैश्विक मान्यता प्राप्त की ।

4. श्री नागर ने स्वैच्छिक श्रम (श्रमदान) को पारंपरिक पद्धतियों के साथ एकीकृत करते हुए जैव विविधता संरक्षण के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के जमीनी स्तर के अभिनव मॉडल को व्यक्त और कार्यान्वित किया है। उनके काम को पूरे मध्य प्रदेश में अपनाया गया है, जिससे नदियों, जंगलों और पहाड़ियों के लिए एक सामूहिक जिम्मेदारी वाली संस्कृति का सृजन हुआ है। उन्होंने समुदायों को प्रशिक्षित किया है, सरकारी एजेंसियों के साथ सहयोग किया है और जल और प्रकृति का जश्न मनाने वाले त्योहारों को प्रेरित किया है।

5. श्री नागर को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्हें भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय द्वारा समर्थित राष्ट्रीय जल प्रहरी पुरस्कार (2019) और जल हीरो पुरस्कार (2020) से सम्मानित किया गया। उन्हें भूजल संरक्षण (भूगर्भ जल संरक्षण) में उनकी अग्रणी भूमिका को रेखांकित करने वाला एक राष्ट्रीय पुरस्कार, भोरव देवरास सेवा सम्मान (2024–25) भी प्रदान किया गया। उन्हें पर्यावरण और ग्रामीण भारत के विषयों को जमीनी स्तर के पर्यावरणवाद की अभिव्यक्ति के रूप में उजागर करने वाली कविता चातुर्मास के माध्यम से विशेष योगदान के लिए मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रायोजित प्रतिष्ठित दुष्यंत कुमार कृति साहित्य अकादमी पुरस्कार (2014) भी प्राप्त हुआ है।

DR. PUNNIAMURTHY NATESAN

Dr. Punniamurthy Natesan is a distinguished veterinary pharmacologist, academician, and translational scientist. He has advanced ethnoveterinary medicine in India through over four decades of teaching, research and extension work. Widely recognized for pioneering the scientific integration of India's traditional herbal knowledge with modern veterinary science, he promotes sustainable livestock healthcare facilitating One Health.

2. Born on 6^{th} March, 1957, Dr. Natesan (M.V.Sc., Ph D., Dip.SMS, FSVPT, FNSE—a doctorate gold medalist from Madras Veterinary College) has been actively associated with academics, research and field extension since 1980, serving in premier institutions including Tamil Nadu Agricultural University (TNAU), Tamil Nadu Veterinary and Animal Sciences University (TANUVAS), TDU and the National Dairy Development Board (NDDB). As a teacher of veterinary pharmacology and toxicology at undergraduate and postgraduate levels at VCRI, Namakkal, he has made significant contributions to veterinary education, research methodology training and human resource development, guiding doctoral, postgraduate and PG diploma scholars across India.

3. Since 2001, Dr. Natesan has pursued a translational research approach to scientifically assess, validate and clinically integrate ethnoveterinary herbal remedies, primarily based on traditional Siddha principles. His work has led to the development and large-scale clinical application of effective, stand-alone herbal treatment protocols for major livestock conditions including mastitis, FMD, LSD, parasitic infestations, reproductive/enteric/rumen disorders and inflammatory conditions. These interventions have enabled disease management without synthetic chemicals, contributing significantly to not only antibiotic-free milk, meat and egg production but also chemical residue free dung/urine for natural farming practices -in line with the national efforts in combating AMR and enabling nature positive food production in India.

4. Dr. Natesan founded the PG Diploma Programme in Ethno Veterinary Practices, a joint initiative by TANUVAS and FRLHT-TDU Bengaluru. He led syllabus development and helped institutionalize ethnoveterinary medicine in veterinary education. Through structured training, field demonstrations and innovative IoT-based tele-extension programs, he has skilled over 1,00,000 livestock farmers and 1,000+ veterinarians across multiple states in India and abroad —bolstering primary animal healthcare and delivering last-mile veterinary services to rural and remote communities with farm-gate level solutions especially women-farmers.

5. A nationally and internationally acknowledged expert, Dr. Natesan has served as trainer and consultant to organizations such as Department of Animal Husbandry and Dairying, NDDB, ICAR, DST, IKS, BAIF and international agencies (NLF). He has represented India in academic, training and expert missions in several countries including the Netherlands, Portugal, Ethiopia, Uganda, Canada, the United States of America, Denmark, Switzerland, Germany and South Africa and has successfully mobilized and implemented multiple state, national and international research and development projects in ethno veterinary medicine.

6. In recognition of his sustained, impactful and exemplary contributions, Dr. Natesan has received several honours, including Lifetime Achievement Awards, Fellowships of national professional societies and the Tamil Nadu State Council for Science and Technology Scientist Award. His work has made a lasting contribution to sustainable livestock production, rural livelihood security and the scientific validation and mainstreaming of India's traditional veterinary knowledge systems and helps contain AMR and ensure Natural Farming.

डॉ. पुण्यमूर्ति नटेसन

डॉ. पुण्यमूर्ति नटेसन एक प्रतिष्ठित पशु औषधविज्ञानी, शिक्षाविद और ट्रांसलेशनल वैज्ञानिक हैं। उन्होंने चार दशकों से अधिक के शिक्षण, अनुसंधान और प्रसार कार्य के माध्यम से भारत में एथनोवेटरनरी चिकित्सा को उन्नत किया। भारत के पारंपरिक औषधीय ज्ञान और आधुनिक वेटरनरी विज्ञान का वैज्ञानिक एकीकरण करने के अग्रणी डॉ. नटेसन ने वन हेल्थ को सुकर बनाने वाले स्थायी पशुधन स्वास्थ्य देखभाल को बढ़ावा दिया।

2. 6 मार्च, 1957 को जन्मे, डॉ. नटेसन (एम.वी.एससी., पीएचडी, डिप.एसएमएस, एफएसवीपीटी, एफएनएसई–मद्रास वेटरनरी कॉलेज से डॉक्टरेट स्वर्ण पदक विजेता) –तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय (टीएनएयू), तमिलनाडु पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (टीएएनयूवीएस), टीडीयू और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) सहित प्रमुख संस्थानों में सेवारत, वर्ष 1980 से सक्रिय रूप से अकादमियों, अनुसंधान और क्षेत्र विस्तार से जुड़े हुए हैं। वीसीआरआई, नमक्कल में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर पशु चिकित्सा भेषज विज्ञान और विष विज्ञान के शिक्षक के रूप में, उन्होंने सम्पूर्ण भारत में डॉक्टरेट, स्नातकोत्तर और पीजी डिप्लोमा विद्वानों का मार्गदर्शन करते हुए पशु चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान कार्यप्रणाली प्रशिक्षण और मानव संसाधन विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

3. वर्ष 2001 से, डॉ. नटेसन ने मुख्य रूप से पारंपरिक सिद्ध सिद्धांतों पर आधारित एथनोवेटरनरी हर्बल उपचारों का वैज्ञानिक रूप से मूल्यांकन, सत्यापन और चिकित्सकीय रूप से एकीकृत करने के लिए एक ट्रांसलेशनल अनुसंधान दृष्टिकोण अपनाया। उनके काम ने मास्टिटिस, एफएमडी, एलएसडी, पैरासिटिक इंफेसटेशन, रीप्रोडक्टिव /एंट्रिक / रुमेन डिसॉर्डर और इन्फ्लैमेटरी स्थितियों सहित प्रमुख पशुधन समस्याओं के लिए प्रभावी, स्टैंड–अलोन हर्बल उपचार प्रोटोकॉल के विकास और बड़े पैमाने पर क्लीनिकल अनुप्रयोग को बढ़ावा दिया है। इन प्रयासों ने सिंथेटिक रसायनों के बिना रोग प्रबंधन को सक्षम बनाया, जिससे न केवल एंटीबायोटिक–मुक्त दूध, मांस और अंडे के उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान मिला, बल्कि प्राकृतिक कृषि प्रक्रियाओं के लिए रासायनिक अवशेष मुक्त गोबर/मूत्र भी शामिल है – जो एएमआर से निपटने और भारत में प्रकृति हितैषी खाद्य उत्पादन को सक्षम करने के राष्ट्रीय प्रयासों के अनुरूप है।

4. डॉ. नटेसन ने एथनो वेटरनरी प्रैक्टिसेज में पीजी डिप्लोमा प्रोग्राम की शुरुआत की, जो टीएएनयूवीएएस और एफआरएलएचटी–टीडीयू बेंगलुरु की एक संयुक्त पहल है। उन्होंने पाठ्यक्रम में विकास किया और पशु चिकित्सा शिक्षा में एथनोवेटरनरी चिकित्सा को संस्थागत बनाने में सहायता की। संरचित प्रशिक्षण, क्षेत्र प्रदर्शन और नवाचारी आईओटी –आधारित टेली–एक्सटेंशन कार्यक्रमों के माध्यम से, उन्होंने भारत और विदेशों में कई राज्यों में 100,000 से अधिक पशुपालकों और 1,000 से अधिक पशु चिकित्सकों को कुशल बनाया जिससे प्राथमिक पशु स्वास्थ्य देखभाल को बढ़ावा मिला और फार्म–गेट स्तर के समाधानों के साथ ग्रामीण और सुदूर समुदायों, विशेषकर महिला–किसानों को अंतिम चरण तक पशु चिकित्सा सेवाएं प्रदान की गईं।

5. राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त विशेषज्ञ, डॉ. नटेसन ने पशुपालन और डेयरी विभाग, एनडीडीबी, आईसीएआर, डीएसटी, आईकेएस, बीएआईएफ और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों (एनएलएफ) जैसे संगठनों में प्रशिक्षक और परामर्शदाता के रूप में कार्य किया। उन्होंने नीदरलैंड, पुर्तगाल, इथियोपिया, युगांडा, कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका, डेनमार्क, स्विट्जरलैंड, जर्मनी और दक्षिण अफ्रीका सहित कई देशों में शैक्षणिक, प्रशिक्षण और विशेषज्ञ मिशनों में भारत का प्रतिनिधित्व किया और एथनोवेटरनरी में कई राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान और विकास परियोजनाओं को सफलतापूर्वक संगठित और कार्यान्वित किया।

6. उनके निरंतर, प्रभावशाली और अनुकरणीय योगदान के लिए, डॉ. नटेसन को लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार, फैलोशिप्स ऑफ नेशनल प्रोफेशनल सोसाइटीज और तमिलनाडु स्टेट काउंसिल फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी साइंटिस्ट अवार्ड जैसे कई सम्मान प्राप्त हुए। उन्होनें स्थायी पशुधन उत्पादन, ग्रामीण आजीविका सुरक्षा और भारत की पारंपरिक पशु चिकित्सा ज्ञान प्रणालियों की वैज्ञानिक मान्यता और इसे मुख्यधारा में शामिल करने में योगदान दिया तथा एएमआर को नियंत्रित करने और प्राकृतिक खेती सुनिश्चित करने में सहायता की।

SHRI SARAT KUMAR PATRA

Shri Sarat Kumar Patra is an eminent handloom craftsman, who is widely known for his contribution Ikat weaving.

2. Born on 5^{th} June, 1965 in a traditional Weaver family of Nuapatana village (Tigiria) of Cuttack district, famous for its Ikat fabrics, Shri Patra has no formal education, but learned the art of Ikat weaving and fabric ornamentation from his father, a renowned weaver. To keep the rich Ikat tradition alive, he created a monumental "Dash-Avatar" Ikat wall hanging measuring 8' x 8'. This unique work depicts all ten incarnations of Lord Keshab arranged in a circular form, along with relevant SLOKAS (verses) from Jayadev's Gitagobinda. The balance of design, intricate detailing, and flawless Ikat calligraphy make it an exceptional example of handloom craftsmanship and a landmark contribution to Ikat weaving. The prestigious Calico Museum of Ahmedabad has collected and showcased this rare Ikat artwork. Another extraordinary creation by him is the Gitagobinda Pata, which contains all the verses of the epic poem spread across 12 *SARGAS* (cantos) and nearly 900 lines. The fabric is about 52 meters long and 31 inches wide, entirely woven using natural dyes to preserve its spiritual purity. This masterpiece took nearly seven years of continuous effort and is considered one of the most labour-intensive individual handloom works ever created.

3. Shri Patra also created a large Ikat panel (27' x 4'6") depicting Sri Radha and Krishna, inspired by the famous Gitagobinda verse "Smara Garala Khandanam". Another rare creation, "Kandarpadala Rath ", shows Lord Krishna in a chariot surrounded by 18 Gopis in different postures, a unique achievement in Ikat art. He has woven Gitagobinda Khandua Pata for the deities of the Jagannath Temple, Pun. He designed silk Ikat Angavastras for the Rashtriya Lalit Kala Kendra during the National Art Fairs of 1996 and 1997. His "Shiva Stuti Saree" was selected by the Government of Denmark for their collection "The Sarees of India" and Handloom and Handicraft Museum (Kala Bhumi), Odisha.

4. Shri Patra's Konark textile using extra-weft technique is another remarkable work. He successfully developed nearly 50 shades using natural dyes. His efforts in creating human figures and calligraphic art based on some famous literary arts. His preservation of 200-year-old Ikat samples is also a valuable contribution to textile heritage. He has trained many weavers, contributing significantly to their socio-economic development and inspiring younger generations to pursue Ikat weaving. Two of his disciples have received National and State Awards. Four of his Ikat artworks were exhibited at the international exhibition "World Ikat Textiles" at the Brunei Gallery, London (2016). He has also represented Indian weavers at international trade events in Kuala Lumpur (Malaysia) and Yangon (Myanmar).

5. Shri Patra received the National Award (1993) and the Sant Kabir Award (2015) from the Development Commissioner for Handlooms, Ministry of Textiles, Government of India.

श्री सरत कुमार पात्र

श्री सरत कुमार पात्र एक प्रसिद्ध हथकरघा शिल्पकार हैं, जो इकत बुनाई में अपने योगदान के लिए व्यापक रूप से जाने जाते हैं।

2. 5 जून, 1965 को कटक जिले के नुआपताना गांव (तिगिरिया) के एक पारंपरिक बुनकर परिवार में जन्मे, श्री पात्र, जो अपने इकत वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध है, ने कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की, लेकिन इकत बुनाई और वस्त्र अलंकरण की कला अपने पिता से सीखी, जो एक प्रसिद्ध बुनकर थे। समृद्ध इकत परंपरा को जीवित रखने के लिए, उन्होंने 8'x 8' फीट आकार की एक विशाल ''दश–अवतार'' इकत दीवार पर टांगने वाली कलाकृति बनाई। इस अनूठी कृति में भगवान केशव के सभी दस अवतारों को एक वृत्ताकार रूप में चित्रित किया गया है, साथ ही जयदेव के गीतागोबिन्द से संबंधित श्लोकों को भी इसमें दर्शाया गया है। डिजाइन का संतुलन, जटिल विवरण और त्रुटिहीन इकत कारीगिरी इसे हथकरघा शिल्प कौशल का एक असाधारण उदाहरण और इकत बुनाई में एक महत्वपूर्ण योगदान बनाते हैं। अहमदाबाद के प्रतिष्ठित कैलिको संग्रहालय ने इस दुर्लभ इकत कलाकृति को संग्रहित और प्रदर्शित किया है। उनकी एक और असाधारण रचना गीतागोबिन्द पाटा है, जिसमें महाकाव्य के सभी श्लोक 12 सर्गों (सर्गों) में वर्णित लगभग 900 पंक्तिया समाहित हैं। यह कपड़ा लगभग 52 मीटर लंबा और 31 इंच चौड़ा है, जिसे इसकी आध्यात्मिक शुद्धता को बनाए रखने के लिए पूरी तरह से प्राकृतिक रंगों से बुना गया है। इस उत्कृष्ट कृति को बनाने में लगभग सात वर्षों का निरंतर प्रयास लगा और इसे अब तक सृजित सबसे अधिक श्रमसाध्य व्यक्तिगत हथकरघा कृतियों में से एक माना जाता है।

3. श्री पात्र ने गीता गोबिन्द के प्रसिद्ध श्लोक ''स्मारा गराला खंडानम'' से प्रेरित होकर श्री राधा और कृष्ण को दर्शाने वाला एक विशाल इकत पैनल (27'x 4'6'') भी बनाया। उनकी एक और दुर्लभ कृति, ''कंदर्पदला रथ'', में भगवान कृष्ण को रथ पर विराजमान दिखाया गया है, जो विभिन्न मुद्राओं में 18 गोपियों से घिरे हुए हैं, यह इकत कला में एक अनूठी उपलब्धि है। उन्होंने पुणे के जगन्नाथ मंदिर के देवताओं के लिए गीतागोबिन्द खंडुआ पाटा बुना है। उन्होंने वर्ष 1996 और 1997 के राष्ट्रीय कला मेलों के दौरान राष्ट्रीय ललित कला केंद्र के लिए रेशमी इकत अंगवस्त्र डिजाइन किए। उनकी ''शिव स्तुति साड़ी'' को डेनमार्क सरकार ने अपने संग्रह ''द सारीज ऑफ इंडिया'' और ओडिशा के हथकरघा एवं हस्तशिल्प संग्रहालय (कला भूमि) के लिए चुना गया।

4. श्री पात्र द्वारा अतिरिक्त–बाना तकनीक से बुने गए कोणार्क वस्त्र एक और उल्लेखनीय कृति हैं। उन्होंने प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके लगभग 50 शेड्स सफलतापूर्वक बनाई है। उन्होंने कुछ प्रसिद्ध साहित्यिक कलाओं पर आधारित मानव आकृतियों और लेखन कला को सृजित किया है। 200 वर्ष पुराने इकत नमूनों का उनके द्वारा संरक्षण भी वस्त्र विरासत में एक महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने कई बुनकरों को प्रशिक्षित किया है, जिससे उनके सामाजिक–आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान मिला है और युवा पीढ़ी को इकत बुनाई अपनाने के लिए प्रेरित किया है। उनके दो शिष्यों को राष्ट्रीय और राज्य पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उनकी चार इकत कलाकृतियों को ब्रुनेई गैलरी, लंदन (2016) में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी ''वर्ल्ड इकत टेक्सटाइल्स'' में प्रदर्शित किया गया था। उन्होंने कुआलालंपुर (मलेशिया) और यांगून (म्यांमार) में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कार्यक्रमों में भारतीय बुनकरों का प्रतिनिधित्व भी किया है।

5. श्री पात्र को भारत सरकार, वस्त्र मंत्रालय के हथकरघा विकास आयुक्त द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार (1993) और संत कबीर पुरस्कार (2015) से सम्मानित किया गया।

SHRI SIMANCHAL PATRA

Shri Simanchal Patra is a legendary name in the world of folk theatre. He is recognised and honoured in the art world as the “Vishma Pitamaha” of Prahallad Natak one of the famous folk theatres of India known for its lively music, dramatic narratives, and strong characters - spectacular form that combines dance, music, dialogue, and elaborate costumes to narrate stories from the epic Mahabharata. His contribution for the growth of this famous musical and masked folk theatre is irreplaceable.

2. Born on 7th July, 1927, Shri Patra, hails from a poor rural family and as per family tradition and culture, he is inclined to Vaishnavism (Narasingha Upasana) from his childhood. He inherited this ideology from his father, who also was an artist cum guru of Prahalad Natak. Not only that he is also named “Simanchal” after the famous Narasingha Temple at Simanchalam in A.P.

3. Shri Patra from the age of 7, learnt Sakhi Nata (said to be the precursor of classical Odissi Dance where male boys act as female Sakhi) from guru Shri Narasingha Pradhan of Palur. Seeing his versatility, as a child prodigy in acting and in music, his father started teaching the role of Prahalad and the Sutradhar- the main singer director. Later for next twenty years he was trained and acted under the tutelage of legendary Gurus of Prahalad Natak Shri Lakshan Satpathy and Shri Trinath Pradhan. He learnt various style, acting, dance posture and dialogue delivery of demon King Hiranya Kashyap - the lead role in the play. He also learnt different Raga, Rasha, songs and music for what the play is famous for. During this working out he performed may plays in different roles, all over the district and earned fame as Raja.

4. Shri Patra not only earned name as a veteran artist but also as one of the devoted disciples of Prahalad Natak. He committed himself for its promotion and sustainability. He inspired the younger generation to join in large number to learn Prahalad Natak. For this he established many Akhadas at various places of the district and gave months together training to the youth mass. Many of his students have now become prominent Gurus of Prahalad Nata. Even at this old age of 98, he works for the art form because of his deep love for the promotion Prahalad Natak.

5. Shri Patra's contribution to Prahalad Natak has been regarded, respected and awarded with many awards. In the year 1990, the President of India honoured him with prestigious Kendriya Sangeet Natak Academy Award. In the year 1997 Govt. of Odisha awarded him the Odisha Sangeet Natak Academy Samman. In 2024 famous Odissi Dancer Padma Shree Awardee Aruna Mahanty's Odisha Dance Academy honoured him with the prestigious Sri Guru Gangadhar Memorial Award in Dhauli Kalinga Mahotsav. Besides, he has been honoured with many local and regional shamans and recitations and awards.

श्री सीमांचल पात्र

श्री सीमांचल पात्र लोक रंगमंच की दुनिया की एक प्रसिद्ध हस्ती हैं। उन्हें कला जगत में भारत के एक प्रसिद्ध लोक रंगमंच 'प्रह्लाद नाटक' के "भीष्म पितामह" के रूप में जाना और सम्मानित किया जाता है। यह नाटक अपने जीवंत संगीत, नाटकीय कथ्यों और सशक्त पात्रों के लिए जाना जाता है। यह एक ऐसी शानदार विधा है जो महाभारत महाकाव्य की कथाएं सुनाने के लिए नृत्य, संगीत, संवाद और विस्तृत वेशभूषा को एक सूत्र में पिरोती है। इस प्रसिद्ध संगीतमय और मुखौटा युक्त लोक रंगमंच के विकास में उनका योगदान अद्वितीय है।

2. 7 जुलाई, 1927 को जन्मे, श्री पात्र एक गरीब ग्रामीण परिवार से हैं तथा पारिवारिक परंपरा और संस्कृति के अनुसार, वह बचपन से ही वैष्णव पंथ (नरसिंह उपासना) के उपासक हैं। उन्हें यह सुरुचि अपने पिता से विरासत में मिली, जो स्वयं प्रह्लाद नाटक के एक कलाकार और गुरु थे। इतना ही नहीं, उनका नाम "सीमांचल" भी आंध्र प्रदेश के सीमांचलम में प्रसिद्ध नरसिंह मंदिर के नाम पर रखा गया।

3. श्री पात्र ने 7 साल की आयु से पालूर के गुरु श्री नरसिंह प्रधान से 'सखी नट' सीखा (जिसे शास्त्रीय ओडिसी नृत्य का अग्रदूत कहा जाता है, जहां लड़के 'सखी' के रूप में महिला की भूमिका निभाते हैं)। उनकी बहुमुखी प्रतिभा को देखते हुए, एक बाल कलाकार के रूप में अभिनय और संगीत में उनकी निपुणता के कारण, उनके पिता ने उन्हें प्रह्लाद और सूत्रधार– मुख्य गायक निर्देशक की भूमिका सिखाना शुरू कर दिया। बाद के बीस वर्षों तक उन्हें प्रह्लाद नाटक के दिग्गज गुरुओं – श्री लक्षण सत्पथी और श्री त्रिनाथ प्रधान के संरक्षण में प्रशिक्षित किया गया और उन्होंने अभिनय किया। उन्होंने नाटक की प्रमुख विभिन्न शैलियों, अभिनय, नृत्य मुद्राओं और राक्षस राजा हिरण्य कश्यप के संवाद बोलने के तरीके को सीखा। उन्होंने विभिन्न राग, रस, गीत और संगीत को भी सीखा जिसके लिए यह नाटक प्रसिद्ध है। यह कार्य करने के दौरान उन्होंने सम्पूर्ण जिले में अलग–अलग भूमिकाओं में कई नाटक किए और राजा के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की।

4. श्री पात्र ने न केवल एक अनुभवी कलाकार के रूप में ख्याति अर्जित की बल्कि वह प्रह्लाद नाटक के समर्पित शिष्यों में से एक के रूप में भी जाने गए। वे इसके प्रचार और निरंतरता के लिए प्रतिबद्ध थे। उन्होंने युवा पीढ़ी को बड़ी संख्या में प्रह्लाद नाटक सीखने के लिए प्रेरित किया। इसके लिए उन्होंने जिले के विभिन्न स्थानों पर कई अखाड़ों की स्थापना की और महीनों तक युवाओं को प्रशिक्षण दिया। उनके कई शिष्य अब प्रह्लाद नाटक के प्रमुख गुरु बन गए हैं। 98 साल की आयु में भी, प्रह्लाद नाटक के प्रति अपने असीम प्रेम के कारण, वह इस कला रूप के प्रचार–प्रसार के लिए कार्य करते हैं।

5. प्रह्लाद नाटक में श्री पात्र के योगदान को अत्यधिक सम्मान दिया गया और उन्हें कई पुरस्कारों से विभूषित किया गया। वर्ष 1990 में, भारत के राष्ट्रपति ने उन्हें प्रतिष्ठित केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया। वर्ष 1997 में ओडिशा सरकार ने उन्हें ओडिशा संगीत नाटक अकादमी सम्मान से सम्मानित किया। वर्ष 2024 में प्रसिद्ध ओडिसी नृत्यांगना पद्म श्री पुरस्कार विजेता अरुणा महंती की ओडिशा नृत्य अकादमी ने उन्हें धौली कलिंग महोत्सव में प्रतिष्ठित श्री गुरु गंगाधर स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त, उन्हें कई स्थानीय और क्षेत्रीय सम्मान तथा सराहना और पुरस्कार प्रदान किए गए हैं।

GURU SANGYUSANG PONGENER

Guru Sangyusang Pongener is the co-founder of Naga Wadir Welfare Cultural club. He is serving as General Secretary since its inception fostering cultural preservation through folk dance, music and community events. He is widely recognised for his exceptional achievements and innovative contribution to Ao–Naga folk arts.

2. Born on 23rd March, 1945, Guru Pongener completed his high school living certificate from Nagaland Board of School Education and higher secondary school living certificate from Guwahati University. He acquired mastery in indigenous folk traditions through community involvement and mentorship. His vast experience complemented his rich traditional knowledge, enabling him to bridge oral cultural heritage with structured pedagogy

3. Guru Pongener has extensively enriched Ao-Naga cultural heritage for over six decades. As the founder and General Secretary of the Naga Wadir Cultural Club, his leadership has trained over two thousands of youth artists and mentored over 100 apprentices. His original folk compositions are performed across local, National and international Platforms. His mentorship under KALA-DEEKSHA program has trained numerous students ensuring the preservation of Ao–Naga traditions by individuals and culture organizations.

4. Guru Pongener is a recipient of numerous awards and honours. He received Sangeeet Natak Akademi National Award from the Government of India in 2002, received Guru title from NEZCC in collaboration with IGNOU, New Delhi in 2012, Governor's Award from the Government of Nagaland in 2017 and mentoring Shishyas under KALA-DEEKSHA Program under the Ministry of Culture, Government of India since 2024.

गुरु सँग्युसँग पोंगनर

गुरु सँग्युसँग पोंगनर नागा वाडिर वेलफेयर कल्चरल क्लब के सह–संस्थापक हैं। वह इसकी स्थापना के बाद से लोक नृत्य, संगीत और सामुदायिक कार्यक्रमों के माध्यम से सांस्कृतिक संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए महासचिव के रूप में कार्यरत हैं। इन्हें इनकी असाधारण उपलब्धियों और एओ–नागा लोक कलाओं में अभिनव योगदान के फलस्वरूप व्यापक प्रसिद्धि मिली है।

2. 23 मार्च, 1945 को जन्मे, गुरु पोंगनर ने नागालैंड बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन से हाई स्कूल लिविंग सर्टिफिकेट और गुवाहाटी विश्वविद्यालय से उच्च माध्यमिक स्कूल लिविंग सर्टिफिकेट की शिक्षा पूरी की। वह सामुदायिक भागीदारी और मार्गदर्शन के माध्यम से स्वदेशी लोक परंपराओं में पारंगत हुए। इनके विशद अनुभव ने उनके समृद्ध पारंपरिक ज्ञान को और समृद्ध बनाया, जिससे इन्हें मौखिक सांस्कृतिक विरासत को व्यवस्थित शिक्षाशास्त्र के साथ जोड़ने में सहायता मिली।

3. गुरु पोंगनर ने छह दशकों से अधिक समय तक एओ–नागा सांस्कृतिक विरासत को व्यापक रूप से समृद्ध किया है। नागा वाडिर कल्चरल क्लब के संस्थापक और महासचिव के रूप में, इनके नेतृत्व में दो हजार से अधिक युवा कलाकारों को प्रशिक्षण प्राप्त हुआ है और 100 से अधिक प्रशिक्षुओं को मार्गदर्शन मिला है। इनकी मूल लोक रचनाओं का स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर मंचन किया जाता है। कला–दीक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत इनके मार्गदर्शन में एकल रूप से व्यक्तियों द्वारा और सांस्कृतिक संगठनों द्वारा एओ–नागा परंपराओं का संरक्षण का कार्य सुनिश्चित करते हुए कई छात्रों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया है।

4. गुरु पोंगनर को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। इन्हें वर्ष 2002 में भारत सरकार से संगीत नाटक अकादमी राष्ट्रीय पुरस्कार मिला, वर्ष 2012 में इग्नू, नई दिल्ली के सहयोग से एनईजेडसीसी से गुरु उपाधि मिली, वर्ष 2017 में नागालैंड सरकार से राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त हुआ और वर्ष 2024 से भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत कला–दीक्षा कार्यक्रम के अधीन शिष्यों का मार्गदर्शन किया।

SHRI GADDE BABU RAJENDRA PRASAD

Shri Gadde Babu Rajendra Prasad is a famous Telugu film actor.

2. Born on 15th April, 1955, in Patamata Lanka, Krishna district, Andhra Pradesh, to a dedicated schoolteacher father in an agricultural family, Shri Gadde Babu grew up grounded in humanity and learning. With a first-class degree in Ceramic Engineering behind him, he could have chosen a steady job, but instead followed his heart to a Chennai Film Institute. There, he clinched a Gold Medal for acting and mime, deciding early on to dive into comedy, not for glamour, but to lift the weight off everyday folks' shoulders, making every rupee spent in the theatre worthwhile.

3. For over four decades, starting with his debut in 1977, Shri Gadde Babu graced more than 286 films across six languages, even stepping into international waters. His genius lies in that special touch, versatile roles in family stories, social messages, and comedy that hit home, blended with skills like mime, mimicry, playing the harmonium or sitar, singing playback tracks that went gold, and even composing. He showed how modest films could leave lasting marks, bagging eight Nandi Awards from the Andhra Pradesh government, a national honour, acclaim at Canada's International Film Festival, and the cherished "Nata Kireeti" title from poet Dr. C. Narayana Reddy. At just 43, Andhra University awarded him the Kala Prapoorna doctorate, the youngest ever, and he's shared his wisdom, mentoring young talent while representing Indian cinema worldwide, from the US and UK to Asia, Europe, and beyond. He was elected as President Movie Artists Association in 2015 by a landslide, his influence runs deep.

4. Off-screen, Shri Gadde Babu is the real deal, humble, hardworking, true to his middle-class beginnings without any godfathers in the industry. He gives back quietly: school fees for poor kids, groceries to orphanages, time with Lions and Rotary Clubs, support for Mother Teresa causes, pushing yoga for better health, championing girl child protection and women's strength. He has donated a guest house in Tirumala, called Rajendra Prasaadam. Through his Nata Kala Vedika, he nurtures theatre hopefuls with Telugu poetry plays, and he's always there for flood or cyclone victims.

5. Shri Gadde Babu Sparks laughter that crosses ages, from kids to grandmas, easing stresses for ordinary people. In today's rush, his clips still bring that rare and healing smile.

श्री गद्दे बाबू राजेंद्र प्रसाद

श्री गद्दे बाबू राजेंद्र प्रसाद प्रसिद्ध तेलगू फिल्म अभिनेता हैं।

2. 15 अप्रैल, 1955 को आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के पाटमटा लंका में एक कृषक–परिवार में जन्मे, श्री गद्दे बाबू के पिता एक निष्ठावान स्कूल शिक्षक थे। उनको बचपन से ही मानवता और शिक्षा के संस्कार मिले। सिरेमिक इंजीनियरिंग में प्रथम श्रेणी की डिग्री हासिल करने के बाद वह चाहते तो आरामदायक नौकरी चुन सकते थे, लेकिन उन्होंने अपने दिल की सुनी और चेन्नै फिल्म इंस्टीट्यूट का रुख किया। वहाँ उन्होंने अभिनय और माइम में स्वर्ण पदक जीता। शुरू से ही उन्होंने तय कर लिया कि वह हास्य कलाकार की राह अपनाएँगे चमक–दमक के लिए नहीं, बल्कि आम लोगों के रोजमर्रा के जीवन का बोझ कुछ पल के लिए हल्का करने के लिए, ताकि दर्शकों को थिएटर में खर्च किए गए प्रत्येक रुपये का फायदा मिले।

3. वर्ष 1977 में अपने फिल्मी सफर की शुरुआत करने वाले श्री गद्दे बाबू ने चार दशकों से भी अधिक समय में छह भाषाओं की 286 से ज्यादा फिल्मों में अभिनय किया, यहाँ तक अंतरराष्ट्रीय सिनेमा में भी अपनी पहचान बनाई। उनकी प्रतिभा का जादू उस अनोखे स्पर्श में झलकता है, जहाँ पारिवारिक कथाओं, सामाजिक संदेशों और दिल को छू लेने वाली हास्य भूमिकाओं में उनकी बहुमुखी अदाकारी दिखाई देती है। इसके साथ ही माइम और मिमिक्री की कला, हारमोनियम और सितार वादन, गोल्ड हिट बने पार्श्व गीतों की गायकी और संगीत रचना जैसी कई प्रतिभाएँ भी उनके व्यक्तित्व का हिस्सा हैं। उन्होंने यह साबित किया कि साधारण या छोटे बजट की फिल्में भी दर्शकों के दिलों पर स्थायी छाप छोड़ सकती हैं। इसी योगदान के लिए उन्हें आंध्र प्रदेश सरकार के आठ नंदी पुरस्कार, एक राष्ट्रीय सम्मान, कनाडा के इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में प्रशंसा और प्रख्यात कवि डॉ. सी. नारायण रेड्डी से "नट किरीटी" की सम्मानित उपाधि मिली। सिर्फ 43 वर्ष की आयु में आंध्र विश्वविद्यालय ने उन्हें "कला प्रपूरणा" की मानद डॉक्टरेट से सम्मानित किया, यह उपलब्धि हासिल करने वाले वे सबसे कम उम्र के व्यक्ति बने। उन्होंने अपने अनुभवों से नई पीढ़ी के कलाकारों को मार्गदर्शन दिया और अमेरिका, ब्रिटेन, एशिया, यूरोप सहित दुनिया भर में भारतीय सिनेमा का प्रतिनिधित्व किया। वर्ष 2015 में वे भारी मतों से मूवी आर्टिस्ट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष चुने गए, जो उनके गहरे प्रभाव का प्रमाण है।

4. पर्दे के पीछे नम्र, मेहनती और बिना किसी फिल्मी गॉडफादर के अपने मध्यवर्गीय संस्कारों से जुड़े हुए श्री गद्दे बाबू, वास्तव में एक सच्चे इंसान हैं । वे चुपचाप लोगों की सहायता करते हैं: गरीब बच्चों की स्कूल फीस भरना, अनाथालयों को राशन देना, लायंस और रोटरी क्लबों के साथ समय बिताना, मदर टेरेसा से जुड़े कार्यों में सहयोग करना, बेहतर स्वास्थ्य के लिए योग को बढ़ावा देना, बालिकाओं की सुरक्षा और महिलाओं की शक्ति के पक्ष में आवाज उठाना। उन्होंने तिरुमला में "राजेन्द्र प्रसादम" नाम का एक अतिथि–गृह भी दान किया है। अपनी संस्था "नट कला वेदिका" के माध्यम से वे तेलुगु काव्य–नाटकों द्वारा थिएटर के उभरते कलाकारों को प्रोत्साहित करते हैं और बाढ़ या चक्रवात जैसी आपदाओं के समय भी वे हमेशा पीड़ितों के साथ खड़े रहते हैं।

5. श्री गद्दे बाबू ऐसा हास्य बिखेरते हैं जो बच्चों से लेकर दादियों तक सबके होठों पर हंसी ले आता है और आम लोगों के तनाव को हल्का कर देता है। आज की भागदौड़ वाली जिंदगी में भी उनके क्लिप्स देखते ही चेहरे पर वही खास और सुकून देने वाली मुस्कान आ जाती है।

MS. SAVITA PUNIA

Ms. Savita Punia the former captain and the current goalkeeper of the Indian Women's National Field Hockey Team is one of India's most acclaimed sports personalities. With an unprecedented 308 international caps, she is the first Indian woman goalkeeper to achieve this extraordinary milestone, exemplifying enduring resilience, skill, and commitment.

2. Born on 11th July, 1990, Ms. Savita's pivotal role in Indian hockey was prominently highlighted during the Rio Olympics qualification in 2016, where her remarkable performance in penalty shootouts against Italy secured India's first women's hockey Olympic qualification in 36 years. Her exemplary goalkeeping was instrumental in achieving this historic milestone.

Further cementing her legacy, she delivered another groundbreaking performance at the Tokyo Olympics 2020. Her crucial saves propelled India to a first-ever Olympic semi-final berth, establishing a new benchmark in Indian women's hockey and earning her the revered title "The Great Wall" from the Australian High Commissioner.

3. As captain from 2021 to 2024, Ms. Savita elevated the team's international competitiveness. Under her leadership, India achieved significant milestones, including medals at major international tournaments such as the Bronze Medal at the 2022 Asian Games, a Bronze Medal at the 2022 Commonwealth Games-ending a 16-year podium drought-and a landmark Gold Medal at the FIH Nations Cup 2022. This victory led India to qualify for the elite FIH Pro League 2023-24, firmly establishing the team's global stature.

4. Beyond Ms. Savita's stellar on-field achievements, she is deeply committed to social change, particularly in her home state of Haryana. As Brand Ambassador for the 'Beti Bachao, Beti Padhao' campaign in Sirsa district, she tirelessly advocates for girls' education, gender equality and youth empowerment. Her active engagement includes motivational speeches, mentorship programmes and distribution of sporting equipment, significantly boosting girls' participation in education and sports, and altering traditional perceptions about gender roles. Her journey, from humble rural beginnings to international prominence, continues to inspire countless aspiring athletes, especially young girls, to pursue their dreams irrespective of societal barriers.

5. Ms. Savita's sustained excellence is also marked by her recognition as the FIH Goalkeeper of the Year award winner for three consecutive seasons (2020-21, 2021-22, 2022-23), an unparalleled feat in Indian hockey history. Domestically, she has been repeatedly honoured by Hockey India, receiving both the Player of the Year and Goalkeeper of the Year awards multiple times. Her exemplary service and sporting achievements earned her one of India's highest sporting accolades-the prestigious Arjuna Award-in 2018.

सुश्री सविता पूनिया

भारतीय महिला राष्ट्रीय फील्ड हॉकी टीम की पूर्व कप्तान और वर्तमान गोलकीपर, सुश्री सविता पूनिया भारत की सबसे प्रशंसित खेल हस्तियों में से एक हैं। 308 अंतरराष्ट्रीय मैचों (कैप्स) के अभूतपूर्व आंकड़े के साथ, वह इस असाधारण उपलब्धि को हासिल करने वाली पहली भारतीय महिला गोलकीपर हैं, जो उनकी अटूट दृढ़ता, कौशल और समर्पण का उत्कृष्ट उदाहरण है।

2. 11 जुलाई 1990 को जन्मी, सुश्री सविता की भारतीय हॉकी में निर्णायक भूमिका वर्ष 2016 के रियो ओलंपिक क्वालीफिकेशन के दौरान उजागर हुई, जब इटली के खिलाफ पेनल्टी शूटआउट में उनके अद्भुत प्रदर्शन से भारत 36 वर्षों बाद पहली बार महिला हॉकी में ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने में सफल रहा। उनकी उत्कृष्ट गोलकीपिंग इस ऐतिहासिक उपलब्धि को हासिल करने में निर्णायक सिद्ध हुई। अपनी उपलब्धियों को और सुदृढ करते हुए, उन्होंने टोक्यो ओलंपिक 2020 में एक और शानदार प्रदर्शन किया। उनके निर्णायक गोलकीपिंग कौशल ने भारत को पहली बार महिला हॉकी में ओलंपिक सेमीफाइनल में पहुँचाने में निर्णायक भूमिका निभाई, भारतीय महिला हॉकी के लिए नया कीर्तिमान स्थापित किया और उन्हें ऑस्ट्रेलियाई उच्चायुक्त द्वारा सम्मानपूर्वक ''द ग्रेट वॉल'' की उपाधि प्रदान की गई।

3. वर्ष 2021 से 2024 तक कप्तान के रूप में, सुश्री सविता ने टीम की अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को एक नई ऊंचाई तक पहुंचाया। उनके नेतृत्व में, भारत ने महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल कीं, जिनमें प्रमुख अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों में पदक, जैसे वर्ष 2022 एशियाई खेलों में कांस्य पदक, वर्ष 2022 राष्ट्रमंडल खेलों में कांस्य पदक (पदकों के 16 वर्ष के सूखे को समाप्त करते हुए) और एफआईएच नेशंस कप 2022 में ऐतिहासिक स्वर्ण पदक शामिल हैं। इस जीत से भारत प्रतिष्ठित एफआईएच प्रो लीग वर्ष 2023–24 के लिए क्वालीफाई कर पाया, जिससे टीम की वैश्विक स्थिति सुदृढ़ हुई।

4. ऑन–फील्ड उत्कृष्ट उपलब्धियों से आगे बढ़कर, सुश्री सविता सामाजिक परिवर्तन के प्रति भी गहन रूप से प्रतिबद्ध हैं, विशेष रूप से अपने गृह राज्य हरियाणा में। सिरसा जिले में ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'' अभियान की ब्रांड एंबेसडर के रूप में, वह लड़कियों की शिक्षा, लैंगिक समानता और युवा सशक्तिकरण के लिए अथक प्रयास कर रही हैं। उनके सक्रिय योगदान में प्रेरक भाषण, मेंटरशिप कार्यक्रम और खेल उपकरण वितरण गतिविधि शामिल हैं, जिसने शिक्षा और खेल में लड़कियों की भागीदारी को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाया और पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं के प्रति दृष्टिकोण को बदलने में मदद की। साधारण ग्रामीण पृष्ठभूमि से लेकर अंतरराष्ट्रीय ख्याति तक उनका यह सफर अनगिनत युवा खिलाड़ियों, विशेष रूप से लड़कियों को सामाजिक बाधाओं से परे अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करता है।

5. सुश्री सविता की लगातार उत्कृष्टता उनकी इस पहचान से भी झलकती है कि उन्हें तीन लगातार सत्रों (2020–21, 2021–22, 2022–23) के लिए एफआईएच गोलकीपर ऑफ द ईयर पुरस्कार दिया गया है, जो भारतीय हॉकी के इतिहास में एक बेमिसाल उपलब्धि है। घरेलू स्तर पर, उन्हें हॉकी इंडिया द्वारा बार–बार सम्मानित किया गया है, जिसमें उन्हें कई बार प्लेयर ऑफ द ईयर और गोलकीपर ऑफ द ईयर के पुरस्कार प्राप्त हुए। उनकी उत्कृष्ट सेवा और खेल उपलब्धियों के लिए उन्हें वर्ष 2018 में भारत के सबसे प्रतिष्ठित खेल सम्मान, अर्जुन पुरस्कार, से सम्मानित किया गया।

SHRI KABINDRA PURKAYASTHA (POSTHUMOUS)

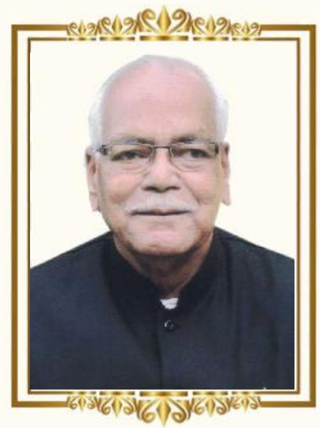

Shri Kabindra Purkayastha was a prominent politicial figure from Assam.

2. Born on 15th December, 1931 at Kamarkhal, Sylhet (then undivided India), Shri Purkayastha received his primary education in Kamarkhal. Before Independence, his family migrated to Cachar, where he enrolled at D.N. High School, Udharbond, and passed the matriculation examination. He later completed his graduation, B.T. (Bachelor of Teaching), and earned an M.A. in Bengali from Gauhati University.

3. From 1950–51, Shri Purkayastha actively worked for the safety and rehabilitation of refugees in Cachar. In 1950, he joined the Rashtriya Swayam Sevak Sangh (RSS) and later served as a pracharak. He played a key role in expanding the Sangh's activities across the Barak Valley, Brahmaputra Valley, Tripura, Manipur, and the wider Northeast region. Alongside his organizational work, he pursued a career in education. He joined Narsing H.S. School as a teacher and later became Principal of Ramakrishna Vidyapith, Ramakrishna Nagar. During the 1960s–70s, he emerged as a prominent teachers' leader, holding various positions in teachers' associations and advocating for their legitimate demands. During this period, he developed close associations with national leaders such as M. S. Golwalkar, Balasaheb Deoras, Eknath Ranade, Deendayal Upadhyaya, Atal Bihari Vajpayee, L. K. Advani, and Vijayaraje Scindia, among others.

4. In 1977, Shri Purkayastha resigned from his position as Principal on Sangh instructions and entered active politics. In 1978, he became General Secretary of the Assam Pradesh unit of the Janata Party and contested the Assam Legislative Assembly election from Silchar. After the Janata Party split, he became a founding member of the Bharatiya Janata Party (BJP) in April, 1980. On the directive of party president Shri Atal Bihari Vajpayee, he was appointed convener to organize and expand the party in Assam and the Northeast. He contested the 1986 Assam Assembly election from Silchar but was defeated. In the 1980s, while building the BJP's organizational base, he also served as Chairman of the financially defunct Silchar Urban Co-operative Bank and successfully revived it within a short period.

5. In 1991, Shri Purkayastha won the Silchar Lok Sabha seat and led the BJP to victory in nine Assembly seats in the Barak Valley. He contested the Lok Sabha elections in 1991, 1996, 1998, 1999, 2004, 2009, and 2014, winning in 1991, 1998, and 2009. After the BJP formed the government at the Centre in 1998, Prime Minister Atal Bihari Vajpayee inducted him into the Union Cabinet as Minister of Communications (Posts and Telecommunications). During his 13-month tenure, significant growth occurred in the telecommunications sector, particularly in the Northeast. He released postage stamps and first-day covers featuring Dr. Keshav Baliram Hedgewar and Arun Kumar Chander. He represented India in countries including the United States, China, Great Britain, Kenya, Switzerland, Bangladesh, Mauritius, Norway, South Africa, and France. He also served on various parliamentary committees during his three terms as MP.

6. In 2011, Shri Purkayastha introduced the Citizenship Amendment Bill in Parliament, advocating citizenship for refugees. Though he retired from active parliamentary politics in 2014, he remained engaged in public life. In 2024, Assam University conferred upon him an Honorary Doctorate in recognition of his contributions.

7. Shri Purkayastha passed away on 7 January, 2026.

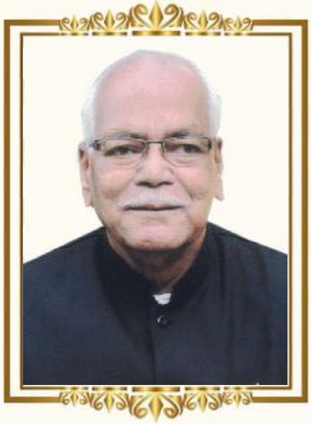

श्री कबीन्द्र पुरकायस्थ (मरणोपरांत)

श्री कबीन्द्र पुरकायस्थ असम के एक प्रमुख राजनीतिक व्यक्तित्व थे।

2. 15 दिसंबर, 1931 को सिलहट (तत्कालीन अविभाजित भारत) के कमरखाल में जन्मे, श्री पुरकायस्थ ने अपनी प्राथमिक शिक्षा कमरखाल में ही प्राप्त की। स्वतंत्रता से पूर्व, उनका परिवार कछार विस्थापित हो गया, जहाँ उन्होंने डी.एन. हाई स्कूल, उधरबोंड में प्रवेश लिया और मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। बाद में उन्होंने अपनी स्नातक शिक्षा और बी.टी. (शिक्षण स्नातक) पूर्ण की तथा गुवाहाटी विश्वविद्यालय से बंगाली विषय में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की।

3. वर्ष 1950–51 के दौरान, श्री पुरकायस्थ ने कछार में शरणार्थियों की सुरक्षा और पुनर्वास के लिए सक्रिय रूप से कार्य किया। वर्ष 1950 में वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़े और बाद में प्रचारक के रूप में अपनी सेवाएँ दीं। उन्होंने बराक घाटी, ब्रह्मपुत्र घाटी, त्रिपुरा, मणिपुर और संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में संघ की गतिविधियों के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संगठनात्मक कार्यों के साथ–साथ, उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में भी अपना करियर बनाया। वह नरसिंह एच.एस. स्कूल में शिक्षक के रूप में नियुक्त हुए और बाद में रामकृष्ण विद्यापीठ, रामकृष्ण नगर के प्रधानाचार्य बने। वर्ष 1960–70 के दशक के दौरान, वह एक प्रमुख शिक्षक नेता के रूप में उभरे, जहाँ उन्होंने शिक्षक संघों में विभिन्न पदों पर रहते हुए शिक्षकों की उचित मांगों का समर्थन किया। इसी अवधि में, उन्होंने एम.एस. गोलवलकर, बालासाहेब देवरस, एकनाथ रानाडे, दीनदयाल उपाध्याय, अटल बिहारी वाजपेयी, एल.के. आडवाणी और विजयाराजे सिंधिया जैसे राष्ट्रीय नेताओं के साथ घनिष्ठ संबंध विकसित किए।

4. वर्ष 1977 में, संघ के निर्देशों पर श्री पुरकायस्थ ने प्रधानाचार्य के पद से त्यागपत्र दे दिया और सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया। वर्ष 1978 में, वह जनता पार्टी की असम प्रदेश इकाई के महासचिव बने और सिलचर से असम विधानसभा का चुनाव लड़ा। जनता पार्टी के विभाजन के पश्चात, अप्रैल 1980 में वह भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के संस्थापक सदस्य बने। पार्टी अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी के निर्देश पर, उन्हें असम और पूर्वोत्तर में पार्टी के संगठन और विस्तार हेतु संयोजक नियुक्त किया गया। उन्होंने वर्ष 1986 के असम विधानसभा चुनाव में सिलचर से चुनाव लड़ा, किंतु पराजित हो गए। वर्ष 1980 के दशक में भाजपा का संगठनात्मक आधार तैयार करने के साथ–साथ, उन्होंने आर्थिक रूप से संकटग्रस्त ''सिलचर अर्बन को–ऑपरेटिव बैंक'' के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया और अल्प अवधि में ही इसे सफलतापूर्वक पुनर्जीवित किया।

5. वर्ष 1991 में, श्री पुरकायस्थ ने सिलचर लोकसभा सीट से विजय प्राप्त की और बराक घाटी की नौ विधानसभा सीटों पर भाजपा को जीत दिलाई। उन्होंने वर्ष 1991, 1996, 1998, 1999, 2004, 2009 और 2014 में लोकसभा चुनाव लड़ा, जिनमें से वह वर्ष 1991, 1998 और 2009 में विजयी रहे। वर्ष 1998 में केंद्र में भाजपा की सरकार बनने के पश्चात, प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने उन्हें संचार मंत्री (डाक एवं दूरसंचार) के रूप में केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल किया। उनके 13 माह के कार्यकाल के दौरान दूरसंचार क्षेत्र में, विशेष रूप से पूर्वोत्तर में, उल्लेखनीय प्रगति हुई। उन्होंने डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार और श्री अरुण कुमार चंदर पर आधारित डाक टिकट और प्रथम दिवस आवरण जारी किए। उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, ग्रेट ब्रिटेन, केन्या, स्विट्जरलैंड, बांग्लादेश, मॉरीशस, नॉर्वे, दक्षिण अफ्रीका और फ्रांस सहित कई देशों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। सांसद के रूप में अपने तीन कार्यकालों के दौरान उन्होंने विभिन्न संसदीय समितियों में भी अपनी सेवाएँ दीं।

6. वर्ष 2011 में, श्री पुरकायस्थ ने शरणार्थियों के लिए नागरिकता की वकालत करते हुए संसद में नागरिकता संशोधन विधेयक पेश किया। यद्यपि वर्ष 2014 में वह सक्रिय संसदीय राजनीति से सेवानिवृत्त हो गए थे, फिर भी वह सार्वजनिक जीवन में निरंतर सक्रिय रहे। वर्ष 2024 में, असम विश्वविद्यालय ने उनके योगदान के सम्मान में उन्हें मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की।

7. 7 जनवरी, 2026 को श्री पुरकायस्थ का निधन हो गया।

SHRI BHAGWANDAS RAIKWAR (POSTHUMOUS)

Shri Bhagwandas Raikwar is widely respected as a patron and teacher of traditional Bundeli martial arts and folk arts, including various forms of weapon training and movement practices.

2. Born on 2nd January, 1944 in a humble family in Sagar district, Madhya Pradesh, Shri Bhagwandas Raikwar grew up in the culturally rich region of Bundelkhand, known for its traditional arts, folk performances and martial practices. He worked tirelessly to revive, sustain, and teach these art forms, especially in times when younger generations were moving away from such traditional practices. He trained many students in these disciplines and organized performances and cultural showcases, helping to keep Bundeli heritage alive and vibrant. His efforts also helped to bring these traditions to wider audiences within India and abroad. Even he left his job earlier for the martial arts from bank services.

3. Shri Bhagwandas Raikwar played a key role in reviving and preserving the traditional Bundeli Akhara martial-arts system, which was gradually disappearing in the Bundelkhand region. He is the founder/trainer at Chhatrasal Bundela Akhara. As a senior trainer (ustad), he trained thousands of youths in traditional combat techniques such as lathi, sword, spear, trishul, and shield. For more than 60 years, he has promoted indigenous sports and physical training through the akhara system, preserving traditional knowledge and discipline. He also gave his own training session in the year of 1997 for Rang Vidhusak in Bhopal, martial art training session for Bharatendu Natay Academy Lucknow in the year of 1998 special training for the khel Yuvak Kalyan Vibhag in the year of 2000 and training session for Karyshala Rang Prayog at Bhopal in 2001. He organised the training session for the Himachal Culture Art Academy in the year of 2008. He trained about 3000 girls and 4000 boys in workshop for several theatrical, Cultural and social organizations. Many branches are running in several villages in Sagar (M.P.).

4. Shri Bhagwandas Raikwar has performed at various national and international platforms. He performed in Delhi, Hyderabad, Pune, Allahabad, Aligarh, Patiala, Chandigarah, Guwahati, Shillong, Nagpur, Mumbai, Patna, Lucknow, Karnataka, Odisha, Assam, Rajasthan, Madhya Pradesh etc. He also performed in "Apna Utsav" at New Delhi. In the year 1988, he showed his Bundeli Shastra Yudh Kala in International Trade Fair, New Delhi. In the year 1985, he performed in the Kalidas Academy at Ujjain. He has demonstrated Bundeli Martial Arts at major national cultural and religious events such as Mahakumbh, folk festivals, theatre events and cultural fairs across India. He also performed in various religious and social festivals such as Durga Visarjan in various states like Jabalpur, Orchha, Chitrakoot, Ujjain and many more. He also performed Bundeli Shastra Yuddh Kala in the festival of Panchmarhi in the year of 2009, at Vikram Mahotsav in Kalidas Academy at Ujjain in February 2025 and in Bharat parv, Dushhera parv ,Nagod Mahotsav and many more festivals.

5. Shri Raikwar also introduced and demonstrated the Bundeli Martial-Arts tradition on international platforms. He showcased Bundeli Martial Arts and cultural traditions in countries such as Russia, Singapore bringing global recognition to this indigenous art form.

6. Shri Raikwar passed away on 18th April, 2026.

श्री भगवानदास रायकवार (मरणोपरांत)

श्री भगवानदास रायकवार पारंपरिक बुंदेली मार्शल आर्ट्स और लोक कलाओं के संरक्षक तथा गुरु के रूप में व्यापक रूप से सम्मानित हैं, जिनमें विभिन्न प्रकार के शस्त्र–प्रशिक्षण प्रकार और शारीरिक संचलन क्रियाएं शामिल हैं।

2. 2 जनवरी 1944 को मध्य प्रदेश के सागर जिले के एक साधारण परिवार में जन्मे, श्री रायकवार बुंदेलखंड के सांस्कृतिक रूप से समृद्ध क्षेत्र में पले–बढ़े, जो अपनी पारंपरिक कलाओं, लोक प्रस्तुतियों और युद्ध–कौशल के लिए जाना जाता है। उन्होंने इन कलाओं को पुनर्जीवित करने, संरक्षित रखने और सिखाने के लिए निरंतर प्रयास किए, विशेषकर उस समय जब नई पीढ़ी इन पारंपरिक विधाओं से दूर हो रही थी। उन्होंने इन विधाओं में अनेक विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया और प्रदर्शन तथा सांस्कृतिक आयोजनों का आयोजन किया, जिससे बुंदेली विरासत को जीवंत और सशक्त बनाए रखने में सहायता मिली। उनके प्रयासों ने इन परंपराओं को भारत और विदेशों में अधिकाधिक दर्शकों तक पहुँचाने में भी मदद की। यहाँ तक की उन्होंने बैंक कि नौकरी छोड़कर मार्शल आर्ट में अपना करियर शुरू किया।

3. श्री रायकवार ने बुंदेलखंड क्षेत्र में धीरे–धीरे विलुप्त हो रही पारंपरिक बुंदेली अखाड़ा मार्शल–आर्ट प्रणाली के पुनरुद्धार और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह "छत्रसाल बुंदेला अखाड़ा" के संस्थापकध्प्रशिक्षक हैं। एक वरिष्ठ प्रशिक्षक (उस्ताद) के रूप में उन्होंने हजारों युवाओं को लाठी, तलवार, भाला, त्रिशूल और ढाल जैसे पारंपरिक युद्ध–कौशल में प्रशिक्षण दिया। पिछले 60 वर्षों से अधिक समय से वह अखाड़ा प्रणाली के माध्यम से स्वदेशी खेलों और शारीरिक प्रशिक्षण को बढ़ावा दे रहे हैं, जिससे पारंपरिक ज्ञान और विधा का संरक्षण हुआ है। उन्होंने वर्ष 1997 में भोपाल में "रंग विदूषक" के लिए अपना प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया, वर्ष 1998 में लखनऊ स्थित "भारतेंदु नाट्य अकादमी" के लिए मार्शल आर्ट प्रशिक्षण सत्र दिया, वर्ष 2000 में खेल युवक कल्याण विभाग के लिए विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया तथा 2001 में भोपाल में "कार्यशाला रंग प्रयोग" के लिए प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया। उन्होंने वर्ष 2008 में हिमाचल संस्कृति कला अकादमी के लिए प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया। उन्होंने विभिन्न नाट्य, सांस्कृतिक और सामाजिक संगठनों के लिए आयोजित कार्यशालाओं में लगभग 3000 बालिकाओं और 4000 बालकों को प्रशिक्षण दिया। सागर (मध्य प्रदेश) के अनेक गाँवों में उनकी कई शाखाएँ संचालित हो रही हैं।

4. श्री रायकवार ने विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रदर्शन किया है। उन्होंने दिल्ली, हैदराबाद, पुणे, इलाहाबाद, अलीगढ़, पटियाला, चंडीगढ़, गुवाहाटी, शिलांग, नागपुर, मुंबई, पटना, लखनऊ, कर्नाटक, ओडिशा, असम, राजस्थान, मध्य प्रदेश आदि स्थानों पर अपनी प्रस्तुतियाँ दी हैं। उन्होंने नई दिल्ली में आयोजित "अपना उत्सव" में भी प्रदर्शन किया। वर्ष 1988 में उन्होंने नई दिल्ली के अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले में अपनी बुंदेली शस्त्र–युद्ध कला का प्रदर्शन किया। वर्ष 1985 में उन्होंने उज्जैन स्थित कालिदास अकादमी में प्रस्तुति दी। उन्होंने महाकुंभ, लोक उत्सवों, नाट्य आयोजनों और देशभर के सांस्कृतिक मेलों जैसे प्रमुख राष्ट्रीय सांस्कृतिक और धार्मिक आयोजनों में बुंदेली मार्शल आर्ट्सका प्रदर्शन किया है। उन्होंने जबलपुर, ओरछा, चित्रकूट, उज्जैन आदि राज्योंध स्थानों में दुर्गा विसर्जन जैसे विभिन्न धार्मिक और सामाजिक उत्सवों में भी प्रदर्शन किया। उन्होंने वर्ष 2009 में पचमढ़ी महोत्सव में बुंदेली शस्त्र–युद्ध कला का प्रदर्शन किया, फरवरी 2025 में उज्जैन स्थित कालिदास अकादमी के विक्रम महोत्सव में तथा भारत पर्व, दशहरा पर्व, नागोद महोत्सव आदि कई उत्सवों में भी प्रस्तुति दी।

5. श्री रायकवार ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी बुंदेली मार्शल आर्ट्स परंपरा का परिचय दिया और उसका प्रदर्शन किया। उन्होंने रूस और सिंगापुर जैसे देशों में बुंदेली मार्शल आर्ट्स और सांस्कृतिक परंपराओं का प्रदर्शन कर इस स्वदेशी कला को वैश्विक पहचान दिलाई।

6. 18 अप्रैल, 2026 को श्री रायकवार का निधन हो गया।

PROF. K. RAMASAMY

Prof. K. Ramasamy is the Chancellor of Karpagam Academy of Higher Education and Research, a Deemed -to- be-University. He is known for his pioneering work on agricultural biomass conversion, establishing Anaerobic Microbiology in this country and propagating microbial inputs in rejuvenating soil biology towards Natural Farming. His Microbial technology has improved the recycling of Farm residues, agro-based industrial wastes to bioenergy, biobased inputs through biogas, aerobic-anaerobic compost, bio-stimulants and bioregulators in rejuvenating polluted soil environment, a pioneer in technology transfer from Lab-to-Land.

2. Born on 1st May,1948, Prof. Ramasamy received his Bachelor and Masters degree from Annamalai University, Chidambaram in 1974 and completed his MS. Fermentation Technology and PhD, Industrial Microbiology at Catholic University Leuven, Belgium, 1980. After Post Doctoral experience in Gene Cloning at Michigan State University, East Lansing, USA, he joined in Tamil Nadu Agricultural University, (TNAU) Coimbatore. At TNAU he established the Anaerobic Microbiology Laboratory leading to the Agro Energy Centre and Department of Renewable Energy. Externally funded projects as Ramasamy Principal Investigator were pooled and a Department of Environmental Science was created for solving the problems of agro-based industries. Institute-Industry collaboration was initiated. In collaboration with National Environmental Engineering Research Institute (NEERI) and Australian International Centre for Agricultural Research (AICAR) prevented the closure of 960 Tannery, 36 Sugar and Distilleries by providing alternative biobased treatment of Waste water emanating from these industries. The technology was later adopted for Textiles and Paper-pulp industries. Test-kit, developed by the lab was used in monitoring and correction of defective Biogas plants in the country.

3. Prof. Ramasamy formalized the first affiliated Agricultural College at Kalavai, as Dean, which is a model for other 29 Colleges. He was instrumental in introducing new courses-Bio-Energy, Microbial Technology, Environmental Sciences, Biotechnology etc., in various Universities in India and framed the Syllabus for UGC and ICAR for these courses. He visited several countries as Visiting Professor, International and National funding for Research and technology transfer.

4. As Vice Chancellor, Tamil Nadu Agricultural University (2012-2018) Prof. Ramasamy was responsible for expanding agricultural education through private participation and establishing Regional Centers of Excellences, besides crop specific Research center for Horticultural crops. Technology transfer and entrepreneurship was supported in each College with the support of State, DST, ICAR NITI Aayog and NABARD. National Accredited Labs were established for quality testing and pollution prevention; Pink pigmented Foliar Methanotroph, a new organism sprayed on paddy through students participation in 2.47 lakh acres, protected paddy fro drought.

5. As a member of Planning Commission, Prof. Ramasamy pioneered the traditional agriculture through ethnic medicine [Animal Husbandry, Fisheries and Agriculture], soil rejuvenation, doubling cereal, pulses and oilseed production [four times Krishi Karman Award for TN]. After retirement, he continued his service to Farming society by establishing Nature farming groups testing facilities, Research center in Private Universities, Faculty improvement. After becoming the Chancellor of Karpagam Academy of Higher Education, he continues his service to academics, farmers and industries through translational research.

6. Prof. Ramasamy has received several awards including International Fellowship KUL, Leuven, FAO Fellow- Rome, Best Vice- Chancellor, Golden Jubilee Rice Research award, Ministry of Commerce Innovation Award, Life time Achievement [Association of Microbiology of India] Best Researcher [Environment Society] AICAR-CRC Fellow - Australia.

प्रो. के. रामसामी

प्रो. के. रामसामी करपगम एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च, जो कि एक मानित विश्वविद्यालय है, के कुलाधिपति (चांसलर) हैं। वह कृषि जैव–द्रव्य के रूपांतरण, भारत में एनारोबिक माइक्रोबायोलॉजी की स्थापना तथा प्राकृतिक खेती की दिशा में मृदा जैविकी के पुनरुद्धार के लिए सूक्ष्मजीवी; इनपुट्स के प्रसार में अपने अग्रणी कार्यों के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी सूक्ष्मजीव प्रौद्योगिकी ने कृषि अवशेषों तथा कृषि–आधारित औद्योगिक अपशिष्टों के पुनर्चक्रण को बेहतर बनाया है और इन्हें बायोएनर्जी तथा जैव–आधारित उत्पादों में परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह तकनीक बायोगैस, एरोबिक–एनारोबिक कम्पोस्ट, बायो–स्टिमुलेंट्स और बायो–रेगुलेटर्स के माध्यम से प्रदूषित मृदा पर्यावरण के पुनरुद्धार में सहायक रही है। वह प्रयोगशाला से खेत तक प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के क्षेत्र में अग्रणी रहे हैं।

2. 1 मई, 1948 को जन्मे, प्रो. रामसामी ने वर्ष 1974 में अन्नामलाई विश्वविद्यालय, चिदंबरम से स्नातक तथा स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की तथा वर्ष 1980 में कैथोलिक यूनिवर्सिटी, ल्यूवेन, बेल्जियम से फर्मेंटेशन टेक्नोलॉजी में एम.एस. तथा औद्योगिक सूक्ष्मजीव विज्ञान में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी, ईस्ट लैंसिंग, यूएसए से जीन क्लोनिंग विषय में पोस्ट–डॉक्टोरल अनुभव प्राप्त करने के बाद वह तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय (टीएनएयू), कोयंबटूर से जुड़ गए। टीएनएयू में उन्होंने अवायवीय सूक्ष्मजीव विज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना की, जो आगे चलकर एग्रो एनर्जी सेंटर तथा नवीकरणीय ऊर्जा विभाग के रूप में विकसित हुई। प्रधान अन्वेषक के तौर पर उनके नेतृत्व में बाहरी वित्तपोषित परियोजनाओं का एक पूल बनाकर कृषि आधारित उद्योगों की समस्याओं के समाधान के लिए पर्यावरण विज्ञान विभाग की स्थापना की गई तथा संस्थान–उद्योग सहयोग की शुरुआत की गई। राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (एनईईआरआई) तथा ऑस्ट्रेलियन इंटरनेशनल सेंटर फॉर एग्रीकल्चरल रिसर्च (एआईसीएआर) के सहयोग से उन्होंने इन उद्योगों से निकलने वाले अपशिष्ट जल के जैव–आधारित उपचार की वैकल्पिक तकनीक प्रदान कर 960 टैनरी, 36 चीनी मिलों और कई डिस्टिलरी के बंद होने को रोका। बाद में यही तकनीक वस्त्र तथा कागज–पल्प उद्योगों में भी अपनाई गई। प्रयोगशाला द्वारा विकसित परीक्षण–किट का उपयोग देश में खराब बायोगैस संयंत्रों की निगरानी और सुधार में किया गया।

3. प्रो. रामसामी ने डीन के रूप में कलावई में प्रथम संबद्ध कृषि महाविद्यालय को औपचारिक रूप दिया, जो बाद में अन्य 29 महाविद्यालयों के लिए एक आदर्श बना। भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में बायो–एनर्जी, माइक्रोबियल टेक्नोलॉजी, पर्यावरण विज्ञान तथा बायोटेक्नोलॉजी जैसे नए पाठ्यक्रम शुरू कराने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने इन पाठ्यक्रमों के लिए यूजीसी और आईसीएआर के लिए पाठ्यक्रम (सिलेबस) भी तैयार किया। शोध और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए वह कई देशों में अतिथि प्रोफेसर के रूप में गए और अंतरराष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर वित्तपोषण प्राप्त किया।

4. तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति (2012–2018) के रूप में प्रो. रामसामी ने निजी सहभागिता के माध्यम से कृषि शिक्षा का विस्तार करने और बागवानी फसलों के लिए फसल–विशिष्ट अनुसंधान केंद्रों के साथ–साथ क्षेत्रीय उत्कृष्टता केंद्रों की स्थापना करने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किए। राज्य सरकार, डीएसटी, आईसीएआर, नीति आयोग तथा नाबार्ड के सहयोग से प्रत्येक महाविद्यालय में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और उद्यमिता को प्रोत्साहित किया गया। गुणवत्ता परीक्षण और प्रदूषण नियंत्रण के उद्देश्य से राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं की स्थापना भी की गई; 'पिंक पिगमेंटेड फोलियर मेथेनोट्रोफ' नामक एक नए जीवाणु का विद्यार्थियों की सहभागिता से 2.47 लाख एकड़ धान क्षेत्र में छिड़काव किया गया, जिससे धान की फसल को सूखे के प्रभाव से सुरक्षित रखने में सफलता मिली।

5. योजना आयोग के सदस्य के रूप में, प्रो. रामसामी ने एथनिक मेडिसिन पशुपालन, मत्स्य पालन तथा कृषि, मृदा पुनरुद्धार, अनाज, दलहन एवं तिलहन उत्पादन को दोगुना करने तमिलनाडु को चार बार 'कृषि कर्मण पुरस्कार', जैसे कार्यों के माध्यम से पारंपरिक कृषि को बढ़ावा देने में अग्रणी भूमिका निभाई। सेवानिवृत्ति के पश्चात भी उन्होंने कृषि समुदाय की सेवा जारी रखते हुए प्राकृतिक खेती समूहों की स्थापना, परीक्षण सुविधाओं का विकास, निजी विश्वविद्यालयों में अनुसंधान केंद्रों की स्थापना तथा संकाय उन्नयन जैसे कार्य किए। करपगम एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन के कुलाधिपति बनने के उपरांत भी वह अनुवादात्मक अनुसंधान के माध्यम से शिक्षाविदों, किसानों और उद्योगों के हित में सक्रिय रूप से योगदान दे रहे हैं।

6. प्रो. रामसामी को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें केयूएल, ल्यूवेन की अंतरराष्ट्रीय फेलोशिप, एफएओ (रोम) फेलोशिप, सर्वश्रेष्ठ कुलपति पुरस्कार, गोल्डन जुबली राइस रिसर्च अवार्ड, वाणिज्य मंत्रालय का इनोवेशन अवार्ड, माइक्रोबायोलॉजी एसोसिएशन ऑफ इंडिया का लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड, एनवायरनमेंट सोसाइटी का बेस्ट रिसर्चर अवार्ड तथा ऑस्ट्रेलिया का एआईसीएआर–सीआरसी फेलोशिप शामिल हैं।

SHRI MADHAVAN RANGANATHAN

Shri Madhavan Ranganathan, popularly known as "Maddy," is a distinguished National Award-winning actor, producer, director and public figure who has made an indelible impact on Indian cinema across multiple languages. With a career spanning nearly three decades, he is widely recognised as one of India's foremost Pan-Indian stars, commanding A-list stature and an enduring fan base across the country and abroad.

2. Born on 1st June, 1970, Shri Madhavan completed his schooling in Jamshedpur and earned a degree in Electronics from Rajaram College, Kolhapur. A national-level youth athlete in his formative years, he represented India in several prestigious international forums. He was selected to represent India in Canada through the Rotary Youth exchange program as a Cultural Ambassador, represented India at the Young Businessmen Conference in Tokyo as a public speaker and trained with the British Army, Royal Navy and Royal Air Force in England through the National Cadet Corps (NCC).

3. Shri Madhavan's journey in the entertainment industry began with over 1200 television episodes before transitioning to films, where he went on to act in more than 75 films across Tamil, Hindi and other languages. Over the years, he has delivered critically acclaimed and commercially successful performances in landmark films such as Alaipayuthey, Kannathil Muthamittal, Anbe Sivam, Rang De Basanti, 3 Idiots, Tanu Weds Manu 1 & 2, Irudhi Suttru, Vikram Vedha, Rocketry: The Nambi Effect, Shaitan and Dhurandhar. Demonstrating remarkable versatility, he has also taken on roles as writer, producer and director. His directorial debut, *Rocketry: The* Nambi Effect, earned the National Film Award for Best Feature Film and won him the IIFA Award for Best Director. He is also recognised as the first A-listed mainstream film actor to successfully venture into long-format web series on OTT platforms, marking a significant shift in India's digital entertainment landscape. His notable web series appearances include *Breathe, Decoupled* and The Railway Men.

4. Beyond cinema, Shri Madhavan has contributed to institutional leadership and mentorship in the arts. In 2023, he was appointed President of the Film and Television Institute of India (FTII) Society, where he is entrusted with guiding one of the nation's premier film institutions and mentoring the next generation of filmmakers. He is also a motivational speaker of repute and has delivered addresses at prestigious global forums, including Harvard University. His diverse accomplishments extend to agriculture and sustainability initiatives, including developing organic hydroponic farming in Mumbai and transforming barren land into a productive coconut farm in Tamil Nadu. An avid golfer, skier and aeromodelling enthusiast, he exemplifies excellence across varied pursuits.

5. Shri Madhavan is among the few truly pan-Indian actors to have delivered successful performances across comedy, drama, action and biographical genres in Hindi, Tamil and English, spanning multiple platforms and formats. Through his artistic excellence, leadership and multifaceted achievements, he continues to bring distinction to Indian cinema and cultural representation on the global stage.

6. Shri Madhavan is the recipient of numerous prestigious honours and awards over the course of his illustrious career. These include the National Film Award for Best Feature Film for *Rocketry:* The Nambi Effect, IIFA Awards for Best Director and Best Performance, multiple Filmfare Awards, including Best Male Debut and Critics' Awards, Tamil Nadu State Film Awards, SIIMA Awards and ITA Awards among others.

श्री माधवन रंगनाथन

श्री माधवन रंगनाथन, जिन्हें ''मैडी''के नाम से जाना जाता है, एक सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता अभिनेता, निर्माता, निर्देशक और लोकप्रिय व्यक्ति हैं, जिन्होंने कई भाषाओं वाले भारतीय सिनेमा पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। लगभग तीन दशक के करियर के साथ, उन्हें व्यापक रूप से अखिल भारतीय स्तर पर एक प्रमुख फिल्म स्टार माना जाता है। वह देश विदेश में ऊंचे दर्जे के कलाकार हैं और उनके बड़ी संख्या में प्रशंसक है।

2. 1 जून, 1970 को जन्में, श्री माधवन ने जमशेदपुर में अपनी स्कूली शिक्षा प्राप्त की और राजा राम कॉलेज, कोल्हापुर से इलेक्ट्रॉनिक्स में डिग्री प्राप्त की। वह शुरुआती दिनों में राष्ट्रीय स्तर के एक युवा एथलीट रहे और उन्होंने अनेक प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व किया। उन्हें एक सांस्कृतिक दूत के रूप में रोटरी यूथ एक्सचेंज कार्यक्रम के माध्यम से कनाडा में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया। उन्होंने एक सार्वजनिक वक्ता के रूप में टोक्यो में युवा व्यवसायी सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया और उन्हें राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) के माध्यम से इंग्लैंड में ब्रिटिश सेना, रॉयल नेवी और रॉयल एयरफोर्स के साथ प्रशिक्षित किया गया था।

3. मनोरंजन उद्योग में श्री माधवन की यात्रा फिल्मों में जाने से पहले 1200 से अधिक टेलीविजन एपिसोड के साथ शुरू हुई और उसके बाद उन्होंने तमिल, हिंदी और अन्य भाषाओं में 75 से अधिक फिल्मों में अभिनय किया। इन वर्षों में, उन्होंने अलाईपयुथे, कन्नथिल मुथामित्तल, अंबे शिवम, रंग दे बसंती, 3 इडियट्स, तनु वेड्स मनु 1 और 2, इरुधि सुत्रु, विक्रम वेधा, रॉकेट्री द नंबी इफेक्ट, शैतान और धुरंधर जैसी ऐतिहासिक फिल्मों में समीक्षकों द्वारा प्रशंसित और व्यावसायिक रूप से सफल प्रदर्शन किया है। अपनी बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए, उन्होंने लेखक, निर्माता और निर्देशक के रूप में भी कार्य किया। उनके निर्देशन में पहली फिल्म रॉकेट्री द नंबी इफेक्ट ने सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त किया और उन्हें सर्वश्रेष्ठ निर्देशक के लिए आइफा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें ओटीटी प्लेटफॉर्म पर लौंग–फर्मेट वेब सीरीज में सफलता पूर्वक अभिनय करने वाले पहले ए–लिस्टिड मुख्यधारा के फिल्म अभिनेता के रूप में भी जाना जाता है, जो भारत के डिजिटल मनोरंजन परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है। ब्रीद, डिकपल्ड और द रेलवे मेन वेब सीरीज में उनकी भूमिका उल्लेखनीय है।

4. सिनेमा के अतिरिक्त, श्री माधवन ने कला में संस्थागत नेतृत्व और परामर्श में योगदान दिया। वर्ष 2023 में, उन्हें फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एफटीआईआई) सोसाइटी का अध्यक्ष नियुक्त किया गया, जहां उन्हें देश के प्रमुख फिल्म संस्थानों में से एक का मार्गदर्शन करने और फिल्म निर्माताओं की अगली पीढ़ी को परामर्श देने का दायित्व सौंपा गया है। वह एक प्रतिष्ठित प्रेरक वक्ता भी हैं और उन्होंने हार्वर्ड विश्वविद्यालय सहित प्रतिष्ठित वैश्विक मंचों पर भाषण दिया। उनकी विविध उपलब्धियां कृषि और स्थिरता संबंधी पहलों तक फैली हुई हैं, जिसमें मुंबई में जैविक हाइड्रोपोनिक खेती विकसित करना और तमिलनाडु में बंजर भूमि को उत्पादक नारियल के खेत के रूप में बदलना शामिल है। एक उत्साही गोल्फर, स्कीयर और एयरो मॉडलिंग शौकीन के रूप में, वह विभिन्न कार्यकलापों में उत्कृष्टता का परिचय देते हैं।

5. श्री माधवन वास्तव में, उन कुछ अखिल भारतीय अभिनेताओं में से एक हैं, जिन्होंने कई प्लेटफार्म और प्ररूप वाले हिंदी, तमिल और अंग्रेजी में कॉमेडी, ड्रामा, एक्शन और जीवनी से जुड़ी कृतियों में सफल प्रदर्शन किया। अपनी कलात्मक उत्कृष्टता, नेतृत्व और बहुआयामी उपलब्धियों के माध्यम से, वह भारतीय सिनेमा और वैश्विक मंच पर सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व में निरंतर विशिष्ट ताला रहे हैं।

6. श्री माधवन को अपने शानदार करियर के दौरान कई प्रतिष्ठित सम्मानों और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इनमें रॉकेट्री द नंबी इफेक्ट के लिए सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ निर्देशक और सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए आइफा पुरस्कार, बेस्ट मेल डेब्यू और क्रिटिक्स अवार्ड्स, तमिलनाडु राज्य फिल्म पुरस्कार, एस आई आई एम ए पुरस्कार और आई टी ए पुरस्कार सहित कई फिल्म फेयर पुरस्कार शामिल हैं।

SMT. RANJANI

Smt. Ranjani is an eminent Carnatic musician, recognised for her sustained contribution to Indian classical music as a performing duo with her sister Smt. Gayatri for nearly four decades. Known as Ranjani - Gayatri, the sisters have distinguished themselves through their commitment to classicism, depth of musical thought, and the preservation and propagation of the Carnatic tradition in India and abroad.

2. Born on 13th May, 1973, Smt. Ranjani was brought up in a culturally rooted family in Mumbai and was introduced to Indian classical music at an early age. Smt. Ranjani and her sister received the initial training in violin under Shri T.S. Krishnaswami and gave their first public performance in 1986. Their later transition to vocal music took shape under the guidance of Shri P.S. Narayanaswamy, whose mentorship became a defining influence, shaping their musical aesthetics, discipline, and approach to manodharma.

3. Smt. Ranjani and Smt. Gayatri are widely respected for their command over advanced musical concepts such as Graha Bhedam and Swara Dhuri. Swara Dhuri is an innovation conceptualised and popularized by Smt. Gayatri, which they have presented with clarity, imagination, and classical integrity in their concerts. Their music is noted for sruti shuddham, seamless coordination as a duo, and a balance of intellectual rigour and emotional depth. They have built a vast repertoire of compositions across several Indian languages and are regarded for their ability to explore raga and sahitya with originality while remaining firmly rooted in tradition. The sisters have performed extensively across leading sabhas and festivals in India and internationally, taking Carnatic music to audiences across Asia, Europe, North America, and Australia. They have also collaborated with senior musicians and national legends, including noted composer Ilaiyaraaja, and have curated several conceptual presentations such as Raja by RaGa and Rasa by RaGa, which have brought fresh perspectives to classical concert presentation.

4. In addition to their performance career, Smt. Ranjani and Smt. Gayatri have made significant contributions as educators. Over the years, they have trained and mentored hundreds of students through structured teaching, workshops, and lecture demonstrations, thereby playing an important role in nurturing and sustaining the Carnatic music tradition for future generations.

5. Smt. Ranjani alongwith Smt. Gayatri have received numerous honours in recognition of their contribution to Indian classical music, including the Kalaimamani Award from the Government of Tamil Nadu, the Samagana Mathanga National Award, the Sangeetha Kala Siromani, the Vani Kala Sudhakara, the Sanskriti Puraskar, and the Lifetime Achievement Award from Bharatiya Vidya Bhavan, among others.

श्रीमती रंजनी

श्रीमती रंजनी एक प्रतिष्ठित कर्नाटक संगीतकार हैं, जिन्हें लगभग चार दशकों से अपनी बहन श्रीमती गायत्री के साथ जोड़ी के रूप में भारतीय शास्त्रीय संगीत में उनके निरंतर योगदान के लिए जाना जाता है। रंजनी–गायत्री के नाम से प्रसिद्ध, दोनों बहनों ने भारत और विदेश में शास्त्रीयता, संगीत मनोविज्ञान की गहराई और कर्नाटक परंपरा के संरक्षण एवं प्रचार के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के माध्यम से स्वयं को प्रतिष्ठित किया।

2. 13 मई, 1973 को जन्मी, श्रीमती रंजनी का पालन–पोषण मुंबई में एक संस्कृति–प्रेमी परिवार में हुआ और कम उम्र में ही वे भारतीय शास्त्रीय संगीत से परिचित हुईं। श्रीमती रंजनी और उनकी बहन ने श्री टी.एस. कृष्णास्वामी की छत्रछाया में वायलिन का प्रारंभिक प्रशिक्षण प्राप्त किया और वर्ष 1986 में पहली बार अपनी कला को सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत किया। उसके बाद श्री पी एस नारायणस्वामी के मार्गदर्शन में उन्होंने वोकल संगीत की दिशा में कदम रखा। उनकी संगीत यात्रा पर श्री नारायणस्वामी के संरक्षण का गहरा प्रभाव पड़ा जिसने उनके संगीत सौंदर्यशास्त्र, अनुशासन और मनोधर्म के दृष्टिकोण को आकार प्रदान किया।

3. श्रीमती रंजनी और श्रीमती गायत्री ग्रह भेदम और स्वर धुरी जैसी उन्नत संगीत अवधारणाओं पर अपनी पकड़ के लिए व्यापक रूप से प्रसिद्ध हैं। स्वर धुरी श्रीमती गायत्री द्वारा संकल्पित और लोकप्रिय बनाया गया एक नवाचार है, जिसे उन्होंने अपने संगीत कार्यक्रमों में स्पष्टता, कल्पना और शास्त्रीय अखंडता के साथ प्रस्तुत किया। उनके संगीत को श्रुति शुद्धम, एक जोड़ी के रूप में निर्बाध समन्वय और बौद्धिक दृढ़ता तथा भावनात्मक गहराई के संतुलन के लिए जाना जाता है। उन्होंने कई भारतीय भाषाओं में रचनाओं का एक विशाल संग्रह बनाया और उन्हें परंपरा सहित मौलिकता के साथ राग और साहित्य का अध्ययन करने की उनकी क्षमता के लिए सराहा जाता है। दोनों बहनों ने भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख सभाओं और त्योहारों में बड़े पैमाने पर कला प्रदर्शन किया, जिसके माध्यम से एशिया, यूरोप, उत्तरी अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के श्रोताओं तक कर्नाटक संगीत पहुंचा। उन्होंने प्रसिद्ध संगीतकार इलैयाराजा सहित वरिष्ठ संगीतकारों और राष्ट्रीय दिग्गजों के साथ भी कार्य किया। इसके साथ उन्होनें कई अवधारणात्मक प्रस्तुतियों जैसे RaGa द्वारा राज और RaGa द्वारा रास का आयोजन किया जिसने शास्त्रीय संगीत प्रस्तुति में नए दृष्टिकोणों को रेखांकित किया।

4. अपने कला प्रदर्शन करियर के साथ, श्रीमती रंजनी और श्रीमती गायत्री ने शिक्षकों के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वर्षों से, उन्होंने संरचित शिक्षण, कार्यशालाओं और व्याख्यान प्रदर्शनों के माध्यम से सैकड़ों छात्रों को प्रशिक्षित कर मार्गदर्शन प्रदान किया, जिसके द्वारा उन्होनें भावी पीढ़ियों के लिए कर्नाटक संगीत परंपरा को विकसित करने और बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

5. श्रीमती रंजनी और श्रीमती गायत्री को भारतीय शास्त्रीय संगीत में उनके योगदान के लिए तमिलनाडु सरकार से कलाइमामणि पुरस्कार, समागान मथांगा राष्ट्रीय पुरस्कार, संगीता कला शिरोमणि, वाणी कला सुधाकर, संस्कृति पुरस्कार और भारतीय विद्या भवन से लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड सहित कई सम्मान हासिल हुए।

SMT. GAYATRI

Smt. Gayatri is an eminent Carnatic musician, recognised for her sustained contribution to Indian classical music as a performing duo with her sister Smt. Ranjani for nearly four decades. Known as Ranjani - Gayatri, the sisters have distinguished themselves through their commitment to classicism, depth of musical thought, and the preservation and propagation of the Carnatic tradition in India and abroad.

2. Born on 10th May, 1976, Smt. Gayatri was brought up in a culturally rooted family in Mumbai, and was introduced to Indian classical music at an early age. Smt. Gayatri and her sister Smt. Ranjani received their initial training in violin under Shri T.S. Krishnaswami and gave their first public performance in 1986. Their later transition to vocal music took shape under the guidance of Shri P.S. Narayanaswamy, whose mentorship became a defining influence, shaping their musical aesthetics, discipline, and approach to manodharma.

3. Smt. Gayatri and Smt. Ranjani are widely respected for their command over advanced musical concepts such as Graha Bhedam and Swara Dhuri. Swara Dhuri is an innovation conceptualised and popularized by Smt. Gayatri, which they have presented with clarity, imagination, and classical integrity in their concerts. Their music is noted for sruti shuddham, seamless coordination as a duo, and a balance of intellectual rigour and emotional depth. They have built a vast repertoire of compositions across several Indian languages and are regarded for their ability to explore raga and sahitya with originality while remaining firmly rooted in tradition. The sisters have performed extensively across leading sabhas and festivals in India and internationally, taking Carnatic music to audiences across Asia, Europe, North America, and Australia. They have also collaborated with senior musicians and national legends, including noted composer llaiyaraaja, and have curated several conceptual presentations such as Raja by RaGa and Rasa by RaGa, which have brought fresh perspectives to classical concert presentation.

4. In addition to their performance career, Smt. Gayatri and Smt. Ranjani have made significant contributions as educators. Over the years, they have trained and mentored hundreds of students through structured teaching, workshops, and lecture demonstrations, thereby playing an important role in nurturing and sustaining the Carnatic music tradition for future generations.

5. Smt. Gayatri alongwith Smt. Ranjani have received numerous honours in recognition of their contribution to Indian classical music, including the Kalaimamani Award from the Government of Tamil Nadu, the Samagana Mathanga National Award, the Sangeetha Kala Siromani, the Vani Kala Sudhakara, the Sanskriti Puraskar, and the Lifetime Achievement Award from Bharatiya Vidya Bhavan, among others.

श्रीमती गायत्री

श्रीमती गायत्री एक प्रतिष्ठित कर्नाटंक संगीतकार हैं, जिन्हें लगभग चार दशकों से अपनी बहन श्रीमती रंजनी के साथ जोड़ी के रूप में भारतीय शास्त्रीय संगीत में उनके निरंतर योगदान के लिए जाना जाता है। रंजनी – गायत्री के नाम से प्रसिद्ध, दोनों बहनों ने भारत और विदेश में शास्त्रीयता, संगीत मनोविज्ञान की गहराई और कर्नाटंक परंपरा के संरक्षण एवं प्रचार के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के माध्यम से खुद को प्रतिष्ठित किया।

2. 10 मई, 1976 को जन्मी, श्रीमती गायत्री का पालन–पोषण मुंबई में एक संस्कृति–प्रेमी परिवार में हुआ और कम उम्र में ही वे भारतीय शास्त्रीय संगीत से परिचित हुई। श्रीमती गायत्री और उनकी बहन श्रीमती रंजनी ने श्री टी. एस. कृष्णास्वामी की छत्रछाया में वायलिन का प्रारंभिक प्रशिक्षण प्राप्त किया और वर्ष 1986 में पहली बार अपनी कला को सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत किया। उसके बाद श्री पी एस नारायणस्वामी के मार्गदर्शन में उन्होंने वोकल संगीत की दिशा में कदम रखा। उनकी संगीत यात्रा पर श्री नारायणस्वामी के संरक्षण का गहरा प्रभाव पड़ा जिसने उनके संगीत सौंदर्यशास्त्र, अनुशासन और मनोधर्म के दृष्टिकोण को आकार प्रदान किया।

3. श्रीमती गायत्री और श्रीमती रंजनी ग्रह भेदम और स्वर धुरी जैसी उन्नत संगीत अवधारणाओं पर अपनी पकड़ के लिए व्यापक रूप से प्रसिद्ध हैं। स्वर धुरी श्रीमती गायत्री द्वारा संकल्पित और लोकप्रिय बनाया गया एक नवाचार है, जिसे उन्होंने अपने संगीत कार्यक्रमों में स्पष्टता, कल्पना और शास्त्रीय अखंडता के साथ प्रस्तुत किया। उनको संगीत को श्रुति शुद्धम, एक जोड़ी के रूप में निर्बाध समन्वय और बौद्धिक दृढ़ता तथा भावनात्मक गहराई के संतुलन के लिए जाना जाता है। उन्होंने कई भारतीय भाषाओं में रचनाओं का एक विशाल संग्रह बनाया और उन्हें परंपरा सहित मौलिकता के साथ राग और साहित्य का अध्ययन करने की उनकी क्षमता के लिए सराहा जाता है। दोनों बहनों ने भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख सभाओं और त्योहारों में बड़े पैमाने पर कला प्रदर्शन किया, जिसके माध्यम से एशिया, यूरोप, उत्तरी अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के श्रोताओं तक कर्नाटक संगीत पहुंचा। उन्होंने प्रसिद्ध संगीतकार इलैयाराजा सहित वरिष्ठ संगीतकारों और राष्ट्रीय दिग्गजों के साथ भी कार्य किया। इसके साथ उन्होंने कई अवधारणात्मक प्रस्तुतियों जैसे RaGa द्वारा राज और RaGa द्वारा रास का आयोजन किया जिसने शास्त्रीय संगीत प्रस्तुति में नए दृष्टिकोणों को रेखांकित किया।

4. अपने कला प्रदर्शन करियर के साथ, श्रीमती गायत्री और श्रीमती रंजनी ने शिक्षकों के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वर्षों से, उन्होंने संरचित शिक्षण, कार्यशालाओं और व्याख्यान प्रदर्शनों के माध्यम से सैकड़ों छात्रों को प्रशिक्षित कर मार्गदर्शन प्रदान किया, जिसके द्वारा उन्होंने भावी पीढ़ियों के लिए कर्नाटक संगीत परंपरा को विकसित करने और बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

5. श्रीमती गायत्री और श्रीमती रंजनी को भारतीय शास्त्रीय संगीत में उनके योगदान के लिए तमिलनाडु सरकार से कलाइमामणि पुरस्कार, समागान मथांगा राष्ट्रीय पुरस्कार, संगीत कला शिरोमणि, वाणी कला सुधाकर, संस्कृति पुरस्कार और भारतीय विद्या भवन से लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड सहित कई सम्मान हासिल हुए।

DR. ANIL KUMAR RASTOGI

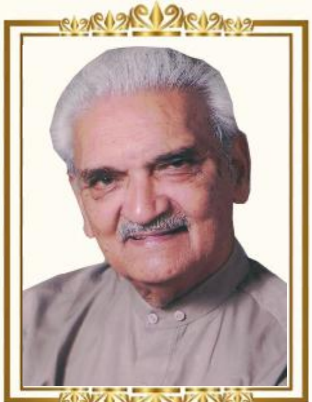

Dr. Anil Kumar Rastogi is a versatile personality having unique combination of an artist, a scientist and a philanthropist.

2. Born on 4th April 1943, Dr. Rastogi obtained his M.Sc. in Biochemistry from Lucknow University and later pursued a Ph.D. in Microbiology. He is a Fellow of National Academy of Sciences, India and his name appears in a list of 28 Accomplished Scientists of CDRI between 1951-2021. He has co-authored over 78 research publications in reputed peer-reviewed journals receiving wide academic recognition and citation. As scientist he served in Central Drug Research Institute (CDRI) from 1962 till 2003 and retired as Director Grade scientist and head of Biochemistry department.

3. Dr. Rastogi has been working in the media and entertainment industry for 64 years, having staged around 1000 shows of 100 plays all over the country. He staged his 100th play, Beyond the Curtain, in December 2025. He is leading the oldest amateur theatre group of northern India, Darpan (Estd. 1961) for the last 47 years and has helped make a mark for the group nationally. He has staged plays in more than 75 international, national and state theatre festivals. Apart from theatre, he has also worked in more than 70 feature films, more than 500 episodes of TV serials, 14 web series, 24 TV commercials and 250+ plays on radio.

4. Dr. Rastogi is President of Hari Om Sewa Kendra, the organization which has been providing free medicines, injections, blood, dialysis kits and transport to poor patients and destitute admitted to King George Medical University and free stay and lunch to their attendants for last 27 years.

5. Dr. Rastogi has received numerous honours, including the Sangeet Natak Academy Award, UP Sangeet Natak Academy Award, Yash Bharti Award, Kalidas Samman, Awadh Samman, Lifetime achievement award from Doordarshan, Uttar Pradesh, Bharat Ratan Urdu Award of UP Urdu Academy, Bharat Muni Award, Utpal Dutt Award, Shalaka Award, KP Saxena Award, Amrit Lai Nagar Samman , Saraswati Samman , Naushad Samman and many others. He is also a Fellow of Uttar Pradesh Sangeet Natak Academy.

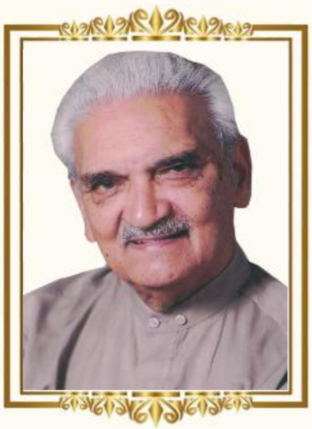

डॉ. अनिल कुमार रस्तोगी

डॉ. अनिल कुमार रस्तोगी एक कलाकार, एक वैज्ञानिक और एक परोपकारी का अनूठा मिश्रण हैं।

2. 4 अप्रैल 1943 को जन्मे, डॉ. रस्तोगी ने लखनऊ विश्वविद्यालय से जैव रसायन में एम.एससी. की डिग्री प्राप्त की और बाद में सूक्ष्म जीव विज्ञान में पीएचडी की। वह राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के फेलो हैं और उनका नाम 1951–2021 के बीच सीडीआरआई के 28 सिद्धहस्त वैज्ञानिकों की सूची में शामिल है। उन्होंने प्रतिष्ठित सहकर्मी–समीक्षित पत्रिकाओं में 78 से अधिक शोध प्रकाशनों का सह–लेखन किया है, जिन्हें व्यापक शैक्षणिक मान्यता और उद्धरण प्राप्त हुआ है। एक वैज्ञानिक के रूप में उन्होंने 1962 से 2003 तक केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआई) में सेवा की और निदेशक ग्रेड वैज्ञानिक और जैव रसायन विभाग के प्रमुख के रूप में सेवानिवृत्त हुए।

3. डॉ. रस्तोगी 64 वर्षों से मीडिया और मनोरंजन उद्योग में काम कर रहे हैं, जिन्होंने पूरे देश में 100 नाटकों के लगभग 1000 शो किए हैं। उन्होंने दिसंबर 2025 में अपने 100वें नाटक, बियॉन्ड द कर्टेन, का मंचन किया। वह पिछले 47 वर्षों से उत्तरी भारत के सबसे पुराने शौकिया थिएटर समूह, दर्पण (स्थापना 1961) का नेतृत्व कर रहे हैं और उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर समूह को एक छाप बनाने में मदद की है। उन्होंने 75 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और राज्य थिएटर समारोहों में नाटकों का मंचन किया है। थिएटर के अलावा, उन्होंने 70 से अधिक फीचर फिल्मों, टीवी धारावाहिकों के 500 से अधिक एपिसोडों, 14 वेब श्रृंखला, 24 टीवी विज्ञापनों और रेडियो पर 250 से अधिक नाटकों में भी काम किया है।

4. डॉ. रस्तोगी हरि ओम सेवा केंद्र के अध्यक्ष हैं, जो संगठन पिछले 27 वर्षों से किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी में भर्ती गरीब मरीजों और निराश्रितों को मुफ्त दवाएं, इंजेक्शन, रक्त, डायलिसिस किट और परिवहन प्रदान कर रहा है और उनके परिचारकों को मुफ्त में रहने की सुविधा और भोजन उपलब्ध करा रहा है। वह भारत के वरिष्ठतम शौकिया अभिनेताओं में से एक हैं जो प्रदर्शन कला के चार रूपों– थिएटर, रेडियो, टेलीविजन और फिल्म में योगदान करते हैं । अपने वैज्ञानिक करियर के साथ–साथ, उन्होंने 1962 में अपनी नाट्य यात्रा शुरू की और अभी भी थिएटर, टीवी और फिल्मों में सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं।

5. डॉ. रस्तोगी को संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, यूपी संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, यश भारती पुरस्कार, कालिदास सम्मान, अवध सम्मान, दूरदर्शन, उत्तर प्रदेश से लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, यूपी उर्दू अकादमी का भारत रत्न उर्दू पुरस्कार, भरत मुनि पुरस्कार, उत्पल दत्त पुरस्कार, शलाका पुरस्कार, केपी सक्सेना पुरस्कार, अमृत लाई नागर सम्मान, सरस्वती सम्मान, नौशाद सम्मान और कई अन्य सम्मान प्राप्त हुए हैं। वह उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के फेलो भी हैं।

PROF. (DR.) MAHENDRA NATH ROY

Prof. (Dr.) Mahendra Nath Roy is a Professor of Chemistry, Former Dean of Faculties of Science and Arts at the University of North Bengal and Founder Vice-Chancellor of Alipurduar University. He is widely recognized for his contributions to physical chemistry, particularly in the areas of host-guest inclusion complexes, nano particles, solution thermodynamics, surfactant and polymer chemistry. This has established him as a leading figure in chemical research and education in India.

2. Born on 10th April, 1961 in a simple farmer family in the village of Boxiganj in the district of Coochbehar, Prof. (Dr.) Roy received his M.Sc. in Chemistry, B.Ed., Ph.D. in Chemistry and DSA from North Bengal University. He began his career as a school teacher in a Government school then he joined as an Assistant Professor in the Department of Chemistry at Malda Government Teachers Training College. He joined the University of North Bengal as Assistant Professor and was subsequently promoted to the position of Professor. He served as Founder Vice-Chancellor of Alipurduar University and resumed his role as Professor in NBU. Under his leadership, he supervised/supervising over 85 Ph.D. students, reviewed 61 Ph.D. theses, and authored over 578 research articles and books in Chemistry.

3. Prof. (Dr.) Roy has led key research initiatives in physical chemistry and is a life member of several learned societies including the Indian Chemical Society, Indian Science Congress, Chemical Research Society of India, Journal of Teaching and Research in Chemistry, Polymer Society and Indian Society for Surface Science and Technology. He was also a Council Member of the Indian Chemical Society and Chemical Research Society of India. He visited several foreign countries for highlighting his research work and collaborated his work with several reputed institutions.

4. Prof. (Dr.) Roy's research pioneers green-synthesized metal-doped nanocomposites with excellent Fenton-like catalytic performance due to synergy, plus innovative metal-free PANI-based nanozymes mimicking natural enzymes for biomedical sensing, organic catalysis and electrocatalysis and his research work also highlights host-guest encapsulation to form inclusion complexes, enhancing drug solubility, bioavailability and controlled release while reducing toxicity, side effects and overdose risks. It extends benefits to food pigments, ionic liquids and pesticides, improving stability, antibacterial/antioxidant activity and environmental safety. Non covalent interaction insights advance medicinal chemistry and biochemistry.

5. Beyond academia, he is recognized as a social worker, particularly for his efforts in uplifting the common people. He has donated on several organisations and schools on behalf of his parents for the development of the society. He has engaged in various welfare activities, including community development and support for underprivileged groups, drawing from his own humble beginnings. He received the Panchanan Barma Sadbhabona Award from SODAR (Social Organization for community harmony and the Dooars Ratna for regional service).

6. Prof. (Dr.) Roy is the recipient of numerous awards and honours. He has been placed among the World's Top 2% Scientists and conferred the Fellow of the Royal Society of Chemistry (FRSC) from London, UK. The University Grants Commission awarded him the "One Time Grant" under basic scientific research. He received the Prof. Suresh C. Ameta Award from the Indian Chemical Society, the CRSI Bronze Medal 2017 from the Chemical Research Society of India, the Shiksha Ratna Award 2018 and Banga Bhushan Award 2022 from the Government of West Bengal, the Panchanan Barma Sadbhabona Award from SODAR Social Organization, the Best Professor in Chemistry from Dewang Mehta National Education Awards-2019 and the Vidyasagar Sanmanana for his outstanding contribution and excellencies in teaching and chemical research and administrative accomplishments throughout his career. He also received the CV Raman Prize 2024, the Shikha Jyoti Award 2023, Outstanding Contribution in Reviewing Awards by ACS, Elsevier, Springer, RSC etc and the Bharat Shiksha Awards 2023 from Govt, of India. His papers have been recognized as Most Cited in the Journal of Chemical and Engineering Data (American Chemical Society) and Most Downloaded in the Journal of Physics and Chemistry of Liquids (Taylor and Francis).

प्रो. (डॉ.) महेंद्र नाथ रॉय

प्रो. (डॉ.) महेंद्र नाथ रॉय रसायन विज्ञान के प्रोफेसर, उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय में विज्ञान और कला संकायों के पूर्व डीन और अलीपुरद्वार विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति हैं। उन्हें भौतिक रसायन विज्ञान, विशेष रूप से होस्ट–गेस्ट समावेशन कॉम्प्लेक्स, नैनो पार्टिकल्स, सोल्यूशन थर्मोडायनामिक्स, सर्फेक्टेंट और पॉलिमर रसायन विज्ञान के क्षेत्रों में उनके योगदान के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है। इसने उन्हें भारत में रासायनिक अनुसंधान और शिक्षा में एक अग्रणी व्यक्तित्व के रूप में स्थापित किया है।

2. 10 अप्रैल, 1961 को कूचबिहार जिले के बॉक्सिगंज गांव में एक साधारण किसान परिवार में जन्मे, प्रो. (डॉ.) रॉय ने उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय से रसायन विज्ञान में एम.एससी., बी.एड, पीएच.डी. और डीएसए की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत सरकारी स्कूल में एक स्कूल शिक्षक के रूप में की, फिर वह मालदा गवर्नमेंट टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज में रसायन विज्ञान विभाग में सहायक प्रोफेसर के रूप में शामिल हुए। उन्होंने उत्तरी बंगाल विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यभार संभाला और बाद में उन्हें प्रोफेसर के पद पर पदोन्नत किया गया। उन्होंने अलीपुरद्वार विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति के रूप में कार्य किया और एनबीयू में प्रोफेसर के रूप में अपनी भूमिका फिर से शुरू की। अपने नेतृत्व में उन्होंने 85 से अधिक पीएचडी छात्रों का पर्यवेक्षण / पर्यवेक्षण कर रहे हैं, 61 पीएच.डी थीसिस की समीक्षा की और रसायन विज्ञान में 578 से अधिक शोध लेख और पुस्तकें लिखीं।

3. प्रो. (डॉ.) रॉय ने भौतिक रसायन विज्ञान में अनेक प्रमुख अनुसंधान पहल का नेतृत्व किया है और वह इंडियन केमिकल सोसाइटी, इंडियन साइंस कांग्रेस, केमिकल रिसर्च सोसाइटी ऑफ इंडिया, जर्नल ऑफ टीचिंग एंड रिसर्च इन केमिस्ट्री, पॉलीमर सोसाइटी और इंडियन सोसाइटी फॉर सरफेस साइंस एंड टेक्नोलॉजी सहित कई विख्यात सोसाइटियों के आजीवन सदस्य हैं। वह भारतीय रासायनिक सोसायटी और भारत की रासायनिक अनुसंधान सोसायटी के परिषद सदस्य भी थे। उन्होंने अपने शोध कार्य की जानकारी देने के लिए कई देशों का दौरा किया और कई प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ अपने काम में सहयोग किया।

4. प्रो. (डॉ.) रॉय का शोध सहक्रिया के कारण उत्कृष्ट फेंटन जैसी उत्प्रेरक प्रदर्शन के साथ हरित–संश्लेषित धातु–डोप्ड नैनो कंपोजिट में अग्रणी है, साथ ही जैव चिकित्सा संवेदन, कार्बनिक उत्प्रेरण और इलेक्ट्रोकैटलिसिस के लिए प्राकृतिक एंजाइमों की नकल करने वाले अभिनव धातु–मुक्त पीएएनआई–आधारित नैनोजाइम्स और उनके शोध कार्य में विषाक्तता, दुष्प्रभावों और ओवरडोज जोखिम को कम करते हुए दवा घुलनशीलता, जैव उपलब्धता और नियंत्रित रिलीज को बढ़ाने के लिए समावेशन कॉम्प्लेक्स बनाने हेतु होस्ट–गेस्ट एनकैप्सुलेशन पर भी प्रकाश डाला गया है। यह खाद्य वर्णक, आयनिक तरल पदार्थ और कीटनाशकों को लाभ पहुंचाता है, और स्थिरता, जीवाणुरोधी / एंटीऑक्सिडेंट गतिविधि और पर्यावरणीय सुरक्षा में सुधार करता है। गैर–सहसंयोजक अंतःक्रिया अंतर्दृष्टि औषधीय रसायन विज्ञान और जैव रसायन को आगे बढ़ाती है।

5. शिक्षा के अलावा, वह विशेष रूप से आम जन को ऊपर उठाने में अपने प्रयासों के लिए एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने समाज के विकास के लिए अपने माता–पिता की ओर से कई संगठनों और स्कूलों को दान दिया है। वह अपनी छोटी सी शुरुआत से समुदाय विकास और वंचित समूहों के लिए सहायता सहित विभिन्न कल्याणकारी गतिविधियों से जुडे हुए हैं। उन्हें एसओडीएआर (सामुदायिक सद्भाव के लिए सामाजिक संगठन) से पंचानन बरमा में संलग्न सदभाबोना पुरस्कार और क्षेत्रीय सेवा के लिए डुअर्स रत्न प्राप्त हुआ है।

6. प्रो. (डॉ.) रॉय कई पुरस्कारों और सम्मानों के प्राप्तकर्ता हैं। उन्हें विश्व के शीर्ष 2% वैज्ञानिकों में रखा गया है और लंदन, यूके से रॉयल सोसाइटी ऑफ केमिस्ट्री (एफआरएससी) के फेलो से सम्मानित किया गया है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उन्हें बुनियादी वैज्ञानिक अनुसंधान के तहत ''वन टाइम ग्रांट'' से सम्मानित किया। उन्हें इंडियन केमिकल सोसाइटी से प्रो. सुरेश सी. अमेता पुरस्कार, केमिकल रिसर्च सोसाइटी ऑफ इंडिया से सीआरएसआई कांस्य पदक 2017, शिक्षा रत्न पुरस्कार 2018 और पश्चिम बंगाल सरकार से बंग भूषण पुरस्कार 2022, एसओडीएआर सामाजिक संगठन से पंचानन बरमा सदभाबोना पुरस्कार, देवांग मेहता राष्ट्रीय शिक्षा पुरस्कार–2019 से रसायन विज्ञान में सर्वश्रेष्ठ प्रोफेसर, और अपने पूरे करियर में शिक्षण और रासायनिक अनुसंधान और प्रशासनिक उपलब्धियों में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए विद्यासागर सम्मान प्राप्त हुआ है। उन्हें सीवी रमन पुरस्कार 2024, शिखा ज्योति पुरस्कार 2023, एसीएस, एल्सेवियर, स्प्रिंगर, आरएससी आदि द्वारा समीक्षा पुरस्कारों में उत्कृष्ट योगदान और भारत सरकार से भारत शिक्षा पुरस्कार 2023 भी प्राप्त हुए। उनके पत्रों को जर्नल ऑफ केमिकल एंड इंजीनियरिंग डेटा (अमेरिकन केमिकल सोसाइटी) में सबसे अधिक उद्धृत किया गया है और जर्नल ऑफ फिजिक्स एंड केमिस्ट्री ऑफ लिक्विड्स (टेलर एंड फ्रांसिस) में सबसे अधिक डाउनलोड किया गया है।

SHRI SATISH SHAH
(POSTHUMOUS)

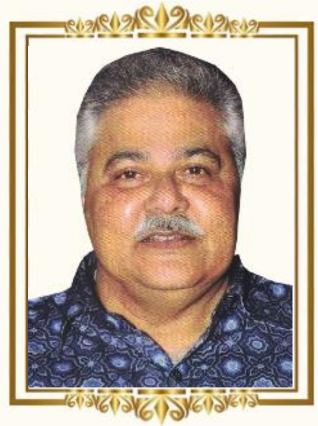

Shri Satish Shah was one of India's most respected and beloved actors in theatre, television and cinema, known for his impeccable comic timing, versatility, and deeply human performances. Trained at the Film and Television Institute of India (FTII), Pune, he built a remarkable career spanning more than four decades, becoming a household name across generations and contributing significantly to popular culture and the performing arts in India.

2. Born on 25th June, 1951 in Mumbai, Shri Shah was trained in theatre before making a seamless transition into films and television. He became widely popular through iconic television shows such as Yeh Jo Hai Zindagi, Filmi Chakkar and Sarabhai vs Sarabhai, which remains some of India's most celebrated sitcoms. These shows played a pioneering role in shaping Indian television comedy and his performances — marked by warmth, timing, and understated wit — made him one of the most recognizable faces of Indian television from the 1980s through the 2000s.

3. In cinema, Shri Shah worked with leading filmmakers and appeared in acclaimed films such as Jaane Bhi Do Yaaro, Main Hoon Na, Om Shanti Om, and numerous other mainstream and parallel films. His ability to balance humor with emotional depth has made him a valued character actor, earning admiration from both audiences and industry professionals.

4. Beyond acting, Shri Shah had been a mentor to young performers and has actively supported theatre and creative arts in Mumbai. His body of work reflects a lifelong commitment to storytelling, entertainment and cultural contribution. He continues to be celebrated as one of India's finest comic actors and performers.

5. Shri Shah has been honoured with several awards for his performance. He was honoured with Filmfare Award for Best performance in a comic role in Jaane Bhi Do Yaaro in 1985, Indian Television Academy Awards (2005) and Indian Telly Awards (2006) for best actor in a comic role in Sarabhai Vs Sarabhai and Indian Television Academy Awards for Best Actor – web series for Sarabhai Vs Sarabhai in 2017.

6. Shri Shah passed away on 25th October, 2025.

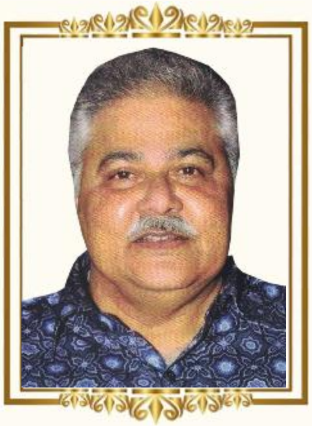

श्री सतीश शाह (मरणोपरांत)

श्री सतीश शाह रंगमंच, टेलीविजन और सिनेमा में भारत के सबसे सम्मानित और लोकप्रिय अभिनेताओं में से एक थे, जो अपनी बेमिसाल कॉमिक टाइमिंग, बहुमुखी प्रतिभा और गहरे मानवीय भावों के प्रदर्शन के लिए जाने जाते थे। इन्होंने फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एफटीआईआई), पुणे में प्रशिक्षण लिया और इनका चार दशकों से अधिक का उल्लेखनीय करियर रहा जिससे वह हर आयु वर्ग के एक परिचित कलाकर बन गए और इन्होंने भारत में लोकप्रिय संस्कृति और प्रदर्शन कलाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

2. 25 जून, 1951 को मुंबई में जन्मे, श्री शाह ने फिल्मों और टेलीविजन में आने से पूर्व रंगमंच का प्रशिक्षण लिया। ये जो है जिंदगी, फिल्मी चक्कर और साराभाई वर्सेस साराभाई जैसे प्रसिद्ध टेलीविजन धारावाहिकों से इन्हें घर–घर में पहचान मिली। ये आज भी भारत के सबसे प्रसिद्ध सिटकॉम में से एक हैं। इन धारावाहिकों ने भारतीय टेलीविजन हास्य–जगत को आकार देने में अग्रणी भूमिका निभाई और इनके अभिनय में गर्मजोशी, टाइमिंग और मजाकिया अंदाज का ऐसा मिश्रण था कि वह 1980 के दशक से 2000 के दशक तक भारतीय टेलीविजन का सबसे जाना–पहचाना चेहरा बन गए।

3. सिनेमा में, श्री शाह ने बड़े–बड़े फिल्म निर्माताओं के साथ काम किया। जाने भी दो यारो, मैं हूं ना, ओम शांति ओम और कई अन्य मुख्यधारा और समानांतर फिल्मों में वह नजर आए। हास्य के साथ–साथ भावनात्मक गहराई के बीच संतुलन बनाने की उनकी क्षमता ने इन्हें एक मूल्यवान चरित्र अभिनेता बना दिया। इनकी इन्हीं खूबी के कारण दर्शकों और उद्योग जगत से जुड़े लोगों, दोनों से प्रशंसा अर्जित की है।

4. अभिनय के अलावा, श्री शाह युवा कलाकारों के लिए एक मार्गदर्शक रहे हैं और इन्होंने मुंबई में रंगमंच और रचनात्मक कलाओं को सक्रिय रूप से समर्थन दिया है। इनका पूरा करियर किस्सागोई(स्टोरीटेलिंग), मनोरंजन और सांस्कृतिक योगदान के प्रति आजीवन लगाव को दर्शाता है। इनकी गिनती भारत के बेहतरीन हास्य अभिनेताओं और कलाकारों में होती है।

5. श्री शाह को उनकी अभिनय कला के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इन्हें वर्ष 1985 में जाने भी दो यारो में सर्वश्रेष्ठ हास्य भूमिका के लिए फिल्मफेयर पुरस्कार, वर्ष 2005 में साराभाई वर्सेस साराभाई में सर्वश्रेष्ठ हास्य अभिनेता के लिए भारतीय टेलीविजन अकादमी पुरस्कार और वर्ष 2017 में साराभाई बनाम साराभाई के लिए वेब श्रृंखला में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के लिए भारतीय टेलीविजन अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

6. श्री शाह का निधन 25 अक्टूबर, 2025 को हुआ।

PROF. PRATEEK SHARMA

Prof. Prateek Sharma is a Professor of Medicine at the University of Kansas School of Medicine and holds the Elaine Blaylock Endowed Professorship at the Kansas University Cancer Center. An internationally recognized leader in gastroenterology and endoscopic innovation, he has been at the forefront of integrating artificial intelligence, advanced imaging, digital health and sustainable healthcare solutions into the diagnosis and management of gastrointestinal diseases, particularly esophageal disorders, GERD and Barrett's esophagus. He is a world-renowned physician, teacher, and educator.

2. Born on 4th October, 1967, Prof. Sharma completed his medical education at the M.S. University and Baroda Medical College, Baroda, Gujarat. He then finished his internal medicine residency at the Medical College of Wisconsin in Milwaukee and his gastroenterology fellowship at the University of Arizona in Tucson. He serves as President of the American Society for Gastrointestinal Endoscopy (ASGE) and the chair of the Artificial Intelligence Institute for Gastroenterology, as well as a member of the United Nations' Internet Governance Forum (Coalition on Digital Health), reflecting his global leadership in responsible AI adoption in healthcare.

3. Prof. Sharma is a world-renowned authority in the field of Artificial intelligence, gastroenterology, endoscopy and GI cancers. He has devoted his career towards the better diagnosis and treatment of patients with gastrointestinal diseases and cancer. His innovating work in the AI space will ultimately provide more equitable, affordable, and high-quality healthcare. He has invented the Prague classification system for Barrett's esophagus/ esophageal cancer and techniques for the non-surgical treatment of gastrointestinal cancers using endoscopic resection and ablation, that has been the standard of treatment globally.

4. Prof. Sharma has authored more than 550 peer-reviewed publications, guidelines and book chapters and continues to publish in high-impact journals including the New *England Journal of Medicine, JAMA*, *Annals of Internal Medicine*, *Gastroenterology, American Journal of Gastroenterology and Gastrointestinal Endoscopy.* His scholarship includes guidelines and white papers on gastrointestinal cancers, the responsible use of AI in healthcare and frameworks for AI-enabled endoscopy.

5. Prof. Sharma has received several international honours, including the World Endoscopy Organization (WEO) Master Educator Award, the American Gastroenterological Association (AGA) Research Mentor Award and the ASGE Distinguished Endoscopic Mentoring Award. He is also a recipient of the prestigious VAIBHAV fellowship in recognition of his contributions to AI in healthcare.

प्रो. प्रतीक शर्मा

प्रो. प्रतीक शर्मा यूनिवर्सिटी ऑफ कंसास स्कूल ऑफ मेडिसिन में मेडिसिन के प्रोफेसर हैं और उनके पास कंसास यूनिवर्सिटी कैंसर सेंटर में एलेन ब्लेलॉक एंडॉएड प्रोफेसरशिप है। गैस्ट्रोएंटरोलॉजी और एंडोस्कोपिकनवाचार में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात वह, गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल रोगों, विशेष रूप सेएसोफीगल विकारों, जीईआरडी और बैरेटइसोफेगस के निदान और प्रबंधन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, उन्नतइमेजिंग, डिजिटल स्वास्थ्य और बेहतर स्वास्थ्य देखभाल समाधानों को एकीकृत करने में अग्रणी रहे हैं। वह एक विश्व–प्रसिद्ध चिकित्सक, शिक्षक और शिक्षाविद् है।

2. 4 अक्टूबर, 1967 को जन्मे, प्रो. शर्मा ने अपनी मेडिकल शिक्षा एम.एस. विश्वविद्यालय और बड़ौदा मेडिकल कॉलेज, बड़ौदा, गुजरात से पूरी की। इसके बाद उन्होंने मिल्वौकी में विस्कॉन्सिन मेडिकल कॉलेज में अपनी इंटरनल मेडिसीन रेजीडेंसी और टक्सन में एरिजोना विश्वविद्यालय में अपनी गैस्ट्रोएंटरोलॉजी फेलोशिप पूरी की। वह अमेरिकन सोसाइटी फॉर गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल एंडोस्कोपी (एएसजीई) के अध्यक्ष और गैस्ट्रोएंटरोलॉजी के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इंस्टीट्यूट के अध्यक्ष के साथ–साथ संयुक्त राष्ट्र के इंटरनेट गवर्नेंस फोरम (डिजिटल स्वास्थ्य पर गठबंधन) के सदस्य के रूप में कार्यरत हैं, जो स्वास्थ्य सेवा में जिम्मेदारीपूर्ण अंगीकरण एआई अपनाने में उनके वैश्विक नेतृत्व को दर्शाता है।

3. प्रो. शर्मा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, गैस्ट्रोएंटरोलॉजी, एंडोस्कोपी और जीआई कैंसर के क्षेत्र में एक विश्व प्रसिद्ध विशेषज्ञ हैं। उन्होंने गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल रोगों और कैंसर के रोगियों के बेहतर निदान और उपचार के लिए अपना करियर समर्पित किया है। एआई क्षेत्र में उनका नवोन्वेषी कार्य अंततः अधिक न्यायसंगत, किफायती और उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवा प्रदान करेगा। उन्होंने बैरेट के एसोफैगस/एसोफैगल कैंसर के लिए प्राग वर्गीकरण प्रणाली और एंडोस्कोपिक रिसेक्शन और एब्लेशन का उपयोग करके गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल कैंसर के गैर–सर्जिकल उपचार के लिए तकनीकों का आविष्कार किया है, जो विश्व स्तर पर उपचार का मानक रहा है।

4. प्रो. शर्मा ने 550 से अधिक प्रशंसित पत्र, दिशानिर्देश और पुस्तक अध्याय लिखे हैं और न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन, जेएएमए, एनल्स ऑफ इंटरनल मेडिसिन, गैस्ट्रोएंटरोलॉजी, अमेरिकन जर्नल ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी और गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल एंडोस्कोपी सहित प्रभावशाली पत्रिकाओं में उनके लेख प्रकासित होते रहे हैं। उनके विद्वतापूर्ण कार्यों में गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल कैंसर पर दिशानिर्देश और श्वेत पत्र, स्वास्थ्य सेवा में एआई का जिम्मेदाराना उपयोग और एआई–सक्षम एंडोस्कोपी की रूपरेखा शामिल हैं।

5. प्रो. शर्मा को कई अंतरराष्ट्रीय सम्मान मिले हैं, जिनमें वर्ल्ड एंडोस्कोपी ऑर्गनाइजेशन (डब्ल्यूईओ) मास्टर एजुकेटर अवार्ड, अमेरिकन गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिकल एसोसिएशन (एजीए) रिसर्च मेंटर अवार्ड और एएसजीई डिस्टिंग्विश्ड एंडोस्कोपिक मेंटरिंग अवार्ड शामिल हैं। वह स्वास्थ्य सेवा में एआई संबंधी अपने योगदान के लिए प्रतिष्ठित वैभव फेलोशिप के प्राप्तकर्ता भी हैं।

SHRI ROHIT GURUNATH SHARMA

Shri Rohit Gurunath Sharma is one of India's most distinguished international cricketers and a former captain of the Indian national cricket team. Renowned for his elegant batting and exceptional leadership qualities, he has played a pivotal role in shaping India's modern white-ball cricket dominance. He is widely regarded as one of the finest opening batsmen in the history of the game and a transformative leader in Indian cricket.

2. Born on 30th April, 1987, Shri Sharma has represented India across all formats of international cricket with remarkable consistency and excellence. Over the course of his illustrious career, he has established numerous batting records and has been instrumental in several historic victories for India. His contribution to Indian cricket extends beyond individual brilliance, marked by his ability to inspire team success at the highest level.

3. As captain of the Indian National team, Shri Sharma led India to significant global triumphs, including victory in the ICC Men's T20 World Cup 2024 and the ICC Champions Trophy 2025. His calm leadership, tactical acumen and exceptional batting performances have been widely acknowledged as key factors behind India's sustained success in international tournaments. In the Indian Premier League, he has enjoyed an unparalleled leadership record with the Mumbai Indians franchise, guiding the team to five IPL titles and one Champions League T20 title. Under his captaincy, Mumbai Indians emerged as one of the most successful franchises in the history of the league, setting benchmarks in team culture, performance consistency and championship success.

4. Shri Sharma's individual batting achievements are equally extraordinary. He holds the world record for the highest individual score in One Day International cricket and is the only player in history to have scored three double centuries in the ODI format. He also holds the record for the most sixes in international cricket, underlining his ability to combine classical technique with exceptional power-hitting.

5. In recognition of his outstanding contribution to Indian sport, Shri Sharma has been honoured with several prestigious awards. He is a recipient of the Arjuna Award and the Major Dhyan Chand Khel Ratna Award, India's highest sporting honour. He was also awarded the ICC Golden Bat for the Cricket World Cup 2019 in recognition of his exceptional batting performance during the tournament. In addition to his sporting achievements, he has been named the Brand Ambassador of the ICC Men's T20 World Cup 2026, acknowledging his stature as a global sporting icon and role model for aspiring athletes.

श्री रोहित गुरुनाथ शर्मा

श्री रोहित गुरुनाथ शर्मा भारत के सबसे जाने–माने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटरों में से एक हैं और भारतीय राष्ट्रीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान हैं। वह अपनी शानदार बल्लेबाजी और असाधारण नेतृत्व गुणों के लिए प्रसिद्ध हैं। इन्होंने भारत के आधुनिक व्हाइट बाल के क्रिकेट में दबदबे को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनकी ख्याति खेल के इतिहास में सबसे बेहतरीन सलामी बल्लेबाज और भारतीय क्रिकेट में व्यापक परिवर्तन लाने वाले नायक के रूप में है।

2. 30 अप्रैल, 1987 को जन्मे, श्री शर्मा ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के सभी प्रारूपों में उल्लेखनीय निरंतरता और उत्कृष्टता के साथ भारत का प्रतिनिधित्व किया है। अपने इस शानदार करियर में, इन्होंने बल्लेबाजी के कई रिकॉर्ड स्थापित किए हैं और भारत के लिए कई ऐतिहासिक जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय क्रिकेट में उनका योगदान व्यक्तिगत प्रतिभा से भी परे है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण उत्कृष्ट सफलता प्राप्त करने के लिए टीम को प्रेरित करने की उनकी क्षमता है।

3. भारतीय राष्ट्रीय टीम के कप्तान के रूप में, श्री शर्मा ने भारत को उल्लेखनीय वैश्विक जीत की ओर अग्रसर किया, इनमें आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप 2024 और आईसीसी चौंपियंस ट्रॉफी 2025 शामिल हैं। इनके शांत नेतृत्व, खेल संबंधी सूझबूझ और असाधारण बल्लेबाजी प्रदर्शन को अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों में भारत की निरंतर सफलता के पीछे का मुख्य कारक माना गया है। इंडियन प्रीमियर लीग में, मुंबई इंडियंस फ्रेंचाइजी के साथ उनका नेतृत्व रिकॉर्ड अद्वितीय रहा है, जहां इन्होंने टीम को पांच आईपीएल खिताब और एक चौंपियंस लीग टी20 खिताब दिलाया है। इनकी कप्तानी में, मुंबई इंडियंस, लीग के इतिहास में सबसे सफल फ्रेंचाइजी में से एक बनकर उभरी, जिसने टीम संस्कृति, प्रदर्शन की निरंतरता और चौम्पियनशिप सफलता में नए मानक स्थापित किए।

4. श्री शर्मा की व्यक्तिगत बल्लेबाजी उपलब्धियां भी उतनी ही असाधारण हैं। इनके पास एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर का विश्व रिकॉर्ड है और वह क्रिकेट इतिहास में एकमात्र ऐसे खिलाड़ी हैं जिन्होंने एक दिवसीय प्रारूप में तीन दोहरे शतक बनाए हैं। इनके नाम अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सर्वाधिक छक्कों का रिकॉर्ड भी दर्ज है, जो इनकी उत्कृष्ट प्रहार क्षमता के साथ क्लासिकल तकनीक के अद्भुत समन्वय को दर्शाता है।

5. भारतीय खेल में उनके उत्कृष्ट योगदान को देखते हुए, श्री शर्मा को कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इन्हें अर्जुन पुरस्कार और भारत का सर्वोच्च खेल सम्मान मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार प्राप्त है। इन्हें टूर्नामेंट के दौरान असाधारण बल्लेबाजी के प्रदर्शन के लिए क्रिकेट विश्व कप 2019 के लिए आईसीसी गोल्डन बैट से भी सम्मानित किया गया था। अपनी खेल उपलब्धियों के अलावा, इन्हें आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप 2026 का ब्रांड एंबेसडर नियुक्त किया गया है, जो दिखाता है कि वह दुनिया भर के खिलाड़ियों के लिए खेल आइकन हैं और प्रेरणास्रोत के रूप में उनके रोल मॉडल हैं।

SARDAR INDERJIT SINGH SIDHU

Sadar Inderjit Singh Sidhu is an inspirational former IPS officer retired as Deputy Inspector General (DIG) from Punjab Police, who widely recognised as the 'Broom warrior. He has earned nationwide admiration for his quiet yet powerful commitment to cleanliness.

2. Born on 6th June 1938 in Village Gagarpur, District Sangrur, Punjab, Shri Sidhu led a life defined by discipline, integrity and unwavering public service. After graduating with a Degree in Bachelor of Arts from Government Ranbir College, Sangrur, he obtained a Master's degree in Economics from Mahindra College, Patiala. During his college years, he distinguished himself in boxing, earning the prestigious College Colour Award and securing a place in the Roll of Honour in Sports twice as champion amongst all universities in Punjab. His inclination toward social responsibility was evident during NCC camps, where he was recognized for voluntary social service and cleanliness initiatives.

3. Shri Sidhu joined the Punjab Police as an Inspector in 1963. In 1981, he was promoted to the Indian Police Service (IPS). During his distinguished career, he served in Punjab, Haryana, Himachal Pradesh, New Delhi and Kolkata. He also rendered service in the Sambha Sector during the 1971 Indo-Pak conflict. In recognition of his exemplary record, he was awarded the Police Medal for Meritorious Service in 1991. He retired in 1996 as Deputy Inspector General (Intelligence), Punjab, from Chandigarh.

4. Post-retirement, Shri Sidhu firm believer in civic responsibility and cleanliness, began dedicating himself to maintaining public spaces in Chandigarh. A regular morning walker, he was disturbed by the deteriorating condition of parks and pathways. He began personally collecting litter during his daily walks.

5. For nearly three decades, Shri Sidhu has voluntarily cleaned parks, streets and public spaces, written to authorities for improved sanitation, motivated cleaning staff and led by example. Despite indifference and discouragement from others, he remained resolute. What began as a personal act of conscience evolved into a lifelong mission. Long before the launch of the National Swachh Bharat Mission, he had already been practicing and promoting its very ideals through consistent personal action, embodying the spirit of citizen-led cleanliness and civic responsibility. Even in advanced age, prioritizing action over complaint, he continues to work tirelessly to restore and preserve the natural beauty and civic pride of Chandigarh. His life reflects humility, discipline and selfless service — both in uniform and beyond it.

सरदार इंदरजीत सिंह सिद्धू

सरदार इंदरजीत सिंह सिद्धू पंजाब पुलिस से उप महानिरीक्षक (डीआईजी) के रूप में सेवानिवृत्त एक प्रेरणादायक पूर्व आईपीएस अधिकारी हैं, जिन्हें व्यापक रूप से ''झाड़ू योद्धा'' के रूप में जाना जाता है। उन्होंने स्वच्छता के प्रति अपनी मौन लेकिन शक्तिशाली प्रतिबद्धता के लिए राष्ट्रव्यापी प्रशंसा हासिल की है।

2. 6 जून, 1938 को पंजाब के संगरूर जिले के गागरपुर गांव में जन्मे, श्री सिद्धू ने अनुशासन, सत्यनिष्ठा और अटूट सार्वजनिक सेवा से युक्त जीवन व्यतीत किया। संगरूर के गवर्नमेंट रणबीर कॉलेज से बैचलर ऑफ आर्ट्स में स्नातक की डिग्री के बाद उन्होंने महिंद्रा कॉलेज, पटियाला से अर्थशास्त्र में मास्टर डिग्री प्राप्त की। अपने कॉलेज के वर्षों के दौरान, उन्होंने मुक्केबाजी में शोहरत हासिल की, प्रतिष्ठित कॉलेज कलर अवार्ड हासिल किया और पंजाब के सभी विश्वविद्यालयों के बीच चैंपियन के रूप में दो बार स्पोर्ट्स में रोल ऑफ ऑनर में जगह हासिल की। एनसीसी शिविरों के दौरान सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति उनका झुकाव स्पष्ट था, जहां उन्हें स्वैच्छिक समाज सेवा और स्वच्छता पहल के लिए जाना जाता था।

3. श्री सिद्धू वर्ष 1963 में पंजाब पुलिस में एक निरीक्षक के रूप में शामिल हुए। वर्ष 1981 में, उन्हें भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) में पदोन्नत किया गया। अपने विशिष्ट करियर के दौरान, उन्होंने पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, नई दिल्ली और कोलकाता में अपनी सेवाएं प्रदान की। उन्होंने 1971 के भारत–पाक संघर्ष के दौरान सांबा सेक्टर में भी सेवा प्रदान की। उनके अनुकरणीय रिकॉर्ड को देखते हुए, उन्हें 1991 में सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक से सम्मानित किया गया था। वह 1996 में चंडीगढ़ से पंजाब के उप महानिरीक्षक (आसूचना) के पद से सेवानिवृत्त हुए थे।

4. सेवानिवृत्ति के बाद, श्री सिद्धू ने नागरिक जिम्मेदारी और स्वच्छता में विश्वास करते हुए चंडीगढ़ में सार्वजनिक स्थानों के अनुरक्षण के लिए खुद को समर्पित कर दिया। वह नियमित रूप से सुबह टहलते थे और पार्कों और रास्तों की बिगड़ती स्थिति से परेशान थे। उन्होंने अपनी दैनिक सैर के दौरान खुद से कूड़ा साफ करना शुरू कर दिया।

5. लगभग तीन दशकों से, श्री सिद्धू ने स्वेच्छा से पार्कों, सड़कों और सार्वजनिक स्थानों की सफाई की है, बेहतर स्वच्छता के लिए अधिकारियों को पत्र लिखा, सफाई कर्मचारियों को प्रेरित किया और दूसरों के लिए उदाहरण पेश किया। दूसरों की उदासीनता और निराशा के बावजूद, वह दृढ़ रहे। अपनी अंतः चेतना से शुरू हुआ एक व्यक्तिगत कार्य जीवन भर का मिशन बन गया। राष्ट्रीय स्वच्छ भारत मिशन के शुभारंभ से बहुत पहले, वह नागरिकों के नेतृत्व में स्वच्छता और सिविक जिम्मेदारी की भावना को मूर्त रूप देते हुए सतत् व्यक्तिगत कार्रवाई के जरिए इसके आदर्शों का अभ्यास और प्रचार कर रहे थे। बढ़ती उम्र में भी, शिकायत पर कार्रवाई को प्राथमिकता देते हुए, वह चंडीगढ़ की प्राकृतिक सुंदरता और नागरिक गौरव को बहाल करने और संरक्षित करने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। वर्दी में और उससे परे दोनों में उनका जीवन विनम्रता, अनुशासन और निस्वार्थ सेवा की मिसाल है।

SHRI RAGHUPAT SINGH (POSTHUMOUS)

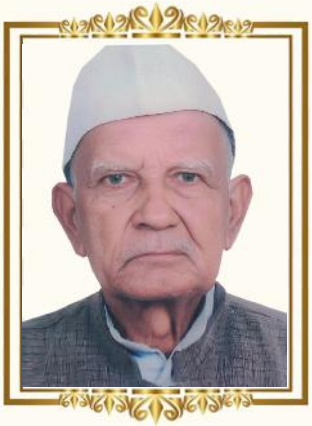

Shri Raghupat Singh was a famous agriculturist, who was known for his work on conservation and promotion of traditional seeds.

2. Born on 27th October, 1944 in Samathal village, Distt. Moradabad, Uttar Pradesh, Shri Singh studied at a village school in Samathal. Later, he completed his higher education with an M.A. in Geography and M.A. in Political Science from S.M. Degree College, Chandausi, Distt. Sambhal. After that, he completed his LL.B. from K.G.K. College, Moradabad.

3. Shri Singh's father had deep knowledge of farming and he also gained special agricultural knowledge from him and worked diligently in the agricultural field. He learned and promoted seed conservation. He worked on the conservation and development of seeds, especially pulses, oilseeds, wheat and rice. He also worked on rajma, lentils and moong. He worked on various vegetables such as bottle gourd, ridge gourd, bitter gourd, okra, cauliflower, cucumber, beans, yam, carrot, peas, cabbage, beetroot and arbi (taro). He planted papaya, mango, apple, lemon, fig, sweet lime, tejpat (bay leaf) and guava trees. Conservation and promotion of traditional seeds remained his primary work.

4. Shri Singh was also active in social life. He contested the Legislative Assembly election from Chandausi constituency as an independent candidate in 1980 and 1985, but did not win. Later, he won the election as a member of the Block Panchayat Bilari in 1995 and again in 2020, remaining a member until his death.

5. Shri Singh was honoured with several awards. He received 13 national awards and 18 awards from the Government of Uttar Pradesh. He served as a member of agricultural programs at Akashvani Rampur and was later awarded the title of "Krishi Pandit".

6. Shri Singh passed away on 1st July, 2025.

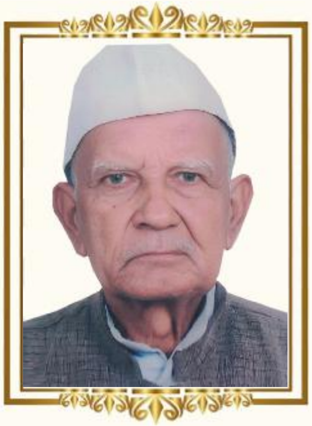

श्री रघुपत सिंह (मरणोपरांत)

श्री रघुपत सिंह एक प्रसिद्ध कृषि विशेषज्ञ थे, जिन्हें पारंपरिक बीजों के संरक्षण और प्रचार के लिए जाना जाता था।

2. 27 अक्टूबर, 1944 को उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले के समथल गाँव में जन्मे, श्री सिंह ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा समथल के ग्राम विद्यालय से प्राप्त की। इसके बाद, उन्होंने एस.एम. डिग्री कॉलेज, चंदौसी, संभल से भूगोल और राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की। तत्पश्चात् उन्होंने के.जी.के. कॉलेज, मुरादाबाद से एल.एल.बी. की डिग्री हासिल की।

3. श्री सिंह के पिता को खेती का गहन ज्ञान था और श्री सिंह ने भी उनसे विशेष कृषि ज्ञान प्राप्त किया तथा कृषि क्षेत्र में मेहनतपूर्वक कार्य किया। उन्होंने बीज संरक्षण को सीखा और इसका प्रचार किया। उन्होंने बीजों के संरक्षण और संवर्धन, विशेष रूप से दालें, तिलहन, गेहूं और धान, पर काम किया। उन्होंने राजमा, मसूर और मूँग पर भी कार्य किया। उन्होंने लौकी, तुरई, करेला, भिंडी, फूलगोभी, खीरा, फली, सुरन, गाजर, मटर, पत्ता गोभी, चुकंदर और अरबी जैसी विभिन्न सब्जियों पर भी काम किया। उन्होंने पपीता, आम, सेब, नींबू, अंजीर, मौसंबी, तेजपत्ता और अमरूद के वृक्ष लगाए। पारंपरिक बीजों का संरक्षण और प्रचार उनका मुख्य कार्य बना रहा।

4. श्री सिंह सामाजिक जीवन में भी सक्रिय भूमिका निभाते रहे। उन्होंने 1980 और 1985 में चंदौसी विधानसभा क्षेत्र से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में विधानसभा चुनाव लड़ा, किंतु सफलता प्राप्त नहीं कर सके। इसके पश्चात् वर्ष 1995 में वह बिलारी ब्लॉक पंचायत के सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए तथा 2020 में पुनः इस पद के लिए चुने गए और अपने निधन तक सदस्य के रूप में कार्यरत रहे।

5. श्री सिंह को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें 13 राष्ट्रीय पुरस्कार और उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 18 पुरस्कार प्राप्त हुए। वह आकाशवाणी रामपुर के कृषि कार्यक्रमों से सदस्य के रूप में जुड़े रहे और बाद में उन्हें "कृषि पंडित" की उपाधि से सम्मानित किया गया।

6. श्री सिंह का 1 जुलाई, 2025 को निधन हो गया।

SHRI KHEM RAJ SUNDRIYAL

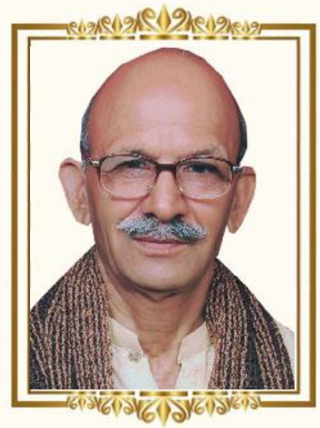

Shri Khem Raj Sundriyal, President of The Vishnu Handloom P.C.I.S Ltd. is a towering figure in India's handloom and tapestry weaving heritage with over five decades of experience. He has not only mastered the intricate art of weaving but has also shaped generations of artisans through his compassionate mentorship and visionary leadership. He is widely recognized across the world for his role in pioneering the traditional weaving to international level.

2. Born on 05th February,1943 in a humble family in Sumari village Uttarakhand, Shri Sundriyal secured his diploma in Handloom technology from Government Industrial Training Institute, Srinagar, Uttarakhand. His journey from tilling fields to transforming India's textile landscape reflects unmatched perseverance, discipline and devotion to excellence.

3. Shri Sundriyal joined Weavers Service Centre Delhi in 1967 as a weaver and started his journey in the field of handloom. After retiring from his job, he founded The Vishnu Handloom P.C.I.S Ltd. in 2001- a co-operative handloom society and served as president where he trained several local weavers into skilled weavers. Beyond innovation, his legacy shines through his role as an inspiring teacher and cultural torchbearer. He trained over ten thousand weavers and students from renowned institutions across the country.

4. Shri Sundriyal articulated and implemented Hattah technique in Punja duree loom by replacing punja and improved efficiency of weavers, also in 1980 he introduced polyester yarn in handloom under petrofil project. He undertook project in 1986 in which he weaved animal figures through jacquard loom. In 2001, he enhanced jamdani weaving in woollen yarn, earning a certificate of merit and served as a visiting lecturer at Lalit Kala Academy, IICD Jaipur.

5. Shri Sundriyal is the recipient of numerous award and honours. He received Sant Kabir award in 2009 by the Government of India, Certificate of Merit in 2001 by the Government of India, Certificate of Merit by the Government of Haryana in 2018, Delhi State Handicraft Award in 1999, Thakur Ved Ram National Award in 2011 for handloom weaving. He was chosen as the significant promoter of Handloom in Panipat by District Administration Panipat, Haryana in 2016.

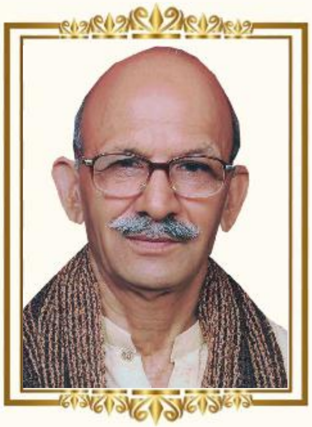

श्री खेमराज सुंद्रियाल

विष्णु हथकरघा पीसीआईएस लिमिटेड के अध्यक्ष, श्री खेमराज सुंद्रियाल, पांच दशकों से अधिक के अनुभव के साथ भारत की हथकरघा और टेपेस्ट्री बुनाई विरासत में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। उन्होंने न केवल बुनाई की जटिल कला में महारत हासिल की, बल्कि अपने करूणामय मार्गदर्शन और दूरदर्शी नेतृत्व के माध्यम से कारीगरों की पीढ़ियों को भी कुशल बनाया। उन्हें दुनिया भर में पारंपरिक बुनाई को अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने में अग्रणी भूमिका के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है।

2. 05 फरवरी, 1943 को उत्तराखंड के सुमरी गांव में एक साधारण परिवार में जन्मे, श्री सुंद्रियाल ने सरकारी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, श्रीनगर, उत्तराखंड से हथकरघा प्रौद्योगिकी में डिप्लोमा हासिल किया। खेतों की जुताई से लेकर भारत में वस्त्र परिदृश्य को बदलने तक की उनकी यात्रा अद्वितीय दृढ़ता, अनुशासन और उत्कृष्टता के प्रति समर्पण को दर्शाती है।

3. श्री सुंद्रियाल ने वर्ष 1967 में बुनकर सेवा केंद्र दिल्ली में एक बुनकर के रूप में कार्य करना शुरू किया और हथकरघा के क्षेत्र में कदम रखा। सेवानिवृत्त होने के बाद, उन्होंने वर्ष 2001 में द विष्णु हैंडलूम पीसीआईएस लिमिटेड, एक सहकारी हथकरघा सोसायटी की स्थापना की और वहाँ अध्यक्ष के रूप में कार्य करके कई स्थानीय बुनकरों को प्रशिक्षित कर कुशल बुनकर बनाया। नवाचार के अतिरिक्त, उन्होंने प्रेरणादायक शिक्षक और सांस्कृतिक पथप्रदर्शक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने देश भर के प्रसिद्ध संस्थानों में दस हजार से अधिक बुनकरों और छात्रों को प्रशिक्षित किया।

4. श्री सुंद्रियाल ने पुंजा को बदलकर पुंजा दुरी लूम में हट्टा तकनीक को व्यक्त कर कार्यान्वित किया और बुनकरों की दक्षता में सुधार किया, साथ ही वर्ष 1980 में उन्होंने पेट्रोफिल परियोजना के तहत हथकरघा में पॉलिएस्टर यार्न की शुरुआत की। उन्होंने वर्ष 1986 में एक परियोजना शुरू की जिसमें उन्होंने जैक्वार्ड लूम के माध्यम से जानवरों के आकार बनाए। वर्ष 2001 में, उन्होंने ऊनी धागे में जामदानी बुनाई को बढ़ावा दिया जिसके लिए उन्हें योग्यता प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ और उन्होंने ललित कला अकादमी, आईआईसीडी जयपुर में अतिथि व्याख्याता के रूप में कार्य किया।

5. श्री सुंद्रियाल को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें वर्ष 2009 में भारत सरकार द्वारा संत कबीर पुरस्कार, वर्ष 2001 में भारत सरकार द्वारा योग्यता प्रमाण पत्र, वर्ष 2018 में हरियाणा सरकार द्वारा योग्यता प्रमाण पत्र, वर्ष 1999 में दिल्ली राज्य हस्तशिल्प पुरस्कार, वर्ष 2011 में हथकरघा बुनाई के लिए ठाकुर वेद राम राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें वर्ष 2016 में हरियाणा के जिला प्रशासन पानीपत द्वारा पानीपत में हथकरघा के महत्वपूर्ण प्रचारक के रूप में चुना गया।

DR. BUDHRI TATI

Dr. Budhri Tati, President of the Maa Shakhini Mahila Utthan Kendra, Hiranar, is known for continuously working to educate women in the tribal areas and empower them with self-reliance in self-employment. She has also participated in social service activities in Naxal-affected areas.

2. Born on 15th September, 1966 into a poor family in the village of Hiranar, Sudarshanchal, Bastar, Dr. Budhri at the age of 15, received initiation from Swami Sada Premanand Ji Maharaj, founder of the Ohumar Gunda Ashram, along with Divya Jeevan, in 1981. She joined the All-India Vanvasi Kalyan Ashram on January 24,1984, and received training in social work as a volunteer at the Rashtriya Sevika Samiti, Nagpur. In 1986, the beginning of women's awakening and empowerment was made by making Barsur the center of an intensive trek through the rugged forest areas of Bastar district. In 1990, a girls' hostel was inaugurated in Barsur with 11 girls. Presently, a free hostel for 50 girls is being run in village Hauranar, the students of the hostel are given education from primary education to higher education.

3. Dr. Budhri, with the help of social support, started training for women for self-employment by constructing a permanent women's training center building in Barsur. By building the Hiranar Women's Upiiftment Center, they are working to empower women with self- reliance. In the Bal Sanskaar Kendra, children between age of three to five are taught short stories, poems, playful counting, jokes and good manners. In the area of social harmony, efforts are made to connect tribal and forest dwellers through the unbreakable bond of love and the festival of Rakshabandhan. In the area of education, tribal villages are visited to encourage parents to send their children to school. The Maa Sharda Girls' Hostel has been operating continuously, free of charge, since 2013. A conference of tribal women Mata Shakti Sammelan is held on 30th January at the Women's Upiiftment Center, Hiranar.

4. Dr. Budhri has received several awards in recognition of her works such as Bharatiya Stree Shakti Puraskar in 1998 at Nagpur, Minimata award for women's upliftment from Chhattisgarh State Government in 2007, Rani Gaidinliu Award from Devi Ahilya Smarak Samiti, Nagpur in 2014, Mahatma Jyotiba First Fellowship award in 2018, Sant Ishwar Vishisht Seva Samman in 2018 and Baap Kavi Award from Maharishi Karve Training Institute, Pune in 2022. She was awarded honorary Doctor of Philosophy degree from Pandit Sundarlal Sharma open University, Bilaspur, Chhattisgarh. She has also been honoured by several organization.

डॉ. बुधरी ताती

माता शखिनी महिला उत्थान केंद्र, हिरनार की अध्यक्ष डॉ. बुधरी ताती आदिवासी क्षेत्रों में महिलाओं को शिक्षित करने और उन्हें स्वरोजगार में आत्मनिर्भर बनाने के अपने निरंतर प्रयासों के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में सामाजिक सेवा गतिविधियों में भी भाग लिया है।

2. 15 सितंबर, 1966 को बस्तर के सुदर्शनचाल, हिरनार गाँव में एक गरीब परिवार में जन्मी, डॉ. बुधरी ने वर्ष 1981 में 15 वर्ष की आयु में दिव्य जीवन के साथ ओहुमार गुंडा आश्रम के संस्थापक, स्वामी सदा प्रेमानंद जी महाराज से दीक्षा प्राप्त की। 24 जनवरी, 1984 को वे अखिल–भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम से जुड़ीं और नागपुर की राष्ट्रीय सेविका समिति में स्वयंसेवक के रूप में सामाजिक कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया। वर्ष 1986 में इन्होंने बस्तर जिले के दुर्गम जंगल क्षेत्रों में एक केंद्र के रूप में बारसूर को स्थापित करके महिलाओं में जागरूकता और सशक्तीकरण की शुरुआत की। वर्ष 1990 में बारसूर में 11 लड़कियों के साथ एक बालिका छात्रावास का उद्घाटन किया। वर्तमान में, गाँव हिरनार में 50 लड़कियों के लिए एक निःशुल्क छात्रावास संचालित है, जिसमें छात्राओं को प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक शिक्षा प्रदान की जाती है।

3. डॉ. बुधरी ने सामाजिक सहयोग की मदद से बारसूर में एक स्थायी महिला प्रशिक्षण केंद्र का निर्माण करके महिलाओं के स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण शुरू किया। हिरनार महिला उत्थान केंद्र का निर्माण कर वह महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने एवं सशक्त बनाने के कार्य में जुटी हैं। बाल संस्कार केंद्र में तीन से पांच वर्ष की आयु के बच्चों को कहानियाँ, कविताएँ, खेल–खेल में गणना, चुटकुले और सदाचरण सिखाया जाता है। सामाजिक सद्भाव के क्षेत्र में आदिवासी और वनवासी समुदायों को अटूट प्रेम और रक्षाबंधन के पर्व के माध्यम से जोड़ने का प्रयास किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में आदिवासी गाँवों का भ्रमण कर माता–पिता को बच्चों को विद्यालय भेजने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। माता शारदा बालिका छात्रावास वर्ष 2013 से लगातार निःशुल्क संचालित हो रहा है। प्रत्येक वर्ष 30 जनवरी को महिला उत्थान केंद्र, हिरनार में आदिवासी महिलाओं का सम्मेलन 'माता शक्ति सम्मेलन' आयोजित किया जाता है।

4. डॉ. बुधरी को उनके कार्यों के सम्मान में कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें वर्ष 1998 में नागपुर में 'भारतीय स्त्री शक्ति पुरस्कार', वर्ष 2007 में छत्तीसगढ़ राज्य सरकार से महिलाओं के उत्थान हेतु 'मिनीमाता पुरस्कार', वर्ष 2014 में नागपुर की देवी अहिल्या स्मारक समिति से 'रानी गैदिनलियु पुरस्कार', वर्ष 2018 में 'महात्मा ज्योतिबा प्रथम फेलोशिप पुरस्कार' और 'संत ईश्वर विशिष्ट सेवा सम्मान' तथा वर्ष 2022 में पुणे के महर्षि कर्वे प्रशिक्षण संस्थान से 'बाप कवि पुरस्कार' शामिल हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें छत्तीसगढ़ के बिलासपुर स्थित पंडित सुंदरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय से मानद डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया। उनको कई अन्य संगठनों द्वारा भी सम्मानित किया गया है।

DR. KUMARASAMY THANGARAJ

Dr. Kumarasamy Thangaraj is the CSIR Bhatnagar Fellow at the CSIR-Centre for Cellular and Molecular Biology, Hyderabad, is a renowned geneticist, globally recognized for his outstanding contribution in the field of population and medical genetics.

2. Born on 2nd June 1963, Dr. Thangaraj received his Bachelor of Science degree from Vivekananda College (University of Madras) in 1994; Master of Science degree from Loyola College (University of Madras) in 1998; Master of Philosophy (M.Phil) and Doctor of Philosophy (PhD) from the Department of Genetics, University of Madras in 1990 and 1996, respectively. He joined the CSIR-Centre for Cellular and Molecular Biology, Hyderabad as a junior Scientist in 1993 and reached to Director-grade Scientist in 2014.

3. Dr. Thangaraj held a position of the Director, BRIC-Centre for DNA Fingerprinting and Diagnostics, Hyderabad, an institute under the Department of Biotechnology, Ministry of Science and Technology (2020 – 2023). He was also holding Director-Additional Charge of the BRIC-Institute for Stem Cell Science and Regenerative Medicine (inStem), Bengaluru (February 2022 - August 2022). He served as Chairperson and member of scientific advisory committee of several institutions and organizations including ICAR-NBAGR; DBT-UMMID programme; DBT-TWAS Fellowship programme; NIMS, Hyderabad; ICMR-NIRRCH; Centre for Brain Research, Bangalore; NIPER, Hyderabad; BRIC-inStem, etc. Dr. Thangaraj is the Coordinator of two National Mission programmes (Genome India and Paediatric Rare Genetic Disease) of the Department of Biotechnology, Ministry of Science and Technology. He founded the "Society for Mitochondrial Research and Medicine" to bring together the doctors, scientists and academicians to work for a common goal to diagnose and treatment/management of mitochondrial disorders. He has published more than 300 research articles in highly reputed scientific journals and some of his articles have featured on the cover of the most prestigious journals, including - *Nature, Nature Genetics, Current Biology, etc*. His scientific findings were also featured in the popular magazine including TIME, The Week, India Today, Down to Earth; and most of the Newspapers. He is an elected Fellow of - Indian National Science Academy (INSA), Indian Academy of Sciences, and National Academy of Sciences-India. He had also delivered several Orations. He is a Board Editor of Mitochondrion; Associate Editor of BMC Medical Genomics; Tropical Medicine and International Health and Editorial Board member of – Human Genetics and Clinical Genetics.

4. Dr. Thangaraj's genetic studies, for the first time, established that the Andaman tribes are the first modern humans who have migrated out-of-Africa about 65,000 years ago. This is a major breakthrough in the elucidation of early human migration. His subsequent research has demonstrated that the contemporary Indian populations descend from two ancestral groups and both the groups have mixed about 2000 years ago, since then all the India populations are practicing endogamy. These findings have tremendous social and medical implications; (1) All the Indian populations are genetically related, hence supports "*unity in diversity*". (2) Most of the Indian populations have formed from a small-sized founding populations, hence, are expected to have population-specific recessive diseases. Further, he predicted that about 60 million individuals, i.e. 1% of the world populations are at risk from heart disease due to a genetic mutation, exclusively found in South Asia. In addition, He also established scientific basis for *Ayurveda-prakriti* (Vata, Pitta and Kapha).

5. Dr. Thangaraj is a recipient of several awards, including Rashtriya Vigyan Puraskar - Vigyan Shri Award, CSIR-Bhatnagar Fellowship, J C Bose Fellowship, Raman Research Fellowship, Sun Pharma Research Award in Medical Sciences, Legend of Hyderabad Award, Life-time achievement Award, Excellence in Science Award, Distinguished Scientist Award, Sir CV Raman Memorial Lecture Award, Sir Dr. UN Brahmachari Award, etc.

डॉ. कुमारासामी थंगराज

सीएसआईआर– सेंटर फॉर सेल्युलर एंड मॉलिक्यूलर बायोलॉजी, हैदराबाद में सीएसआईआर भटनागर फेलो डॉ. कुमारासामी थंगराज, जनसंख्या और चिकित्सा आनुवंशिकी के क्षेत्र में इस उत्कृष्ट योगदान के लिए विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त एक प्रसिद्ध आनुवंशिकीविद् हैं।

2. 2 जून 1963 को जन्मे, डॉ. थंगराज ने 1994 में विवेकानंद कॉलेज (मद्रास विश्वविद्यालय) से विज्ञान स्नातक की डिग्री; 1998 में लोयोला कॉलेज (मद्रास विश्वविद्यालय) से विज्ञान में मास्टर की डिग्री; 1990 और 1996 में मद्रास विश्वविद्यालय के आनुवंशिकी विभाग से दर्शनशास्त्र में क्रमशः मास्टर (एम.फिल) और डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी) की उपाधि प्राप्त की। वह 1993 में एक कनिष्ठ वैज्ञानिक के रूप में सीएसआईआर–कोशिकीय और आणविक जीवविज्ञान केंद्र, हैदराबाद में शामिल हुए और 2014 में निदेशक–श्रेणी के वैज्ञानिक तक पहुंच गए।

3. डॉ. थंगराज ने जैव प्रौद्योगिकी विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत एक संस्थान, डीएनए फिंगरप्रिंटिंग और डायग्नोस्टिक्स, हैदराबाद के निदेशक, बीआरआईसी–केंद्र का पद संभाला (2020–2023)। वह बीआरआईसी–इंस्टीट्यूट फॉर स्टेम सेल साइंस एंड रीजनरेटिव मेडिसिन (इनस्टेम), बेंगलुरु के निदेशक के पद का अतिरिक्त प्रभार (फरवरी 2022–अगस्त 2022) भी संभाल रहे थे। उन्होंने आईसीएआर–एनबीएजीआर; डीबीटी–यूएमएमआईडी कार्यक्रम; डीबीटी–टीडब्ल्यूएएस फेलोशिप कार्यक्रम; एनआईएमएस, हैदराबाद; आईसीएमआर–एनआईआरआरसीएच; सेंटर फॉर ब्रेन रिसर्च, बैंगलोर; एनआईपीईआर, हैदराबाद,ब्रिक–इनस्टेम, आदि सहित कई संस्थानों और संगठनों की वैज्ञानिक सलाहकार समिति के अध्यक्ष और सदस्य के रूप में कार्य किया। वह जैव प्रौद्योगिकी विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के दो राष्ट्रीय मिशन कार्यक्रमों (जीनोम इंडिया और बाल चिकित्सा दुर्लभ आनुवंशिक रोग) के समन्वयक हैं। उन्होंने माइटोकॉन्ड्रियल विकारों के निदान और उपचार / प्रबंधन के लिए एक साझा लक्ष्य हेतु काम करने के लिए डॉक्टरों, वैज्ञानिकों और शिक्षाविदों को एक साथ लाने हेतु "सोसाइटी फॉर माइटोकॉन्ड्रियल रिसर्च एंड मेडिसिन" की स्थापना की। उन्होंने अत्यधिक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक पत्रिकाओं में 300 से अधिक शोध लेख प्रकाशित किए हैं और उनके कुछ लेख सबसे प्रतिष्ठित पत्रिकाओं के कवर पर प्रदर्शित हुए हैं, जिनमें – नेचर, नेचर जेनेटिक्स, करंट बायोलॉजी आदि शामिल हैं। उनके वैज्ञानिक निष्कर्षों को लोकप्रिय पत्रिका टाइम, द वीक, इंडिया टुडे, डाउन टू अर्थ और अधिकांश समाचार पत्रों में भी प्रकाशित किया गया है। वह भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (आईएनएसए), भारतीय विज्ञान अकादमी और राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी–भारत के निर्वाचित फेलो हैं। उन्होंने कई व्याख्यान भी दिए हैं। वह माइटोकॉन्ड्रिया के बोर्ड संपादक हैं। बीएमसी मेडिकल जीनोमिक्स के एसोसिएट एडिटर; ट्रॉपिकल मेडिसिन और इंटरनेशनल हेल्थ, और मानव आनुवंशिकी और नैदानिक आनुवंशिकी के संपादकीय बोर्ड के सदस्य हैं।

4. डॉ. थंगराज के आनुवंशिक अध्ययन ने पहली बार यह स्थापित किया कि अंडमान जनजातियाँ प्रथम आधुनिक मानव हैं, जो लगभग 65,000 साल पहले अफ्रीका से बाहर चले गए थे। यह प्रारंभिक मानव प्रवासन के स्पष्टीकरण में एक बड़ी सफलता है। उनके बाद के शोध से पता चला है कि समकालीन भारतीय आबादी दो पैतृक समूहों से आई है और दोनों समूह लगभग 2000 साल पहले मिश्रित हुए, तब से सभी भारतीय आबादी अंतर्विवाह कर रही है। इन निष्कर्षों के जबरदस्त सामाजिक और चिकित्सा निहितार्थ हैं; (1) सभी भारतीय आबादी आनुवंशिक रूप से संबंधित है, इसलिए "विविधता में एकता" का समर्थन करता है। (2) अधिकांश भारतीय आबादी एक छोटे आकार की संस्थापक आबादी से बनी है, इसलिए, उनमें जनसंख्या–विशिष्ट अवशिष्ट बीमारियों की संभावना है। इसके अलावा, उन्होंने भविष्यवाणी की कि लगभग 60 मिलियन व्यक्ति, यानी विश्व की आबादी का 1ः विशेष रूप से दक्षिण एशिया में पाए जाने वाले आनुवंशिक उत्परिवर्तन के कारण हृदय रोग के जोखिम में हैं। इसके अलावा, उन्होंने आयुर्वेद–प्रकृति (वात, पित्त और कफ) के लिए वैज्ञानिक आधार भी स्थापित किया।

5. डॉ. थंगराज कई पुरस्कारों के प्राप्तकर्ता हैं, जिनमें राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार–विज्ञान श्री पुरस्कार, सीएसआईआर–भटनागर फेलोशिप, जेसी बोस फेलोशिप, रमन रिसर्च फेलोशिप, मेडिकल साइंसेज में सन फार्मा रिसर्च अवार्ड, लीजेंड ऑफ हैदराबाद अवार्ड, लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, एक्सीलेंस इन साइंस अवार्ड, डिस्टिंग्विश्ड साइंटिस्ट अवार्ड, सर सीवी रमन मेमोरियल लेक्चर अवार्ड, सर डॉ. यूएन ब्रह्मचारी अवार्ड आदि शामिल हैं।

SHRI RABILAL TUDU (POSTHUMOUS)

Shri Rabilal Tudu was a writer of Santali literature from Bardhaman, West Bengal, renowned for his contribution to Santali drama and language preservation. He was best known for his play Parsi Khatir, which explores the contemporary crisis surrounding the Santali language.

2. Born on 21st December 1949, Shri Tudu received his graduation degree from Kalna College in 1972. Later, he worked in the office of Accountant General, West Bengal from 1974 to 1977. He also worked in Central Bank of India as Assistant Manager.

3. Shri Tudu began writing while working in banking, contributing to Santali literature through drama for stage and radio to preserve and promote the language amid cultural challenges. He has served as an ex-member of the Santali Advisory Board of the Sahitya Akademi and contributed to initiatives promoting Santali Writing in West Bengal.

4. Shri Tudu's significant dramatic works are Bir Birsha, Somaj Bairi and Sardi Sengel, which explore Santali folklore, social conflicts and community dynamics, often staged in local performances or adapted into radio serials during the 1990s and 2000s. Additional plays include Murukh Jala, Chuar Kowag Hulsai and Dular Banug. These plays featured in university syllabi for Santali drama, reflect his commitment to dramatizing tribal experiences through accessible narratives suited for oral dissemination.

5. Shri Tudu was awarded the Sahitya Akademi Award in 2015 for his play Parsi Khatir in the Santali language category. In addition to his national recognition, he received the Banga Bhushan Award from the Government of West Bengal in 2022, honoring his significant contribution to Santali literature and culture.

6. Shri Tudu passed away on 4th June, 2026.

श्री रबीलाल टुडू (मरणोपरांत)

श्री रबीलाल टुडू वर्धवान, पश्चिम बंगाल से संथाली साहित्य के लेखक थे, जिन्हें संथाली नाटक और भाषा संरक्षण में इनके योगदान के लिए जाना जाता है। वह अपने नाटक पारसी खातिर के लिए सुप्रसिद्ध थे। इस नाटक में संथाली भाषा से जुड़े समकालीन संकट की पड़ताल की गई है।

2. 21 दिसंबर, 1949 को जन्मे, श्री टुडू ने वर्ष 1972 में कालना महाविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। बाद में इन्होंने वर्ष 1974 से 1977 तक पश्चिम बंगाल के महालेखाकार के कार्यालय में कार्य किया। इन्होंने सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया में सहायक प्रबंधक के रूप में भी कार्य किया।

3. श्री टुडू ने बैंकिंग क्षेत्र में कार्य करते हुए लेखन कार्य शुरू किया, सांस्कृतिक चुनौतियों के बीच भाषा को संरक्षित करने और बढ़ावा देने हेतु नाट्य मंच और आकाशवाणी के लिए नाटक के माध्यम से संथाली साहित्य में अपना योगदान दिया। इन्होंने साहित्य अकादमी के संथाली सलाहकार बोर्ड के पूर्व सदस्य के रूप में कार्य किया और पश्चिम बंगाल में संथाली लेखन कार्य को बढ़ावा देने वाली पहलों में योगदान दिया।

4. श्री टुडू की महत्वपूर्ण नाटकीय कृतियाँ बीर बिरशा, समाज बैरी और सरदी सेंगेल हैं, जो संथाली लोककथाओं, सामाजिक संघर्षों और सामुदायिक बदलावों को दर्शाते हैं। इन नाटकों का मंचन प्रायः स्थानीय नाट्य प्रदर्शनों में किया जाता है या वर्ष 1990 और 2000 के दशक के दौरान इन पर रेडियो धारावाहिक बनाए गए हैं। इनके अन्य नाटकों में मुरुख जाला, चुआर कोवाग हुलसाई और दुलार बानुग शामिल हैं। संथाली नाटक के लिए विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में ये नाटक शामिल किए गए हैं जो मौखिक प्रसार के लिए उपयुक्त आदिवासी अनुभवों को सहज–सरल कहानियों के माध्यम से नाटकीय रूप देने की उनकी निष्ठा का परिचायक हैं।

5. श्री टुडू को उनके नाटक पारसी खातिर के लिए वर्ष 2015 में संथाली भाषा श्रेणी में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस राष्ट्रीय पहचान के अलावा, इन्हें वर्ष 2022 में संथाली साहित्य और संस्कृति में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा बंग भूषण पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

6. श्री टुडू का 4 जून, 2026 को निधन हो गया।

SHRI NARESH CHANDRA DEV VARMA

Shri Naresh Chandra Dev Varma is a well-known and respected personality in the fields of literature, language, culture and social issues in the state of Tripura, cutting across all sections of society. His contributions in these areas have made a substantial and lasting impact on the community as a whole. He remains socially active and is frequently invited to various social and intellectual gatherings, seminars, and workshops to deliver lectures and share his insights.

2. Born on 31st October 1944, Shri Varma completed his primary education at Dhariathal Primary School in a small village near Bishramganj, Sepahijala District, Tripura. He pursued his higher studies at MBB College, Agartala and obtained his Bachelor of Arts degree under the University of Calcutta. He began his professional career as a Junior Assistant in the Agriculture Department. Later, he joined the Tripura Legislative Assembly as a Senior Assistant and, through his dedication and administrative competence, rose to the position of Joint Secretary under the Government of Tripura. He retired from service in the year 2002.

3. From a very young age, Shri Varma began writing on Tripuri grammar and related subjects in Kokborok, Bengali, and English. Tripuri, popularly known as Kokborok, is the mother tongue of nearly 15 lakh indigenous people of Tripura. He has undertaken in-depth studies on the language, society and culture of the Tripuri community. His essays, research papers and dissertations on various topics have been published in book form as well as in numerous magazines and journals across the state of Tripura. In recognition of his scholarly contributions, he has been serving as a distinguished member of the Advisory Committee for the development of the Tripuri/Kokborok language, constituted by the Government of Tripura.

4. At present, Shri Varma serves as the President of the Kokborok Sahitya Parishad, a leading literary organization dedicated to the promotion and development of the Tripuri language. He has also served as a Guest Lecturer at Tripura University, where he taught undergraduate students enrolled in the Kokborok Diploma Course. In addition, he was a member of the Advisory Panel on Kokborok constituted by the National Book Trust. Deeply committed to social service, he was closely associated with the Akhil Bharatiya Vanavasi Kalyan Ashram and served as its Vice President and later as President from July 2015 to January 2022. He is a prolific author, having written a total of 34 books. Of these, 11 are in Kokborok, primarily comprising translations from other languages. His other works include books in Bengali, as well as edited volumes of rare and old texts and manuscripts.

5. Shri Varma is the recipient of numerous awards and honours in recognition of his outstanding contributions. He has received nine awards from the Government and five awards from non-governmental organizations. Among the prestigious honours conferred upon him by the Government of Tripura are the Daulat Ahmed Award (2009), Salail Krishna Debbarman Award (2011), Rabindra Award (2017), Radha Mohan Thakur Award (2021), Atal Bihari Vajpayee Lifetime Memory Award (2021) and the Tripura Bhushan Samman (2024). He was also honoured with the Eminent Teachers Award by the Government of Tripura on the occasion of the Kokborok Day Celebration in 2026.

श्री नरेश चंद्र देव वर्मा

श्री नरेश चंद्र देव वर्मा त्रिपुरा राज्य में साहित्य, भाषा, संस्कृति और सामाजिक विषयों के क्षेत्र में अत्यंत प्रतिष्ठित और सम्मानित व्यक्ति हैं, जिनका प्रभाव समाज के सभी वर्गों पर समान रूप से व्याप्त है। इन क्षेत्रों में उनके योगदान ने संपूर्ण समुदाय पर एक गहरा और चिरस्थायी प्रभाव छोड़ा है। वह आज भी सामाजिक रूप से अत्यंत सक्रिय हैं और इन्हें विभिन्न सामाजिक और बौद्धिक सभाओं, सेमिनारों और कार्यशालाओं में व्याख्यान देने एवं अपने प्रबुद्ध विचार साझा करने के लिए प्रायरू आमंत्रित किया जाता है।

2. 31 अक्टूबर, 1944 को जन्में, श्री वर्मा ने अपनी प्राथमिक शिक्षा त्रिपुरा के सिपाहीजिला जिले के बिश्रामगंज के पास एक छोटे से गांव धरियाथल प्राथमिक विद्यालय से पूरी की। इसके बाद, इन्होंने एमबीबी महाविद्यालय, अगरतला से उच्च शिक्षा प्राप्त की और कलकत्ता विश्वविद्यालय से कला स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इन्होंने कृषि विभाग में कनिष्ठ सहायक के रूप में अपने पेशेवर जीवन की शुरुआत की। कालांतर में, इन्होंने त्रिपुरा विधान सभा में वरिष्ठ सहायक के रूप में सेवाएं प्रदान कीं और अपने निष्ठा और प्रशासनिक दक्षता के बल पर, त्रिपुरा सरकार के संयुक्त सचिव के पद तक पहुंचे। वह वर्ष 2002 में सेवानिवृत्त हुए।

3. श्री वर्मा ने अल्पायु से ही कोकबोरोक, बंगाली और अंग्रेजी में त्रिपुरी व्याकरण और संबंद्ध विषयों पर लेखन कार्य शुरू कर दिया था। त्रिपुरी, जिसे लोकप्रिय रूप से कोकबोरोक के नाम से जाना जाता है, त्रिपुरा के लगभग 15 लाख मूल निवासियों की मातृभाषा है। इन्होंने त्रिपुरी समुदाय की भाषा, समाज और संस्कृति पर गहन अध्ययन किया है। विभिन्न विषयों पर उनके निबंध, शोध पत्र और शोध प्रबंध न केवल पुस्तक के रूप में, बल्कि त्रिपुरा राज्य भर की कई पत्रिकाओं और जर्नलों में भी प्रकाशित हुए हैं। इनके विद्वतापूर्ण योगदान को सम्मान देते हुए, इन्हें त्रिपुरा सरकार ने त्रिपुरी/कोकबोरोक भाषा के विकास हेतु गठित सलाहकार समिति के एक विशिष्ट सदस्य के रूप में नियुक्त किया है।

4. वर्तमान में, श्री वर्मा कोकबोरोक साहित्य परिषद के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं, जो त्रिपुरी भाषा के प्रचार और विकास के लिए समर्पित एक प्रमुख साहित्यिक संगठन है। इन्होंने त्रिपुरा विश्वविद्यालय में अतिथि व्याख्याता के रूप में भी कार्य किया है, जहां इन्होंने कोकबोरोक डिप्लोमा पाठ्यक्रम में नामांकित स्नातक छात्रों को पढ़ाया। इसके अलावा, वह नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा गठित कोकबोरोक सलाहकार पैनल के सदस्य भी रहे। सामाजिक सेवा के प्रति गहरी प्रतिबद्धता के साथ, वह अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम से निकटता से जुड़े रहे और जुलाई 2015 से जनवरी 2022 तक इसके उपाध्यक्ष और बाद में अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वह एक विपुल लेखक हैं। इन्होंने कुल 34 पुस्तकें लिखी हैं। जिसमें से 11 पुस्तकें कोकबोरोक में हैं। जो मुख्यतः अन्य भाषाओं में लिखी गई पुस्तकों के अनुवाद कार्य हैं। इन्होंने बंगाली भाषा में पुस्तकें लिखी हैं। इसके अलावा, इन्होंने दुर्लभ और पुराने ग्रंथों एवं पांडुलिपियों के संपादित खंडों पर भी कार्य किया है।

5. श्री वर्मा को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। इन्हें सरकार से 09 पुरस्कार और गैर–सरकारी संगठनों से 05 पुरस्कार मिले हैं। त्रिपुरा सरकार द्वारा उन्हें प्रदान किए गए प्रतिष्ठित सम्मानों में दौलत अहमद पुरस्कार (2009), सलैल कृष्ण देबबर्मन पुरस्कार (2011), रवींद्र पुरस्कार (2017), राधा मोहन ठाकुर पुरस्कार (2021), अटल बिहारी वाजपेयी लाइफटाइम मेमोरी अवार्ड (2021) और त्रिपुरा भूषण सम्मान (2024) शामिल हैं। इन्हें वर्ष 2026 में कोकबोरोक दिवस समारोह के अवसर पर त्रिपुरा सरकार द्वारा प्रतिष्ठित शिक्षक पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

SHRI SHASHI SHEKHAR VEMPATI

Shri Shashi Shekhar Vempati is the co-founder of DeepTech for Bharat Foundation and formerly served as CEO of Prasar Bharati, India's Public Service Broadcaster. He is widely recognised for his transformative leadership in modernising Doordarshan and Akashvani. The impact of his reforms spans a wide range of areas across Public Television and Radio, TV Ratings, Educational Media and Science Communication.

2. Born on 2nd September, 1974, Shri Vempati received his Bachelor of Technology degree from the Indian Institute of Technology, Bombay in 1995. He worked at Engineers India Limited, (EIL) and subsequently at Infosys Technologies Limited. Between 1997 and 2013 while at Infosys, he was responsible for several technology innovations in Wireless Applications, Enterprise Mobility, RFID and Wireless Sensors. Between 2013 and 2016, he was part of the team that conceived and created Niti Digital one of India's first Digital Platform for Citizen Engagement. As Chief Digital Officer and subsequently as the CEO at Niti Digital, he played a pioneering role in the diffusion of digital technologies for citizen engagement during the 2014 General Elections in India through the Mission 272+ volunteer platform and NitiCentral.com news portal. Between 2016 and 2017, he served as a Member of the Board on Prasar Bharati championing the need for reforming Public Broadcasting in India.

3. As the youngest CEO of Prasar Bharati between 2017 and 2022, Shri Vempati rose to the challenge by launching the most comprehensive reform and modernisation programmes in the history of India's public broadcasting system. Never one to shy away from responsibilities, he also took on the additional charge as CEO of Rajya Sabha TV between 2017 and 2019. Under his leadership, DD and AIR underwent wide- ranging transformation while RSTV witnessed an era of digital growth and content reforms. Major reforms led by him include the creation of a digital platform for News Distribution, rollout of HD TV channels, Publicly Accessible Digitised Archives, Digital and Social Media outreach across languages and regions, Information Technology led reforms in Content Commissioning, Talent Engagement and DD FreeDish e-Auctions. His tenure saw India's public broadcasting expand its global footprint across 92 countries with the launch of DD India for English News and the NewsOnAir App for worldwide online streaming of more than 200 radio stations. He also spearheaded the rationalisation of analogue terrestrial TV broadcasting, releasing valuable spectrum in support of national telecommunications priorities while pioneering new innovations such as Direct to Mobile Broadcasting, D2M. The impact of these reforms was evident during the COVID-19 pandemic when Doordarshan made history with the highest ever television viewership recorded during the broadcast of the epic Ramayan setting a global benchmark while DD FreeDish DTH came to the aid of lakhs of students across India delivering free to air educational classes over TV.

4. Shri Vempati is also a widely published Columnist and the author of the book *"Collective Spirit, Concrete Action - Mann ki Boat and its Influence on India"*. His thought leadership at the intersection of Technology, Public Policy and Media landscape has spanned across wide subjects from Artificial Intelligence to Strategic Communication has been published by leading think tanks such as ICWA, MP- IDSA and Carnegie India. As Vice President of the Asia-Pacific Broadcast Union, his tenure saw India's strong voice provide leadership and direction to public media organisations from the global south. His leadership contributions to national media industry bodies such as IBDF and BARC and his Chairing of the Committee to Review Television Ratings Agencies saw an era of significant reforms in the area of Television Ratings and Audience Measurement in India. An active contributor to the public discourse in India and across the globe, he continues to provide leadership to multiple National Institutions such as UGC, CEC, BARC, IIMC, AJKMRC, NCSTC and to the Global Standards Body ATSC.

5. Shri Vempati is the recipient of Infosys Awards for Excellence in Innovation during the years 2003, 2005, 2006 and 2007 for his Innovations and Intellectual Property Creation in the areas of Enterprise Mobility, RFID and Wireless Sensors. In 2013 he was awarded a Patent for his Software Inventions in the area of real time event monitoring within Wireless Sensor Networks. He he received the Dataquest Magazine's Pathbreaker Award for Innovation as part of the Team responsible for the Mission 272+ digital campaign during the 2014 General Elections.

श्री शशि शेखर वेम्पटि

श्री शशि शेखर वेम्पटि डीपटेक फॉर भारत फाउंडेशन के सह–संस्थापक हैं। इससे पहले वह भारत के लोक सेवा प्रसारक प्रसार भारती के सीईओ के रूप में कार्य कर चुके हैं। इन्हें दूरदर्शन और आकाशवाणी के आधुनिकीकरण में इनके क्रांतिकारी नेतृत्व के लिए अपार प्रसिद्धि प्राप्त है। इन्होंने सार्वजनिक टेलीविजन और रेडियो, टीवी रेटिंग, शैक्षिक मीडिया और विज्ञान संचार जैसे कई क्षेत्रों में बड़े सुधार किए।

2. 2 सितंबर, 1974 को जन्मे, श्री वेम्पटि ने वर्ष 1995 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, बॉम्बे से प्रौद्योगिकी स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इन्होंने इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड (ईआईएल) और उसके बाद इंफोसिस टेक्नोलॉजीज लिमिटेड में काम किया। वर्ष 1997 और 2013 के बीच इन्फोसिस में रहते हुए वह वायरलेस ऐप्लीकेशन, उद्यम गतिशीलता, आरएफआईडी और वायरलेस सेंसर से जुड़ी कई नई प्रौद्योगिकियों को लेकर आए। वर्ष 2013 और 2016 के बीच, वह उस टीम का हिस्सा थे जिसने नागरिकों को जोड़ने वाले भारत के पहले डिजिटल प्लेटफॉर्म में से एक प्लेटफॉर्म नीति डिजिटल की संकल्पना और निर्माण का कार्य किया था। मुख्य डिजिटल अधिकारी के रूप में और तत्पश्चात नीति डिजिटल के सीईओ के रूप में, इन्होंने भारत में वर्ष 2014 के आम चुनावों के दौरान मिशन 272 स्वयंसेवक मंच और NitiCentral.com समाचार पोर्टल के माध्यम से डिजिटल प्रौद्योगिकियों को नागरिकों तक पहुंचाने में अग्रणी भूमिका निभाई। वर्ष 2016 और 2017 के बीच, इन्होंने प्रसार भारती बोर्ड के सदस्य के रूप में भारत में लोक प्रसारण में सुधार की आवश्यकता पर बल दिया।

3. वर्ष 2017 से 2022 के बीच प्रसार भारती के सबसे युवा सीईओ के रूप में, श्री वेम्पटि ने भारत की लोक प्रसारण प्रणाली के इतिहास में सबसे बड़े सुधार और आधुनिकीकरण के कार्यक्रमों की शुरूआत की। कभी भी अपने दायित्वों से पीछे नहीं हटने वाले, उन्होंने वर्ष 2017 और 2019 के बीच राज्यसभा टीवी के सीईओ के रूप में अतिरिक्त प्रभार भी संभाला। इनके नेतृत्व में, दूरदर्शन और आकाशवाणी में व्यापक परिवर्तन हुए, वहीं राज्यसभा टीवी डिजिटल विकास और विषयवस्तु सुधारों के युग का साक्षी बना। इनके नेतृत्व में किए गए प्रमुख सुधारों में समाचार वितरण के लिए एक डिजिटल प्लेटफॉर्म का निर्माण, एचडी टीवी चौनलों की शुरूआत, सार्वजनिक रूप से सुलभ डिजीटल अभिलेखागार, अलग–अलग भाषाओं और क्षेत्रों में डिजिटल और सोशल मीडिया के माध्यम से पहुंच, कंटेंट कमीशनिंग, प्रतिभाओं को जोड़ना और डीडी फ्रीडिश ई–नीलामी में सूचना प्रौद्योगिकी आधारित सुधार शामिल हैं। इनके कार्यकाल में भारत का लोक प्रसारण 92 देशों तक पहुंचा। इन्होंने अंग्रेजी समाचार के लिए डीडी इंडिया का लोकार्पण किया और 200 से अधिक रेडियो स्टेशनों की विश्वव्यापी ऑनलाइन स्ट्रीमिंग के लिए न्यूज ऑन एयर ऐप की सुविधा प्रदान की। इन्होंने एनालॉग स्थलीय टीवी प्रसारण को भी युक्तिसंगत बनाया, राष्ट्रीय दूरसंचार प्राथमिकताओं के अनुरूप मूल्यवान स्पेक्ट्रम जारी किया, वहीं दूसरी ओर डायरेक्ट टू मोबाइल ब्रॉडकास्टिंग, डी2एम जैसी तकनीकों की शुरूआत की। इन सुधारों का प्रभाव कोविड–19 महामारी के दौरान स्पष्ट दिखाई दिया जब दूरदर्शन ने रामायण के प्रसारण के दौरान वैश्विक मानदंड स्थापित करते हुए अब तक की सबसे अधिक टेलीविजन दर्शक संख्या के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। वहीं डीडी फ्रीडिश डीटीएच के माध्यम से भारत भर में लाखों छात्रों की सहायता के लिए टीवी पर निःशुल्क पढ़ाई की सुविधा प्रदान की गई।

4. श्री वेम्पटि एक प्रतिष्ठित स्तंभकार और ''कलेक्टिव स्पिरिट, कंक्रीट एक्शन – मन की बात एंड इट्स इनफ्लूएंस इन इंडिया'' पुस्तक के लेखक भी हैं। प्रौद्योगिकी, लोक नीति और मीडिया जगत के संयोजन पर इनके सुविचारित नेतृत्व का दायरा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लेकर रणनीतिक संचार जैसे विषयों तक फैला हुआ है। इन विषयों को आईसीडब्ल्यूए, एमपी–आईडीएसए और कार्नेज इंडिया जैसे प्रमुख थिंक टैंकों द्वारा प्रकाशित किया गया है। एशिया–प्रशांत प्रसारण संघ के उपाध्यक्ष के रूप में, अपने कार्यकाल में वह भारत की बुलंद आवाज बने, ग्लोबल साउथ के लोक मीडिया संगठनों का नेतृत्व किया और उन्हें दिशा दिखाई। आईबीडीएफ और बीएआरसी जैसे राष्ट्रीय मीडिया उद्योग निकायों में उनके नेतृत्वकारी योगदान और टेलीविजन रेटिंग एजेंसियों की समीक्षा के लिए समिति के अध्यक्ष के रूप में इनके काम ने भारत में टेलीविजन रेटिंग और दर्शक माप के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार किए। भारत और दुनिया भर में सार्वजनिक चर्चा में सक्रिय योगदान देने वाले, इन्होंने यूजीसी, सीईसी, बार्क, आईआईएमसी, एजेकेएमआरसी, एनसीएससीटी जैसे कई राष्ट्रीय संस्थानों और वैश्विक मानक निकाय एटीएससी को अपना नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं।

5. श्री वेम्पटि को एंटरप्राइज मोबिलिटी, आरएफआईडी और वायरलेस सेंसर के क्षेत्रों में उनके नवाचारों और बौद्धिक संपदा सृजन के लिए वर्ष 2003, 2005, 2006 और 2007 के दौरान नवाचार के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए इन्फोसिस पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। वर्ष 2013 में इन्हें वायरलेस सेंसर नेटवर्क के भीतर रियल टाइम घटना निगरानी के क्षेत्र में उनके सॉफ्टवेयर आविष्कारों के लिए पेटेंट मिला। 2014 के आम चुनावों के दौरान मिशन 272+ डिजिटल अभियान के लिए जिम्मेदार टीम के हिस्से के रूप में नवाचार के लिए डेटाक्वेस्ट मैगजीन का पाथब्रेकर पुरस्कार मिला।

SHRI CHIRANJI LAL YADAV

Shri Chiranji Lal Yadav is a famous Brass engraver from Moradabad, Uttar Pradesh.

2. Born on 08th July, 1950, in Katra Puran Jat, Jeevan Ki Sarai, Moradabad, into a very poor family, Shri Yadav after completing his education up to class 7, started working on brass engraving at a young age. He learned this craft from Late Shri Amar Singh Ji. From the age of 22, he received training in this craft through the Government of India and gained complete knowledge. He has done high-quality work, including Mehraab work, Varma Bidar work, Panchranga work, Angoori work, and fine work, including Marori work, which is the most intricate work.

3. Shri Yadav has also showcased his art abroad. In 2010, he went to Dhaka, Bangladesh, and in 2015, he showcased his art in Frankfurt, Germany through the Export Promotion Council of Handicrafts (EPCH), Government of India. He has demonstrated his work and sold his items throughout India. He has participated in exhibitions at Pragati Maidan, New Delhi; Talkatora Stadium, New Delhi; National Crafts Museum, Kala Gram, Chandigarh; Valluvar Kottam Chennai; Poompuhar, Chennai; Gandhinagar, Ahmedabad and Shilparamam, Hyderabad and Kerala. He has also participated in the Chitra Kala Parishad in Bangalore and showcased his work. He worked at the Central Cottage Industries Corporation Limited in New Delhi and supplied brass items there. He had participated in many fairs in India, including Kolkata, Delhi Haat, Surajkund International Crafts Mela and Shilparamam International Fair in Hyderabad. He is also a member of Udyog Bandhu and One District One Product (ODOP).

4. Shri Yadav served as a Master Craftsman from 1980 to 1982. He has taught brass engraving to 30 children in Puri district, Odisha. He also trained 10 children in carving work in Moradabad in 2011 through the office of the Ministry of Textiles, Government of India. In addition, he has trained approximately 500 young people in carving work through the Metal Handicrafts Service Centre (MHSC) office.

5. Shri Yadav has been honored with various State and National Awards, like State Excellence Award -1992; State Excellence Award 1994 -1995; State Award 1998 -1999; National Merit Award-2008 and Shilp Guru Award -2019 by the Ministry of Textiles, Government of India.

श्री चिरंजी लाल यादव

श्री चिरंजी लाल यादव उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद के एक प्रसिद्ध पीतल उत्कीर्णक हैं।

2. 08 जुलाई, 1950 को कटरा पूरन जाट, जीवन की सराय, मुरादाबाद में एक बहुत ही गरीब परिवार में जन्मे, श्री यादव ने कक्षा 7 तक की शिक्षा पूरी करने के बाद कम उम्र में ही पीतल उत्कीर्णन पर काम करना शुरू कर दिया था। उन्होंने यह कला स्वर्गीय श्री अमर सिंह जी से सीखी। 22 वर्ष की उम्र से ही उन्होंने भारत सरकार के माध्यम से इस कला का प्रशिक्षण प्राप्त किया और पूर्ण ज्ञान अर्जित किया। उन्होंने उच्च गुणवत्ता का काम किया है, जिसमें सबसे जटिल कार्य, मारोरी कारीगरी सहित मेहराब कारीगरी, वर्मा बीदर कारीगरी, पंचरंगा कारीगरी, अंगूरी कारीगरी, ललित कारीगरी शामिल हैं।

3. श्री यादव ने विदेशों में भी अपनी कला का प्रदर्शन किया है। वर्ष 2010 में, वह ढाका, बांग्लादेश गए और 2015 में, उन्होंने भारत सरकार के हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद (ईपीसीएच) के माध्यम से फ्रैंकफर्ट, जर्मनी में अपनी कला का प्रदर्शन किया। उन्होंने पूरे भारत में अपने कार्य का प्रदर्शन किया है और अपनी वस्तुओं को बेचा है। उन्होंने प्रगति मैदान, नई दिल्ली; तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली; राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय, कला ग्राम, चंडीगढ़; वल्लुवर कोट्टम चेन्नई पूमपुहार, चेन्नई गांधीनगर, अहमदाबाद और शिल्पारामम, हैदराबाद और केरल में प्रदर्शनियों में भाग लिया है। उन्होंने बैंगलोर में चित्र कला परिषद में भी भाग लिया है और अपनी कृतियों का प्रदर्शन किया है। उन्होंने नई दिल्ली में सेंट्रल कॉटेज इंडस्ट्रीज कॉर्पोरेशन लिमिटेड में कार्य किया और वहां पीतल की वस्तुओं की आपूर्ति की। उन्होंने कोलकाता, दिल्ली हाट, सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेला और हैदराबाद में शिल्पमम अंतरराष्ट्रीय मेले सहित भारत में कई मेलों में भाग लिया था। वह उद्योग बंधु और वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट (ओडीओपी) के सदस्य भी हैं।

4. श्री यादव ने 1980 से 1982 तक शिल्प गुरू के रूप में कार्य किया। उन्होंने ओडिशा के पुरी जिले में 30 बच्चों को पीतल उत्कीर्णन सिखाया है। उन्होंने 2011 में वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार के कार्यालय के माध्यम से मुरादाबाद में नक्काशी के काम में 10 बच्चों को भी प्रशिक्षित किया। इसके अलावा, उन्होंने मेटल हैंडीक्राफ्ट सर्विस सेंटर (एमएचएससी) कार्यालय के माध्यम से लगभग 500 युवाओं को नक्काशी के काम में प्रशिक्षित किया है।

5. श्री यादव को भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय द्वारा राज्य उत्कृष्टता पुरस्कार–1992; राज्य उत्कृष्टता पुरस्कार 1994–1995; राज्य पुरस्कार 1998–1999; राष्ट्रीय योग्यता पुरस्कार–2008 और शिल्प गुरु पुरस्कार–2019 जैसे विभिन्न राज्य और राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।